कष्टों को दूर कर पुत्र, धन, ऐश्वर्य आदि समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली मां गायत्री की पूजा-आराधना की प्रामाणिक प्रस्तुति

तन-मन को नीरोग रख दीर्घायु प्रदान करने वाले महामंत्र का अनुष्ठान करने की शास्त्र-सम्मत जानकारी

ओउम् भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्
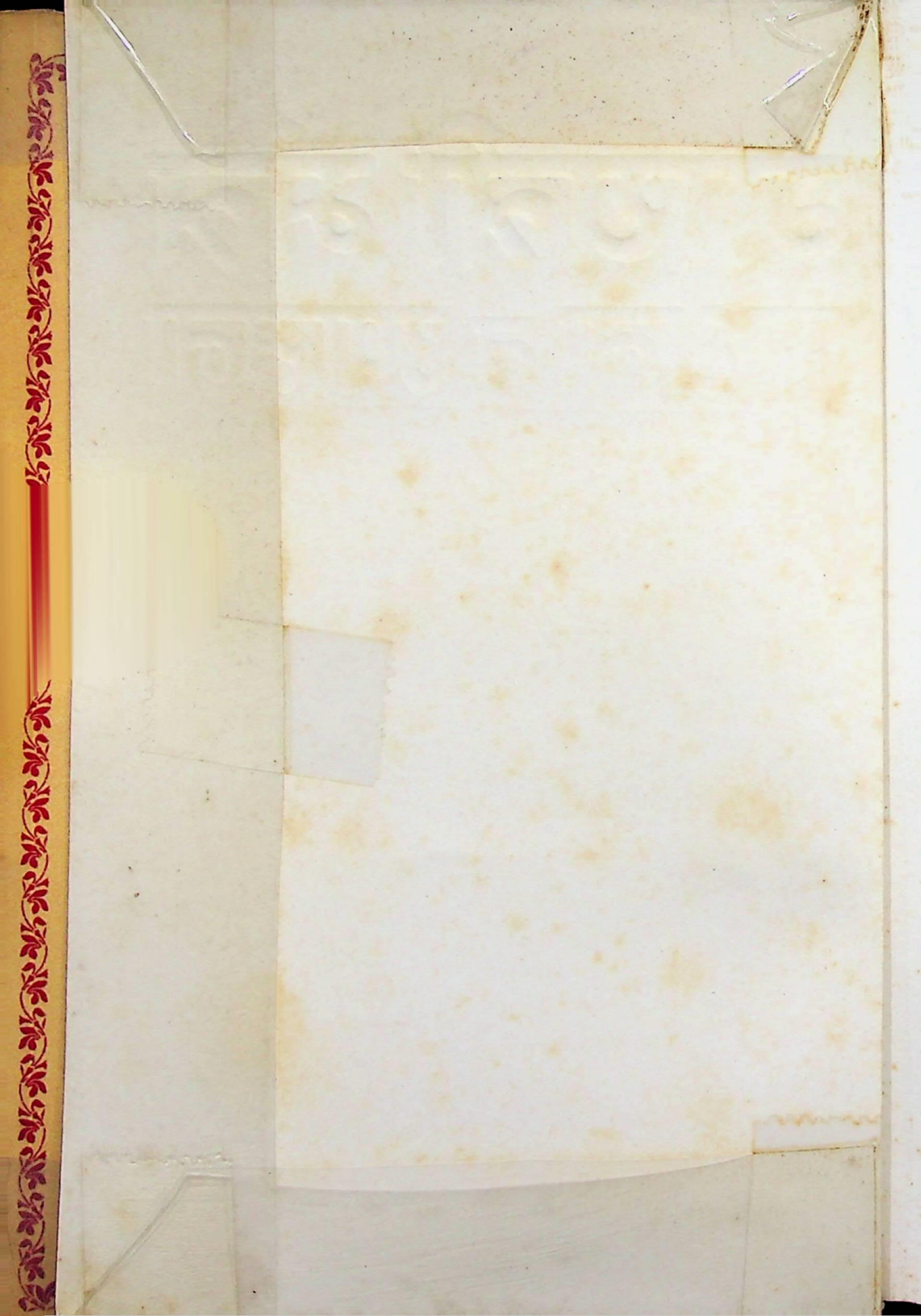
गायत्री मंत्र साधना व उपासना

उपासना, स्तुति, ध्यान एवं वंदना का दिव्य समन्वय

गायत्री मंत्र ही ऐसा है, जिसका विधान शास्त्रों ने चारों आश्रमों के लिए किया है। इस तरह यह ब्रह्मचारी को विद्या देता है, गृहस्थ को धन-समृद्धि व ऐश्वर्य, वानप्रस्थी को इष्ट के प्रति अगाध निष्ठा तथा विवेक और संन्यासी को अध्यात्म ज्ञान। यह एक ऐसा कल्पवृक्ष है, जिसका आश्रय लेने वाले की समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

गांधीजी के अनुसार, गायत्री मंत्र का जाप यदि शुद्ध चित्त होकर निरंतर किया जाए तो जापक रोग-ग्रसित नहीं होता व उसके कष्ट भी दूर हो जाते हैं। डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में, गायत्री मंत्र इंसान को नवजीवन प्रदान करने वाली एक प्रार्थना है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का कहना था कि गायत्री मंत्र से उन्होंने वह सब कुछ प्राप्त कर लिया, जिसकी उन्हें आशा न थी। उनके कथनानुसार, 'इस मंत्र ने मेरे आंतरिक-चक्षु खोलकर, मुझे श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान कर सद्‌मार्ग दिखाया है।' श्री रामचंद्रजी ने लक्ष्मण से व भीष्म पितामह ने कौरव-पांडवों से गायत्री मंत्र की महिमा का गान किया है और श्रीकृष्ण ने तो यहां तक कह दिया कि मंत्रों में मैं ही गायत्री मंत्र हूं। ऐसे दिव्य मंत्र के विभिन्न रूपों, साधना पद्धतियों को हमने इस पुस्तक में दिया है। गायत्री में निष्ठा रखने वाले श्रद्धावान भक्तों के लिए यह सामग्री उपयोगी होगी। आपके सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

—प्रकाशक

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्
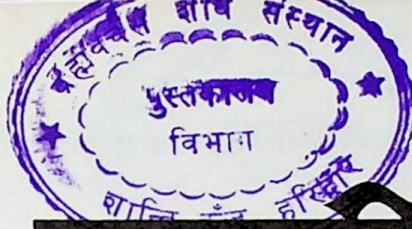
गायत्री मंत्र
साधना व उपासना

एक ऐसे दिव्य मंत्र की साधना जो उपासना, स्तुति,
ध्यान एवं वंदना का समन्वितरूप है

•

सी. एम. श्रीवास्तव

मनोज पब्लिकेशन्स

प्रकाशक :

मनोज पब्लिकेशन्स

761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611116, 27611349, फैक्स : 27611546

मोबाइल : 9868112194

ईमेल : manojpublications@vsnl.net

वेबसाइट : www.manojpublications.com

शोरूम :

मनोज पब्लिकेशन्स

1583-84, दरीबा कलां, चांदनी चौक, दिल्ली-6

फोन : 23262174, 23268216 मोबाइल : 9818753569

चेतावनी

प्रस्तुत पुस्तक में दी गई सामग्री का उद्देश्य विषय की जानकारी देना मात्र है। इसमें दिए गए साधनों या प्रक्रियाओं को देते समय काफी सावधानी बरती गई है, लेकिन फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि या कमी रह जाती है तो उसकी जिम्मेदारी लेखक-प्रकाशक व मुद्रक की कतई नहीं होगी। प्रयोगात्मक पक्ष का प्रयोग किसी अनुभवी व्यक्ति की देखरेख में करें।

किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का न्यायक्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

ISBN : 81-8133-096-X

संस्करण : 2004

मूल्य : 100/-

मुद्रक :

आदर्श प्रिण्टर्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

गायत्री मंत्र साधना व उपासना : *सी.एम. श्रीवास्तव*

भूमिका

मानव-जीवन में सजीवता का सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है—गतिशीलता। गतिशीलता का पर्याय है—सक्रियता। निष्क्रिय मनुष्य कुछ नहीं कर सकता, जबकि सक्रियता के माध्यम से चींटी जैसा लघु प्राणी भी ऊंची-से-ऊंची दीवार को सरलता से पार कर लेता है। व्यावहारिक जीवन में भी, जब तक शरीर सक्रिय है, तभी तक वह सार्थक है।

निष्क्रियता का दूसरा नाम मृत्यु है। मृत्यु दो प्रकार की होती है—वैचारिक और शारीरिक। वैचारिक मृत्यु से मनुष्य का शरीर स्पंदनशील तो रहता है, पर वह कोई कार्य, वार्ता, विचार नहीं कर पाता। अंततः उसकी स्थिति जीवित रहते हुए भी मृततुल्य हो जाती है। शारीरिक मृत्यु में स्नायविक क्रियाएं शांत हो जाती हैं, शरीर निस्पंद हो जाता है। श्वास, श्रवण, दृष्टि आदि के समस्त यंत्र (अंग-उपांग) जड़ हो जाते हैं। उनकी क्रियाएं, चेतना और संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है। ऐसी स्थिति में शरीर 'शव' हो जाता है। उसकी कोई उपादेयता नहीं रहती। उसे तुरंत अग्नि में जला दिया जाता है, जल में विसर्जित कर दिया जाता है या भूमि में दबा दिया जाता है।

सक्रियता को (वह चाहे वैचारिक हो अथवा शारीरिक) अक्षुण्ण और स्फूर्ति बनाए रखने के लिए इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। इच्छाशक्ति अदृश्य होते हुए भी एक ऐसा सकल माध्यम है, जिसके द्वारा कठिन-से-कठिन कार्य भी सरलता से संपन्न किया जा सकता है। प्रत्यक्ष देखा जाता है कि प्रत्येक मनुष्य की सफलता में उसकी इच्छाशक्ति अवश्य निहित रहती है। कुछ लोग भ्रमवश इच्छाशक्ति की प्रबलता को अहंकार कहने लगते हैं। यह उनकी सोच की संकीर्णता है। इच्छाशक्ति की गणना अहंकार में नहीं, आत्मबल में होती है। अहंकार और आत्मबल में बड़ा अंतर है। आत्मबल की प्रेरणा में सात्त्विक व राजसिक वृत्तियां सक्रिय होती हैं, जबकि अहंकार का जन्म और पोषण तामसिक वृत्तियों द्वारा होता है। इच्छाशक्ति से संपन्न व्यक्ति अपने सौभाग्य के निर्माता होते हैं, जबकि इसके अभाव में उन्हें दुर्भाग्य से आक्रांत होना पड़ता है।

पौराणिक मान्यतानुसार संसार में 84 लाख योनियां मानी गई हैं। मानव-

शरीर उन सबमें श्रेष्ठ कहा गया है। वस्तुतः है भी ऐसा ही, क्योंकि मनुष्य के पास तर्क और विवेक-शक्ति विशेष रूप से होती है। जबकि अन्य प्राणी केवल शारीरिक-शक्ति से युक्त होते हैं। मनुष्य अपने विवेक-बल से, अन्य समस्त प्राणियों को वशीभूत, पददलित करने की क्षमता रखता है।

मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। उसमें आत्मा नाम का जो तत्त्व है वह वस्तुतः उसी ब्रह्माण्ड नियंता परमात्मा का एक अंश है। इसीलिए उसमें (मनुष्य में) अपने पिता (परमात्मा या ईश्वर) की संपूर्ण शक्तियां और समस्त संभावनाएं अदृश्य रूप में व्याप्त हैं। करोड़ों यक्षपतियों (कुबेरों) और ऋषि-सिद्धियों के अगणित भंडार उसके रोम-रोम में समाहित हैं।

मनुष्य एक साधारण प्राणी नहीं, वरन् वह साक्षात् पारस पत्थर है, चिंतामणि है, कल्पवृक्ष है और देवताओं का देवता है, श्रेष्ठतम है; इंद्र उसके चरण पखारता है, वरुण उसे चंवर डुलाता है, सूर्य-चंद्र उसकी देहरी पर दीपक बनकर चमकते हैं। इस प्रकार मनुष्य महान गौरव का द्योतक है।

अब तक प्रत्येक व्यक्ति की समझ में आ गया होगा कि मानव-देह दुर्लभ है, अमूल्य है, अद्भुत शक्ति-संपन्न है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह लोकहित की कामना से, अपनी शक्ति-सामर्थ्य को समझे, आध्यात्मिक गायत्री मंत्र की साधना द्वारा ऐसा सहज रूप से संभव है। लेकिन देवी गायत्री की मंत्र-साधना और उपासना के लिए उसे अपनी सुप्त-शक्तियों को जागृत करके, साधना-पथ पर अग्रसर होना होगा।

सभी मंत्रों में गायत्री मंत्र का स्थान सर्वोच्च है। देवी गायत्री वेदजननी, पापनाशिनी है। तभी तो, ब्रह्मयज्ञ में दस बार गायत्री मंत्र जप लेने से ही वेदाधिकार प्राप्त हो जाता है, जिससे उपनयन संस्कार संपन्न होता है। ब्रह्महत्या आदि के प्रायश्चित में भी गायत्री मंत्र के जप की ही प्रधानता सिद्ध है। अन्य किन्हीं मंत्रों की इतनी महिमा नहीं जितनी गायत्री मंत्र की है। यह कहना भी अत्युक्ति नहीं होगी कि यदि मातृवत् रक्षा करने वाली कोई देवी है तो वो गायत्री ही है।

पूर्वकाल में जितने भी ऋषि-महर्षि हुए हैं, वे गायत्री के बल से ही अतुल तेजस्वी एवं प्रबल प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। महर्षि विश्वामित्र ने गायत्री की उपासना करके ही ब्रह्मबल को प्राप्त किया था। इसी बल के आधार पर उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा को भी ललकार दिया था। उन्होंने अपनी अलग ही सृष्टि रच दी थी। गायत्री को सभी वेदों तथा उपनिषदों का सारभूत माना गया है। कूर्मपुराण के अनुसार, *'गायत्री चैव वेदांश्च तुलया समतोलयत्। वेदा एकत्र सांगस्तु गायत्री चैकतः स्मृता॥'* अर्थात् गायत्री और सांगवेद दोनों को तराजू से तौलने पर गायत्री को ही श्रेष्ठता सिद्ध है।

गायत्री मंत्र के जप से मनुष्य का इहलोक तथा परलोक सुखमय व्यतीत होता है। गायत्री के संबंध में जितना भी लिखा जाए वह थोड़ा है। इसका विस्तृत वर्णन वेद, पुराण तथा स्मृति-ग्रंथों में विद्यमान है।

पुस्तक में गायत्री मंत्र की साधना एवं गायत्री उपासना के साथ-साथ गायत्री से संबंधित सभी विषयों को सविस्तार दिया गया है। पाठकजन इस पुस्तक से केवल ज्ञान ही प्राप्त न करेंगे, बल्कि लाभान्वित भी होंगे। इस पुस्तक को प्रकाशित करने का श्रेय 'मनोज पब्लिकेशन्स' के निदेशक श्री सावन गुप्ता को जाता है, विभिन्न विषयों की उच्चकोटि की पुस्तकों को प्रकाशित करने के अपने निश्चय पर वे अडिग हैं। मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं।

सी. एम. श्रीवास्तव

3192, ब्लॉक-के/3,
शास्त्री नगर, मेरठ।

अनुक्रम

१

गायत्री मंत्र की महत्ता

गायत्री मंत्र एक नव-जीवन प्रदायिनी प्रार्थना है। इस मंत्र की महत्ता भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमद्भगवत् गीता के इस कथन से ही सिद्ध होती है कि, 'मंत्रों में मैं गायत्री मंत्र हूं।' (*गायत्री छंदसामहम्*—10/35) गायत्री का अर्थ है, जो गाने वाले की रक्षा करे *(गायन्तं त्रायते इति गायत्री)*। अतः यह एक रक्षिका मंत्र है, जो मंत्र का विधिपूर्वक जप करने वाले की विपत्तियों, आपत्तियों एवं आधि-व्याधि से रक्षा करता है।

गायत्री मंत्र एक ऋग्वेदिक मंत्र है। यह मंत्र उतना ही पुरातन है, जितना ऋग्वेद। ऋग्वेद के काल-निर्धारण के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। किन्तु नक्षत्र-विषयक सूचनाओं तथा अन्य तथ्यात्मक सामग्री के आधार पर ऋग्वेद का काल कम-से-कम ईस्वी सन् से अनुमानतः चार हजार वर्ष पूर्व माना जाता है। अतः गायत्री मंत्र विगत छह हजार वर्षों से अपने उपासकों की रक्षा करता आ रहा है।

ऋग्वेद संहिता के तृतीय मंडल के 'अनेक देवता सूक्त' (सूक्त संख्या 62) की ऋचा 10 में सवितृ देवता से बुद्धि को प्रेरणा देने की प्रार्थना करने वाला एक मंत्र है, जिसे 'गायत्री मंत्र' कहा जाता है। उक्त ऋचा में यह मंत्र इस प्रकार है—

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्यधीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

इस ऋचा को यजुर्वेद संहिता के 36वें अध्याय में 'भूर्भुवः स्वः' जोड़कर उद्धृत किया गया है। प्रत्येक मंत्र के प्रारंभ में 'ॐ' का उच्चारण आवश्यक है, अतः यह मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥'

उत्तरकालीन वैदिक साहित्य में इस मंत्र को अनेक स्थानों पर उद्धृत किया गया है। इस मंत्र का जप संध्या-वंदन विधि में सूर्य-प्रार्थना के रूप में किया जाता है तथा बुद्धि एवं तेज प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र रूप-से भी इसका पाठ किया जाता है।

वेदोत्तर साहित्य में गायत्री मंत्र की प्रशंसा में इसे 'वेदमाता' एवं 'वेदोपास्या' कहा गया है। छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार सभी स्थावर-जंगम पदार्थ वेदमाता गायत्री की बहिरंग शक्ति के परिणाम हैं *(गायत्री या वा इदं सर्वं—3/12/1)।*

इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में गायत्री की सर्वरूपता प्रतिपादित की गई है (19/6/2) एवं ऐतरेय ब्राह्मण में तो गायत्री को साक्षात् ब्रह्म ही बतलाया गया है (*या गायत्री तद् ब्रह्मैव, ब्रह्म वै गायत्री*—3/3/34/3)।

बृहदारण्यक उपनिषद् में गायत्री मंत्र को सूर्यमंत्र (सावित्री) कहा गया है (5/14/5)। उपनिषदों की भांति पौराणिक साहित्य में भी गायत्री मंत्र का गुणगान अनेकत्र किया गया है। कुल पुराणों में तो इसका मानवीकरण कर गायत्री देवी के रूप में वर्णन किया गया है तथा इसे ब्रह्मदेव की एक शक्ति मानकर गायत्री और सरस्वती को एक ही माना गया है।

वराह पुराण में गायत्री की स्तुति में गायत्री को सरस्वती कहा गया है (*कमला-सनजे देवि सरस्वति नमोस्तु ते*—28/29)। मत्स्य पुराण में वर्णित कथा के अनुसार ब्रह्माजी के आधे स्त्री रूप भाग का नाम शतरूपा हुआ तथा शतरूपा ही सावित्री, सरस्वती, गायत्री एवं ब्राह्मणी नामों से जानी जाती है।

पद्म पुराण में गायत्री को ब्रह्माजी की पत्नी कहा गया है और इसका ध्यान इस प्रकार बताया गया है—

श्वेता त्वं श्वेतरूपासिशशांकेन समा मता।
विभ्रती विपुलावूरू कदलीगर्भ कोमलो॥
एणशृंग करे गृह्य पंकजं च सुनिर्मलम्।
वसाना वसने क्षोमे रक्ते चीद्भुतदर्शने॥

गायत्री मंत्र में उपासना, स्तुति, ध्यान एवं प्रार्थना आदि का समन्वय है। इसे निम्नांकित तीन भागों में विभक्त किया गया है—

- ॐ भूर्भुवः स्वः। (स्तुति)
- तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। (ध्यान)
- धियो यो नः प्रचोदयात्। (प्रार्थना)

स्तुति

ॐ भूः भुवः स्वः—सभी मंत्रों के उच्चारण के पहले 'ॐ' का उच्चारण करना चाहिए, क्योंकि 'ॐ' के प्रथम उच्चारण से मंत्र को मंत्रत्व प्राप्त होता है। माण्डूक्योपनिषद् में परब्रह्म परमात्मा के समग्र रूप का तत्त्व समझाने के लिए उनके चार पादों की कल्पना की गई है। नाम और नामी की एकता का प्रतिपादन करने के लिए प्रणव की अ, उ और म् इन तीन मात्राओं के साथ और मात्रा रहित

उसके अव्यक्त रूप के साथ परब्रह्म परमात्मा के एकेक पाद की समता दिखलाई गई है। इस प्रकार माण्डूक्योपनिषद् में कहा गया है कि 'ॐ' अक्षर ही पूर्णब्रह्म अविनाशी परमात्मा है। इस प्रकार केवल 'ॐ' का उच्चारण ही परमात्मा का स्तवन है।

इस मंत्र में 'ॐ' के पश्चात् सात व्याहृतियों में से प्रथम तीन का समावेश है। ये सात व्याहृतियां हैं—'भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः एवं सत्यम्।' इन सात में से तीन (भू, भुवः, स्वः) को इस मंत्र में जोड़ा गया है। भूः, भुवः एवं स्वः का अर्थ है—पृथ्वी, अंतरिक्ष एवं स्वर्ग। व्याहृति का कोशगत अर्थ है—उक्ति, उच्चारण, मंत्र।

मंत्र के पहले इनके उच्चारण से मंत्र की सामर्थ्य बढ़ती है। भूः, भुवः एवं स्वः को त्रिपदा गायत्री के बीजमंत्र के रूप में जाना जाता है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश—इन तीनों उत्पादक, पोषक व संहारक शक्तियों को भी भूः, भुवः तथा स्वः कहते हैं।

भूः, भुवः एवं स्वः ये व्याहृतियां यह प्रतिपादित करती हैं कि परब्रह्म परमात्मा की व्याप्ति तीनों लोकों में है तथा ऐसा कहकर उसकी स्तुति की गई है।

ध्यान

'तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि',—मंत्र के इस द्वितीय भाग में परब्रह्म परमात्मा के ध्यान का वर्णन किया गया है। मंत्र की उक्त पंक्ति के शब्दों का अर्थ इस प्रकार से है—

सवितु—मूल शब्द सवितृ है, जिसका अर्थ है सूर्य। लेकिन इस मंत्र के सवितु शब्द का एक विशेष अर्थ भी किया जाता है। वह अर्थ है—इस सारे विश्व की सृष्टि जिसके द्वारा होती है, यानी इस शब्द को 'परब्रह्म' का द्योतक माना जाता है।

देवस्य—देव शब्द दिव् धातु से बना है, जिसका अर्थ है, प्रकाशित करना यानी जो स्वयं प्रकाशमान है तथा इसलिए दूसरों को भी प्रकाश देता है; उसे 'देव' कहते हैं। 'सवितुः देव', अर्थात् वह परब्रह्म, जिसके कारण सारा विश्व प्रकाशित होता है।

तत्-तत्—यह सर्वनाम है, जिसका अर्थ है 'वह'। कुछ विद्वान् इसे 'सवितु' से जोड़ते हैं और कुछ 'भर्ग' से। यदि 'सवितु' से जोड़ें तो अर्थ होगा 'वह सवितु' और यदि 'भर्ग' से जोड़ें तो अर्थ होगा—'वह लोक विख्यात तेज।'

वरेण्यं भर्गः—इसका अर्थ है—'पूजनीय श्रेष्ठ तेज।'

धीमहि—इसका अर्थ है—'ध्यान करना' या 'आराधना करना।'

अतः 'तत्सवितुः वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि', का अर्थ हुआ वह परब्रह्म, जिसके कारण समस्त विश्व प्रकाशित है और जिसका तेज पूजनीय एवं श्रेष्ठ है; ऐसे परब्रह्म का ध्यान करता हूं।

प्रार्थना

धियो यो नः प्रचोदयात्—इसका अर्थ है—वे हमारी बुद्धि को प्रेरणा देवें। यानी वह परब्रह्म हमारा सही मार्ग-दर्शन करें। हमें सद्बुद्धि दें। ऋग्वेद में इस मंत्र के द्वारा सूर्य की उपासना की गई है, लेकिन कालांतर में इस मंत्र का व्यापक अर्थ में प्रयोग किया जाने लगा और 'सवितु' शब्द का अर्थ विश्व का आधार स्वरूप मूल तत्त्व या 'चैतन्य' किया जाने लगा। इस मंत्र का सर्वमान्य भावार्थ है, 'हे ईश्वर! सर्वश्रेष्ठ तेज स्वरूप! हम आपका ध्यान करते हैं। आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग एवं शुभ कार्यों के लिए प्रेरित करें।'

गायत्री मंत्र में कुल 24 अक्षर हैं तथा इन अक्षरों के रहस्य का उद्घाटन अनेक विद्वानों ने विविध प्रकार से किया है। किसी ने इन 24 अक्षरों को 24 ऋषियों का प्रतीक माना है, तो किसी ने इन्हें 24 छंदों का प्रतीक, तो किसी ने इन्हें 24 देवताओं का प्रतीक, तो किसी ने इन्हें 24 शक्तियों का प्रतीक माना है। किसी ने इन्हें 24 अलग-अलग तत्त्व, तो किसी ने इन्हें 24 मुद्राओं का प्रतीक माना है। इस प्रकार इस मंत्र का प्रत्येक अक्षर महामंडित किया गया है।

किन्तु इन 24 अक्षरों की जो वैज्ञानिक व्याख्या की गई है, उसके अनुसार ये अक्षर हमारे मस्तिष्क के मूल 24 ज्ञान-तंतुओं के प्रतिनिधि हैं। मानव-मस्तिष्क मन, ज्ञान, इंद्रियां तथा शरीर का नियंत्रक है। इस नियंत्रक केंद्र के मूल में 24 ज्ञान-तंतु हैं, जो शरीर की समस्त क्रियाओं का संचालन करते हैं। इस मंत्र के 24 अक्षरों का उच्चारण अपने स्वर-कंपन (वाइब्रेशन) से इन 24 ज्ञान-तंतुओं को प्रभावित करते हैं।

विधिपूर्वक गायत्री मंत्र का जप किया जाए, तो इसके अक्षरों की सूक्ष्म झंकार शरीर के 24 स्थानों में सुनाई देगी, जिससे ज्ञान-तंतुओं को शक्ति मिलेगी तथा वे सतत क्रियाशील रहेंगे। हमारे शरीर में ग्रंथियां, चक्र एवं यौगिक केंद्र होते हैं, जो सामान्यतः सुप्त रहते हैं।

गायत्री मंत्र का शब्द-संयोजन कुछ इस प्रकार से है कि इसके अक्षरों का उच्चारण इन सुप्त ग्रंथियों को जाग्रत कर देता है। ये ग्रंथियां ही हमारे शरीर के शक्ति-स्रोत हैं तथा इनके क्रियाशील होने पर साधक को शारीरिक एवं मानसिक शक्तियां प्राप्त हो सकती हैं। इस प्रकार गायत्री मंत्र हमारे शरीर की आंतरिक शक्ति को जगा देता है। अतः गत छह हजार वर्षों से सतत यह मंत्र साधकों का एक प्रिय मंत्र रहा है।

अग्नि पुराण में *'ऐहिकामुष्मिकं सर्व गायत्री जपतो भवेत्'* कहकर गायत्री मंत्र को सांसारिक एवं पारलौकिक लाभ प्रदान करने वाला मंत्र कहा गया है। गायत्री मंत्र का जाप प्रातः, मध्याह्न व संध्या तीनों समय करने से इसका अधिक लाभ होता है; क्योंकि सूर्य का तेज अपनी गति के अनुसार इन क्षणों में बुद्धि को सही दिशा देता है। वैसे गायत्री मंत्र का जाप किसी भी समय किया जा सकता है। लेकिन यदि सोने के समय, जागने के समय, भोजन से पहले और बाद में गायत्री मंत्र का जाप किया जाए तो यह मानवीय कल्याण के लिए अति उत्तम होता है। मन की चंचलता, अस्थिरता व व्याकुलता शांत करने में अत्यधिक सहायक सिद्ध होता है।

गायत्री मंत्र के उच्चारण से अनेक प्रकार के कंपन प्रकट होते हैं, जिनका अवचेतन मन तथा समस्त मस्तिष्क पर विलक्षण प्रभाव होते हैं, जो बुद्धि की स्मरण-शक्ति को तीव्र करते हैं तथा व्यक्ति को निर्भय बनाते हैं। गायत्री मंत्र के हरेक अक्षर से आध्यात्मिक व भौतिक शक्ति प्राप्त होती है और इसीलिए यह मंत्र इतना अधिक महत्त्वपूर्ण है।

❑❑

२

गायत्री मंत्र की महिमा

गायत्री मंत्र को समस्त मंत्रों में सर्वोच्च माना जाता है। गायत्री मंत्र एक ऐसी मूल कुंजी है जिसके माध्यम से गायत्री रहस्य को खोला जा सकता है। वह कुंजी है—गायत्री मंत्र का उत्कीलन। गायत्री मंत्र का जब तक उत्कीलन नहीं होता, तब तक हम चाहे बीस लाख बार गायत्री मंत्र जप लें, सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। गायत्री मंत्र अपने आपमें कीलित् मंत्र है। ब्रह्मा, वसिष्ठ तथा विश्वामित्र ने गायत्री मंत्र को शाप दिया, जिस कारण गायत्री मंत्र का कीलन हुआ। अत: गायत्री मंत्र के उत्कीलन से ही गायत्री रहस्य का अनावरण होता है। इसके पश्चात् ही गायत्री मंत्र के जप से साधक लाभ उठा सकता है। गायत्री अपने आपमें महाशक्ति है और यह अध्यात्म तथा मोक्ष की दायक देवी है।

गायत्री मंत्र की महिमा अकथनीय है। संसार की ऐसी कोई भी समस्या नहीं, जिसका समाधान यह मंत्र न कर सकता हो। यदि पूर्ण विधि-विधान के अनुसार इसका जप किया जाए, तो किसी भी कामना की पूर्ति हो सकती है। किन्तु आज के वातावरण में व्यक्ति को इतनी सुविधाएं, इतना अवकाश नहीं है कि वह प्राचीन ऋषियों की भांति तप कर सके। ऐसी स्थिति में यदि कोई व्यक्ति दैनिकचर्या के रूप में स्नानादि की निवृत्ति के पश्चात् पूजा के समय गायत्री मंत्र का थोड़ी देर तक नियमित रूप-से जाप करता रहे, तीन, पांच या सात अथवा ग्यारह माला, जितना भी संभव हो, प्रतिदिन फेरता रहे तो उसे गायत्री मंत्र का प्रभाव अवश्य ही देखने को मिल जाएगा।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

विधि

स्नान करके किसी शुद्ध एकांत स्थान में गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए। जप प्रारंभ करने के पूर्व देवी गायत्री की मूर्ति या चित्र की धूप, दीप, अक्षत, पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए। पूजनोपरांत शिखा में गांठ लगाकर (अथवा सिर पर

रूमाल आदि स्वच्छ कपड़ा रखकर), स्थिर चित्त से बैठ जाएं और आचमन करके मंत्र-जाप प्रारंभ कर दें। जप की गति सामान्य और शब्दों का उच्चारण (मौन) शुद्ध होना चाहिए। जप समाप्त होने के पश्चात् देवी के चित्र को प्रणाम करते हुए, अपनी त्रुटियों की क्षमा-याचना करना भी आवश्यक होता है। जप के समय रुद्राक्ष की माला का उपयोग किया जा सकता है।

नोट—सामान्य रूप-से दैनिक पूजन के रूप में जप करना सरल है, किन्तु यदि किसी विशेष प्रयोजन से, अनुष्ठान के रूप में गायत्री-साधना की जाती है, तब साधक को संयम-नियम के प्रति विशेषतः सतर्क रहना पड़ता है।

गायत्री-साधना के नियम तथा वर्जनाएं

साधना का अर्थ ही है साधन, साधक और साध्य का तादात्म्य। इसी तादात्म्य को स्थापित करने के लिए शास्त्रों में कुछ विशिष्ट निषिद्ध व विहित होता है। नीचे उन्हीं की चर्चा की जा रही है—

ब्रह्मचर्य

गायत्री-साधना के दिनों में साधक को पूर्णरूपेण ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करना अनिवार्य है। मन, वाणी, विचार और क्रिया, सभी की ओर सजग रहना चाहिए ताकि जाने-अनजाने कहीं ऐसी स्थिति न आ जाए जो तपस्या को भंग कर दे। वैसे भी ब्रह्मचर्य प्रत्येक पूजा-अनुष्ठान का प्रथम नियम है।

उपवास

जिस समय गायत्री मंत्र का अनुष्ठान चल रहा हो, उतने समय के लिए अन्न का त्याग करके उपवास करने से आध्यात्मिक शक्ति और तेजस्विता में वृद्धि होती है। निराहार रहना तो संभव नहीं है, किन्तु फलाहार के द्वारा शरीर को सतेज रखा जा सकता है। उपवास के दिनों में दूध, दही, फल, शर्बत, नीबू का पानी जैसे पदार्थ लिए जा सकते हैं। यदि अन्न का त्याग संभव न हो तो एक समय अन्न और एक समय दूध-फल पर रहना चाहिए। अन्न का भोजन सादा, सात्त्विक, हल्का और सुपाच्य होना चाहिए। पेट भर हलवा-पूड़ी, चाट-मसाले और अचार खाकर साधना नहीं की जा सकती, क्योंकि गरिष्ठ पदार्थ शरीर में आलस्य उत्पन्न करते हैं।

मौन

अधिक बोलने से शरीर के कई अंग—जिह्वा, मस्तिष्क, फेफड़ा, हृदय और स्नायु-तंतु—शिथिल हो जाते हैं। जप के दिनों में कम-से-कम बोलना चाहिए। यथासंभव मौन रहकर ईश्वर चिंतन अथवा स्वाध्याय करते रहने से ज्ञान, स्मरणशक्ति और तेजस्विता की वृद्धि होती है। वैसे भी तपस्यारत व्यक्ति को अधिक लोगों के संपर्क में नहीं आना चाहिए, कारण कि उनकी बातचीत का प्रभाव साधक की मानसिक पवित्रता को खंडित कर सकता है।

तितिक्षा

इसका अर्थ है—सहिष्णुता! सहिष्णुता के लिए सादगी और धैर्य की आवश्यकता होती है। तितिक्षावृत्ति के प्रभाव से साधक को साधनाकाल में किसी प्रकार की प्राकृतिक बाधा विचलित नहीं कर पाती। सहिष्णुता के प्रभाव से वह सर्दी-गर्मी का अभ्यासी हो जाता है, अतः पूरी तन्मयता से साधना करता रहता है। यदि सहिष्णुता नहीं है, साधक थोड़ी-थोड़ी देर में आकुल होता है। तब वह साधना नहीं कर सकता। धैर्य और मनोयोग के लिए तितिक्षावृत्ति का होना आवश्यक है।

कर्षण साधना

यह भी तितिक्षा का ही रूप है। भोजन, वस्त्र, आसन, व्यसन, सवारी, निद्रा आदि का परित्याग करके कम-से-कम उपयोग करना चाहिए। इससे मानसिक शांति बढ़ती है, उद्वेग नष्ट होता है और अभावजन्य पीड़ा नहीं होती।

चांद्रायण व्रत

चंद्रकला के अनुपात से साधक को अपनी साधना बढ़ाते हुए, त्याग-तितिक्षा के आधार पर अधिक-से-अधिक संयमी, त्यागी और सहिष्णु बनना पड़ता है।

निष्कासन

इसका अर्थ है निकालना अर्थात् त्यागना, बहिष्कार करना! तात्पर्य यह है कि साधनाकाल में साधक अहंकार से सर्वथा मुक्त होकर, दुष्प्रवृत्तियों को त्याग कर अपने अपराधों को स्वीकार करते हुए उनका प्रायश्चित करे। समस्त प्रकार की मनोव्याधियों—ईर्ष्या-द्वेष, काम-क्रोध और छल-कपट, अहम्-दंभ आदि से अपने को सर्वथा मुक्त कर ले अर्थात् साधक को भीतर-बाहर दोनों रूपों में शुद्ध, पवित्र और निष्कलुष होना चाहिए।

दान

अनुष्ठानकाल में साधक को चाहिए कि वह कुछ दान-पुण्य भी करे। दान का मूल करुणा है। यदि करुणा के परिणामस्वरूप दान दिया जाता है, तो वह सहज होता है। उसमें अहं की मात्रा भी नहीं होती। अहंकार के बिना दिया गया दान सात्विक कहलाता है। साधक में यही दान परिष्कार करता है। करुणा का संचार यदि साधक में हो गया तो उसे स्वयं में उपलब्धि माननी चाहिए।

गायत्री मंत्र से कामना-पूर्ति

इस मंत्र में स्पष्ट रूप से बुद्धि की याचना की गई है। बुद्धि से ही प्रत्येक कार्य सधता है—वह इहलोक का हो या परलोक का। कैसे साधें इसे, इसकी विभिन्न संदर्भों में जानकारी दी जा रही है।

ग्रह-शांति के लिए

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जीवन आकाश में नवग्रहों की स्थिति से प्रभावित रहता है। ज्योतिषी लोग कुंडली बनाकर बता देते हैं कि अमुक व्यक्ति के जन्म के समय कौन-सा ग्रह किस स्थिति में था, राशि और लग्न कैसी थी, इन सबका प्रभाव उस व्यक्ति के जीवन पर कैसा पड़ेगा।

कभी-कभी किसी ग्रह की स्थिति व्यक्ति के लिए बहुत कष्टप्रद हो जाती है। ऐसी स्थिति में ज्योतिषशास्त्र के विद्वान उस व्यक्ति को कोई रत्न-विशेष पहनने का परामर्श देते हैं। कारण कि भौतिक विज्ञान ने भी स्वीकार किया है कि रत्नों में ग्रहों के प्रभाव को घटाने-बढ़ाने की क्षमता होती है। किन्तु रत्न का प्रभाव तभी प्रत्यक्ष होता है, जबकि रत्न असली हो। आज के युग में जहां सीमेंट, चूना और मिट्टी तक शुद्ध न मिले वहां रत्न का असली होना बहुत दूर की बात है। ऐसी स्थिति में मंत्रों का अवलंबन लेकर व्यक्ति रत्नों के अभाव की पूर्ति कर सकता है।

यदि किसी को ग्रहपीड़ा हो, कोई ग्रह कष्ट दे रहा हो तो उसकी शांति के लिए गायत्री साधना एक अचूक उपाय है। शुभ समय में, एकांत, स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर गायत्री मंत्र का 24 हजार बार जप करके 24 सौ हवन कर देने से ग्रहपीड़ा की शांति हो जाती है।

सुरक्षा कवच

किसी शुभ तिथि, नक्षत्र में रविवार के दिन साधक को चाहिए कि उपवास करे। पहले से गोरोचन, जायफल, जावित्री, कस्तूरी और केसर लाकर रख लें। रविवार को उपवास वाले दिन इन वस्तुओं की स्याही बनाकर, भोजपत्र पर दाड़िम (अनार) की कलम से प्रारंभ में पांच बार 'ॐ' जोड़कर पूरा गायत्री मंत्र लिखें। फिर धूप, दीप, अक्षत, पुष्प से पूजा कर, 21 बार गुग्गल से हवन करें। तत्पश्चात् इस मंत्र को गायत्री देवी की प्रतिमा से स्पर्श कराकर, किसी चांदी के कवच में बंद कर लें। यह परम प्रतापी गायत्री कवच अनेक संकटों से धारक की रक्षा करता है। भूत-प्रेत, चोर-डाकू, राजकोप, आशंका, भय, अकालमृत्यु, रोग और अन्य अनेक प्रकार की बाधाओं का निवारण करके यह मंत्र (कवच) धारक को सदैव तेजस्वी बनाए रखता है।

स्मरणशक्ति (बुद्धि) बढ़ाने के लिए

नित्य प्रात:काल स्नानोपरांत सूर्याभिमुख होकर बैठें। माथा भीगा रहना चाहिए और आंखें अधखुली रहें। तीन बार ओंकार का उच्चारण करके गायत्री मंत्र का जप प्रारंभ करें। एक से लेकर ग्यारह माला तक, जितनी भी सुविधा हो, जप करें। फिर मंत्र पढ़ते हुए दोनों हथेलियां परस्पर रगड़कर माथे, सिर, आंखों, नाक, कान, गले और मुंह आदि पर फेरें। इस क्रिया के प्रभाव स्वरूप ज्ञानतंतु सतेज और सक्रिय हो जाते हैं। स्मरणशक्ति बढ़ जाती है, बुद्धि प्रखर होती हैं।

पुत्र-प्राप्ति हेतु

जिन दंपत्ति को पुत्र की कामना हो, उन्हें चाहिए कि श्वेत वस्त्राभूषणों वाली देवी गायत्री का चित्र लाकर उसे कहीं एकांत में स्थापित करें। पति-पत्नी दोनों नियमित रूप-से स्नानोपरांत शुद्ध-स्वच्छ वस्त्र पहनकर गायत्री मंत्र का जप करें। जप में माला चंदन की होनी चाहिए। मंत्रोच्चार में प्रत्येक बार मंत्र की समाप्ति पर तीन बार 'यं' बीज का संपुट देना आवश्यक है। रविवार को श्वेत पदार्थ का (दूध, दही, भात) भोजन करना चाहिए। यदि प्राणायाम किया जा सके तो अति उत्तम है। इस साधना का प्रभाव दंपति को पुत्र-सुख प्रदान करता है।

शत्रुता निवारण हेतु

शत्रु को मित्र बनाने के लिए गायत्री मंत्र का जप अमोघ प्रभाव रखता है। साधना के लिए ऊनी आसन का प्रयोग करें। स्वयं लाल वस्त्र पहनें। लाल चंदन की स्याही से, दाड़िम की कलम द्वारा, पीपल के एक पत्ते पर शत्रु का नाम लिखें। फिर उसे उलटकर सामने रख लें और गायत्री मंत्र का जाप प्रारंभ करें। प्रत्येक बार मंत्र के अंत में 'क्लीं' शब्द का चार बार उच्चारण करते रहें और आचमनी से थोड़ा-सा जल उस पत्ते पर छिड़कते रहें।

मन में यह कल्पना करें कि शत्रु सारा वैर-भाव भूलकर मित्रभाव से सामने खड़ा है। जाप के समय गायत्रीजी का सिंहवाहिनी के रूप में स्मरण करें। जप के लिए लाल चंदन की माला प्रयोग करनी चाहिए। कम-से-कम एक माला का नित्य जाप किया जाए। इस क्रिया से थोड़े ही दिनों में शत्रु का व्यवहार बदल जाएगा। वह सारा वैमनस्य भूलकर अनुकूल हो जाएगा।

विरोध/ विद्रोह शमन के लिए

प्रारंभ में तीन बार 'ॐ' का प्रयोग करते हुए लगातार कुछ दिनों तक गायत्री मंत्र का जाप करें। मन में ऐसी कल्पना हो कि मेरे मस्तिष्क से एक नीली किरण निकलकर विरोधी के मन में प्रवेश कर रही है और उसके प्रभाव से वह सारा वैर-विरोध भूलकर, मेरे सामने सहज विनम्र भाव से खड़ा है। थोड़े ही दिनों तक लगातार किया गया यह गायत्री मंत्र का जप (इसमें प्रणव शब्द 'ॐ' लगाना न भूलें) विरोधी को अनुकूल बना देता है। सम्मोहन और आकर्षण का यह प्रभाव अनेक व्याधियों द्वारा परखा गया है।

चोर/ दस्यु आदि से त्राण हेतु

नित्य प्रातः शुद्ध होकर इस भावना के साथ कि मेरे निवास-स्थान के चारों ओर वृत्ताकार रेखा खिंची हुई है, उसे लांघकर कोई भीतर नहीं आ सकता। साथ ही सिंहारूढ़ दुर्गाजी का ध्यान करते हुए एक माला प्रतिदिन गायत्री मंत्र का जाप (जप) करें। इससे चोर, डाकू जैसे लोगों की मकान में प्रवेश की आशंका समाप्त

हो जाती है। रात्रि में सोते समय भी रक्षा के निमित्त गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए।

भूत-प्रेत बाधा दूर करने के लिए

गायत्री मंत्र का जाप करते हुए हवन किया जाए। हवन-सामग्री में वो ही सामान्य वस्तुएं होती हैं जो साधारण हवन में डाली जाती हैं। हवन पूरा हो जाने पर यज्ञकुंड की भस्म रोगी के शरीर (हाथ, पैर, मुंह, नाक, कान, सिर, पेट, पीठ) पर लगाएं। भस्म लगाते समय भी गायत्री मंत्र पढ़ते जाएं। पांच, सात या ग्यारह बार के इस प्रयोग से ही समस्त भूत-प्रेत बाधा हट जाती है।

विष निवारण हेतु

पीपल या चंदन की लकड़ी से बनी हवन-भस्म को उस हाथ में लें, जिधर का स्वर चल रहा हो। फिर गायत्री मंत्र पढ़ते हुए (अंत में 'हुं' शब्द जोड़कर) अश्वारूढ़ देवी का ध्यान करें और वह भस्म पीड़ित व्यक्ति के उस अंग पर लगा दें, जहां विषैले जंतु ने काटा हो (सर्प-दंश के रोगी पर चंदन की हवन-भस्म को गायत्री मंत्र से अभिषिक्त करके लगाएं)। साथ ही सरसों के कुछ दाने भी मंत्राभिषिक्त करके पीसें और उसे शरीर में, समस्त इंद्रियों के अग्रिम भाग पर लगा दें। यह विष-शमन का उत्तम प्रयोग है।

सरकारी कार्यों में सफलता हेतु

मुकदमा या ऐसी ही कोई दूसरी समस्या हो, जहां किसी राजकीय कर्मचारी, अधिकारी से आपका काम बनता हो, तो उसे अपने अनुकूल करने लिए गायत्री मंत्र का जाप सप्त व्याहृतियों सहित करें। जपकाल में इस बात का ध्यान रखें कि यदि उस समय आपका बायां स्वर चल रहा है, तो कल्पना में देवी के शरीर से निकल रही हरे रंग की ज्योति को देखें और जब दाहिना स्वर चलने लगे तो पीली ज्योति की कल्पना करें। जप करते समय दृष्टि उसी अंगूठे (हाथ का अंगूठा) पर केंद्रित करें, जो स्वर चल रहा हो—बाएं स्वर के समय बायां अंगूठा और दाहिने के समय दायां। संबंधित अधिकारी के पास जाते समय भी स्वर और अंगूठे का क्रम ध्यान में रखते हुए, मानसिक जप करते रहें। इस क्रिया के प्रभाव से उस अधिकारी की सहानुभूति आपकी ओर हो जाएगी।

प्रसव कष्ट निवारण के लिए

कांसे की थाली में गायत्री मंत्र लिखकर धूप, दीप, हवन द्वारा पूजित करके रख लें। यदि घर में किसी स्त्री को प्रसव-पीड़ा है, तो उसे इस मंत्रयुक्त थाली का दर्शन कराएं, फिर गायत्री मंत्र पढ़कर, थाली में थोड़ा जल डालें और उस स्त्री को पिला दें। इसके प्रभाव से उसका कष्ट दूर हो जाएगा।

लक्ष्मी-प्राप्ति हेतु

गायत्री मंत्र का विधिपूर्वक नियमित जाप करें और मंत्र के अंत में तीन बार 'श्रीं' शब्द भी जोड़ते रहें। इस साधना में समस्त पूजन-सामग्री पीले रंग की होनी चाहिए। भोजन भी पीला ही रहे। रविवार को उपवास करें और शुक्रवार को हल्दी मिश्रित तेल की मालिश पूरे शरीर पर करें। तदोपरांत आस्थापूर्वक श्रीलक्ष्मीजी का आवाहन करते हुए, दैनिक रूप में कुछ दिनों तक यह साधना करते रहने से चमत्कारी प्रभाव दिखाई देता है। मंत्र का उच्चारण इस प्रकार होगा—

ॐ
भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् श्रीं श्रीं श्रीं।

गायत्री मंत्र बहुत ही सरल, सात्त्विक, सर्वत्र प्रभावी, समर्थ और सहज-साध्य है। तन, मन, धन के संकटों को दूर करके सुख-शांति प्रदान करने में यह मंत्र अद्वितीय है।

❑❑

३

शाप-निवृत्ति का उपाय

ब्रह्मा, विश्वामित्र तथा वसिष्ठ ने गायत्री मंत्र को शाप दिया है, एतदर्थ शाप-निवृत्ति के लिए निम्नलिखित शाप-विमोचन करना चाहिए—

ब्रह्मशापविमोचनम् :

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीब्रह्मशाप-विमोचन-मन्त्रस्य निग्रहाऽनुग्रहकर्ता प्रजापतिर्ऋषि:, कामदुधा गायत्रीच्छन्द:, ॐ ब्रह्मशापविमोचन-गायत्रीशक्तिर्देवता, ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनियोग: ।

दाहिने हाथ में जल लेकर, 'ॐ अस्य श्री ब्रह्माशापविमोचनमंत्रस्य' से आरंभ कर, 'जपे विनियोग:' तक मंत्र पढ़कर भूमि पर जल छोड़ें।

मन्त्र—सवितु: ब्रह्मोमेत्युपासनात् तत्तद्ब्रह्मविदो विदुस्तां प्रयतन्ति धीरा: । सुमनसा वाचा ममाऽग्रत: । ॐ देवि गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद् विमुक्ता भव।

विनियोग करने के बाद, 'सवितु: ब्रह्मोमेत्युपासनात्' से लेकर, 'विमुक्ता भव' यहां तक के मंत्र का उच्चारण करें।

विश्वामित्रशापविमोचनम् :

विश्वामित्र के शाप विमोचन के लिए निम्नलिखित विनियोगपूर्वक मंत्र का उच्चारण करना चाहिए—

विनियोग:—ॐ विश्वामित्र-शापविमोचन-मन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र-ऋषि:, वाग्देहा गायत्रीच्छन्द:, भुक्तिमुक्तिप्रदा विश्वामित्रानुग्रहीता गायत्रीशक्ति:, सविता देवता, विश्वामित्रशापविमोचनार्थे जपे विनियोग: ।

हाथ में जल लेकर, 'ॐ विश्वामित्रशापविमोचन मंत्रस्य' से प्रारंभ कर, 'जपे विनियोग:' तक मंत्र पढ़कर भूमि पर जल छोड़ें।

मन्त्र:—तत्त्वानि चाङ्गेष्वग्निचितो धियांस: त्रिगर्भां यदुद्भावां देवाश्चोचिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये यन्मुखात्रि: सृतो वेदगर्भ: । ॐ गायत्रि! त्वं विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।

'तत्त्वानि' से आरंभ कर, 'विमुक्ता भव' तक मंत्र का उच्चारण करें।

वसिष्ठशापविमोचनम् :

वसिष्ठ के शाप-विमोचन के लिए विनियोग तथा मंत्र निम्नलिखित हैं—

विनियोग:—ॐ वसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य वसिष्ठऋषि:, विश्वोद्भवो गायत्रीच्छन्द:, वसिष्ठानुग्रहीता, गायत्रीशक्तिर्देवता, वसिष्ठशापविमोचनार्थे जपे विनियोग: ।

दाहिने हाथ में जल लेकर, 'ॐ वसिष्ठाशाप विमोचन' से आरंभ कर, 'जपे विनियोग:' तक मंत्र पढ़कर जल छोड़ें।

मन्त्र:—तत्त्वानि चाङ्गेष्वग्निचितो धियांस: ध्यायन्ति विष्णोरायुधानि बिभ्रत्। जनानता सोपरमं च शश्वत्। गायत्री मासाच्छुरनुत्तमं च धाम। ॐ गायत्रि! त्वं वसिष्ठशापाद् विमुक्ता भव।

विनियोग के पश्चात् 'तत्त्वानि' से आरंभ कर, 'विमुक्ता भव' तक मंत्र का शुद्धता के साथ उच्चारण करें।

प्रार्थना

सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्क: ज्योतिरहं शिव:।
आत्मज्योतिरहं शुक्लं शुक्लं ज्योतिरसोऽहमोम्॥
अहो विष्णुमहेशेशे दिव्ये सिद्धिसरस्वति।
अजरे अमरे चैव दिव्ययोने नमोऽस्तु ते॥

तदन्तर, 'सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्क:' से आरंभ कर, 'दिव्ययोने नमोऽस्तु ते' तक प्रार्थना मंत्र पढ़कर गायत्री को नमस्कार करें।

गायत्री ध्यानम् :

यद्देवाऽसुरपूजितं परतरं सामर्थ्यतारात्मकं।
पुन्नागाऽम्बुज पुष्प नाग बकुलै:केशै: शुकैरर्चितम्।
नित्यं ध्यानसमस्त दीप्तिकरणं कालाग्निरुद्दीपनं।
तत्संहारकरं नमामि सततं पातालसंस्थं मुखम्॥

उपरोक्त श्लोक पढ़कर तेज:स्वरूपा देवी गायत्री का ध्यान करें।

❑❑

४

गायत्री मंत्र साधना

गायत्री मंत्र की साधना से साधक को इच्छित फल की प्राप्ति तथा समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। संसार का कोई भी मंत्र गायत्री मंत्र जितना प्रभावी नहीं है। इसका प्रभाव अद्वितीय है। इसके जपने से इहलौकिक तथा पारलौकिक सुख की प्राप्ति होती है। गायत्री मंत्र की साधना और उपासना शीघ्र फल प्रदान करती है।

अथ वेदादिगीतायाः प्रसादजननं विधिम्।
गायत्र्याः सम्प्रवक्ष्यामि धर्माऽर्थकाम मोक्षदम्॥

वेद आदि में कहे गए गायत्री की प्रसन्नता की विधि कहता हूं जिससे मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है।

नित्य नैमित्तिके काम्ये तृतीये तपवर्द्धने।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति इह लोके परत्र च॥

नित्य-नैमित्तिक, काम्य-कर्मों में तथा तप की वृद्धि के लिए गायत्री से बढ़कर इस लोक तथा परलोक में और कोई दूसरा देवता नहीं है।

मध्याह्ने मितभुङ् मौनी त्रिस्थानार्चनतत्परः।
जपेल्लक्षत्रयं धीमान् नाऽन्यमानसकस्तु यः॥

मध्याह्न में थोड़ा भोजन करें, मौन होकर त्रिकाल भगवती गायत्री का पूजन करें तथा गायत्री का ध्यान करते हुए अपनी इष्ट सिद्धि के लिए गायत्री का एक लाख जाप करना चाहिए।

कर्मभिर्यो जपेत् पश्चात् क्रमशः स्वेच्छयाऽपि वा।
यावत्कार्यं न कुर्वीत न लोपेत् तावता व्रतम्॥

कर्म करते हुए किसी कामना से अथवा स्वेच्छा से गायत्री का जप करना चाहिए। किन्तु जब तक कार्य की सिद्धि न हो, तब तक गायत्री का निरंतर जप करना चाहिए। क्रिया तथा व्रत का लोप नहीं करना चाहिए।

आदित्यस्योदये स्नात्वा सहस्त्रं प्रत्यहं जपेत्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं धनं च लभते ध्रुवम्॥

सूर्योदय के पहले, स्नान कर, प्रतिदिन सहस्त्र गायत्री का जप करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य को आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य एवं धन की प्राप्ति निश्चित होती है।

त्रिरात्रोपोषितः सम्यग् घृतं हुत्वा सहस्त्रशः।
सहस्त्रं लाभमाप्नोति हुत्वाऽग्नौ खदिरेन्धनम्॥

तीन रात उपवास कर, खैर की लकड़ी को घृत में डुबोकर उससे हवन करें, तो मनुष्य को सहस्त्रों का लाभ होता है।

पालाशैः समिधैश्चैव घृताक्तानां हुताशने।
सहस्त्रं लाभमाप्नोति राहु सूर्य समागमे॥

पलाश की समिधा (लकड़ी) घृत (घी) में डुबोकर सूर्यग्रहण के समय गायत्री मंत्र से एक हजार हवन करें तो अवश्य ही सहस्त्रों का लाभ होता है।

हुत्वा तु खदिरं वह्नौ घृताक्तं रक्तचन्दनम्।
सहस्त्रहेममाप्नोति राहुचन्द्रसमागमे॥

खैर की लकड़ी एवं लाल चंदन को घृत में डुबोकर चंद्रग्रहण में गायत्री मंत्र से एक सहस्त्र हवन करें तो सोने की प्राप्ति होती है।

रक्तचन्दनमिश्रं तु सघृतं हव्यवाहने।
हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्त्रं गोमयं द्विजः॥

रक्त चंदन से मिला हुआ घृतयुक्त गाय का कण्डा गायत्री मंत्र से जो ब्राह्मण अग्नि में हवन करता है उसे हजारों गोमय (रत्न विशेष) की प्राप्ति होती है।

जाती चम्पक राजार्क कुसुमानां सहस्त्रशः।
हुत्वा वस्त्रमवाप्नोति घृताक्तानां हुताशने॥

मालती, चंपा तथा राजार्क (मंदार) के पुष्पों को घी में डुबोकर गायत्री मंत्र से अग्नि में हवन करें, तो विविध वस्त्रों की प्राप्ति होती है।

सूर्यमण्डलबिम्बे च हुत्वा तोयं सहस्त्रशः।
सहस्त्रं प्राप्नुयाद्धैमं रौप्यमिन्दुमये हुते॥

सूर्यमण्डल बिम्ब में गायत्री के द्वारा जल से प्रतिदिन एक हजार अर्घ्य दान करें, तो सुवर्ण तथा चंद्रमण्डल में गायत्री के द्वारा प्रतिदिन जल से अर्घ्य दान करने पर चांदी की प्राप्ति होती है।

अलक्ष्मीपापसंयुक्ते मलव्याधिविनाशके।
मुच्येत् सहस्त्रजाप्येन स्नायाद् यस्तु जलेन वै॥

दरिद्रता, पाप, अशान्ति तथा व्याधि के विनाश के लिए प्रतिदिन एक हजार गायत्री के मंत्र से अभिमंत्रित जल से स्नान करें।

गोघृतेन सहस्त्रेण लोध्रेण जुहुयाद् यदि।
चोराऽग्नि मारुतोत्थानि भयानि न भवन्ति हि॥

लोध्र का पुष्प गाय के घी के साथ गायत्री मंत्र से प्रतिदिन एक हजार अग्नि

में हवन करें तो चोर, अग्नि तथा वायु से उत्पन्न होने वाले कोई उपद्रव नहीं होते, यह निश्चित है।

क्षीराहारो जपेल्लक्षमपमृत्युमपोहति।
घृताशी प्राप्नुयान्मेधां बहुविज्ञान सञ्चयाम्॥

यदि मनुष्य दूध पीकर एक लाख गायत्री का जप करे तो निश्चय ही उसकी अपमृत्यु (अकालमृत्यु) नहीं होती। घी पीकर लक्ष गायत्री का जप करने वाले ब्राह्मण की बुद्धि अत्यंत तीव्र हो जाती है और वह अनेक विशिष्ट ज्ञान से युक्त हो जाता है।

हुत्वा वेतसपत्राणि घृताक्तानि हुताशने।
लक्षाधिपस्य पदवीं सार्वभौमं न संशयः॥

बेंत के पत्ते को घी के साथ गायत्री मंत्र से अग्नि में हवन करने से निश्चय ही मनुष्य लखपति तथा सार्वभौम हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है।

लक्षेण भस्महोमस्य हुत्वा ह्युतिष्ठते जलात्।
आदित्याभिमुखं स्थित्वा नाभिमात्रजले शुचौ॥
गर्भपातादि प्रदराश्चाऽन्ये स्त्रीणां महारुजः।
नाशमेष्यन्ति ते सर्वे मृतवत्सादि दुःखदाः॥

जो ग्रीष्मऋतु में नाभिमात्र जल में स्थित होकर गायत्री मंत्र के द्वारा एक लाख भस्म की आहुति देता है, पुनः जल के बाहर होकर गायत्री मंत्र के द्वारा सूर्य का उपस्थान करता है, तो उसके प्रभाव से गर्भपात, प्रदररोग तथा मृतवत्सा आदि दुःख देने वाले स्त्रियों के सारे दोष निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। उत्पन्न हुए पुत्रों का बालपन में मर जाना ही 'मृतवत्सा' कहलाता है।

तिलानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने।
सर्वकामसमृद्धात्मा परं स्थानमवाप्नुयात्॥

घृत में तिल को मलकर गायत्री मंत्र के द्वारा अग्नि में एक लाख आहुति करने से मनुष्य की सारी कामनाओं की पूर्ति हो जाती है और उत्तम लोक की प्राप्ति होती है।

यवानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने।
सर्वकामसमृद्धात्मा परां सिद्धिमवाप्नुयात्॥

इसी प्रकार यव को घी से संयुक्त कर गायत्री मंत्र से अग्नि में एक लाख हवन करने से मनुष्य की सारी कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं तथा उसको सब प्रकार की सिद्धि मिलती है।

घृतास्याहुतिलक्षेण सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
पञ्चगव्याशनो लक्षं जपेज्जातिस्मृतिर्भवेत्॥

केवल घी से गायत्री मंत्र के द्वारा एक लाख आहुति देने से सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं तथा पंचगव्य पीकर एक लाख गायत्री के जप से मनुष्य को जन्मान्तर का स्मरण हो जाता है।

तदेव ह्यनले हुत्वा प्राप्नोति बहुसाधनम्।
अन्नादि-हवनान्नित्यमन्नाद्यं च भवेत् सदा॥

पंचगव्य का एक लाख हवन करने से सब प्रकार के साधन प्राप्त हो जाते हैं तथा नित्य अन्न आदि के हवन से अन्न आदि की प्राप्ति होती है।

जुहुयात् सर्वसाध्यानामाहुत्यायुतसङ्ख्यया।
रक्तसिद्धार्थकान् हुत्वा सर्वान् साधयते रिपून्॥

दस हजार गायत्री मंत्र के द्वारा रक्त सिद्धार्थक (लाल सरसों) का हवन करने से सभी शत्रु वश में हो जाते हैं।

लवणं मधुसंयुक्तं हुत्वा सर्ववशी भवेत्।
हुत्वा तु करवीराणि रक्तानि ज्वालयेज्ज्वरम्॥

मधु (शहद) से युक्त सेंधा नमक से, दस हजार गायत्री मंत्र द्वारा हवन करने से सब मनुष्य के वश में हो जाते हैं। लाल करवीर (कनइल) पुष्प के हवन करने से सभी प्रकार के ज्वरों का नाश होता है।

हुत्वा भिल्लातकं तैलं देशादेव प्रचालयेत्।
हुत्वा तु निम्बपत्राणि विद्वेषशान्तये नृणाम्॥

गायत्री मंत्र के द्वारा भिल्लातक (लोध) के तेल का एक लाख हवन करने से मनुष्य अपने शत्रु को देश से भगा देता है तथा उसकी उतनी ही संख्या में निम्ब के पत्र का हवन करने से शत्रु आदि से द्वेष समाप्त हो जाता है।

रक्तानां तन्दुलानां च घृताक्तानां हुताशने।
हुत्वा बलमवाप्नोति शत्रुभिर्न स जीयते॥

लाल चावल (साठी के चावल) घी में आर्द्र कर एक लाख हवन करने से मनुष्य बलवान् होता है तथा उसका शत्रु उसे कभी पराजित नहीं कर सकता।

प्रत्यानयनसिद्ध्यर्थं मधुसर्पिः समन्वितम्।
गवां क्षीरं प्रदीप्तेऽग्नौ जुह्वतस्तत्प्रशाम्यति॥

गाय का दूध, मधु तथा घी मिलाकर एक लाख गायत्री मंत्र के द्वारा हवन करने से विदेश गया हुआ आदमी अपने घर लौट आता है।

ब्रह्मचारी जिताहारो यः सहस्त्रत्रयं जपेत्।
संवत्सरेण लभते धनैश्वर्यं न संशयः॥

ब्रह्मचारी आहार का संयम कर, यदि प्रतिदिन तीन हजार गायत्री मंत्र का जाप करे, तो एक वर्ष के भीतर ही वो धन, शक्ति और बल प्राप्त कर लेता है, इसमें संशय नहीं।

शमी बिल्व पलाशानामर्कस्य तु विशेषतः।
पुष्पाणां समिधश्चैव हुत्वा हेममवाप्नुयात्॥

शमी, बेल, पलाश तथा मंदार का फूल और उसकी लकड़ी से एक लाख गायत्री मंत्र के द्वारा हवन करने वाले को सुवर्ण की प्राप्ति होती है।

आब्रह्मत्र्यम्बकादीनां यस्यायतनमाश्रितः।
जपेल्लक्षं निराहारः स तस्य वरदो भवेत्॥

ब्रह्मचारी पुरुष जिस किसी के घर पर रहकर, यदि निराहार होकर, एक लाख गायत्री का जप करे, तो वह समस्त जगत् को वर देने वाला हो जाता है।

बिल्वानां लक्षहोमेन घृक्तानां हुताशने।
परां श्रियमवाप्नोति यदि न भ्रूणहा भवेत्॥

घी में डुबोयी गई बेल की लकड़ी से एक लाख गायत्री मंत्र के द्वारा अग्नि में हवन करने से मनुष्य लक्ष्मीवान् हो जाता है। यदि वह भ्रूणहा (भ्रूण-गर्भस्थ शिशु की हत्या करने वाला) न हो तो।

पद्मानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने।
प्राप्नोति राज्यमखिलं सुसम्पन्नमकण्टकम्॥

घृताक्त-घृतयुक्त कमल के फूल का एक लाख गायत्री मंत्र के द्वारा प्रदीप्त अग्नि में हवन करने वाला अकंटक समृद्ध राज्य को प्राप्त करता है।

पञ्चविंशतिलक्षेण दधि-क्षीरं हुताशने।
स्वदेहे सिद्ध्यते जन्तुः कौशिकस्य मतं तथा॥

गौ का दूध तथा दही का गायत्री मंत्र द्वारा 25 लाख, प्रज्वलित अग्नि में हवन करने वाला, इसी शरीर से सिद्ध हो जाता है, ऐसा विश्वामित्र का मत है।

एकाहं पञ्चगव्याशी एकाहं मारुताशनः।
एकाहं च द्विजोऽन्नाशी गायत्रीजप उच्यते॥
महारोगा विनश्यन्ति लक्षजप्यानुभावतः।
शतेन गायत्र्याः स्नात्वा शतमन्तर्जले जपेत्॥
शतेन यस्त्वपः पीत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

गायत्री मंत्र जप द्वारा महारोग की शान्ति के लिए एक दिन पंचगव्य का प्राशन, दूसरे दिन वायु का आहार तथा तीसरे दिन अन्न का भोजन कर, ब्राह्मण यदि एक लाख गायत्री का जाप करे और नित्य एक सौ गायत्री से स्नान कर, जल के भीतर एक सौ गायत्री का जप करता हुआ, एक सौ गायत्री से आचमन करता हुआ जप करे, तो मनुष्य संपूर्ण पापों से छूट जाता है।

गोघ्नः पितृघ्न-मातृघ्नौ ब्रह्महा गुरुतल्पगः।
स्वर्णहारी तैलहारी यस्तु विप्रः सुरां पिबेत्॥

चन्दनद्वयसंयुक्तं कर्पूरं तण्डुलं यवम्।
लवङ्गं सुफलं चाज्यं सिता चाम्रस्य दारुकैः॥
अन्यं न्यूनविधिः प्रोक्तो गायत्र्याः प्रीतिकारकः।
एवं कृते महासौख्यं प्राप्नोति साधको ध्रुवम्॥

गाय, पिता, माता तथा ब्राह्मण का वध करने वाला, गुरु तल्पगामी, सोना तथा तेल को चुराने वाला, मद्य पीने वाला ब्राह्मण, लाल, सफेद चंदन, कपूर, चावल, यव, लवंग, सुंदर फल (जायफल आदि), घी और मिश्री का हवन, आम की लकड़ी से, एक लाख गायत्री मंत्र के द्वारा प्रदीप्त अग्नि में हवन करे, तो उसके ऊपर गायत्री देवी प्रसन्न हो जाती हैं और ऐसा करने से साधक को अनेक प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

अन्नाज्यभोजनं हुत्वा कृत्वा वा कर्मगर्हितम्।
न सीदेत् प्रतिगृह्णानो महीमपि स सागराम्॥

अज्ञात रूप-से नीच काम कर लेने पर भी घी के मिले हुए अन्न का एक लाख गायत्री मंत्र से प्रदीप्त अग्नि में हवन करें तो सागर पर्यन्त पृथ्वी का दान ले लेने पर भी पतित नहीं होता।

ये चाऽस्य उत्थिता लोके ग्रहाः सूर्योदयो भुवि।
ते यान्ति सौम्यतां सर्वे शिवे इति न संशयः॥

यदि सूर्य आदि ग्रह भी उसके विरुद्ध हों, तो भी उसका (साधक का) कुछ नहीं बिगाड़ सकते। सभी दुष्ट ग्रह उसके कल्याणकारक हो जाते हैं, इसमें संदेह नहीं।

❑❑

५

चौबीस मुद्राएं

मुद्रा का अर्थ स्थिति है। हाथों और अंगुलियों को जब एक विशेष स्थिति में रखा जाता है, तो उपासना-ग्रंथों की शब्दावली में उन्हें मुद्रा कहते हैं। साधना-उपासना की मूलभूत स्थिति का अर्थात् जिस विशिष्ट आसन पर बैठकर इन्हें किया जाता है सबसे पहला चरण होता है कि शरीर में प्रवाहित होने वाली ऊर्जा बेकार न जाए। मुद्राओं की इसमें विशेष भूमिका है। हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग में ऊर्जा का प्रवाह सर्वाधिक होती है, यह बात अब वैज्ञानिक प्रयोगों से भी सिद्ध हो चुकी है। विभिन्न मुद्राओं द्वारा तन-मन के रोगों का उपचार किया जा रहा है, जिसके परिणामों से विश्व का चिकित्सा जगत् हैरान-परेशान है। क्या यह वैज्ञानिक नहीं लगता कि विशिष्ट उपासनाओं में कुछ खास मुद्राओं का ही प्रयोग किया जाता है। कुछ मुद्राओं में दोनों हाथों की विशेष अंगुलियों को विशेष स्थिति में ही परस्पर जोड़ा जाता है। यह बिजली के ठंडे गरम तारों को जोड़ने की सी घटना है। दोनों का मिलना ऊर्जा को अभिव्यक्त व प्रसारित करता है। जिन मुद्राओं में दोनों हाथों का परस्पर संपर्क नहीं होता उनमें हाथों के संचालन, उनकी स्थिति से भी ऐसी ही दिव्य क्रियाएं संपन्न होती हैं।

नीचे जिन 24 मुद्राओं को दिया जा रहा है, गायत्री उपासना में इन्हें आवश्यक माना है। मान्यता के अनुसार इनके अभाव में गायत्री-उपासना निरर्थक हो जाती है। इन मुद्राओं की चर्चा देवी भागवत् में इस प्रकार की गई है—

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुः पंचमुखं तथा॥
षणमुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं ग्रथितं सन्मुखोन्मुखम्।
प्रालम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यं कूर्मं वराहकम्॥
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा।
एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तितः॥
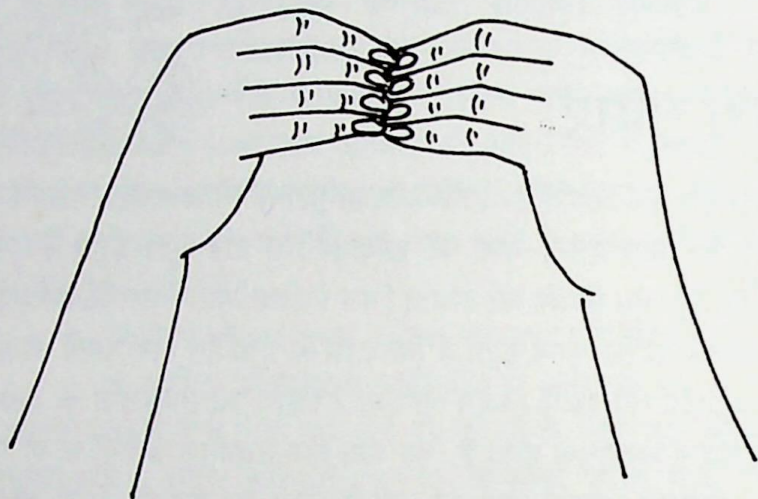
*1. **सुमुखम्**—दोनों हाथों की अंगुलियां मोड़ें और मिलाएं*
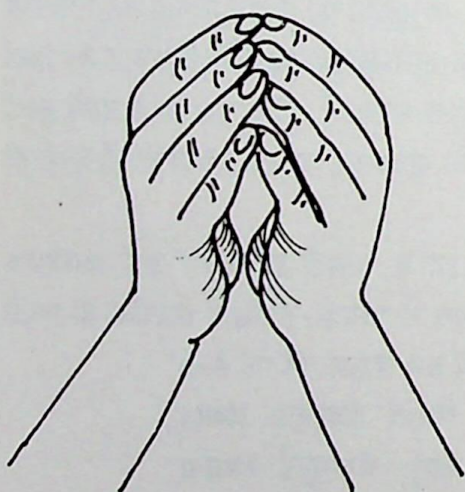
*2. **सम्पुटम्**—दोनों हाथों को झुलाकर मिलाएं*
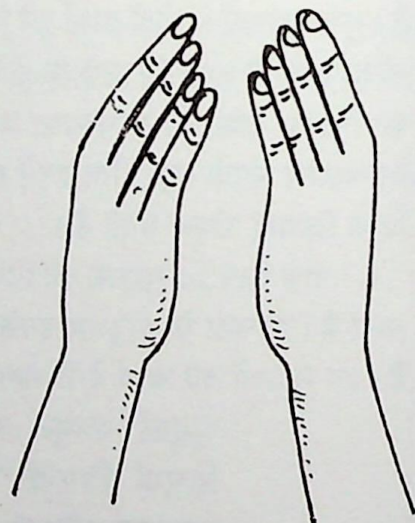
*3. **विततम्**—हथेलियों को आमने-सामने रखें*
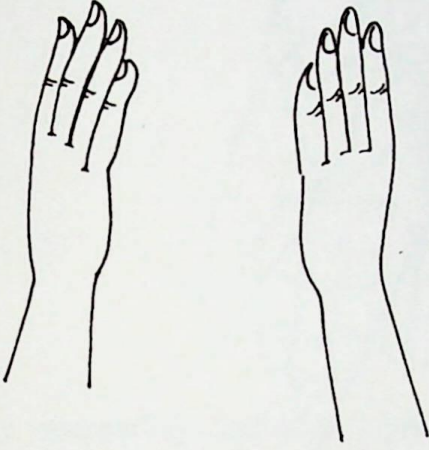
*4. **विस्तृतम्**—हाथों की अंगुलियों को खोलें। फिर हाथों की दूरी बढ़ाएं*

*5. **द्विमुखम्**—हाथों की कनिष्ठिका से कनिष्ठिका और अनामिका से अनामिका मिलाएं*
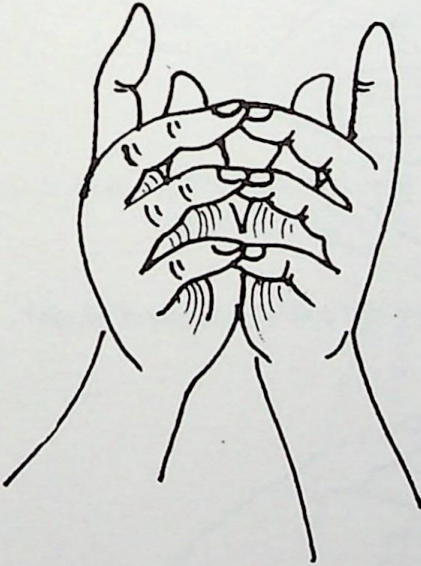
*6. **त्रिमुखम्**—दोनों हाथ की कनिष्ठिका, अनामिका और मध्यमा को मिलाएं*

*7. **चतुर्मुखम्**—दोनों हाथ की तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका को मिलाएं*
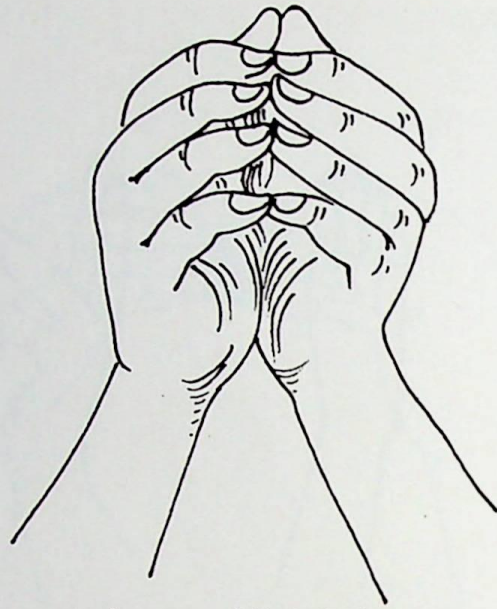
*8. **पंचमुखम्**—दोनों अंगूठों को मिलाएं*
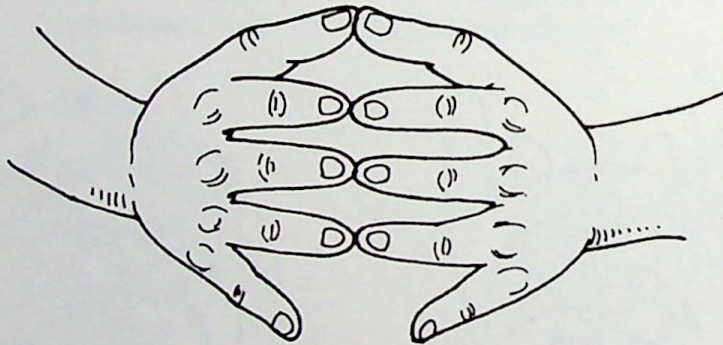
*9. **षण्मुखम्**—हाथों को पहले की तरह ही रखते हुए दोनों हाथों की कनिष्ठिकाओं को खोलें*
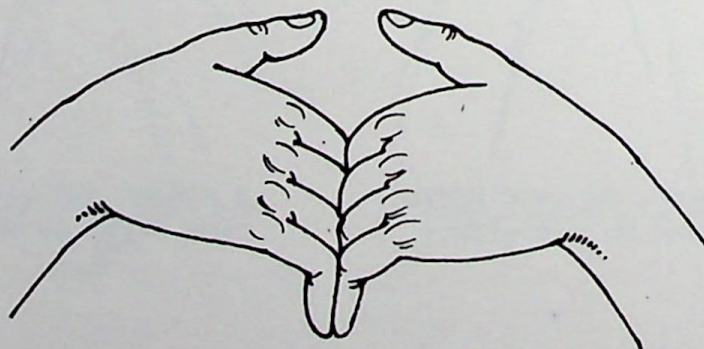
*10. **अधोमुखम्**—अंगुलियों को हाथ की बाहरी ओर से मिलाकर नीचे की ओर करें*
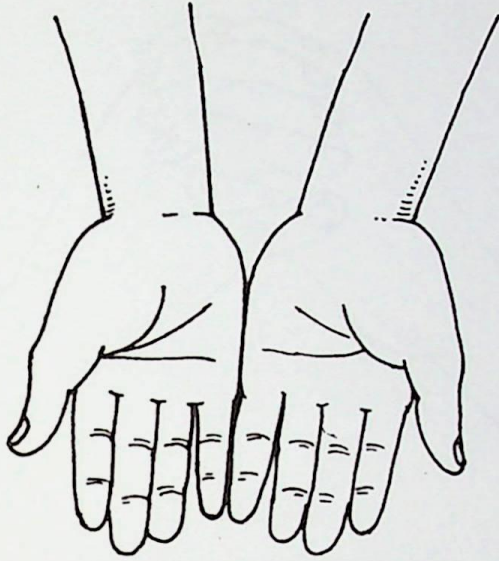
*11. **व्यापकाञ्जलिम्**—हाथों की स्थिति पूर्ववत् रखते हुए उन्हें शरीर की ओर से घुमाएं और सीधा करें*
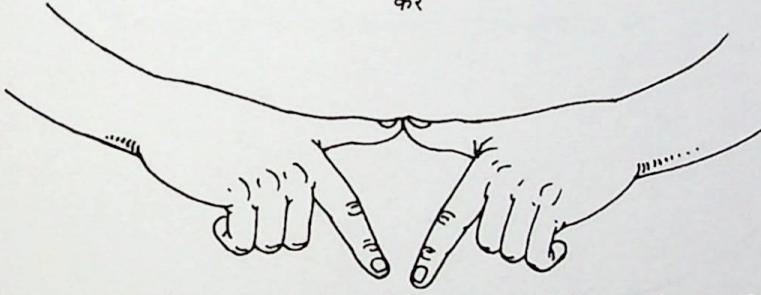
*12. **शकटम्**—पहले दोनों हाथों को उलटा करें। फिर अंगूठों को मिलाएं और अन्य तीन अंगुलियों को मोड़ते हुए (मुट्ठी-सी बांधते हुए) तर्जनियों को सीधा करें*
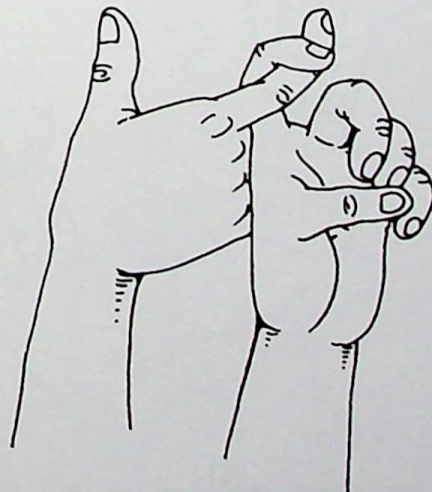
*13. **यमपाशम्**—तर्जनी से तर्जनी बांधकर, दोनों मुट्ठियां बांधें*
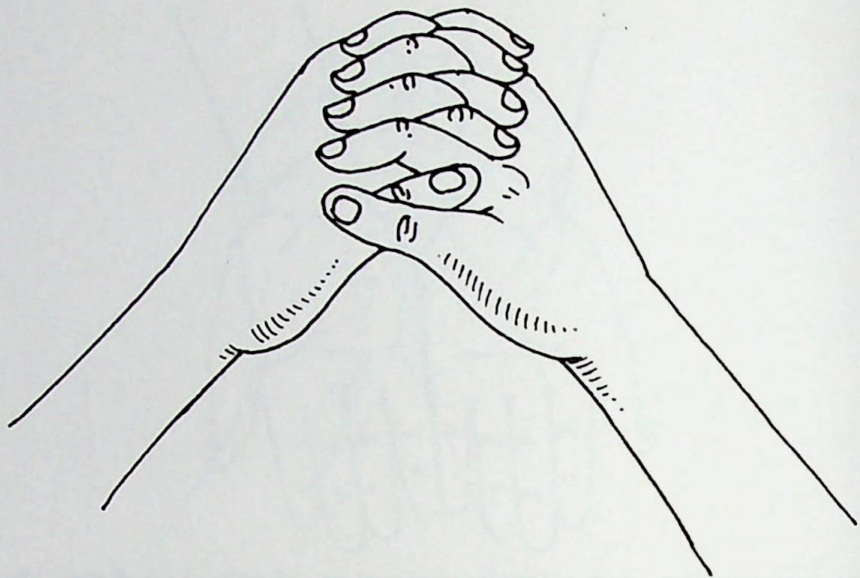
*14. **ग्रथितम्**—दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर गूंथें*
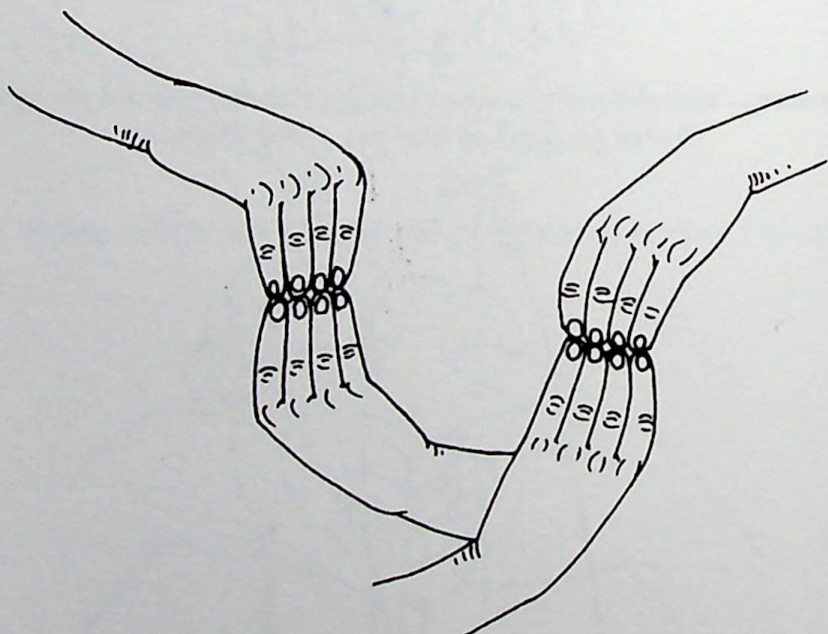
*15. **उन्मुखोन्मुखम्**—हाथों की पांचों अंगुलियों को जोड़ें। फिर पहले बाएं पर दाहिना और बाद में दाहिने पर बायां हाथ रखें*
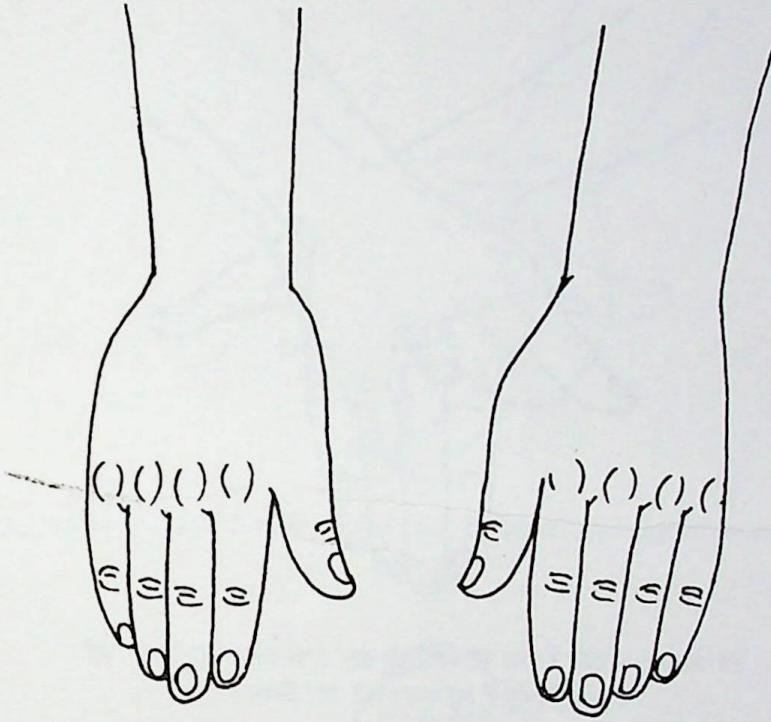
*16. **प्रलम्बम्**—अंगुलियों को थोड़ा मोड़ें, उलटा करके फिर नीचे की ओर करें*
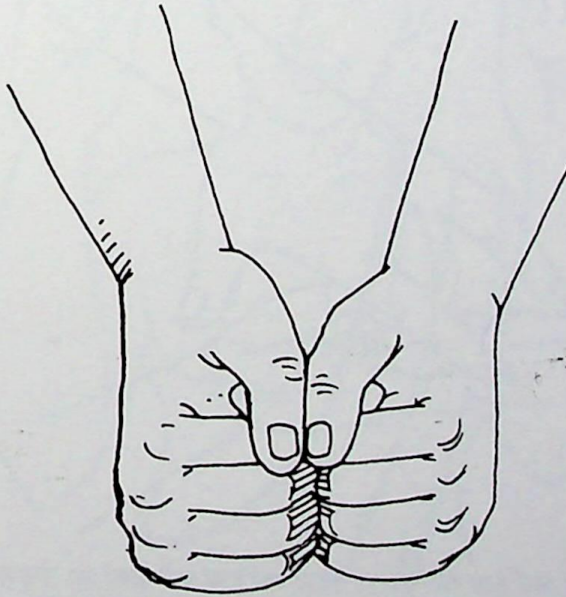
*17. **मुष्टिकम्**—दोनों अंगूठों को ऊपर रखते हुए दोनों मुट्ठियों को बांधकर मिलाएं*

*18. **मत्स्यः**—दाहिने हाथ की पीठ पर बाएं हाथ को उलटा करके रखें। दोनों अंगूठों को बाहर की ओर निकालें*
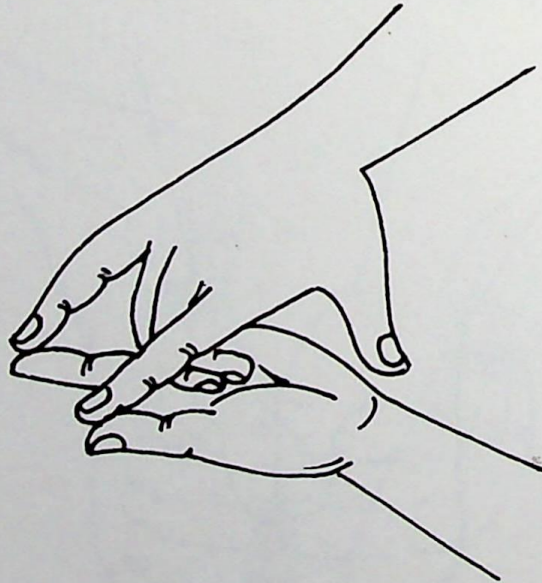
*19. **कूर्मः**—नीचे बाएं हाथ की मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठिका को मोड़कर उलटे दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों को अन्य तीनों अंगुलियों के नीचे देकर बायीं तर्जनी पर दाहिनी कनिष्ठिका और बाएं अंगूठे पर दाहिनी तर्जनी रखें*
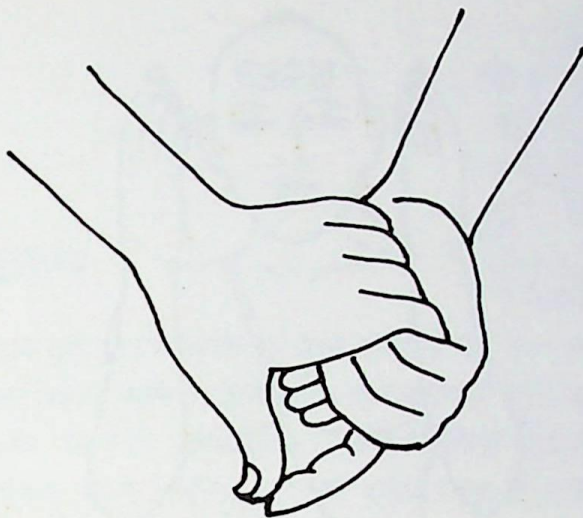
*20. **वराहकम्**—दाहिनी तर्जनी को बाएं अंगूठे से मिलाकर दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर बांधें*

*21. **सिंहाक्रान्तम्**—दोनों हाथों को कंधों के बराबर ऊपर कानों के समकक्ष खड़ा करें। हाथ का भीतरी भाग बाहर की ओर हो*
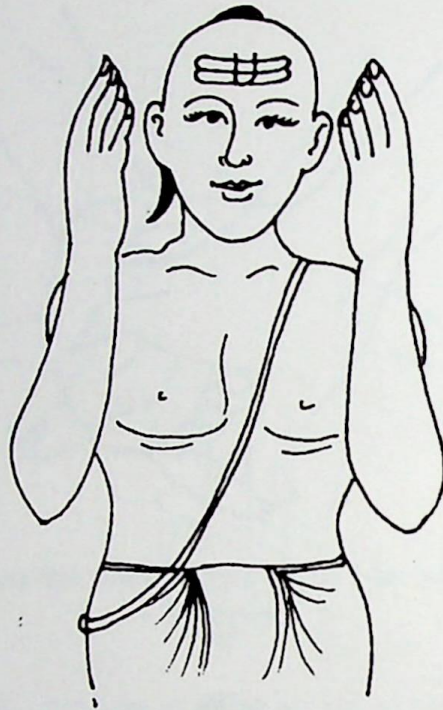
*22. **महाक्रान्तम्**—हाथों की स्थिति लगभग पहले की सी रहेगी अर्थात् कंधों के समानांतर, हाथों के भीतरी भाग को चेहरे की ओर घुमाएं, अंगुलियों को कान के पास लाएं*
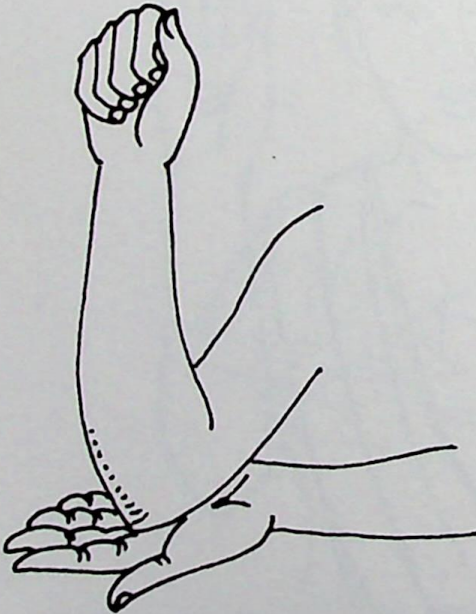
*23. **मुद्गरम्**—मुट्ठी बांधकर कोहनी बायीं हथेली पर रखें*
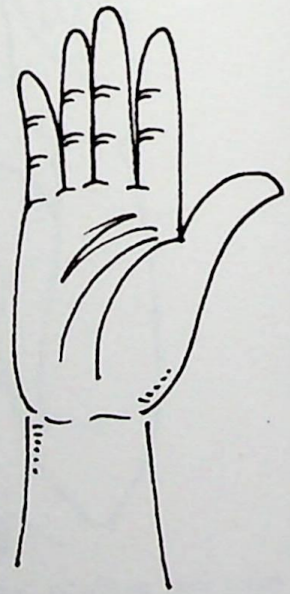
*24. **पल्लवम्**—दाहिने हाथ की अंगुलियां मुख के सामने लाएं*

❑❑

६

गायत्री कल्प

हे वेदमाता! तुम स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हो और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिंतन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हो। दुःख, दरिद्रता और भय हरने वाली देवि! तुम्हारे अतिरिक्त और कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दयार्द्र रहता हो। यह देवताओं का कथन है।

वेदमाता गायत्री ही हैं जिनकी मंत्र सिद्धि, साधना/ उपासना एवं मनन से मनुष्य के सब कष्ट आदि दूर हो जाते हैं और अभूतपूर्व सुख की प्राप्ति होती है। इनके कल्प का विस्तार निम्न परिच्छेदों में किया गया है—

पहला परिच्छेद

स्वगुरुं पूजयेन्त्यिमुपचारैस्तु पञ्चकैः।
भक्ति-श्रद्धानुसारेण विश्वामित्रं प्रकल्पयेत्॥

नित्य नियमानुसार साधक पंचोपचार (चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य) से अपने गुरु का पूजन करे और भक्ति तथा श्रद्धा के अनुसार विश्वामित्र की मूर्ति स्थापित करे।

अस्य कृत्स्नस्य मन्त्रस्य प्राणायामं निरुन्धयेत्।
प्राणायामं नियम्याशु गुरुपूजापुरःसरम्॥
प्रातरुत्थाय यो विप्रः शयने पर्यवस्थितः।
एकाग्रमानसो भूत्वा ध्यायेन्मूलेऽथ कुण्डलीम्॥
नाभिसन्निहिता ज्ञेया द्वात्रिंशद्-वर्णसंख्यया।
एवं ज्ञात्वौ प्रभातायां षडाधारं तथा न्यसेत्॥
षडाधारं तथा वक्ष्ये विन्यसेच्चतुरक्षरम्।
आद्यन्त प्रणवैर्युक्तं षट्कुक्षिस्तु ततो न्यसेत्॥

साधक को चाहिए कि सबसे पहले मंत्र-सिद्धि के लिए सोकर उठने के बाद प्रातःकाल गुरु की मानसिक पूजा कर, प्राणायाम करे। फिर मन को एकाग्र कर नाभि के नीचे मूलाधार में कुण्डलिनी का ध्यान करे। नाभि के समीप बत्तीस वर्ण

वाली कुण्डलिनी का चार-चार अक्षर आदि तथा अंत में प्रणव से युक्त करके क्रम से षडाधार में न्यास करे, पश्चात् षट्कुक्षि में न्यास करे।

सहस्त्रदलमध्यस्थां सबालां सतुरीयके।
हंस-हंसेति विज्ञानात् सङ्कल्प-ध्यानपूर्वकम्॥
अस्याः सङ्कल्पमात्रेणसर्वपापैः प्रमुच्यते।
ततः स्थित्वा बहिर्गम्य मलमूत्रविसर्जनम्॥

सहस्रदल में अवस्थित परास्वरूपा 'हंस-हंस' इस बाला गायत्री का संकल्प तथा ध्यान करने से ब्राह्मण सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। प्रातःकाल शयन से उठकर (साधक) गायत्री का चिंतन करता हुआ मूलाधार में कुण्डलिनी का ध्यान करे। इसके बाद बाहर जाकर मल-मूत्र का विसर्जन करे।

दुर्गन्धत्यागपर्यन्तं कृत्वा शौचं समाहितः।
ततो नदीं समागम्य गङ्गाध्यानपुरः सरम्॥

इसी प्रकार शरीर की दुर्गन्धों का त्याग कर, पैर आदि धोकर, पवित्र गंगा का ध्यान करते हुए, नदी के तट पर जाए।

आचमनत्रयं कृत्वा त्रिवारं स्नानमाचरेत्।
अग्निमण्डलमालिख्य जलमध्ये सबिन्दुकम्॥
मायाबीजेन मध्यस्थमुभयोर्व्याहृतित्रयम्॥

तीन बार आमचन कर, तीन बार स्नान करे, पुनः जल के मध्य में, आदि तथा अंत में प्रणव से युक्त मायाबीज के साथ गायत्री (मंत्र) लिखे। प्रणव तथा गायत्री के बीच तीनों व्याहृतियां लिखे।

ततः शुद्धाम्बुनाऽऽचम्य प्राणायामत्रयं कुरु।
देशाकलाद्यमुच्चार्य गायत्रीध्यानपूर्वकम्॥

तत्पश्चात् शुद्ध जल से आचमन कर, तीन प्राणायाम करे। अनन्तर गायत्री का ध्यान करके, देश-काल आदि का संकीर्तनपूर्वक संकल्प करे।

सुक्ताऽग्निमार्जनं कुर्याद्यथाशाखोक्तमार्गतः।
[1]अघमर्षणमन्त्रं च स्नानं पञ्चाङ्गपूर्वकम्[2]॥

फिर अपनी शाखा के अनुसार सूक्तों को पढ़ते हुए मार्जन करे। अघमर्षण का का मंत्र पढ़ें, पुनः पंचांगपूर्वक स्नान करे।

---

1. *ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरौ अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।*
2. *पञ्चङ्गानि महादेवि जपो होमश्च तर्पणम्। अभिषेकश्च विप्राणामाराधनमपीश्वरि।*

श्रोत्रे नासाक्षिरुद्ध्वा च सहस्रान्तं जले वपुः।
मग्नं कुर्याज्जपेन्मन्त्रं कुर्याद् वायुनिरोधनम्॥

फिर कान, नाक और आंख को बंदकर, जल में सहस्रांत मग्न हो प्राणवायु को रोककर गायत्री का जप करे।

ततः स्नानत्रयं कुर्याच्छिरोव्याहृतिपूर्वकम्।
त्रिवारं त्रिविधं स्नानं वायुमेढ्रं शिरःस्तनम्।

उसके बाद, 'ॐ भूर्भुवः स्वः' इन व्याहृतियों को पढ़ता हुआ शिरः स्नान करें। इस प्रकार तीन बार तीन प्रकार से स्नान करें।

[1]प्रोक्षयेच्छङ्खमुद्राभि-र्व्याहृत्यादि-शिरोऽन्तकम् ।
ततस्तीरं समागत्य गायत्रीकवचं पठेत्॥

प्रत्येक बार स्नान के समय शंखमुद्रा से लिंग, गुदा तथा शिर एवं स्तन-पर्यन्त प्रोक्षण करे, फिर जल से निकल कर, तीर पर खड़ा होकर गायत्री-कवच का पाठ करे।

शुचिवस्त्राङ्गमाश्रित्य ललाटे तिलकं तथा।
ओमापो ज्योतिमन्त्रेण शिखाबन्धनमाचरेत्॥

कवच-पाठ के अनन्तर शुद्ध वस्त्र पहने तथा ललाट में चंदन या भस्म आदि से तिलक लगाए और, 'ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतम्' मंत्र से शिखाबंधन करे।

त्रिकोणमध्ये ह्रींकारं कोणान्ते प्रपदं तथा।
दण्डेषु व्याहृतिश्चैवमुल्लिखेदुदकं तथा॥

फिर जल में त्रिकोण बनाकर मध्य में ह्रींकार, कोण में प्रपद और दण्ड पर व्याहृति लिखे।

प्रणवेन बहिर्जप्त्वा जलं पीत्वा च मार्जनम्।
न तत्र विन्यसेत् सन्ध्यामन्यथा शूद्रवद् भवेत्॥

प्रणव से जल के बाहर, 'ॐ ह्रीं' इसका जप करे, पुनः मार्जन करे। इसके बाद उस स्थान पर संध्या न करे अन्यथा शूद्र हो जाता है।

दूसरा परिच्छेद

चतुर्विंशतिनामानि तत्तत्स्थानेषु विन्यसेत्।
केशवादीनि विन्यस्य पौराणाचमनं चरेत्॥

केशव आदि 24 विष्णु के नामों से उन-उन स्थानों पर न्यास करे, पुनः पुराणोक्त विधि से आचमन करे।

---

1. *वामाङ्गुष्ठं तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना। कृत्वोत्तानं तथा मुष्टिमङ्गुष्ठं तु प्रसारयेत्॥ वामाङ्गुल्यस्तथा श्लिष्टा संयुक्ताः सुप्रसारिताः। दक्षिणाङ्गुष्ठके लग्ना मुद्रा शङ्खस्य भूतिदा॥*

चतुर्विंशतिवर्णानां केशवादिरनुक्रमात्।
देव्याः पादैस्त्रिभिः पीत्वा चाऽङ्गुलैर्नवभिः स्पृशेत्॥

केशव आदि 24 अक्षरों से, फिर गायत्री के तीन पाद से क्रमशः तीन बार जल पीकर, नव उंगलियों से न्यास करे।

सप्तव्याहृतिगायत्री शिरस्तुर्यद्वयं न्यसेत्।
श्रुति-स्मृति-विधानेन द्विविधं परिकल्पयेत्॥

तत्पश्चात्—सप्तव्याहृतिवाम् इत्यादि गायत्री मंत्र से शिर का चार अथवा दो बार न्यास करे, पुनः श्रुति तथा स्मृतियों के अनुसार दो प्रकार का आचमन करे।

तृतीयं मूलमन्त्रेण क्रमाद् वर्णानि विन्यसेत्।
आचमनविधिः प्रोक्तः पौराणः स्मार्त्त आगमः॥
श्रौतं मानसमाचम्य पञ्चभिः श्रुतिचोदितैः।
सन्ध्या-प्रारम्भकाले त्वाचमनत्रितयं न्यसेत्॥

फिर मूलमंत्र के द्वारा तत्तद् वर्णों से न्यास करे। पुराण, स्मार्त्त, आगम, श्रौत तथा मानस के भेद से वेदोक्त आचमन पांच प्रकार के होते हैं, उनसे आचमन करे। संध्या के प्रारंभकाल में तीन बार आचमन करना चाहिए।

कुरुते सर्वसिद्धिः स्यान्नास्ति चेन्निष्फलं भवेत्।
संहताङ्गुलिना तायं ब्रह्मतीर्थे पिबेज्जलम्।
मुक्ताङ्गुष्ठं कनिष्ठायां शेषेणाचमनं भवेत्॥
गोकर्णाकृतिहस्तेन माषमात्रं जलं पिबेत्।
न्यूनातिरिक्तमात्रेण तज्जलं सुरया समम्॥

संध्याकाल के प्रारंभकाल में जो इस प्रकार आचमन करता है, उसको सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है, अन्यथा उसकी संध्या निष्फल होती है। कनिष्ठिका तथा अंगूठे को अलग कर शेष सभी उंगलियों को एक में मिलाकर (हाथ को गोकर्ण के समान) ब्रह्मतीर्थ से माशा भर जल पीकर आचमन करे। माशा से कम अथवा अधिक जल होने से वह जल सुरा के समान हो जाता है।

आदौ चान्ते तथा मध्ये न्यसेच्चाचमनं क्रमात्।
श्रुति स्मृति पुराणानि पर्यायेण विलोमतः॥

इस प्रकार संध्या के आदि, मध्य तथा अंत में क्रमशः आचमन करे। श्रुति, स्मृति तथा पुराणोक्त आचमन परस्पर भिन्न होते हैं।

केशवादि त्रिभिर्नाम अपः पीत्वा यथाविधि।
गोविन्दमग्रतो न्यस्य विष्णुं सुषुम्नि विन्यसेत्॥

(श्रुति-आचमन यथा, 'ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ केशवाय

नमः,' स्मृतिआचमन, 'नारायणाय नमः, ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः।') केशवादि इन तीनों नामों से शास्त्रीय रीति के अनुसार आचमन कर न्यास करे। 'ॐ विष्णवे नमः' मंत्र से सुषुम्ना में न्यास करे।

मधुसूदनमादित्यं शुद्धांशुं च त्रिविक्रमम्।
अग्रतो वामनं चैव हस्तयोः श्रीधरं तथा॥

'ॐ मधुसूदनाय नमः, ओम आदित्याय नमः, ॐ शुद्धांशवे नमः, ॐ त्रिविक्रमाय नमः' इन मंत्रों से आगे, 'ॐ वामनाय नमः, ॐ श्रीधराय नमः' इन मंत्रों से दोनों हाथों में न्यास करे।

हृषीकेशं पद्मनाभमुभयोः पादयोर्न्यसेत्।
दामोदरं ब्रह्मरन्ध्रे नासा सङ्कर्षणस्य च॥

'ॐ हृषीकेशाय नमः, ॐ पद्मनाभाय नमः' मंत्र से दोनों पैरों में, 'ॐ दामोदराय नमः' इस मंत्र से शिर के मध्य तथा 'ॐ संकर्षणाय नमः' इस मंत्र से नासिका में न्यास करे।

नासामध्ये तु विन्यस्य नासान्ते वा विनिर्दिशेत्।
दक्षनासां तु विन्यस्य वासुदेवं तथैव च॥

उपरोक्त मंत्र से नासिका के मध्य में अथवा नासिका के अंत में न्यास करे। 'ॐ वासुदेवाय नमः।' इस मंत्र से बायीं नासिका में न्यास करे।

प्रद्युम्नं च तथा वामे अनिरुद्धं च दक्षिणे।
पुरुषोत्तमं वामनेत्रे दक्षिणे च अधोक्षजम्॥

'ॐ प्रद्युम्नाय नमः' इस मंत्र से बायीं नासिका में न्यास कर, 'ॐ पुरुषोत्तमास नमः' से वामनेत्र में, 'ॐ अधोक्षजाय नमः' से दाहिने नेत्र में न्यास करे।

नारसिंह वामनेत्रे नाभौ चाऽप्यच्युतं न्यसेत्।
जनार्दनं हृदि न्यस्य भुजे दक्षिणबाहुके॥

'ॐ नारसिंहाय नमः' इस मंत्र से पुनः वामनेत्र में, 'ॐ अच्युताय नमः' इस मंत्र से नाभि में, 'ॐ जनार्दनाय नमः' से वाम तथा 'ॐ हरये नमः' इस मंत्र से दाहिनी भुजा में न्यास करे।

तीसरा परिच्छेद

प्राणायामत्रयेणैव प्रातः सन्ध्यां समाचरेत्।
प्राणायाम समायुक्तं प्राणायाममिति स्मृतम्॥

तीन प्राणायाम के अनन्तर प्रातःकाल की संध्या करनी चाहिए। प्राण का आयाम (विस्तार) ही प्राणायाम कहा जाता है।

उत्तमं नवधा चैव मध्यमं ऋतुसङ्ख्यया।
अधमं त्रयमित्याहुः प्राणायामो विधीयते॥

नौ बार गायत्री (मंत्र) पढ़कर जो प्राणायाम किया जाए, वह उत्तम तथा छह बार गायत्री पढ़कर मध्यम एवं तीन बार गायत्री पढ़कर अधम प्राणायाम होता है।

सप्तव्याहृतिभिश्चैव प्राणायामं पुटीकृतम्।
व्याहृत्यादि-शिरोऽन्तं च प्राणयामत्रयत्रिकम्॥

'सप्तव्याहृति' से प्राणायाम को सम्पुटीकरण करना चाहिए। व्याहृति से आरंभ कर शिरोऽन्त (सत्यान्त) स्वरोम् पर्यन्त तीन-तीन मंत्र प्रत्येक प्राणायाम के साथ जपना चाहिए।

स व्याहृतिं स प्रणवां गायत्रीं शिरसा सह।
त्रिः पठेदायतः प्राणान् प्राणायामः स उच्यते॥

प्रणव (ॐ) तथा सप्तव्याहृतियुक्त समस्त गायत्री का तीन बार पूरक, कुंभक और रेचक द्वारा पाठ करने को ही प्राणायाम कहते हैं।

बिन्दुतः प्राणमार्गं च गायत्रीं बिन्दुसंयुताम्।
व्याहृत्यादि शिरोऽन्तं च प्राणायामत्रयत्रिकम्॥

'भूः' यहां से प्रारंभ कर, 'स्वः' पर्यन्त तथा समस्त गायत्री का तीन बार उच्चारण कर प्राणायाम करे।

आदौ कुम्भकमाश्रित्य रेचक पूरक वर्जितम्।
व्याहृत्यादि शिरोऽन्तं च प्राणायामं तु कुम्भकम्॥

सबसे पहले साधक कुंभक (वायुनिरोध) करे। रेचक और पूरक न करे। सप्तव्याहृति से युक्त गायत्री का जप करे और, 'आपो हिष्ठा' मंत्र से मस्तक पर जल से मार्जन करे।

प्राणायाम समान बिन्दुसहितं बिन्दुत्रयं संयुतं।
सप्तव्याहृति बिन्दुसम्पुटपरं वेदादिपादत्रयम्।
गायत्रीं शिरसा त्रिनाडिसहितामिड्यद्वये, द्वे परे।
शुद्धं केवलकुम्भकं प्रतिदिनं ध्यायामि तत्त्वं पदम्॥

'भूः भुवः स्वः' से युक्त सदा व्याहृति से सम्पुटित इडा, सुषुम्ना और पिंगला इन तीन नाड़ियों से युक्त गायत्री मंत्र ही पूरक तथा रेचक से उत्तम प्राणायाम तंत्रशास्त्र की रीति से माना गया है।

अधमे द्वादशी मात्रा मध्यमे द्विगुणा मता।
उत्तमा त्रिगुणा प्रोक्ता प्राणायामं निरुन्धयेत्॥

अधम प्राणायाम बारह मात्रा काल पर्यन्त, मध्यम प्राणायाम चौबीस मात्रा काल पर्यन्त और उत्तम प्राणायाम छत्तीस मात्रा काल पर्यन्त तक होता है।

रेचकं कुम्भकं चैव पूरकं वायुरोधनम्।
एवं क्रमेण युञ्जीत प्राणायामस्य लक्षणम्॥

पूरक (वायु को भीतर खींचना, कुम्भक वायु-निरोध) तदनन्तर रेचक (वायु निःसारण) इस प्रकार क्रम से प्राणायाम के लक्षण हैं।

निषिद्धं रेचकं ज्ञेयं पूरकं च तथैव च।
अमोघं कुम्भकं प्रोक्तं प्राणायामं प्रकीर्तितम्॥

रेचक तथा पूरक प्राणयाम फलहीन होने से निषिद्ध है। कुम्भक फलप्रद होने से अमोघ (सफल) है।

अघोष निर्घोष गमाऽऽगमस्थं।
नाडीद्वयं रेचक-पूरकं च।
कुम्भोपमं पूर्णघटप्रकारं।
ह्येवंविधं स्याच्छ्वसनस्य साध्यम्॥

शब्दरहित तथा निःशब्द श्वास-प्रश्वास में रहने वाला इडा और पिंगला-इन दोनों नाड़ियों से युक्त रेचक तथा पूरक प्राणायाम कहा जाता है। श्वास की सिद्धि तो पूर्ण घट के समान कुम्भक प्राणायाम से ही होती है।

शब्दपूर्वकमभ्यासं शब्दव्यञ्जनसंयुतम्।
भिन्नभाण्डोदकं यद्वच्छ्वसनस्य व्यतिक्रमात्॥

प्राणायाम को शब्दपूर्वक अथवा शब्द-व्यंजन से संयुक्त अभ्यास करना चाहिए, क्योंकि प्राणायाम जल में वायु का व्यतिक्रम होने से जैसे फूटे बरतन का जल चूह जाता है, उसी प्रकार प्राणायाम भी निष्फल हो जाता है।

इडा पिंङ्गला सुषुम्नाच्छब्दपूर्व-व्यतिक्रमात्।
तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तमिति शङ्करभाषितम्॥

इडा, पिंगला और सुषुम्ना—इन तीन नाड़ियों से रहित प्राणायाम निष्फल होता है, ऐसा भगवान् शंकर ने कहा है।

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा।
ततो धर्मं समाश्रित्य प्राणायामविदो विदुः॥

प्राणायाम की प्रक्रिया को जानने वाले विद्वानों ने बताया है कि ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ अथवा संन्यासी प्राणायाम के समय वायु का व्यतिक्रम न होने दे।

नासापुटं त्वङ्गुलीभिः पञ्चभिर्वायुरोधनम्।
शनैः शनैस्तु निःशब्दं प्राणायामं निरोधयेत्॥

पांचों उंगलियों से नासापुट (नासिका के अग्रभाग) को बंद कर वायु को रोकता हुआ किसी भी शब्द को न सुनता हुआ प्राणायाम करे।

नासिकापुटमङ्गुल्या निधायैकेन मारुतम्।
आकृष्य धारयेदग्निं प्राणायामं विचिन्तयेत्॥

नासिकापुट को एक उंगली से बन्द कर, वायु को खींचकर अग्नितत्त्व का ध्यान करना चाहिए।

प्राणायामेन ज्ञात्वा च स्नापयेच्चिन्मयं शिवम्।
तदादौ मानसं कुर्यात्तदा केवलकुम्भकम्॥

प्राणायाम काल में शिव का ध्यान कर ज्ञानरूप शिव को मानस–पूजन करना चाहिए। उस समय केवल कुम्भक ही करना चाहिए।

पञ्चप्रज्वालकं चैव प्राणायामं समाचरेत्।
पूजामानससंयुक्तं प्राणायामफलं भवेत्॥

प्राणायाम काल में पंच–प्रज्वालकपूर्वक मानस–पूजा करने से प्राणायाम का फल प्राप्त होता है।

पञ्चपूजां विना येन प्राणायामं करोति यः।
तस्य निष्फलितं कर्म विश्वामित्रेण भाषितम्॥

जो लोग पंच–पूजा के बिना ही प्राणायाम करते हैं, उनका प्राणायाम निष्फल होता है, ऐसा विश्वामित्र का मत है।

लकारं च हकारं च यकारं च रकारयोः।
चकारमिति विख्यातं पञ्च पूजात्मकं जपेत्॥

लकार, हकार, यकार, रकार तथा चकार-रूप वर्णों का ध्यान करना ही पंचपूजा है। इसलिए प्राणायाम काल में इन पांच वर्णों की मानस–पूजा करनी चाहिए।

सिद्धासनसमो नास्ति न कुम्भेनैव लोपमम्।
मन्ददृष्टिसमो नास्ति प्राणायामं समभ्यसेत्॥

प्राणायाम में सिद्धासान, कुम्भक प्राणायाम तथा नेत्र को बंद करना ये तीनों क्रियाएं सर्वश्रेष्ठ हैं।

अन्तश्चेतो बहिश्चक्षुरधः स्थाप्य सुखासनम्।
समत्वं च शरीरस्य प्राणायामं समभ्यसेत्॥

प्राणायाम के समय सुखासन पर विराजमान हो, नेत्र बंद कर, शरीर को सीधा कर प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए।

अस्त्रप्रयोगकाले तु प्राणायामं च लम्बकः।
प्राणायामबलोपेत उपसंहारकारकः॥

प्राणायाम समाप्ति काल में कुम्भक द्वारा रोके हुए दीर्घ श्वास को अपनी शक्ति के अनुसार धीरे-धीरे निकालता हुआ प्राणायाम करे।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन प्राणायामं समाचरेत्।
सर्वधर्मपरित्यागी स महापातकी भवेत्॥

सभी प्रकार के उपायों से प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। किन्तु जो लोग (साधक) वर्णाश्रम धर्म को छोड़कर इस गायत्री पुरश्चरण का आरंभ करते हैं, वे महापातकी होते हैं।

चौथा परिच्छेद

पादं पादं क्षिपेन्मूर्ध्नि प्रतिप्रणवसम्पुटम्।
निक्षिपेदष्टपादं तु अधो यस्य क्षयाय च॥
अष्टाक्षरं नवपदं पदादौ ब्रह्महा भवेत्।
ऋचादौ मार्जनं कुर्यात् सोऽश्वमेधफलं लभेत्॥

गायत्री के प्रत्येक पाद को प्रणव से युक्त कर तीन बार शिर (सिर) पर अभिषेक करें। फिर, 'आपो हिष्ठा' मंत्र से आरंभ कर 'आपो जनयथा च नः' तक पढ़कर सिर पर जल छोड़ें। मार्जन के 9 मंत्र हैं, जिनके प्रत्येक मंत्र में 8 अक्षर हैं। मंत्र निम्न हैं—

- आपो हिष्ठा मयो भुवः
- ता न ऊर्जे दधात नः
- महेरणाय चक्षसे
- यो वः शिवतमो रसः
- तस्य भाजयते ह नः
- उशतीरिव मातरः
- तस्माऽअरंग मामवः
- यस्य क्षयाय जिन्वथ
- आपो जनयथा च नः

उपरोक्त मंत्र में पद के आदि से मार्जन नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से ब्रह्महत्या का दोष लगता है। इसलिए प्रत्येक मंत्र के आदि से मार्जन करना चाहिए, ऐसा करने से अश्वमेध यज्ञ का फल होता है।

यस्य क्षयाय पादं तु आपः सिन्धुत्वमेव च।
भूमौ पादौ विनिःक्षिप्य इतरन्मूर्ध्नि विन्यसेत्॥

'यस्य क्षयाय जिन्वथ', 'आपो जनयथा च नः', इन दो ऋचाओं से पृथ्वी पर जल छोड़ें तथा अन्य मंत्रों से शरीर का मार्जन करना चाहिए।

प्रातः सूर्यश्च मन्त्रेण सायमग्निः पिबेज्जलम्।
आपः पुनन्तु मध्याह्ने क्रमेणाऽऽचमनं न्यसेत्॥

प्रातःकाल 'सूर्यश्च मा मन्युश्च' इस मंत्र से और सायंकाल में 'अग्निमश्च मा मन्युश्च' इस मंत्र से आचमन करना चाहिए तथा मध्याह्न में 'आपः पुनन्तु पृथ्वीं' इस मंत्र को पढ़कर आचमन करे।

आपो हिष्ठेति मन्त्रेण नवपादं द्विवारकम्।
हिरण्यवर्णाश्चत्वारो दधिमन्त्र द्विवारकम्॥

'आपो हिष्ठा' नौ पाद वाले मंत्र से दो बार आचमन करें, फिर 'हिरण्यवर्णा' तथा 'दधि' इस मंत्र से दो-दो बार आचमन करना चाहिए।

पदादौ क्लीं पदं मध्ये पदान्ते मार्जनं भवेत्।
ऋचादौ प्रणवं चोत्तवा ऋचोऽन्ते मार्जनं भवेत्॥

प्रत्येक मंत्र के आदि में 'क्लीं' पद तथा अंत में प्रणव का पाठ कर मार्जन करें। प्रत्येक ऋचा के आदि में प्रणव तथा ऋचा के अंत में प्रणव पढ़कर मार्जन करना चाहिए।

सत्त्वं रजस्तमो जातं मनो वाक् कायिकादिषु।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्त्यादि नवैतान्नवभिर्दहेत्॥

'आपो हिष्ठा' से लेकर 'आपो जनयथा च नः' इस नौ ऋचा के मंत्र से कायिक, वाचिक, मानसिक, सात्त्विक, राजस, तामस तथा जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्त्यादि में किए गए नौ प्रकार के पापों का नाश हो जाता है।

दधि द्विमार्जनं चैव हिरण्यादि चतुष्टयम्।
काम क्रोधादि षड्वर्गं मार्जयेत् सर्वमार्जनम्॥

'दधि' मंत्र से दो बार तथा 'हिरण्यादि' मंत्र से चार बार, कुल छह बार मार्जन करने का यह फल होता है कि मनुष्य के काम, क्रोधादि षड्वर्गों का नाश हो जाता है।

पांचवां परिच्छेद

सन्ध्यावन्दनवेलायामर्घ्यं दद्यात् त्रयं बुधः।
सायं प्रातः समानं स्यान्मध्याह्ने च पृथग्विधिः॥

संध्या वंदनकाल में बुद्धिमान् साधक सूर्य के लिए तीन बार अर्घ्यदान करे।

अर्घ्यदान में सायं तथा प्रातः समान विधि है; मध्याह्न में अर्घ्यदान की विधि पृथक् है।

एकं मध्याह्नकाले तु सायं प्रातस्त्रयस्त्रयः।
एवं ज्ञात्वा सृजेदर्घ्यं सूर्यनक्षत्रपूर्वकम्॥

मध्याह्नकाल में सूर्य साक्षीभूत एक अर्घ्य तथा सायं और प्रातःकाल में नक्षत्र साक्षीभूत तीन-तीन बार अर्घ्य प्रदान करे।

एकं शस्त्रास्त्र नाशाय एकं हनननाशने।
असुराणां वधायाऽर्घ्यं प्रायश्चित्तार्थसंयुतम्॥

एक अर्घ्य सूर्य के शत्रु राहु के शस्त्रास्त्र नाश के लिए, दूसरा उनके विनाश के लिए, तीसरा असुरों के वध के लिए देना चाहिए। तीसरे अर्घ्य से सूर्य पर राहु द्वारा आयी हुई विपत्ति नष्ट हो जाती है।

दद्यात् केवलगायत्र्या मूढो ह्यर्घ्यं तु यो द्विजः।
स बिन्दु ब्राह्मणो नाम सर्वधर्मबहिष्कृतः॥

जो ब्राह्मण केवल गायत्री मंत्र से अर्घ्य देता है, वो 'बिंदु' नाम का ब्राह्मण है, वो किसी धर्म का अधिकारी नहीं है।

ब्रह्मास्त्रं नाभिजानाति स विप्रः शूद्र एव हि।
तस्य कर्मादिकं जातं धर्माद्यं निष्फलं भवेत्॥

जो ब्राह्मण नहीं जानता वो शूद्र के समान है। उसका किया हुआ सभी धर्म-कर्म व्यर्थ हो जाता है।

बीजमन्त्रेण गायत्र्याः प्रणवेत्यभिधीयते॥
देहस्तु दण्ड इत्युक्तः संज्ञाकवचमेव च।
सर्वाङ्गानि पदो मन्त्रं सर्वमन्त्रे त्वयं विधिः॥

गायत्री का बीज ही प्रणव कहा जाता है। देह दण्ड है, गायत्री-कवच उसकी संज्ञा है। पद और मंत्र सभी अंग हैं। मंत्र की यह विधि है।

अस्त्राऽष्टवारतः प्रोक्ता गायत्री व्याप्य उच्यते।
एतत् षण्मन्त्रकं ज्ञात्वा अर्घ्यं दद्याद्धि नामतः॥

गायत्री में व्याप्त आठ बार अस्त्रों का प्रयोग करना चाहिए। इन छह मंत्रों को जानकर 'सूर्याय नमः' इस नाम से अर्घ्यदान करना चाहिए।

एकं मध्याह्नकाले च प्रायश्चित्तं द्वितीयकम्।
अर्घ्यद्वयं तु मध्याह्ने तथा मुक्तं महामुने॥

मध्याह्नकाल में एक अर्घ्य, दूसरा अर्घ्य प्रायश्चितसंज्ञक है। इस प्रकार मध्याह्नकाल में दो अर्घ्यदान करना चाहिए। ऐसा कहा गया है।

अर्घ्यत्रयं प्रयोगार्थं प्रायश्चित्तं चतुर्थकम्।
सायं प्रात द्विजादीनामेवमेव विधिः क्रमात्॥

सायंकाल में तीन अर्घ्य तथा चौथा प्रायश्चित अर्घ्य देना चाहिए। इस प्रकार ब्राह्मणों को प्रात:काल में तीन, मध्याह्न में दो तथा सायंकाल में चार अर्घ्यदान करना चाहिए।

ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदण्डं च ब्रह्मशीर्षं च संयुतम्।
अर्घ्यत्रयं प्रयोगार्थमेवमेवमुदाहृतम्॥

प्रथम अर्घ्य का नाम ब्रह्मास्त्र, दूसरे का ब्रह्मदण्ड तथा तीसरे का नाम ब्रह्मशीर्ष है। ऐसा विद्वानों ने कहा है।

शस्त्रमादौ ततो दण्डं शिखात्रीणि समुच्चरेत्।
पर्यायेण त्रिरुच्चार्यमञ्जलिं च त्रिधा हरेत्॥

प्रथम अर्घ्य में 'इदं ब्रह्मदण्डं' तथा तीसरे में 'इदं ब्रह्मशीर्ष' ऐसा कहकर क्रमश: हाथ में जल लेना चाहिए।

अर्घ्यत्रयं प्रयोक्तव्यमभिमन्त्रितमञ्जलिम्।
त्रियुक्तं विसृजेदर्घ्यमसुराणां वधाय च॥

इस प्रकार गायत्री से अभिमंत्रित कर तीन बार असुरों के वध के लिए अर्घ्यदान करना चाहिए।

अस्त्रदण्ड शिरोयुक्तमर्घ्यमेकं समुच्चरेत्।
अस्त्रं वाहनरक्षोघ्नमेकाञ्जलिजलं क्षिपेत्॥

प्रथम अर्घ्य अस्त्रदण्डरूप सिर से स्पर्श कर एक अंजलि जल छोड़ना चाहिए। उससे सूर्य के वाहन की रक्षा तथा राक्षसों का विनाश होता है।

प्रयश्चित्तं द्वितीयार्घ्यमसुराणां वधाय च।
प्रदक्षिणं पृथिव्यां च सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

असुरों के वध के लिए प्रायश्चितस्वरूप द्वितीय अर्घ्य पृथ्वी पर अपनी दाहिनी ओर छोड़ना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य सभी प्रकार के पापों से छुटकारा पा जाता है।

असावादित्यमन्त्रेण ब्रह्मेत्यादि प्रदक्षिणम्।
आपोभिरयुतं कार्यं सर्वाघौघ निकृन्तनम्॥

गायत्री मंत्रपूर्वक 'असौ आदित्यो ब्रह्म' ऐसा पढ़कर जल से 10 हजार अर्घ्यदान पूर्ण हो जाने पर मनुष्य के सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं।

'हंस हंसे' ति मन्त्रस्य बृहत्यन्तं समुच्चरन्।
शिरसा दण्डमस्त्रं च सम्मुखे इव निक्षिपेत्॥

'हंस-हंस' इस 'बृहत्यन्त' मंत्र का उच्चारण कर सिर से स्पर्श कर सम्मुख में ही अर्घ्यदान करना चाहिए। यही अस्त्रदण्ड है।

उपमन्त्रं समुच्चार्य शिरस्तत्र समुद्धरेत्।
अर्घ्यमेकं तु मध्याह्ने तथा मुक्तं महामुने॥

उपमंत्र का उच्चारण कर सिर से युक्त कर मध्याह्नकाल में एक अर्घ्यदान करना चाहिए।

तर्ज्जन्यङ्गुष्ठयोगेन राक्षसी मुद्रिका भवेत्।
राक्षसी मुद्रिकादत्तं तत्तोयं रुधिरं भवेत्॥

तर्जनी तथा अंगूठे को युक्त करने से राक्षसीमुद्रा होती है। राक्षसीमुद्रा से दिया हुआ जल रुधिर के समान हो जाता है।

निक्षिपेद्यदि मूढात्मा रौरवं नरकं ब्रजेत्।
अङ्गुष्ठच्छायापतितं देवता मुद्रिका भवेत्॥

जो मूर्ख प्राणी राक्षसीमुद्रा से अर्घ्यदान करता है, वह रौरव नरक को जाता है। जिस अर्घ्य में अंगुष्ठ की छाया पड़ती है, वह देवता की मुद्रा कही जाती है।

देवता मुद्रिकादत्ते सर्वैः पापैः प्रमुच्यते।
एवं विज्ञानमात्रेण सद्यः सिद्धिर्भविष्यति॥

देवता की मुद्रा के लिए दिए गए अर्घ्यदान के द्वारा मनुष्य सभी पापों से छुटकारा पा जाता है। जो जान ले, उसे शीघ्रता से सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

छठा परिच्छेद

ओमित्येकाक्षरं चोक्तं न्यास ध्यान पुरःसरम्।
यथाशक्ति जपं कुर्यान्नित्यकर्म समाचरेत्॥

गायत्री का न्यास तथा ध्यान करके 'ॐ' इस अक्षर का जप करना चाहिए। इसके बाद नित्यकर्म का अनुष्ठान करना चाहिए।

शुचिर्भूमौ लिखेद् यन्त्रं बीजं बिन्दुसमन्वितम्।
बीजराजं लिखेन्मध्ये बह्निमण्डलमध्यगे॥

पवित्र भूमि पर यंत्र (गायत्री) लिखें। उसके ऊपर बिंदु सहित बीज मंत्र लिखें। अग्नितत्त्व के भीतर बीजराज लिखना चाहिए।

चतुरस्त्रं ततो हस्तं सुदृढं मृदु निर्मलम्।
तत्रोपरि समासीनो गायत्रीजपमाचरेत्॥

चार हाथ अत्यंत ठोस और सुंदर वेदी का निर्माण करें। उसके ऊपर बैठकर (साधक) गायत्री का जप करे।

खशुद्धिं भूतशुद्धिं च कृत्वा शोषणदाहनम्।
प्लवने च ततः कुर्यात् प्रणवादित्रयं क्षरैः॥

सबसे पहले आत्मशुद्धि करे, फिर भूतशुद्धि करे। फिर प्रणव से संयुक्त महाव्याहृति पढ़कर प्लवन क्रिया करे।

प्राणायामसमायुक्तमन्तर्बाह्यं समातृकात्।
देहे न्यासं ततः कुर्यात् कराङ्गन्यासमाचरेत्॥

प्राणायाम करके अन्तर तथा बाह्य शुद्ध करे। फिर अंगन्यास तथा करन्यास की क्रिया करे।

ऋषिं न्यसेत् पूर्वमुखे तथा छन्द उदीरितम्।
देवता हृदि विन्यस्य गुह्ये बीजमिति स्मृतम्॥

मुख में छंद तथा सप्तर्षियों का, हृदय में देवताओं का तथा गुह्य-स्थान में बीज का न्यास करे।

शक्तिं विन्यस्य चाधारे पादयोः कीलकं न्यसेत्।
एवं न्यासविधिं कृत्वा ऋष्यादि न्यासपूर्वकम्॥
आवाहनादि भेदं च दश मुद्राः प्रदर्शयेत्।
आयातु वरदा देवी अङ्ग प्रत्यङ्ग सङ्गमे॥
प्रातर्गायत्री सावित्री मध्याह्ने च सरस्वती।
एवमावाहनं ज्ञात्वा सन्ध्यायां जपमाचरेत्॥

आधार में शक्ति तथा पैर में कीलक पढ़कर न्यास करे। इस प्रकार ऋष्यादि का न्यास करके, फिर आवाहनादि कर, दसों मुद्रा प्रदर्शित करे। साधक को अंग-प्रत्यंग में प्रातःकाल वरदा गायत्री देवी, मध्याह्न में सावित्री तथा सायंकाल में सरस्वती का ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार से आवाहन कर गायत्री का जप करे।

हस्ताभ्यामनुलोमेन आवाहनमनाहुते।
नामत्रयऋषिश्छन्दः क्रमेणाऽऽवाहनं भवेत्॥

दोनों हाथों को सीधा कर गायत्री का आवाहन करना चाहिए। आवाहन में क्रमशः ऋषि, देवता तथा छंद का उच्चारण भी आवश्यक है।

मूलाधारेण गायत्री सावित्री मणिपूरके।
द्वादशारे सरस्वती छन्दो नाडीत्रयं तथा॥

मूलाधार में गायत्री, मणिपूरक चक्र में सावित्री तथा द्वादशार चक्र में सरस्वती का निवास रहता है। तीनों नाड़ियों इडा, पिंगला तथा सुषुम्ना में छंदों का निवास है।

ऋषिर्मूर्ध्नि सुविज्ञेय आवाहनमनुक्रमात्।
आवाहनं यथोक्तं च यथोक्तं तु विसर्जनम्॥

ऋषियों का निवास मूर्धा (शिर) में रहता है। इस प्रकार क्रमशः देवता, ऋषि तथा छंदपूर्वक आवाहन करना चाहिए तथा, 'उत्तमे शिखरे भूम्यां तथा पर्वतमूर्द्धनि।

गायत्री छंदसां मातर्गच्छ देवि! यथा सुखम्॥' इत्यादि उपर्युक्त विधि से विसर्जन करना चाहिए।

एवं जानीहि विप्रेन्द जपध्यानं समाचरेत्।
आवाहनं ततो न्यासं विना जाप्यं तु निष्फलम्॥

हे विप्रेन्द्र! ऐसी विधि जानो, ऐसा जानकार ही गायत्री का जप तथा ध्यान करना चाहिए। आवाहन तथा ध्यान के बिना गायत्री का जप निष्फल होता है।

चतुर्विंशतिगायत्रीं प्रातः स्नात्वा जपेन्मनुम्।
प्राणायामं ततः कुर्यान्यास ध्यानं समाचरेत्॥

प्रात:काल स्नान कर प्राणायाम, अंगन्यास तथा ध्यान करना चाहिए। फिर चौबीस अक्षर वाली गायत्री का जप करना चाहिए।

करन्यासं ततः कुर्यादङ्गन्यासं तथैव च।
चतुश्चतुश्चतुष्कं च चतुश्चतुश्चतुश्चतुः॥

इस प्रकार स्नान कर चार प्राणायाम, चार ध्यान, चार अंगन्यास तथा चार करन्यास करना चाहिए। इसके अनन्तर जप करना चाहिए।

हृदयाय शिरसे

शिखायै   कवचाय

नेत्राय-नेत्रत्रयाय च   अस्त्राय

षडङ्गं विन्यसेद् देवीं गायत्रीं वेदमातरम्।
व्याहृतित्रयमुच्चार्य अनुलोमं च बिभ्रतः॥

करान्न्यासमारभ्य गायत्री पूर्ववद् भवेत्।
अकारं च उकारं च मकारं बिन्दुसंयुतम्॥

वेदमाता गायत्री को प्रथम तीन व्याहृतियों का उच्चारण कर षडंगन्यास करें। पुनः करन्यास करें। गायत्री में अकार, उकार और मकार (ॐ) का संयोग होना चाहिए।

अनुलोमं न्यसेत्तत्र त्रिरक्षरसमन्वितम्।
चतुर्विंशतिवर्णानां पल्लवोऽयमुदाहृतः॥

अनुलोम गायत्री के तीन-तीन अक्षरों से चौबीस वर्णों का न्यास करना चाहिए। यह पल्लव विधि है।

चतुरक्षरसंयुक्तं कराङ्गन्यासमाचरेत्।
तुर्यपादं विनान्यासमाद्यन्तं प्रणवैः सह॥

अनुलोम गायत्री के चार-चार अक्षरों से करन्यास करना चाहिए। किन्तु चतुर्थ पाद से न्यास नहीं करना चाहिए। न्यास के आदि तथा अंत में प्रणव होना आवश्यक है।

व्याहृतित्रयमुच्चार्य चतुरक्षरसंयुतम्।
पुनर्व्याहृतिमुच्चार्य कराङ्गन्यासमाचरेत्॥

तीनों व्याहृति का उच्चारण कर गायत्री के चार-चार अक्षरों से न्यास करना चाहिए। तदनन्तर व्याहृति का उच्चारण करना चाहिए।

पादं पादं द्विपादं च प्रतिप्रणवसम्पुटम्।
कराङ्गन्यास संयोगात् षड्भागैस्त्रिपदा भवेत्॥

त्रिपदा गायत्री को चार अक्षरों से छह भाग कर, प्रत्येक पाद के अनुसार प्रणव लगाकर न्यास करना चाहिए।

अङ्गुष्ठादि चतुर्वर्णामनुलोमक्रमेण तु।
हृदयादि चतुर्वर्णाः क्रमेणैव विलोमतः॥

अंगुष्ठ आदि क्रमों से चार-चार वर्ण वाली गायत्री के छह भाग से करन्यास करें और विलोम-क्रम से हृदयादिन्यास करना चाहिए।

चतुर्वर्णान् विना न्यस्तान् विपर्णं संन्यसेद् द्विजः।
तस्य वैफल्यमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः॥

चार-चार वर्णों के बिना जो लोग न्यास करते हैं, उनका किया हुआ सभी जप निष्फल है। यह बात सत्य है, इसमें संदेह नहीं।

अङ्गन्यासं करन्यासं देहन्यासं विना जपेत्।
अन्धत्वं वधिरत्वं च मूकत्वं प्राप्नुयान्मनुः॥

जो अंगन्यास तथा करन्यास के बिना ही जप करते हैं, वे अंधे, बधिर तथा मूकता को प्राप्त करते हैं।

सातवां परिच्छेद

ध्यानं मुद्रां नमस्कारं गुरुमन्त्रं तथैव च।
संयोगमात्मसिद्धिं च पञ्चधैवं विभावयेत्॥

ध्यान, मुद्रा, नमस्कार, गुरुमंत्र तथा अपनी सिद्धि के साथ संयोग—इस प्रकार साधक को उपर्युक्त पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए।

प्रातः केवलगायत्री मध्याह्ने व्याहृतीयुता।
सायांह्ने तुर्यया युक्ता नित्यजाप्यं समाचरेत्॥

प्रात:काल केवल गायत्री का, मध्याह्न में व्याहृति से युक्त तथा सायंकाल में तुरीय (प्रणव) से युक्त कर, गायत्री का नित्य जप करना चाहिए।

पादादौ रेफसंयुक्तां गायत्रीजपलक्षणम्॥

प्रत्येक पाद के आदि में 'ॐ रम्' इस बीजमंत्र का उच्चारण कर जप करना चाहिए।

पादत्रयं समुच्चार्य प्रतिलोमं ततश्चरेत्।
रेफबिन्दु तदाद्यन्तौ गायत्रीजपमाचरेत्॥

गायत्री के तीन पाद का उच्चारण कर, उसका उल्टा उच्चारण करना चाहिए। आदि तथा अंत में 'ॐ रम्' का उच्चारण होना भी आवश्यक है।

गायत्रीं पूर्वमुच्चार्य तुर्यान्त्यादि विलोमतः।
सायंसन्ध्यां जपेदेवं साधकः सर्वसिद्धये॥

सायंकाल में गायत्री का उच्चारण कर, फिर उसे विलोम रूप-से उच्चारण करना चाहिए। ऐसा करने से साधक के सभी कार्यों की सिद्धि होती है।

तकारादि यकारान्तमनुलोमं विलोमतः।
तुर्यपादं बिना मन्त्रं प्रातः सन्ध्यामथाचरेत्॥

तत् के 'त' से आरम्भ कर 'यात्' तक गायत्री का उच्चारण अनुलोम उच्चारण है। 'यात्' के आरंभ से 'तत्' पर्यन्त उच्चारण विलोम उच्चारण है। चतुर्थ पाद के बिना ही गायत्री मंत्र का जप प्रात:काल में करना चाहिए (गायत्री के चौबीस अक्षर में छह अक्षरों के गणना से चार पाद होते हैं, उनमें चतुर्थपाद 'यो नः प्रचोदयात्')।

मकारादि हिकारान्तं मध्यपादमिति स्मृतम्।
तार्तीयं तु प्रयोक्तव्यं तदर्घ्ये प्रथमं भवेत्॥

'भर्गो' के 'भ' से आरंभ कर 'धीमहि' के 'हि' पर्यन्त गायत्री का मध्यपाद कहा जाता है। किन्तु अर्घ्यदान-काल में तीनों पाद का उच्चारण कर अर्घ्यदान करना चाहिए।

धकारादि यकारान्तं तृतीयं पादमुच्चरेत्।
प्रथमं च द्वितीयं च त्रिविधं जपलक्षणम्॥

'धयो' के 'ध' कारसे 'यात्' के 'य' का पर्यन्त तृतीय पाद है। इस प्रकार प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पाद का उच्चारणपूर्वक गायत्री का जप करना चाहिए।

कालत्रयं त्रिधा जाप्यं त्रिकालं त्रिविधं स्मृतम्।
अनुलोम विलोमाभ्यां चिरं सिद्धिमवाप्नुयात्॥

तीनों काल में, तीनों पाद गायत्री का जप करना चाहिए। त्रिकाल भी प्रातः, मध्याह्न तथा सायं-भेद से तीन प्रकार का है। इस प्रकार उपर्युक्त विधान से अनुलोम तथा प्रतिलोम गायत्री का जप करने से शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होती है।

चतुर्विंशति वर्णानामनुलोमं जपेदपि।
पूर्णजाप्यफलं नास्ति अर्द्धजाप्यफलं लभेत्॥

चौबीस वर्ण वाली गायत्री का अनुलोम-जप करने से भी प्रतिलोम-जप न करने से गायत्री जप का फल पूर्ण नहीं होता, उससे तो केवल आधे जप का ही फल प्राप्त होता है।

चतुष्पादं तु गायत्री अनुलोम विलोमतः।
नित्यं जाप्यं प्रकुर्वीत भुक्तिं मुक्तिं लभेन्नरः॥

गायत्री के चार पद क्रमशः, 'तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो, यो नः प्रचोदयात्' इस प्रकार चार पादों का अनुलोम जप तथा 'यात्' से आरंभ कर क्रमशः प्रत्येक पाद का प्रतिलोम जप करने से मनुष्य को भोग तथा मुक्ति दोनों प्राप्त होती हैं।

नित्य नैमित्त काम्यादि व्यस्ताऽव्यस्तं जपेन्मनुम्।
प्रातर्मध्याह्न सायांह्नं जपेदेवं क्रमेण तु॥

नित्य, नैमित्तिक तथा काम्य कर्मों से प्रतिलोम तथा अनुलोम गायत्री का जप प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल में क्रमशः करना चाहिए।

जपपारायणां कुर्यात् त्रिपदा सम्पुटं नव।
एवं ज्ञात्वा जपेन्नित्यमेकः कोटिगुणं भवेत्॥

त्रिपदा गायत्री को नव बार सम्पुटित कर गायत्री का पारायण करना चाहिए। इस प्रकार किया गया एक भी जप करोड़ों गुना फलवान् होता है।

कालत्रयं यथोक्तं च जाप्यपारायणं परम्।
अनन्तफलमाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः॥

तीनों काल उक्त रूप-से गायत्री जप का पारायण करने से अनंत फल की प्राप्ति होती है, यह सत्य है, इसमें संशय नहीं।

अष्टोत्तरसहस्त्रं वा अष्टोत्तरशतं तु वा।
अष्टाविंशतिमेवाऽथ गायत्रीदशकं जपेत्॥

गायत्री का 1008, अथवा 108 अथवा 28 बार या 10 बार जप करना चाहिए।

ओङ्कारः पुरुषश्चैव गायत्री सुन्दरी तथा।
तयोः संयोगकाले तु वस्त्रमाच्छाद्य गण्यते॥

ओंकार पुरुष है, गायत्री उसकी सुंदरी है। अस्तु, उन दोनों के संयोग काल में अर्थात् प्रणवपूर्वक गायत्री जप करते समय जप (माला) को वस्त्र से ढांप कर गणना करनी चाहिए।

वरेण्यं विरलं चोक्त्वा जपकाले विशेषतः।
पारायणेषु युक्तः स्यादन्यथा विफलं भवेत्॥

जपकाल में 'वरेण्यं विरलं' ऐसा कहकर जप का पारायण करना चाहिए, अन्यथा गायत्री जप का फल नहीं होता है।

❑❑

७

गायत्री उपासना विधि

ब्रह्मा, विष्णु और शिव से पूजित तथा लोक को पवित्र करने वाली गायत्री की उपासना विधि इस प्रकार है—साधक ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर शास्त्रीय रीति के अनुसार शौच आदि क्रिया करके नद्यादि में स्नान करे। तत्पश्चात् तीन बार प्राणायाम कर, सूर्यार्घ्य-पर्यन्त संध्योपासन करे।

प्राणायाम के समय निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

मंत्रोच्चारण के पश्चात् निम्नलिखित विनियोग करें—

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परमात्मा देवता शरीरशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

दाहिने हाथ में जल लेकर, 'प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः' से आरंभ कर 'जपे विनियोगः' तक मंत्र पढ़कर जल को भूमि पर गिरा दें।

ब्रह्मणे नमः शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे। परमात्मदेवतायै नमः हृदये। करसम्पुटं कृत्वा, समस्तदुरितक्षयार्थं न्यासं करिष्ये।

'ब्रह्मणे नमः शिरसि' इस मंत्र से सिर का स्पर्श करें। 'गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे' से मुख का और 'परमात्मदेवतायै' से हृदय का स्पर्श करें। फिर हाथ जोड़कर 'समस्तदुरितक्षयार्थं न्यासं करिष्ये' तक पढ़कर संकल्प करें।

व्याहृतीनां जमदग्नि भरद्वाजाऽत्रि गौतम काश्यप विश्वामित्र वसिष्ठादि ऋषिभ्यो नमः शिरसि। सप्तार्चिरनिल सवितृ प्रजापति वरुणेन्द्र विश्वेदेवताभ्यो नमः मुखे। गायत्र्युष्णि गनुष्टुप्-जगतीच्छन्दोभ्यो नमः हृदि। एवं करसम्पुटं कृत्वा, समस्तदुरितक्षयार्थे गायत्रीन्यासः।

'व्याहृतीनां' से प्रारंभ कर 'ऋषिभ्यो नमः शिरसि' तक पढ़कर सिर का स्पर्श, 'सप्तार्चिरनिल' से आरंभ कर 'देवताभ्यो नमः मुखे' तक मंत्र पढ़कर मुख का, 'गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्' से लेकर 'छन्दोभ्यो नमः हृदि' तक पढ़कर हृदय का स्पर्श करें। फिर हाथ जोड़कर 'समस्तदुरितक्षयार्थे गायत्रीन्यासः' यह पढ़कर संकल्प करें।

गायत्रीन्यास:

गायत्र्याः विश्वामित्रऋषये नमः शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे। परमात्मदेवतायै नमः हृदये।

'गायत्र्या:' से 'शिरसि' तक मंत्र पढ़कर सिर का स्पर्श, 'गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे' तक मंत्र पढ़कर मुख का और 'परमात्म' से 'हृदये' तक मंत्र पढ़कर हृदय का स्पर्श करें।

व्याहृतिन्यास:

ॐ भूः नमः हृदये। ॐ भुवः नमः मुखे। ॐ स्वः नमः दक्षांसे। ॐ महः नमः वामांसे। ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ। ॐ तपः नमः वामोरौ। ॐ सत्यं नमः जठरे।

'ॐ भूः नमः हृदये' से हृदय का, 'ॐ भुवः नमः मुखे' से मुख का, 'ॐ स्वः नमः दक्षांसे' से दाहिने कंधे का, 'ॐ महः नमः वामांसे' से बाएं कंधे का, 'ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ' से दाहिने कटि (कमर) के नीचे का स्पर्श, 'ॐ तपः नमः वामोरौ' से वाम भाग के कटि से निचले भाग का स्पर्श और, 'ॐ सत्यं नमः जठरे' से जठर (पेट) का स्पर्श करें।

अक्षरन्यास:

ॐ तत् नमः गुल्फयोः। ॐ सं नमः पादपार्श्वयोः। ॐ विं नमः जान्वोः। ॐ तुं नमः पादमुखयोः। ॐ वं नमः जङ्घयोः। ॐ रें नमः नाभौ। ॐ णिं नमः हृदये। ॐ यं नमः कण्ठे। ॐ भं नमः हस्तयोः। ॐ र्गों नमः मणिबन्धयोः। ॐ दें नमः कूर्पयोः। ॐ वं नमः बाहुमूलयोः। ॐ स्यं नमः आस्ये। ॐ धीं नमः नासापुटयोः। ॐ मं नमः कपोलयोः। ॐ हिं नमः नेत्रयोः। ॐ धिं नमः कर्णयोः। ॐ यों नमः भ्रूमध्ये। ॐ यों नमः मस्तके। ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे। ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे। ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे। ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे। ॐ यात् नमः ऊर्ध्ववक्त्रे।

'ॐ तत् नमः गुल्फयोः' से दोनों गुल्फों (पैर के ठेहुने के नीचे) का स्पर्श करें, 'ॐ सं नमः पादपार्श्वयोः' से पैरों के दोनों भागों का, 'ॐ विं नमः जान्वोः' से दोनों जानु का, 'ॐ तुं नमः पादमुखयोः' से दोनों पैरों के अग्रभाग का, 'ॐ वं नमः जंघयोः' से दोनों जांघों का, 'ॐ रें नमः नाभौ' से नाभि का, 'ॐ णिं नमः हृदये' से हृदय का, 'ॐ यं कण्ठे' से कण्ठ का, 'ॐ भं नमः हस्तयो' से दोनों हाथ का, 'ॐ र्गों नमः माणबन्धयोः' से दोनों मणिबन्ध (कलाई) का, 'ॐ दें नमः कूर्पयोः' से दोनों हाथों के ठेहुनों का, 'ॐ वं नमः बाहुमूलयो' से दोनों बाहुमूलों का, 'ॐ स्यं नमः आस्ये' से मुख का, 'ॐ धीं नमः नासापुटयोः' से दोनों

नासिकाओं का, 'ॐ मं नमः कपोलयोः' से दोनों गालों का, 'ॐ हिं नमः नेत्रयोः' से दोनों आंखों का, 'ॐ धिं नमः कर्णयो' से दोनों कानों का, 'ॐ यों नमः भ्रूमध्ये' से भ्रूमध्य का, 'ॐ यों नमः मस्तके' से मस्तक का, 'ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे' से मुख के पश्चिम भाग का, 'ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे' से मुख के उत्तर भाग का, 'ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे' से मुख के दाहिने भाग का, 'ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे' से मुख के पूर्व भाग का और, 'ॐ यात् नमः ऊर्ध्ववक्त्रे' से (मंत्र पढ़कर) मुख के ऊपरी भाग का स्पर्श करें।

पदन्यासः

ॐ तत् नमः शिरसि। ॐ सवितुर्नमः भ्रूवोर्मध्ये। ॐ वरेण्यं नमः नेत्रयोः। ॐ भर्गः नमः मुखे। ॐ देवस्य नमः जठरे। ॐ धीमहि नमः हृदये। ॐ धियः नमः नाभौ। ॐ यः नमः गुह्ये। ॐ नः नमः जान्वोः। ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि।

'ॐ तत् नमः शिरसि' से सिर का, 'ॐ सवितुर्नमः' से भ्रूमध्य का, 'ॐ वरेण्यं नमः' से दोनों नेत्रों का, 'ॐ भर्गः नमः' से मुख का, 'ॐ देवस्य नमः' से पेट का, 'ॐ धीमहि नमः' से हृदय का, 'ॐ धियः नमः' से नाभि का, 'ॐ यः नमः' से गुह्य का, 'ॐ नः नमः' से दोनों जानुओं का, 'ॐ प्रचोदयात् नमः' से दोनों पैरों का तथा, 'ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्' मंत्र पढ़कर पुनः शिर (सिर) का स्पर्श करें।

पादन्यासः

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादि पादपर्यन्तम्। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयादि नाभ्यन्तम्। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् नमः मूर्धादि हृदयान्तम्। ॐ परोरजसे सावदोम् इति मूर्ध्नि विन्यस्य।

'ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः' से नाभि से लेकर पैर तक का स्पर्श करें, 'ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नमः' पढ़कर हृदय से नाभि-पर्यन्त तथा, 'धियो यो नः प्रचोदयात् नमः' से सिर से लेकर हृदय पर्यन्त स्पर्श करें, 'ॐ परोरजसे सावदोम्' मंत्र पढ़कर फिर सिर का स्पर्श करें।

षडंगन्यासः

ॐ ब्रह्मणे हृदयाय नमः। ॐ विष्णवे शिरसे स्वाहा। ॐ रुद्राय शिखायै वषट्। ॐ ईश्वराय कवचाय हुम्। ॐ सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सर्वात्मने अस्त्राय फट्। इति मन्त्रेणोर्ध्वाऽधस्तालत्रयं कृत्वा, छोटिकमुद्रया दिग्बन्धनं विधाय मूलेन, व्यापकं कुर्यात्।

'ॐ ब्रह्मणे हृदयाय नमः' इस मंत्र से हथेली से हृदय का, 'ॐ विष्णवे शिरसे स्वाहा' से चारों उंगलियों के अग्रभाग से मस्तक का, 'ॐ रुद्राय शिखायै वषट्' से शिखा में अंगूठे से स्पर्श करें। 'ॐ ईश्वराय कवचाय हुम्' से दाहिनी कनिष्ठा के मूल से बायीं भुजा तथा बायीं कनिष्ठा के मूल से दाहिनी भुजा का, 'ॐ सदा शिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्' से मध्यमा तथा तर्जनी से तीनों नेत्रों का, 'ॐ सर्वात्मने अस्त्राय फट्' इस मंत्र से बाएं हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की मध्यमा तथा तर्जनी उंगलियों से तीन बार ताली बजाएं। इस प्रकार तीन-तीन बार हृदयादि का स्पर्श करते हुए चुटकी से चारों ओर दिग्बंधन करें तथा व्यापाकमुद्रा (दोनों हाथों को उत्तान करने की विधि को व्यापकमुद्रा कहते हैं) प्रदर्शित करें।

लयांगन्यासः

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ॠं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः, कं खं गं घं ङं, चं छं जं झं ञं, टं ठं डं ढं णं, तं थं दं धं नं, पं फं बं भं मं, यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ॠं ऊं उं ईं इं आं अं त्यादचोप्र नः यो योधि हिमधी स्यवदे गोभ ण्यं रेर्वतुवित्सत स्वः वः र्भुभू ॐ इति हृदयादि मुखान्तम्। एवमेव हृदयादि केशान्तम्। तथैव व्याप्य।

'ॐ अं आं इं ईं' से 'स्वः वः र्भुभू' तक पढ़कर प्रथम बार हृदय से मुख तक, इसके पश्चात् द्वितीय बार पढ़कर हृदय से केश पर्यन्त भाग का स्पर्श करें।

पीठन्यासः

ॐ मं मण्डूकाय नमः मूलाधारे। ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने। ॐ मं मूलप्रकृत्यै नमः नाभौ। ॐ आं आधारशक्तये नमः हृदये। कं कूर्माय नमः। बं वराहाय नमः। धं धारिण्यै नमः। सं सुधासिन्धवे नमः। रं रत्नद्वीपाय नमः। मं मणिमण्डपाय नमः। कं कल्पवृक्षाय नमः। स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः। रं रत्नसिंहासनाय नमः दक्षांसे। धं धर्माय नमः वामांसे। ज्ञां ज्ञानाय नमः वामोरौ। वं वैराग्याय नमः दक्षोरौ। ऐं ऐश्वर्याय नमः मुखे। अं अधर्माय नमः वामपार्श्वे। अं अज्ञानाय नमः दक्षपार्श्वे। अं अवैराग्याय नमः नाभौ। अं अनैश्वर्याय नमः हृदये। अं अनन्ताय नमः उपर्य्युपरि।

अं अम्बुजाय नमः। सं संविन्नालाय नमः। सं सर्वतत्त्वात्मकाय पद्माय नमः। प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। विं विकारमयकेशरेभ्यो नमः। पं पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः। वं द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः। वं षोडशकलात्मने चन्द्रमण्डलाय नमः। सं सत्त्वात्मने नमः। रं रजसे नमः। तं

तमसे नमः। आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रां दीप्तायै नमः। ह्रीं सूक्ष्मायै नमः। ह्रां विद्युतायै नमः। पीठमध्ये सर्वतोमुख्यै नमः। तदुपरि नित्यपूजाचक्रं विधाय। ॐ ब्रह्म विष्णु रुद्राऽम्बिकात्मकाय सौरपीठात्मने नमः।

'ॐ मं मण्डूकाय नमः' आदि मंत्रों से गायत्री के आसन पर अक्षत छोड़ें। तदनन्तर उसके ऊपर पूजा-चक्र बनाकर, 'ॐ ब्रह्म विष्णु रुद्राऽम्बिकात्मकाय' से आरंभ कर, 'पीठात्मने' तक पढ़कर पूजा-चक्र पर अक्षत छोड़ें।

मूलेन प्राणायामत्रयं व्यापकं च कृत्वा ध्यायेत्।

मूलमंत्र से तीन प्राणायाम तथा व्यापकमुद्रा करके 'मुक्ताविद्रुम' श्लोक पढ़कर गायत्री का निम्नलिखित ध्यान करें—

ध्यानः

मुक्ता विद्रुम हेम नील धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दु निबद्ध रत्नमुकुटां तत्त्वार्थ वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाऽभयाऽङ्कुश कशां शुभ्रं कपालं गुणं।
शङ्खं चक्रमथार विन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

स्त्रियों के उचित शोभनीय मुक्ता, विद्रुम, स्वर्ण, नील तथा स्वच्छ छाया वाले मुखों से युक्त, चंद्रमा तथा विविध रत्नों से विभूषित मुकुट को धारण करने वाली, वर, अभय, अंकुश, कशा, शुभ्र, कपाल, यज्ञोपवीत, शंख, चक्र तथा दो कमलों को अपने हाथों में धारण करने वाली गायत्री देवी का हम ध्यान करते हैं।

इति ध्यात्वा, बहिः पूजाक्तरीत्या देवीं सौवर्णीं च सम्पूज्य, गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलाद्युपचारान् प्रकल्प्य, किञ्चिज्जपित्वा,

इस प्रकार से ध्यान करके बाहर पूर्व पूजा-चक्र में सुवर्ण (सोने) की मूर्ति वाली गायत्री देवी का गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल आदि पूजा-सामग्री को एकत्रित कर गायत्री का जप करते हुए, उपर्युक्त पूजन-सामग्री से गायत्री का पूजन करें। बाहरी पूजा के पूर्व गायत्री का मानसपूजन करें।

मानसी पूजा

स्वागतं देवदेवेशि सन्निधौ मे महेश्वरि।
गृहाण मानसीं पूजा यथार्थपरिभाविताम्॥

हे देवदेवेशि! मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं। तुम मेरे सन्निकट स्थित होकर यथार्थ रूप-से मानसी पूजा ग्रहण करो।

दशघा मूलं जपित्वा, जपं देव्या वामकरे समर्प्य, मनसा पुष्पांजलि दत्त्वा,

क्षणं तदात्मकं विभाव्य वरदाऽभयाऽन्कुश कशा कपालगुण शंख चक्राभ-योन्यादिमुद्राः प्रदर्शयेत्।

गायत्री का दस बार जप कर, फिर उस जप को मानसिक रूप से भगवती के बाएं हाथ में समर्पित करते हुए मानसिक पुष्पांजलि निवेदन करें तथा स्वयं को गायत्री के स्वरूप में ही समझकर वरद मुंद्रा, अभय, अंकुश, कशा, कपाल, गुण, शंख, चक्र और योनि आदि प्रदर्शित करें।

कलश संस्थापनः

अथ बहिः पूजार्थमनुज्ञाप्य बहिः पूजां कुर्यात्। स्ववामे अस्त्रक्षालितत्रिपादिकां निधाय, तदुपरि अस्त्रक्षालितं कलशं निधाय, शुद्धतोयं मूलेनापूर्य्य मूलेनाऽष्टकृत्वोऽभिमन्त्र्य जातवेदसे[1] इत्यृचा[2] त्र्यम्बकमिति ऋचा गायत्र्या च सकृदभिमंत्र्य गन्धपुष्पाभ्यां पूजयेत्।

मानसी पूजा के द्वारा ही बहिः पूजा की आज्ञा लेकर, शस्त्र से ठीक की गई त्रिपादिका (तिपैया) बनाकर, उसके ऊपर कलश रखकर, उसे गायत्री मंत्र द्वारा शुद्ध जल से पूर्ण कर, मूल से आठ बार गायत्री मंत्र के द्वारा उसे अभिमंत्रित करें। 'जातवेदसे' से 'त्र्यम्बकं' और गायत्री मंत्र के द्वारा एक बार उसे अभिमंत्रित करें। पश्चात् उस कलश की गंध तथा पुष्प से पूजा करें।

गायत्री के अर्घ्य की सामान्य विधि निम्न है—

तत्राऽस्त्रक्षालितं ताम्रपात्रं निधाय, मूलेनाऽऽपूर्य्य, मूलेनाऽष्टवारं सम्मन्त्र्य, गन्ध पुष्पाभ्यां पूजयेत्।

पुनः उस पर अस्त्र से क्षलित ताम्रपात्र को रखकर, गायत्री मंत्र पढ़कर, शुद्धजल से उसे भरकर तथा आठ बार मूलमंत्र पढ़कर अभिमंत्रित करें। तदनन्तर गंध और पुष्प आदि पूजन-सामग्री से उस अर्घ्यपात्र की पूजा करें।

आधार पूजा

पीठात्मनोर्मध्ये चन्दनेन कनिष्ठिकया त्रिकोणं षट्कोणं च कृत्वाऽग्नये हृदयाय नमः। ईशानाय शिरसे स्वाहा। निर्ऋतये शिखायै वषट्। वायवे कवचाय हुम्। अग्नयेऽस्त्राय फट्। नेत्रत्रयाय वौषट्। पूर्वेऽस्त्राय फट्। सामान्यार्घ्यजलेन प्रोक्ष्य चन्दनेन पूजयेत्। त्रिकोणे आधारं स्थापयामि। आं आधारशक्तिं स्थापयामि। पृथिवीद्वीपं स्थापयामि।

---

1. *ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहातिवेदः।*
   स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥
2. *ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।*
   ऊर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

तत्र पूजा। अग्निमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। धुं धूम्रायै नमः। जं ज्वालिन्यै नमः। वं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। सुं सुरूपायै नमः। कं कपिलायै नमः। हं हव्यवाहनायै नमः। कं कव्यवाहनायै नमः।

गायत्री के पीठ पर कनिष्ठा उंगली से चंदन द्वारा त्रिकोण अथवा षट्कोण बनाकर आग्नेयकोण में 'आग्नेय हृदयाय नमः' से हृदय का स्पर्श करें, 'ईशानाय शिरसे स्वाहा' से ईशानकोण में, 'निर्ऋतये शिखायै वषट्' इस मंत्र से नैर्ऋत्यकोण में शिखा को, 'वायवे कवचाय हुम्' मंत्र से वायव्य, फिर 'अग्नये अस्त्राय फट्' तथा 'नेत्रत्रयाय वौषट्' से नेत्रों का स्पर्श करें। पुनः 'पूर्वे अस्त्राय फट्' मंत्र पढ़ें। फिर अर्घा के जल से पोंछकर, चंदन से भगवती के पीठ का पूजन करें। 'त्रिकोणे आधारं स्थापयामि' से लेकर, 'कं कव्यवाहनायै नमः' तक मंत्र पढ़ते हुए चंदन तथा अक्षत आदि छोड़ें।

अर्घ्य पूजन:

आधारोपरि अर्घ्यपात्रं संस्थाप्य पात्रोपरि पूजा। अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। तं तापिन्यै नमः। धुं धूम्रायै नमः। मं मरीच्यै नमः। जं ज्वालिन्यै नमः। रुं रुच्यै नमः। सुं सुमुखायै नमः। भों भोगदायै नमः। विं विश्वायै नमः। बों बोधिन्यै नमः। धां धारिण्यै नमः। क्षं क्षमायै नमः।

आधार के ऊपर अर्घ्य-पात्र स्थापित करें। 'अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से लेकर 'क्षं क्षमायै नमः' तक मंत्र पढ़कर अर्घ्य-पात्र की पूजा करें।

विलोममातृकामुच्चरन् शुद्धजलमापूर्य। ॐ क्षं नमः। प्रणवः सर्वत्र। लं नमः। हं नमः। सं नमः। षं नमः। शं नमः। वं नमः। लं नमः। रं नमः। यं नमः। मं नमः। भं नमः। बं नमः। फं नमः। पं नमः। नं नमः। धं नमः। दं नमः। थं नमः। तं नमः। णं नमः। ढं नमः। डं नमः। ठं नमः। टं नमः। ञं नमः। झं नमः। जं नमः। छं नमः। चं नमः। ङं नमः। घं नमः। गं नमः। खं नमः। कं नमः। अः नमः। अं नमः। औं नमः। ओं नमः। ऐं नमः। एं नमः। ॡं नमः। लृं नमं। ॠं नमः। ऋं नमः। ऊं नमः। उं नमः। ईं नमः। इं नमः। आं नमः। अं नमः।

तत्र पूजा। सं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। अं अमृतायै नमः। मं मानदायै नमः। पुं पूषायै नमः। सं समृद्ध्यै नमः। तुं तुष्ट्यै नमः। पुं पुष्ट्यै नमः। रं रत्यै नमः। ज्यों ज्योत्स्नायै नमः। श्रीं श्रियै नमः। कीं कीर्त्यै नमः। अं अङ्गदायै नमः। पूं पूर्णायै नमः।

विलोम गायत्री पढ़कर लयांग में 'त्यादचोप्र नः' से आरंभ कर 'स्वः वः भुंभू ॐ' तक अर्घ्य-पात्र को शुद्ध जल से भरें। फिर, 'ॐ क्षं नमः' से लेकर, 'पुं

पूर्णायै नमः' तक मंत्र पढ़ें। तत्पश्चात् अंकुश मुद्रा से तीर्थों का आवाहन अर्घ्यपात्र में करें।

[1]अङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य,
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधौ भव॥
योनिमुद्रां प्रदर्श्य, [2]धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धादिभिः सम्पूज्य, मूलेनाऽष्टवारमभिमन्त्र्य, [3]मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य, सामान्यार्घ्यजलेन सिञ्चेत्।

हे गंगे, हे यमुने, हे गोदावरि, हे सरस्वति, हे नर्मदे, हे सिन्धु, हे कावेरि! इस जल में निवास करो।

उपर्युक्त मंत्र को पढ़कर योनिमुद्रा दिखाएं, तत्पश्चात् धेनुमुद्रा से उस जल को अमृत बनाकर शंखमुद्रा करें। फिर उसका गंधादि से पूजन कर, आठ बार गायत्री मंत्र पढ़ते हुए उस जल को अभिमंत्रित करें और मत्स्यमुद्रा से उस जल को आच्छादित करें, तत्पश्चात् सामान्य अर्घ्यजल से उसे सींचें।

आत्मतत्त्वाय नमः। विद्यातत्त्वाय नमः। शिवतत्त्वाय नमः। परो रजसे सावदोमिति सप्तकृत्वोऽभिमन्त्र्य तज्जलदेवतात्मैक्यं विभाव्य, किञ्चित् पात्रान्तरे गृहीत्वा, पूजोपकरणसामग्रीमात्मानं च त्रिः प्रोक्षयेत्।

सींचने के समय 'आत्मतत्त्वाय नमः' से आरंभ कर, 'सावदोम्' तक पढ़कर सात बार अभिमंत्रित करें तथा उस जल को देवता की पूजा के योग्य समझकर थोड़ा-सा जल दूसरे पात्र में लेकर ऊपर तीन बार छिड़कें।

अर्घ्यस्योत्तरे पात्रचतुष्टयं पाद्याऽऽचमनीयमधुपर्कार्थं संस्थाप्य, सकृदभिमन्त्र्य, तोयेनापूर्य, मूलेन त्रिवारमभिमन्त्र्य, न्यासक्रमेण धर्मादीन्, प्रोक्षणीरूपेण सम्पूज्य, तस्मिन् पीठोपरि देवतां विभाव्य, सर्वाङ्गेषु पञ्चपुष्पाञ्जलिं दत्वा, मूलाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य, द्वारे स्थित्वा, तत्र परमात्मना संयोज्य तद्दृष्ट्याऽमृतधारया देवीं प्रीणयित्वा देवीं प्रसन्नां विभाव्य स्वस्मिन् देव्यात्मैक्यं विभाव्याऽऽसनादि दीपान्तानुपचारान् प्रकल्प्य, बाह्यनैवेद्यं न देयमिति सम्प्रदायः, 'शिवो भूत्वा शिवं यजेदि' ति वचनात्॥

---

1. *अंकुशाख्या भवेन्मुद्रा पृष्ठेनामाकनिष्ठया।*
अंगुष्ठे तर्जनी वक्त्रा सरलाचाऽपि मध्यमा॥
2. *अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठाऽनामिका पुनः।*
तथातु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता॥
3. *दक्षपाणि पृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत्।*
अंगुष्ठौ चालयेत् सम्यङ्मुद्रेय मत्स्यरूपिणी॥

अर्घ्य के उत्तर भाग में चार पात्र पाद्य, आचमनीय तथा मधुपर्क के लिए स्थापित करें। गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर, उसे जल से पूर्ण करें। कुशा के मूल से तीन बार अभिमंत्रित कर न्यास के क्रम से धर्मादिकों की प्रोक्षण रूप-से पूजा कर, उस आसन पर देवता को समझ कर सर्वांग में पांच बार पुष्पांजलि देकर, मूलाधार (नाभि-स्थान) से कुण्डलिनी को उठाकर द्वारदेश पर स्थिर हो अपने को परमात्मा में लगाकर, उसी दृष्टि से अमृतधारा द्वारा गायत्री को प्रसन्न कर और उन्हें प्रसन्न तथा अपने को देवी से अभिन्न समझकर, आसन से लेकर दीप-पर्यन्त पूजन करें। बाहर में नैवेद्य नहीं देना चाहिए, ऐसा संप्रदाय है, क्योंकि संप्रदायानुसार शिव बनकर ही शिव का भजन-पूजन करना चाहिए, इसलिए देवी बनकर देवी का पूजन भी उचित है। अत: नैवेद्य की आवश्यकता नहीं है।

पीठ पूजा

मं मण्डूकाय नमः। कं कालाग्निरुद्राय नमः। मुं मूलप्रकृत्यै नमः। आं आधारशक्तयै नमः। कूं कूर्मायै नमः। अं अनन्ताय नमः। वं वराहाय नमः। धं धरितयै नमः। सुं सुधासिन्धवे नमः। रं रत्नद्वीपाय नमः। मं मणिमण्डपाय नमः। कं कल्पतरवे नमः। स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः। तदुपरि, रत्नसिंहासनाय नमः। आग्नेयादि कोणेषु धं धर्माय नमः। ज्ञं ज्ञानाय नमः। वं वैराग्याय नमः। अं ऐश्वर्याय नमः। पूर्वादिदिक्षु अं अधर्माय नमः। अं अज्ञानाय नमः। अं अवैराग्याय नमः। अं अनैश्वर्याय नमः। मध्ये अं अनन्ताय नमः। अं अम्बुजाय नमः। आं आनन्दाय नमः। सं संवित्रालाय नमः। सं सर्वतत्त्वात्मकपद्माय नमः। पं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। वं विकारमयकेशरेभ्यो नमः। पं पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः। अं द्वादशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः। सं सत्त्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। कं कलात्मने नमः। एतान्युपर्युपरि।

पीठ पर अक्षत छोड़ते हुए, 'मं मण्डूकाय नमः' से लेकर, 'स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः' तक मंत्र पढ़ें। पुन: पीठ पर, 'रत्नसिंहासनाय नमः' मंत्र पढ़कर अक्षत छोड़ें। फिर अग्निकोण में, 'धं धर्माय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें। नैर्ऋत्यकोण में, 'ज्ञं ज्ञानाय नमः' वायव्यकोण में, 'वं वैराग्याय नमः' और ईशानकोण में, 'अं ऐश्वर्याय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें। फिर पीठ के पूर्व में, 'ॐ अं अधर्माय नमः' दक्षिण में, 'अं अज्ञानाय नमः' पश्चिम में 'अं वैराग्याय नमः' उत्तर में, 'अं अनैश्वर्याय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें, पुन: मध्य में 'अं अनन्ताय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें, फिर पीठ के ऊपर, 'ॐ अम्बुजाय नमः' से लेकर 'कं कलात्मने नमः' तक पढ़कर अक्षत छोड़ें।

पीठस्य पूर्वभागे—रां दीप्तायै नमः। रीं सूक्ष्मायै नमः। रूं भद्रायै नमः। रैं विभूत्यै नमः। रः अमोघायै नमः। रां विद्युतायै नमः। पीठमध्ये परदेवतायै नमः। सर्वतामुख्यै नमः। तदुपरि, बिन्दु त्रिकोणावृत दलाष्टकं रेखात्मकं चतुरस्त्रं चतुर्द्वारोपशोभितं यन्त्रं संस्थाप्य, ब्रह्म विष्णु रुद्रविम्बात्मक—सौरपीठाय नमः। इति पीठं पूजयेत्।

तत्पश्चात् पीठ के पूर्व भाग में, 'रां दीप्तायै नमः' से प्रारंभ कर, 'रां विद्युतायै नमः' तक पढ़कर अक्षत (चावल) छोड़ें। पीठ के मध्य में, 'परदेवतायै नमः', 'सर्वतोमुख्यै नमः' तक पढ़कर अक्षत छोड़ें। फिर पीठ के ऊपर बिंदु कोण को अष्टदल से आवृत, रेखारूप चौकोर, चार द्वार युक्त गायत्री मंत्र स्थापित करें और, 'ब्रह्मा विष्णु रुद्र विम्बात्मक सौरपीठाय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें। तदनन्तर गंधादि से पाठ का पूजन करें।

अथ पूर्वोक्त—ऋष्यादिन्यासं कृत्वा, प्राणानायम्य, मूलने व्यापकं गायत्र्युच्चारणपूर्वकं हस्ताभ्यां पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा, नासारन्ध्रेण पुष्पसञ्चयकल्पितयन्त्रमये कल्पितमूर्तिं निःक्षिप्य तत्तत्स्थानगतानि आवरणानि ध्यात्वा, आवाहनादिमुद्राः प्रदर्श्याऽऽवाहन[1] सन्निधापन[2] सन्निरोधनं[3] सम्मुखीकरणम्[4] अवगुण्ठनं[5] सकलीकरणं[6] चेति। मूलान्ते श्रीगायत्रि देवि इहावाहिता भव, पुष्पेण देव्या हृदि करं निधाय, 'आं ह्रीं क्रौं' इति मन्त्रेण द्वादशवारं जपेत्।

इसके बाद फिर पहले कहे गए 'विश्वामित्र' आदि ऋष्यादिन्यास को करें तथा प्राणायाम कर गायत्री का उच्चारण करते हुए मूलमंत्र से व्यापक मुद्रा करें, फिर

---

1. *स्थापनी सा तु मुद्रा स्यादेषाऽऽवाहनमुद्रिका।*
   अधोमुखी कृता सा चेत् सर्वसंस्थापने क्षमा॥
2. *सन्निधापनमुद्रा स्याद्योगो मुष्टिद्वयस्य तु।*
   सम्यक् कृतावुभौ जातौ त्वङ्गुष्ठावुच्छ्रितौ यदि॥
3. *संरोधिनी तु सा मुद्रा मुष्ट्योरन्तः प्रवेशितौ।*
   द्वावङ्गुष्ठौ मुष्टियोगो निश्छिदश्च भवेद् यदि॥
4. *सम्मुखीकरणी मुद्रा सा ज्ञेया मुष्टियुग्मकम्।*
   देवानां स्थापने या स्यादङ्गुष्ठद्वयमुक्तकम्॥
5. *अवगुण्ठनमुद्रा तु दीर्घाधोमुखतर्जनी।*
   मुष्टिबद्धस्य हस्तस्य सव्यस्य भ्रामयेच्च ताम्॥
6. *देवाङ्गेषु षडङ्गानां न्यासः स्यात् सकलीकृतिः।*
   अपि च—
   हृदयादि-शरीरान्ते कनिष्ठाद्यङ्गुलीषु च।
   हृदयादि-मन्त्रविन्यासः सकलीकरणं मतम्॥

दोनों हाथों में पुष्पांजलि लेकर नासिकारन्ध्र से पुष्प-समूहों के द्वारा बनाए गए यंत्र में कल्पित गायत्री-मूर्ति के ऊपर छोड़कर, उन-उन स्थानों पर नियत आवरणों का ध्यान करें। आवाहन की मुद्रा दिखाकर, आवाहन, सन्निधापन, सन्निरोधन, सम्मुखीकरण, अवगुण्ठन, सकलीकरण आदि क्रिया करें। तत्पश्चात् मूलांत में 'श्रीगायत्रि देवि इहावाहिता भव' ऐसा मंत्र पढ़कर फूल से देवी के हृदय में अपना हाथ रखकर, 'आं ह्रीं क्रौं' यह मंत्र बारह बार पढ़ें।

नोट—तदनन्तर भूतशुद्धि तथा मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कर देवी का पूजन करें।

आवरण पूजा

तत्र मध्ये त्रिकोणे, व्याहृत्यै नमः। अथकोणे, गायत्र्यै नमः। नैर्ऋत्यकोणे, सावित्र्यै नमः। वायव्यकोणे, सरस्वत्यै नमः। त्रिकोणान्तरालेषु, ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। रुद्राय नमः। मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा,

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥
अनेन पुष्पाञ्जलिं दत्वा, द्वितीयावरणं पूजयेत्॥

आवरण-पूजा के लिए बनाए गए त्रिकोण के मध्य में, 'व्याहृत्यै नमः' कोण पर, 'गायत्र्यै नमः' नैर्ऋत्यकोण में, 'सावित्र्यै नमः' वायव्यकोण में, 'सरस्वत्यै नमः' ऐसा पढ़कर अक्षत छोड़ें। फिर त्रिकोण के बीच में, 'ब्रह्मणे नमः, विष्णवे नमः, रुद्राय नमः' ऐसा पढ़ें तथा गायत्री मंत्र पढ़कर, पुष्पांजलि लेकर, 'अभीष्टसिद्धिं मे' इस मंत्र को पढ़ें।

मंत्रार्थ—हे शरणागत के ऊपर कृपा करने वाली भगवती गायत्री, मेरा मनोरथ पूर्ण करो। हम तुम्हें यह आवरण-पूजा भक्ति से युक्त हो समर्पित कर रहे हैं।

इस प्रकार मंत्र पढ़कर पुष्पांजलि निवेदन करें, तत्पश्चात् आगे की (द्वितीय) आवरण-पूजा करें।

अष्टदलेषु पूर्वादिदिक्षु—ॐ आदित्याय नमः। भानवे नमः। भास्कराय नमः। रवये नमः। आग्नेयादि केशरेषु उषायै नमः। प्रभायै नमः। प्रजायै नमः। सन्ध्यायै नमः। मूलमुच्चरन्, 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि—'इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

अष्टदलों पर पूर्वादि दिशा के क्रम से, 'ॐ आदित्याय नमः' से लेकर, 'रवये नमः' तक पढ़कर चारों दिशाओं के चार कमल पर चार अक्षत छोड़ें। फिर आग्नेयकोण में, 'उषायै नमः' से प्रारंभ कर, 'संध्यायै नमः' तक चारों कोनों वाले

कमल पर अक्षत छोड़ें, फिर 'अभीष्टसिद्धिं' इस मंत्र को पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करें।

हृदि, ब्रह्मणे नमः। हृदयाय नमः। ईशाने, रुद्राय शिखायै वषट्। नैर्ऋत्ये, ईश्वराय कवचाय हुम्। वायव्ये, सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्। आग्नेये, सर्वात्मने अस्त्राय फट्। तत्तद् देवताभ्यो नमः। मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा,

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

'ब्रह्मणे नमः, हृदयाय नमः' ऐसा पढ़कर हृदय का, ईशानकोण में, 'रुद्राय शिखायै वषट्' से शिखा का, नैर्ऋत्यकोण में, 'ईश्वराय कवचाय हुम्' से बाहुमूल का, वायव्य में, 'सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्' से दोनों नेत्रों का, अग्निकोण में, 'सर्वात्मने अस्त्राय फट्' मंत्र पढ़कर बाएं हाथ पर दाहिने हाथ के द्वारा ताली बजाएं। 'तत्तद्देवताभ्यो नमः' से शरीर के चारों ओर चुटकी बजाएं तथा पुष्पांजलि लेकर, 'अभीष्टसिद्धि' इत्यादि मंत्र को पढ़कर पुष्पांजलि समर्पित करें। फिर चतुर्थ आवरण की पूजा करें।

तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदलेषु। अमृतायै नमः। नित्यायै नमः। विश्वम्भरायै नमः। ईशान्यै नमः। प्रभायै नमः, जयायै नमः। विजयायै नमः। शान्त्यै नमः। मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

प्रथम पूजित अष्टदल के बाहर वाले अष्टदल पर, 'अमृतायै नमः' से आरंभ कर, 'शान्त्यै नमः' तक पढ़कर पूर्वादि क्रम से आठों अष्टदल पर अक्षत छोड़ें तथा पुष्पांजलि लेकर, 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि' मंत्र को पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करें।

तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ कान्त्यै नमः। दुर्गायै नमः। सरस्वत्यै नमः। विद्यारूपायै नमः। विशालायै नमः। ईशानायै नमः। वायव्यै नमः। विमलायै नमः। मूलमुच्चरन्, 'अभीष्टसिद्धिम्—' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पूर्व के क्रम से आठों दिशाओं में क्रमशः, 'कान्त्यै नमः' से प्रारंभ कर, 'विमलायै नमः' तक मंत्र पढ़कर, गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए, पूजन करें। तथा, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र को पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करें।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु। संहारिण्यै नमः। सूक्ष्मायै नमः। विश्वयोन्यै नमः। जयावहायै नमः। पद्मालयायै नमः। परायै नमः। शोभायै नमः। रूपायै नमः। मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा, 'अभीष्टसिद्धिम्—' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पूर्वादि आठों दिशाओं के क्रम से, 'संहारिण्यै नमः' से प्रारंभ कर, 'रूपायै नमः' तक पढ़कर अक्षत से आवाहन करें। फिर पूजन कर, गायत्री मंत्र का उच्चारण करें और, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र पढ़कर पुष्पांजलि अर्पण करें।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ आं ब्राह्म्यै नमः। ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः। ॐ ऊं कौमार्यै नमः। ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः। ॐ लृं वाराह्यै नमः। ॐ औं चामुण्डायै नमः। ॐ अः चण्डिकायै नमः। मूलमुच्चार्य 'अभीष्टसिद्धिं— ' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पूर्वोक्त पूर्वादि आठ दिशाओं में क्रमशः, 'ॐ आं ब्राह्मयै नमः' से प्रारंभ कर, 'ॐ अः चण्डिकायै नमः' तक मंत्र पढ़ते हुए, अक्षतादि से आवाहन कर, गायत्री मंत्र का उच्चारण करें। पुनः 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र को पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करें।

तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ सों सोमाय नमः। ॐ बुं बुधाय नमः। ॐ शुं शुक्राय नमः। ॐ भौं भौमाय नमः। ॐ शं शनैश्चराय नमः। ॐ रां राहवे नमः। ॐ कें केतवे नमः। मूलेन 'अभीष्टसिद्धिम्— ' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

उपरोक्त सातवें आवरण के बारह पूर्वादि आठ दिशाओं के क्रम से, 'ॐ सों सोमाय नमः' से प्रारंभ कर, 'ॐ कें केतवे नमः' तक पढ़कर अक्षतादि से आवाहन कर पूजन करें और गायत्री मंत्र का उच्चारण कर, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र से पुष्पांजलि समर्पित करें।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः। ॐ यं यमाय नमः। ॐ क्षं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः। ॐ सं सोमाय नमः। ॐ ईं ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः। मूलेन 'अभीष्टसिद्धिम्— ' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पूर्वादि आठ दिशाओं तक ऊपर और नीचे इस प्रकार के क्रम से, 'ॐ लं इन्द्राय नमः' से आरंभ कर 'ॐ अनन्ताय नमः' तक पढ़कर अक्षतादि से आवाहन करें। इसके पश्चात् गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र को पढ़कर पुष्पांजलि समर्पित करें।

ॐ वं वज्राय नमः। ॐ शं शक्तये नमः। ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खड्गाय नमः। ॐ पं पाशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ चं चक्राय नमः। ॐ अं अम्बुजाय नमः। मूलेन 'अभीष्टसिद्धिम्–' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

'ॐ वं वज्राय नमः' से आरंभ कर, 'ॐ अं अम्बुजाय नमः' तक पढ़कर पूर्वादि आठ दिशाओं में तथा ऊपर और नीचे तत्तद् देवताओं का आवाहन कर, पूजन करें तथा मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र से पुष्पांजलि समर्पित करें।

यस्य स्मृत्या च नामोक्तया तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
इति पूजां समर्प्य, जपफलं देव्याः करे समर्प्य, पुष्पाञ्जलिं
दत्वा, क्षमाप्य, स्वहृदि उद्वास्य पुनर्ऋष्यादिन्यासं कृत्वा, निर्माल्यं विसृजेत्।

तत्पश्चात् सभी आवरणों की पंचोपचार से पूजा करें। आरती तथा पुष्पांजलि देकर, 'यस्यस्मृत्या नामोक्तया' मंत्र को पढ़कर, पूजा समर्पित करें। जप को भगवती के हाथ में समर्पित करें और पुष्पांजलि प्रदान कर, क्षमा प्रार्थना कर अपने हृदय में भगवती को बैठाकर पुनः पूर्वोक्त क्रम से ऋष्यादिन्यास कर निर्माल्य को भगवती पर से हटा दें। यहां तक गायत्री पुरश्चरण के लिए नित्य पूजन करना चाहिए।

नैमित्तिकमाह

गुरुजन्मदिवसे स्वजन्मदिवसे जन्मनक्षत्रे विद्याप्राप्तिदिवसे
पूर्णायां व्यतीपाते वा विशेष पूजयेत्। इति नैमित्तिकम्।

गुरु के जन्मदिन में अथवा अपने जन्मदिन में या अपने नक्षत्र में, विद्याप्राप्ति के दिन, पूर्णिमा तथा व्यतीपात में गायत्री का विशेष रूप-से पूजन करें।

पुरश्चरण विधि

कर्ता स्वशक्तया गुरुं सम्पूज्य, तदनुज्ञया देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणं प्राजापत्यं वा समाचरेत्। पुरश्चरणदिवसे सुगन्धसलिलैः स्नात्वा, पूजाप्रदेशे चतुरस्त्रं चतुर्द्वारं मण्डपं विधाय, हृष्टधीर्वाङ्नियमितो मिताहारो जितेन्द्रियः प्रातरारभ्य मध्याह्नं जपेत्। एवं चतुर्विंशतिलक्षं जपेत्। तदुक्तम्—

उक्तलक्षविधानेन कृत्वा विप्रा जितेन्द्रियाः।
क्षीरौदनं तिलं दूर्वा क्षीरद्रुम समिद् द्रुमान्॥

अष्टद्रव्येण च पृथक् सहस्त्रित्रितयं हुनेत्। मन्त्रफलसिद्धये जपदशांशहोमः। तद्दशांशेन तर्पणम्। तद्दशांशेन मार्जनम्। तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम्।

पुरश्चरण करने वाला साधक अपनी शक्ति के अनुसार गुरु का पूजन कर और उनकी आज्ञा से शरीर शुद्धि के लिए चान्द्रायण या प्राजापत्य व्रत (उपवास) करे। पुरश्चरण आरंभ करने वाले दिन में सुगन्धित जल से स्नान कर, पूजा-स्नान पर समतल, चौकोर चारद्वार का मण्डप बनाकर, प्रसन्नता से वाणी को नियंत्रित कर, अल्प भोजन कर, अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रखकर, प्रातःकाल से आरंभ कर, मध्याह्न पर्यन्त जप करें। इस प्रकार प्रतिदिन के क्रमानुसार 24 लाख गायत्री का जप पूर्ण करें।

उपर्युक्त क्रम के विधान से जितेन्द्रिय ब्राह्मण दूध, पायस, दूर्वा, दुधार वृक्ष की लकड़ी, अष्टद्रव्य आदि से तीन हजार गायत्री के मंत्र द्वारा हवन करें।

मंत्र फल की सिद्धि के लिए जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

काम्य-पूजन

विद्यार्थी वाग्भवाद्यां, लक्ष्मीकामः श्रीबीजं, वश्यार्थे कामबीजम्, सर्वकामार्थे मायाबीजम्, आयुः कामार्थे मृत्युञ्जयचतुरक्षरीसहितं जपेत्।

विद्यार्थी विद्या के लिए, 'ॐ ह्रीं' लगाएं, लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए, 'ॐ श्रीं' बीज तथा वशीकरण के लिए, 'क्लीं' काम बीज, संपूर्ण मनोरथ सिद्धि के लिए मायाबीज, आयु की कामना के लिए, मृत्युंजय चतुरक्षरी 'ॐ ह्रीं मां जीवय पालय' सहित गायत्री का जप करें।

तत्त्वसङ्ख्यासहस्राणि समन्त्रं जुहुयात् तिलैः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो दीर्घमायुश्च विन्दति॥
आयुष्यं साज्यहविषा केवलेनाथ सर्पिषा।
पर्वाङ्क्तिैस्तिलैर्मन्त्री जुहुयात् त्रिसहस्त्रकम्॥
अरुणाक्षैस्त्रिमध्वाज्यैः प्रसूनैर्ब्रह्मवृक्षजैः।
बहुना किमिहोक्तेन यथावत् साधु साधिता॥
द्विजन्मनामियं विद्या सिद्धकामदुहा स्मृता॥

गायत्री मंत्र के द्वारा तिल से 24 हजार हवन करें, तो वह (साधक) सब पापों से मुक्त हो जाता है तथा उसकी आयु बढ़ती है और वो दीर्घायु होता है। आयु की कामना के लिए हवि, घी अथवा केवल घी से या तिल से 3 हजार गायत्री मंत्र के द्वारा हवन करें। अरुणाक्ष (मजीठ), मधु (शहद), घी तथा ब्रह्मवृक्ष (पलाश) के पुष्प से हवन करने का फल बहुत है, अर्थात् साधक को गायत्री की सिद्धि हो जाती है। ब्राह्मणों के लिए कामधेनु के समान यह विद्या संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली होती है।

❑❑

८

गायत्री अष्टोत्तर सहस्रनामावली

गायत्री के एक हजार आठ नाम महान् पुण्यदायक, सर्वपापविनाशक और विपुल संपत्ति को देने वाले हैं, गायत्री को संतुष्ट करने वाले हैं अर्थात् इनसे भगवती गायत्री प्रसन्न होती हैं। इनका पाठ विशेष रूप से ब्राह्मणों के साथ अष्टमी तिथि को करना चाहिए।

जपं कृत्वा होम-पूजा ध्यानं कृत्वा विशेषतः।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गायत्र्यास्तु विशेषतः॥
सुभक्ताय सुशिष्याय वक्तव्यं भूसुराय वै।
भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्यश्च बान्धवेभ्यो न दर्शयेत्॥
यद् गृहे लिखितं शास्त्रं भयं तस्य न कस्यचित्त्।
चञ्चलाऽपि स्थिरा भूत्वा कमला तत्र तिष्ठति॥
इदं रहस्यं परमं गुह्याद् गुह्यतरं महत्।
पुण्यप्रदं मनुष्याणां दरिद्राणां निधिप्रदम्।
मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वकाम्रदम्॥
रोगाद् वै मुच्यते रोगी बद्धो मुच्येत बन्धनात्।

जप, होम, पूजन और ध्यान करके भगवती की उपासना करनी चाहिए। इस गायत्री मंत्र का उपदेश सभी लोगों को न देना चाहिए। श्रेष्ठ भक्तों, उत्तम शिष्यों और ब्राह्मणों को ही इसका अधिकारी समझकर उपदेश देना चाहिए। जिसके घर में इस गायत्री-संबंधी शास्त्र का लिखित ग्रंथ होता है, उसके यहां कुछ भी भय की संभावना नहीं रहती और उस घर में चंचला लक्ष्मी का स्थिर निवास होता है। इसका रहस्य गूढ़ से भी गूढ़ है। यह मनुष्यों के लिए पुण्यदायक और निर्धनों के लिए निधि प्रदान करने वाला है। मोक्ष चाहने वालों के लिए मुक्तिदायक और कामाभिलाषियों के लिए सब कामों को देने वाला है। इससे रोगी मनुष्य रोगरहित और बंधन आदि में पड़ा हुआ कैदी बंधनमुक्त हो जाता है।

ब्रह्महत्या सुरापानं सुवर्णस्तेयिनो नरा।
गुरुतल्पगतो वाऽपि पातकाद् मुच्यते सकृत॥

असत्प्रतिग्रहाच्चैवाऽभक्ष्य-भक्षाद् विशेषतः।
पाखण्डानृतमुख्येभ्यः पठनादेव मुच्यते॥
इदं रहस्यममलं मयोक्तं पद्मजोद्भव।
ब्रह्मसायुज्यदं नृणां सत्यं सत्यं न संशयः॥

इसके (गायत्री) द्वारा ब्रह्महत्या, मदिरा-पान, सोने की चोरी और गुरु-पत्नी के साथ गमन करने के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो लोग अग्राह्य भोजन (लहसुन, प्याज या मांसादि) ग्रहण करते, पाखण्ड या ढोंग रचते और सत्यासत्य भाषण करते हैं, वे लोग इस गायत्री-सहस्त्रनाम पाठ से उपर्युक्त दोषों से रहित हो जाते हैं। इस रहस्य का ब्रह्माजी ने कथन किया है। जो इसका पाठ करते हैं, वे निश्चय ही ब्रह्म-सायुज्य पद को प्राप्त होते हैं। यह बात सत्य है और इसमें कोई संशय नहीं है।

गायत्री सहस्त्रनामावली निम्नलिखित है—

गायत्री सहस्त्रनामावली

१. ॐ अजपायै नमः
२. ॐ अजरायै नमः
३. ॐ अजायै नमः
४. ॐ अपरायै नमः
५. ॐ अपराजितायै नमः
६. ॐ अजितायै नमः
७. ॐ अजमायै नमः
८. ॐ अजार्चितायै नमः
९. ॐ अधर्मायै नमः
१०. ॐ अकारादिक्षकारांतायै नमः
११. ॐ अक्षसूत्रधारायै नमः
१२. ॐ अधरायै नमः
१३. ॐ अरिषड्वर्गभेदिन्यै नमः
१४. ॐ अंजनादिप्रतीकाशायै नमः
१५. ॐ अंजनाद्रिनिवासिन्यै नमः
१६. ॐ अदित्यै नमः
१७. ॐ अविद्यायै नमः
१८. ॐ अरविन्दनिभेक्षणायै नमः
१९. ॐ अंतर्बहिः स्थितायै नमः
२०. ॐ अविद्याध्वंसिन्यै नमः
२१. ॐ अंतरात्मिकायै नमः
२२. ॐ अजमुखवासायै नमः
२३. ॐ अरविन्दनिभाननायै नमः
२४. ॐ अर्धमात्रायै नमः
२५. ॐ अर्थदानज्ञायै नमः
२६. ॐ अरिमंडलमर्दिन्यै नमः
२७. ॐ असुरध्न्यै नमः
२८. ॐ अमावास्यायै नमः
२९. ॐ अलक्ष्मीघ्नत्यै नमः
३०. ॐ अचिन्त्यलक्षणायै नमः
३१. ॐ अव्यक्तायै नमः
३२. ॐ अर्थमातृमहेश्वर्यै नमः
३३. ॐ अमृतार्णवमध्यस्थायै नमः
३४. ॐ अणिमादिगुणाधारायै नमः
३५. ॐ अर्कमंडलसंस्थितायै नमः
३६. ॐ अण्डमध्यस्थितदेव्यै नमः
३७. ॐ आदिमूर्तिनिवासिन्यै नमः
३८. ॐ आग्नेय्यै नमः

३९. ॐ आमयै नमः
४०. ॐ आद्यायै नमः
४१. ॐ आराध्यायै नमः
४२. ॐ आसनस्थितायै नमः
४३. ॐ आधारनिलयायै नमः
४४. ॐ आधारायै नमः
४५. ॐ आकाशान्तनिवासिन्यै नमः
४६. ॐ आद्याक्षरसमायुक्तायै नमः
४७. ॐ अंतराकाशरूपिण्यै नमः
४८. ॐ आदित्यमंडलगतायै नमः
४९. ॐ आंतरध्वांतनाशिन्यै नमः
५०. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः
५१. ॐ आदिशक्त्यै नमः
५२. ॐ आकृत्यै नमः
५३. ॐ आयताननायै नमः
५४. ॐ आदित्यपदवीचारायै नमः
५५. ॐ आचार्यायै नमः
५६. ॐ आदित्यपरिसेवितायै नमः
५७. ॐ आवर्तनायै नमः
५८. ॐ आचारायै नमः
५९. ॐ इन्द्रनीलसमाकारायै नमः
६०. ॐ इडापिंगलरूपिण्यै नमः
६१. ॐ इन्द्रायै नमः
६२. ॐ इन्द्रपदायै नमः
६३. ॐ इन्द्रण्यै नमः
६४. ॐ इदुरूपिण्यै नमः
६५. ॐ इक्षुकोदंडसंयुक्तायै नमः
६६. ॐ इषुसंधानकारिण्यै नमः
६७. ॐ इंदिरायै नमः
६८. ॐ इष्टदायै नमः
६९. ॐ इष्टायै नमः
७०. ॐ इन्दीवरनिभेक्षणायै नमः
७१. ॐ इरावत्यै नमः
७२. ॐ ईहात्रयविवर्जितायै नमः
७३. ॐ ईश्वरीदेव्यै नमः
७४. ॐ उडुनिभायै नमः
७५. ॐ उडुप्रभायै नमः
७६. ॐ उडुमत्यै नमः
७७. ॐ उडुपायै नमः
७८. ॐ उडुमध्यगायै नमः
७९. ॐ उर्वारुक्फलाननायै नमः
८०. ॐ उमायै नमः
८१. ॐ ऊषायै नमः
८२. ॐ ऊर्मिमालावाग्ग्रंथदायिन्यै नमः
८३. ॐ ऊर्ध्वाधोगतिमेदिन्यै नमः
८४. ॐ ऊर्ध्वबाहुप्रियायै नमः
८५. ॐ ऊर्ध्वायै नमः
८६. ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः
८७. ॐ ऋषिमण्डलचारिण्यै नमः
८८. ॐ ऋद्धिदायै नमः
८९. ॐ ऋजुमार्गस्थायै नमः
९०. ॐ ऋजुधर्मायै नमः
९१. ॐ ऋतुप्रदायै नमः
९२. ॐ ऋग्वेदनिललायै नमः
९३. ॐ ऋज्व्यै नमः
९४. ॐ ऋतायै नमः
९५. ॐ ऋषये नमः
९६. ॐ ऋतुमत्यै नमः
९७. ॐ ऋषिदेवनमस्कृतायै नमः
९८. ॐ ऋग्वेदायै नमः
९९. ॐ ऋणहंत्रै नमः
१००. ॐ लुप्तधर्मप्रवर्तिन्यै नमः
१०१. ॐ लूतारिवरसंभूतायै नमः
१०२. ॐ लूतादिविषहारिण्यै नमः
१०३. ॐ एकायै नमः
१०४. ॐ एकाक्षरायै नमः

१०५. ॐ एकमात्रायै नमः
१०६. ॐ एकैकनिष्ठितायै नमः
१०७. ॐ ऐहिकामुष्मिकप्रदायै नमः
१०८. ॐ ऐन्द्रयै नमः
१०९. ॐ ऐरावतारूढायै नमः
११०. ॐ आ:कारमनुरूपिण्यै नमः
१११. ॐ ओतप्रोतनिवासिन्यै नमः
११२. ॐ ओंकारायै नमः
११३. ॐ ओतायै नमः
११४. ॐ ओषध्यै नमः
११५. ॐ औपासनफलप्रदायै नमः
११६. ॐ और्वायै नमः
११७. ॐ औषधसंपन्नायै नमः
११८. ॐ कमलायै नमः
११९. ॐ करिकुंभस्तनभरायै नमः
१२०. ॐ करबीरसुवासिन्यै नमः
१२१. ॐ कल्याण्यै नमः
१२२. ॐ करालास्यायै नमः
१२३. ॐ कमनीयगुणायै नमः
१२४. ॐ कलाधारायै नमः
१२५. ॐ कमलाकारायै नमः
१२६. ॐ करुणापांगयै नमः
१२७. ॐ ककुबंतायै नमः
१२८. ॐ करिप्रियायै नमः
१२९. ॐ कदंबकुसुमप्रियायै नमः
१३०. ॐ कलशोद्भवसंस्तुतायै नमः
१३१. ॐ कमंडलुधरायै नमः
१३२. ॐ कर्मनिर्मूलकारिण्यै नमः
१३३. ॐ कलहंसगत्यै नमः
१३४. ॐ कक्षायै नमः
१३५. ॐ कस्तूरीतिलकायै नमः
१३६. ॐ कम्रायै नमः
१३७. ॐ करीन्द्रगमनायै नमः
१३८. ॐ कर्पूरलेपनायै नमः
१३९. ॐ कपिलायै नमः
१४०. ॐ कम्प्रायै नमः
१४१. ॐ कात्यायन्यै नमः
१४२. ॐ कालरात्र्यै नमः
१४३. ॐ कामाक्ष्यै नमः
१४४. ॐ कामसुंदर्यै नमः
१४५. ॐ कामिन्यै नमः
१४६. ॐ कान्तायै नमः
१४७. ॐ कामदायै नमः
१४८. ॐ कालकंठिन्यै नमः
१४९. ॐ कालजिह्वायै नमः
१५०. ॐ कालिकायै नमः
१५१. ॐ कालरूपिण्यै नमः
१५२. ॐ कान्त्यै नमः
१५३. ॐ कामचारप्रभन्जिन्यै नमः
१५४. ॐ कालिन्द्यै नमः
१५५. ॐ कालिकायै नमः
१५६. ॐ कांचयै नमः
१५७. ॐ काममात्रयै नमः
१५८. ॐ कामरूपायै नमः
१५९. ॐ काल्यै नमः
१६०. ॐ कुक्षिस्थाखिलविष्टपायै नमः
१६१. ॐ कुधरायै नमः
१६२. ॐ कुहराश्रयायै नमः
१६३. ॐ कुह्वयै नमः
१६४. ॐ कुमार्यै नमः
१६५. ॐ कुण्डनिलयायै नमः
१६६. ॐ कुसुमप्रियायै नमः
१६७. ॐ कुण्डलवत्यै नमः
१६८. ॐ कुरुक्षेत्रनिवासिन्यै नमः
१६९. ॐ कुरुवंददलाकारायै नमः
१७०. ॐ कुण्डल्यै नमः

१७१. ॐ कुमुदालयायै नमः
१७२. ॐ कुमुद्वत्ये नमः
१७३. ॐ कूटस्थायै नमः
१७४. ॐ केश्यै नमः
१७५. ॐ केशवनुतायै नमः
१७६. ॐ केतक्यै नमः
१७७. ॐ कौशिक्यै नमः
१७८. ॐ कौमार्यै नमः
१७९. ॐ ॐ क्रतुमत्यै नमः
१८०. ॐ कृपावत्यै नमः
१८१. ॐ किरात्यै नमः
१८२. ॐ कीरवाहनायै नमः
१८३. ॐ कैकेय्यै नमः
१८४. ॐ कोकिलालापायै नमः
१८५. ॐ कृतकौतुकमंगलायै नमः
१८६. ॐ कृष्णायै नमः
१८७. ॐ खगवाहनायै नमः
१८८. ॐ खगराजोपरिस्थितायै नमः
१८९. ॐ खलघ्न्यै नमः
१९०. ॐ खंडितजरायै नमः
१९१. ॐ खंडाख्यानप्रदायिन्यै नमः
१९२. ॐ खंडेन्दुतिलकायै नमः
१९३. ॐ ख्यातायै नमः
१९४. ॐ खट्वांगधारिण्यै नमः
१९५. ॐ खड्गखेटकरायै नमः
१९६. ॐ सर्वायै नमः
१९७. ॐ खेचर्यै नमः
१९८. ॐ गुणत्रयविभावितायै नमः
१९९. ॐ गंधर्व्यै नमः
२००. ॐ गह्वर्यै नमः
२०१. ॐ गोत्रायै नमः
२०२. ॐ गिरीशायै नमः
२०३. ॐ गहनायै नमः
२०४. ॐ गम्यै नमः
२०५. ॐ गुहावासायै नमः
२०६. ॐ गुणवत्यै नमः
२०७. ॐ गुरुपापप्रणाशिन्यै नमः
२०८. ॐ गुर्व्यै नमः
२०९. ॐ गुणवत्यै नमः
२१०. ॐ गुह्यायै नमः
२११. ॐ गोप्तव्यायै नमः
२१२. ॐ गुणदायिन्यै नमः
२१३. ॐ गिरिजायै नमः
२१४. ॐ गुह्यमातंग्यै नमः
२१५. ॐ गरुड़ध्वजवल्लभायै नमः
२१६. ॐ गर्वापहारिण्यै नमः
२१७. ॐ गोदायै नमः
२१८. ॐ गोकुलस्थायै नमः
२१९. ॐ गदाधरायै नमः
२२०. ॐ गोकर्णनिलयासक्तायै नमः
२२१. ॐ गुह्यमंडलवर्तिन्यै नमः
२२२. ॐ खंडेन्दुतिलकायै नमः
२२३. ॐ गंगायै नमः
२२४. ॐ गणेशगुहपूजितायै नमः
२२५. ॐ गायत्र्यै नमः
२२६. ॐ गीतायै नमः
२२७. ॐ गांधार्यै नमः
२२८. ॐ गानलोलुपायै नमः
२२९. ॐ गौतम्यै नमः
२३०. ॐ गामिन्यै नमः
२३१. ॐ गाधार्यै नमः
२३२. ॐ गंधर्वाऽप्सरसेवितायै नमः
२३३. ॐ घंटारवप्रियायै नमः
२३४. ॐ घनसंपातदायिन्यै नमः
२३५. ॐ घोषायै नमः
२३६. ॐ घृणिमंत्रमय्यै नमः

२३७. ॐ घोरदानवमर्दिन्यै नमः
२३८. ॐ घंटायै नमः
२३९. ॐ धनदायै नमः
२४०. ॐ धर्मदायै नमः
२४१. ॐ गुह्यमंडलवर्तिन्यै नमः
२४२. ॐ घ्राणायै नमः
२४३. ॐ घृणिसन्तुष्टिकारिण्यै नमः
२४४. ॐ घनारिमण्डलायै नमः
२४५. ॐ घूणायै नमः
२४६. ॐ घृताच्यै नमः
२४७. ॐ घनवेगिन्यै नमः
२४८. ॐ ज्ञानधातुमय्यै नमः
२४९. ॐ चर्चायै नमः
२५०. ॐ चर्चितायै नमः
२५१. ॐ चारुहासिन्यै नमः
२५२. ॐ चटुलायै नमः
२५३. ॐ चण्डिकायै नमः
२५४. ॐ चित्रायै नमः
२५५. ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै नमः
२५६. ॐ चतुर्भुजायै नमः
२५७. ॐ चारुदन्तायै नमः
२५८. ॐ चातुर्यै नमः
२५९. ॐ चरितप्रदायै नमः
२६०. ॐ चूलिकायै नमः
२६१. ॐ चित्रवस्त्रान्तायै नमः
२६२. ॐ चन्द्रमः कर्णकुण्डलायै नमः
२६३. ॐ चन्द्रहासायै नमः
२६४. ॐ चारुदात्र्यै नमः
२६५. ॐ चक्रार्यै नमः
२६६. ॐ चन्द्रहासिन्यै नमः
२६७. ॐ चन्द्रिकायै नमः
२६८. ॐ चन्द्रधात्र्यै नमः
२६९. ॐ चौर्यै नमः
२७०. ॐ चौरायै नमः
२७१. ॐ चण्डिकायै नमः
२७२. ॐ चञ्चद्वाग्वादिन्यै नमः
२७३. ॐ चन्द्रचूडायै नमः
२७४. ॐ चोरविनाशिन्यै नमः
२७५. ॐ चारुचन्दनलिप्ताङ्ग्यै नमः
२७६. ॐ चञ्चच्चामरवीजितायै नमः
२७७. ॐ चारुमध्यायै नमः
२७८. ॐ चारुगत्यै नमः
२७९. ॐ चन्दिलायै नमः
२८०. ॐ चन्द्ररूपिण्यै नमः
२८१. ॐ चारुहोमप्रियायै नमः
२८२. ॐ चर्वाचरितायै नमः
२८३. ॐ चक्रबाहुकायै नमः
२८४. ॐ चन्द्रमण्डलमध्यस्थायै नमः
२८५. ॐ चन्द्रमण्डलदर्पणायै नमः
२८६. ॐ चक्रवाकस्तन्यै नमः
२८७. ॐ चेष्टायै नमः
२८८. ॐ चित्रायै नमः
२८९. ॐ चारुविलासिन्यै नमः
२९०. ॐ चितस्वरूपायै नमः
२९१. ॐ चंद्रवत्यै नमः
२९२. ॐ चंद्रमस्यै नमः
२९३. ॐ चंदनप्रियायै नमः
२९४. ॐ चोदयित्र्यै नमः
२९५. ॐ चिरप्रज्ञायै नमः
२९६. ॐ चातकायै नमः
२९७. ॐ चारुहेतुक्यै नमः
२९८. ॐ छत्रयातायै नमः
२९९. ॐ छत्रधरायै नमः
३००. ॐ छायायै नमः
३०१. ॐ छंदः परिच्छदायै नमः
३०२. ॐ छायादेव्यै नमः

३०३. ॐ छिद्रनखायै नमः
३०४. ॐ छन्नेन्द्रियविसर्पिण्यै नमः
३०५. ॐ छंदोऽनुष्टुप्प्रतिष्ठान्तायै नमः
३०६. ॐ छिद्रोपद्रवभेदिन्यै नमः
३०७. ॐ छेदायै नमः
३०८. ॐ छत्रेश्वर्यै नमः
३०९. ॐ छिन्नायै नमः
३१०. ॐ छुरिकायै नमः
३११. ॐ छेदनप्रियायै नमः
३१२. ॐ जनन्यै नमः
३१३. ॐ जन्मरहितायै नमः
३१४. ॐ जातवेदायै नमः
३१५. ॐ जगन्मय्यै नमः
३१६. ॐ जाह्नव्यै नमः
३१७. ॐ जटिलायै नमः
३१८. ॐ जैत्र्यै नमः
३१९. ॐ जरामरणवर्जितायै नमः
३२०. ॐ जंबूद्वीपवत्यै नमः
३२१. ॐ ज्वालायै नमः
३२२. ॐ जयन्त्यै नमः
३२३. ॐ जलंशालिन्यै नमः
३२४. ॐ जितेन्द्रियायै नमः
३२५. ॐ जितक्रोधायै नमः
३२६. ॐ जगत्प्रियायै नमः
३२७. ॐ जितामित्रायै नमः
३२८. ॐ जातरूपमय्यै नमः
३२९. ॐ जिह्वायै नमः
३३०. ॐ जानक्यै नमः
३३१. ॐ जगत्यै नमः
३३२. ॐ जरायै नमः
३३३. ॐ जनित्र्यै नमः
३३४. ॐ जह्नुतनयायै नमः
३३५. ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः
३३६. ॐ ज्वालामुख्यै नमः
३३७. ॐ जपवत्यै नमः
३३८. ॐ ज्वरघ्न्यै नमः
३३९. ॐ जितविष्टपायै नमः
३४०. ॐ जिताक्रान्तमय्यै नमः
३४१. ॐ ज्वालायै नमः
३४२. ॐ जाग्रत्यै नमः
३४३. ॐ ज्वरदेवतायै नमः
३४४. ॐ ज्वलन्त्यै नमः
३४५. ॐ जलदायै नमः
३४६. ॐ ज्येष्ठायै नमः
३४७. ॐ ज्याघोषास्फोटदिङ्मुख्यै नमः
३४८. ॐ जम्भिन्यै नमः
३४९. ॐ जृम्भणायै नमः
३५०. ॐ जृम्भायै नमः
३५१. ॐ ज्वलन्माणिक्यकुण्डलायै नमः
३५२. ॐ झिंझिकायै नमः
३५३. ॐ झणनिर्घोषायै नमः
३५४. ॐ झंझामारुतवेगिन्यै नमः
३५५. ॐ झल्लरीवाद्यकुशलायै नमः
३५६. ॐ ञरूपायै नमः
३५७. ॐ ञभुजास्मृतायै नमः
३५८. ॐ टङ्कबाणसमायुक्तायै नमः
३५९. ॐ टंकिन्यै नमः
३६०. ॐ टङ्कभेदिन्यै नमः
३६१. ॐ टंकीगणकृताघोषायै नमः
३६२. ॐ टंकनीयमहोरसायै नमः
३६३. ॐ टंकारकारिणीदेव्यै नमः
३६४. ॐ ठठशब्दनिनादिन्यै नमः
३६५. ॐ डामर्यै नमः
३६६. ॐ डाकिन्यै नमः
३६७. ॐ डिम्भायै नमः
३६८. ॐ डुण्डुमारैकनिर्जितायै नमः

तत्र पूजा। अग्निमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। धुं धूम्रायै नमः। जं ज्वालिन्यै नमः। वं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः। सुं सुरूपायै नमः। कं कपिलायै नमः। हं हव्यवाहनायै नमः। कं कव्यवाहनायै नमः।

गायत्री के पीठ पर कनिष्ठा उंगली से चंदन द्वारा त्रिकोण अथवा षट्कोण बनाकर आग्नेयकोण में 'आग्नेय हृदयाय नमः' से हृदय का स्पर्श करें, 'ईशानाय शिरसे स्वाहा' से ईशानकोण में, 'निर्ऋतये शिखायै वषट्' इस मंत्र से नैर्ऋत्यकोण में शिखा को, 'वायवे कवचाय हुम्' मंत्र से वायव्य, फिर 'अग्नये अस्त्राय फट्' तथा 'नेत्रत्रयाय वौषट्' से नेत्रों का स्पर्श करें। पुनः 'पूर्वे अस्त्राय फट्' मंत्र पढ़ें। फिर अर्घा के जल से पोंछकर, चंदन से भगवती के पीठ का पूजन करें। 'त्रिकोणे आधारं स्थापयामि' से लेकर, 'कं कव्यवाहनायै नमः' तक मंत्र पढ़ते हुए चंदन तथा अक्षत आदि छोड़ें।

अर्घ्य पूजन:

आधारोपरि अर्घ्यपात्रं संस्थाप्य पात्रोपरि पूजा। अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। तं तापिन्यै नमः। धुं धूम्रायै नमः। मं मरीच्यै नमः। जं ज्वालिन्यै नमः। रुं रुच्यै नमः। सुं सुमुखायै नमः। भों भोगदायै नमः। विं विश्वायै नमः। बों बोधिन्यै नमः। धां धारिण्यै नमः। क्षं क्षमायै नमः।

आधार के ऊपर अर्घ्य-पात्र स्थापित करें। 'अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' से लेकर 'क्षं क्षमायै नमः' तक मंत्र पढ़कर अर्घ्य-पात्र की पूजा करें।

विलोममातृकामुच्चरन् शुद्धजलमापूर्य। ॐ क्षं नमः। प्रणवः सर्वत्र। लं नमः। हं नमः। सं नमः। षं नमः। शं नमः। वं नमः। लं नमः। रं नमः। यं नमः। मं नमः। भं नमः। बं नमः। फं नमः। पं नमः। नं नमः। धं नमः। दं नमः। थं नमः। तं नमः। णं नमः। ढं नमः। डं नमः। ठं नमः। टं नमः। ञं नमः। झं नमः। जं नमः। छं नमः। चं नमः। ङं नमः। घं नमः। गं नमः। खं नमः। कं नमः। अः नमः। अं नमः। औं नमः। ओं नमः। ऐं नमः। एं नमः। ॡं नमः। लृं नमं। ॠं नमः। ऋं नमः। ऊं नमः। उं नमः। ईं नमः। इं नमः। आं नमः। अं नमः।

तत्र पूजा। सं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। अं अमृतायै नमः। मं मानदायै नमः। पुं पूषायै नमः। सं समृद्ध्यै नमः। तुं तुष्ट्यै नमः। पुं पुष्ट्यै नमः। रं रत्यै नमः। ज्यों ज्योत्स्नायै नमः। श्रीं श्रियै नमः। कीं कीर्त्यै नमः। अं अङ्गदायै नमः। पूं पूर्णायै नमः।

विलोम गायत्री पढ़कर लयांग में 'त्यादचोप्र नः' से आरंभ कर 'स्वः वः र्भुभू ॐ' तक अर्घ्य-पात्र को शुद्ध जल से भरें। फिर, 'ॐ क्षं नमः' से लेकर, 'पुं

पूर्णायै नमः' तक मंत्र पढ़ें। तत्पश्चात् अंकुश मुद्रा से तीर्थों का आवाहन अर्घ्यपात्र में करें।

[1]अङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य,
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधौ भव॥
योनिमुद्रां प्रदर्श्य, [2]धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धादिभिः सम्पूज्य, मूलेनाऽष्टवारमभिमन्त्र्य, [3]मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य, सामान्यार्घ्यजलेन सिञ्चेत्।

हे गंगे, हे यमुने, हे गोदावरि, हे सरस्वति, हे नर्मदे, हे सिन्धु, हे कावेरि! इस जल में निवास करो।

उपर्युक्त मंत्र को पढ़कर योनिमुद्रा दिखाएं, तत्पश्चात् धेनुमुद्रा से उस जल को अमृत बनाकर शंखमुद्रा करें। फिर उसका गंधादि से पूजन कर, आठ बार गायत्री मंत्र पढ़ते हुए उस जल को अभिमंत्रित करें और मत्स्यमुद्रा से उस जल को आच्छादित करें, तत्पश्चात् सामान्य अर्घ्यजल से उसे सींचें।

आत्मतत्त्वाय नमः। विद्यातत्त्वाय नमः। शिवतत्त्वाय नमः। परो रजसे सावदोमिति सप्तकृत्वोऽभिमन्त्र्य तज्जलदेवतात्मैक्यं विभाव्य, किञ्चित् पात्रान्तरे गृहीत्वा, पूजोपकरणसामग्रीमात्मानं च त्रिः प्रोक्षयेत्।

सींचने के समय 'आत्मतत्त्वाय नमः' से आरंभ कर, 'सावदोम्' तक पढ़कर सात बार अभिमंत्रित करें तथा उस जल को देवता की पूजा के योग्य समझकर थोड़ा-सा जल दूसरे पात्र में लेकर ऊपर तीन बार छिड़कें।

अर्घ्यस्योत्तरे पात्रचतुष्टयं पाद्याऽऽचमनीयमधुपर्कार्थं संस्थाप्य, सकृदभिमन्त्र्य, तोयेनापूर्य, मूलेन त्रिवारमभिमन्त्र्य, न्यासक्रमेण धर्मादीन्, प्रोक्षणीरूपेण सम्पूज्य, तस्मिन् पीठोपरि देवतां विभाव्य, सर्वाङ्गेषु पञ्चपुष्पाञ्जलिं दत्वा, मूलाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य, द्वारे स्थित्वा, तत्र परमात्मना संयोज्य तद्दृष्ट्याऽमृतधारया देवीं प्रीणयित्वा देवीं प्रसन्नां विभाव्य स्वस्मिन् देव्यात्मैक्यं विभाव्याऽऽसनादि दीपान्तानुपचारान् प्रकल्प्य, बाह्यनैवेद्यं न देयमिति सम्प्रदायः, 'शिवो भूत्वा शिवं यजेदि' ति वचनात्॥

---

1. *अंकुशाख्या भवेन्मुद्रा पृष्ठेनामाकनिष्ठया।*
   अंगुष्ठे तर्जनी वक्रा सरलाचाऽपि मध्यमा॥
2. *अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठाऽनामिका पुनः।*
   तथातु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता॥
3. *दक्षपाणि पृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत्।*
   अंगुष्ठौ चालयेत् सम्यङ्मुद्रेय मत्स्यरूपिणी॥

अर्घ्य के उत्तर भाग में चार पात्र पाद्य, आचमनीय तथा मधुपर्क के लिए स्थापित करें। गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर, उसे जल से पूर्ण करें। कुशा के मूल से तीन बार अभिमंत्रित कर न्यास के क्रम से धर्मादिकों की प्रोक्षण रूप-से पूजा कर, उस आसन पर देवता को समझ कर सर्वांग में पांच बार पुष्पांजलि देकर, मूलाधार (नाभि-स्थान) से कुण्डलिनी को उठाकर द्वारदेश पर स्थिर हो अपने को परमात्मा में लगाकर, उसी दृष्टि से अमृतधारा द्वारा गायत्री को प्रसन्न कर और उन्हें प्रसन्न तथा अपने को देवी से अभिन्न समझकर, आसन से लेकर दीप-पर्यन्त पूजन करें। बाहर में नैवेद्य नहीं देना चाहिए, ऐसा संप्रदाय है, क्योंकि संप्रदायानुसार शिव बनकर ही शिव का भजन-पूजन करना चाहिए, इसलिए देवी बनकर देवी का पूजन भी उचित है। अतः नैवेद्य की आवश्यकता नहीं है।

पीठ पूजा

मं मण्डूकाय नमः। कं कालाग्निरुद्राय नमः। मुं मूलप्रकृत्यै नमः। आं आधारशक्त्यै नमः। कूं कूर्मायै नमः। अं अनन्ताय नमः। वं वराहाय नमः। धं धरित्यै नमः। सुं सुधासिन्धवे नमः। रं रत्नद्वीपाय नमः। मं मणिमण्डपाय नमः। कं कल्पतरवे नमः। स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः। तदुपरि, रत्नसिंहासनाय नमः। आग्नेयादि कोणेषु धं धर्माय नमः। ज्ञं ज्ञानाय नमः। वं वैराग्याय नमः। अं ऐश्वर्याय नमः। पूर्वादिदिक्षु अं अधर्माय नमः। अं अज्ञानाय नमः। अं अवैराग्याय नमः। अं अनैश्वर्याय नमः। मध्ये अं अनन्ताय नमः। अं अम्बुजाय नमः। आं आनन्दाय नमः। सं संवित्रालाय नमः। सं सर्वतत्त्वात्मकपद्माय नमः। पं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। वं विकारमयकेशरेभ्यो नमः। पं पञ्चाशद्वर्णकर्णिकायै नमः। अं द्वादशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः। सं सत्त्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। कं कलात्मने नमः। एतान्युपर्युपरि।

पीठ पर अक्षत छोड़ते हुए, 'मं मण्डूकाय नमः' से लेकर, 'स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः' तक मंत्र पढ़ें। पुनः पीठ पर, 'रत्नसिंहासनाय नमः' मंत्र पढ़कर अक्षत छोड़ें। फिर अग्निकोण में, 'धं धर्माय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें। नैर्ऋत्यकोण में, 'ज्ञं ज्ञानाय नमः' वायव्यकोण में, 'वं वैराग्याय नमः' और ईशानकोण में, 'अं ऐश्वर्याय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें। फिर पीठ के पूर्व में, 'ॐ अं अधर्माय नमः' दक्षिण में, 'अं अज्ञानाय नमः' पश्चिम में 'अं वैराग्याय नमः' उत्तर में, 'अं अनैश्वर्याय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें, पुनः मध्य में 'अं अनन्ताय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें, फिर पीठ के ऊपर, 'ॐ अम्बुजाय नमः' से लेकर 'कं कलात्मने नमः' तक पढ़कर अक्षत छोड़ें।

पीठस्य पूर्वभागे—रां दीप्तायै नमः। रीं सूक्ष्मायै नमः। रूं भद्रायै नमः। रैं विभूत्यै नमः। रः अमोघायै नमः। रां विद्युतायै नमः। पीठमध्ये परदेवतायै नमः। सर्वतामुख्यै नमः। तदुपरि, बिन्दु त्रिकोणावृत दलाष्टकं रेखात्मकं चतुरस्त्रं चतुर्द्वारोपशोभितं यन्त्रं संस्थाप्य, ब्रह्म विष्णु रुद्रविम्बात्मक—सौरपीठाय नमः। इति पीठं पूजयेत्।

तत्पश्चात् पीठ के पूर्व भाग में, 'रां दीप्तायै नमः' से प्रारंभ कर, 'रां विद्युतायै नमः' तक पढ़कर अक्षत (चावल) छोड़ें। पीठ के मध्य में, 'परदेवतायै नमः', 'सर्वतोमुख्यै नमः' तक पढ़कर अक्षत छोड़ें। फिर पीठ के ऊपर बिंदु कोण को अष्टदल से आवृत, रेखारूप चौकोर, चार द्वार युक्त गायत्री मंत्र स्थापित करें और, 'ब्रह्मा विष्णु रुद्र विम्बात्मक सौरपीठाय नमः' पढ़कर अक्षत छोड़ें। तदनन्तर गंधादि से पाठ का पूजन करें।

अथ पूर्वोत्त—ऋष्यादिन्यासं कृत्वा, प्राणानायम्य, मूलने व्यापकं गायत्र्युच्चारणपूर्वकं हस्ताभ्यां पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा, नासारन्ध्रेण पुष्पसञ्चयकल्पितयन्त्रमये कल्पितमूर्तिं निःक्षिप्य तत्तत्स्थानगतानि आवरणानि ध्यात्वा, आवाहनादिमुद्राः प्रदर्श्याऽऽवाहन[1] सन्निधापन[2] सन्निरोधनं[3] सम्मुखीकरणम्[4] अवगुण्ठनं[5] सकलीकरणं[6] चेति। मूलान्ते श्रीगायत्रि देवि इहावाहिता भव, पुष्पेण देव्या हृदि करं निधाय, 'आं ह्रीं क्रौं' इति मन्त्रेण द्वादशवारं जपेत्।

इसके बाद फिर पहले कहे गए 'विश्वामित्र' आदि ऋष्यादिन्यास को करें तथा प्राणायाम कर गायत्री का उच्चारण करते हुए मूलमंत्र से व्यापक मुद्रा करें, फिर

---

1. *स्थापनी सा तु मुद्रा स्यादेषाऽऽवाहनमुद्रिका।*
   अधोमुखी कृता सा चेत् सर्वसंस्थापने क्षमा॥
2. *सन्निधापनमुद्रा स्याद्योगो मुष्टिद्वयस्य तु।*
   सम्यक् कृतावुभौ जातौ त्वङ्गुष्ठावुच्छ्रितौ यदि॥
3. *संरोधिनी तु सा मुद्रा मुष्ट्योरन्तः प्रवेशितौ।*
   द्वावङ्गुष्ठौ मुष्टियोगो निश्छिदश्च भवेद् यदि॥
4. *सम्मुखीकरणी मुद्रा सा ज्ञेया मुष्टियुग्मकम्।*
   देवानां स्थापने या स्यादङ्गुष्ठद्वयमुक्तकम्॥
5. *अवगुण्ठनमुद्रा तु दीर्घाधोमुखतर्जनी।*
   मुष्टिबद्धस्य हस्तस्य सव्यस्य भ्रामयेच्च ताम्॥
6. *देवाङ्गेषु षडङ्गानां न्यासः स्यात् सकलीकृतिः।*
   अपि च—
   हृदयादि-शरीरान्ते कनिष्ठाद्यङ्गुलीषु च।
   हृदयादि-मन्त्रविन्यासः सकलीकरणं मतम्॥

दोनों हाथों में पुष्पांजलि लेकर नासिकारन्ध्र से पुष्प-समूहों के द्वारा बनाए गए यंत्र में कल्पित गायत्री-मूर्ति के ऊपर छोड़कर, उन-उन स्थानों पर नियत आवरणों का ध्यान करें। आवाहन की मुद्रा दिखाकर, आवाहन, सन्निधापन, सन्निरोधन, सम्मुखीकरण, अवगुण्ठन, सकलीकरण आदि क्रिया करें। तत्पश्चात् मूलांत में 'श्रीगायत्रि देवि इहावाहिता भव' ऐसा मंत्र पढ़कर फूल से देवी के हृदय में अपना हाथ रखकर, 'आं ह्रीं क्रौं' यह मंत्र बारह बार पढ़ें।

नोट—तदनन्तर भूतशुद्धि तथा मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कर देवी का पूजन करें।

आवरण पूजा

तत्र मध्ये त्रिकोणे, व्याहृत्यै नमः। अथकोणे, गायत्र्यै नमः। नैर्ऋत्यकोणे, सावित्र्यै नमः। वायव्यकोणे, सरस्वत्यै नमः। त्रिकोणान्तरालेषु, ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। रुद्राय नमः। मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा,

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥
अनेन पुष्पाञ्जलिं दत्वा, द्वितीयावरणं पूजयेत्॥

आवरण-पूजा के लिए बनाए गए त्रिकोण के मध्य में, 'व्याहृत्यै नमः' कोण पर, 'गायत्र्यै नमः' नैर्ऋत्यकोण में, 'सावित्र्यै नमः' वायव्यकोण में, 'सरस्वत्यै नमः' ऐसा पढ़कर अक्षत छोड़ें। फिर त्रिकोण के बीच में, 'ब्रह्मणे नमः, विष्णवे नमः, रुद्राय नमः' ऐसा पढ़ें तथा गायत्री मंत्र पढ़कर, पुष्पांजलि लेकर, 'अभीष्टसिद्धिं मे' इस मंत्र को पढ़ें।

मंत्रार्थ—हे शरणागत के ऊपर कृपा करने वाली भगवती गायत्री, मेरा मनोरथ पूर्ण करो। हम तुम्हें यह आवरण-पूजा भक्ति से युक्त हो समर्पित कर रहे हैं।

इस प्रकार मंत्र पढ़कर पुष्पांजलि निवेदन करें, तत्पश्चात् आगे की (द्वितीय) आवरण-पूजा करें।

अष्टदलेषु पूर्वादिदिक्षु—ॐ आदित्याय नमः। भानवे नमः। भास्कराय नमः। रवये नमः। आग्नेयादि केशरेषु उषायै नमः। प्रभायै नमः। प्रजायै नमः। सन्ध्यायै नमः। मूलमुच्चरन्, 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि— 'इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

अष्टदलों पर पूर्वादि दिशा के क्रम से, 'ॐ आदित्याय नमः' से लेकर, 'रवये नमः' तक पढ़कर चारों दिशाओं के चार कमल पर चार अक्षत छोड़ें। फिर आग्नेयकोण में, 'उषायै नमः' से प्रारंभ कर, 'संध्यायै नमः' तक चारों कोनों वाले

कमल पर अक्षत छोड़ें, फिर 'अभीष्टसिद्धिं' इस मंत्र को पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करें।

हृदि, ब्रह्मणे नमः। हृदयाय नमः। ईशाने, रुद्राय शिखायै वषट्। नैर्ऋत्ये, ईश्वराय कवचाय हुम्। वायव्ये, सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्। आग्नेये, सर्वात्मने अस्त्राय फट्। तत्तद् देवताभ्यो नमः। मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा,

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

'ब्रह्मणे नमः, हृदयाय नमः' ऐसा पढ़कर हृदय का, ईशानकोण में, 'रुद्राय शिखायै वषट्' से शिखा का, नैर्ऋत्यकोण में, 'ईश्वराय कवचाय हुम्' से बाहुमूल का, वायव्य में, 'सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्' से दोनों नेत्रों का, अग्निकोण में, 'सर्वात्मने अस्त्राय फट्' मंत्र पढ़कर बाएं हाथ पर दाहिने हाथ के द्वारा ताली बजाएं। 'तत्तद्देवताभ्यो नमः' से शरीर के चारों ओर चुटकी बजाएं तथा पुष्पांजलि लेकर, 'अभीष्टसिद्धि' इत्यादि मंत्र को पढ़कर पुष्पांजलि समर्पित करें। फिर चतुर्थ आवरण की पूजा करें।

तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदलेषु। अमृतायै नमः। नित्यायै नमः। विश्वम्भरायै नमः। ईशान्यै नमः। प्रभायै नमः, जयायै नमः। विजयायै नमः। शान्त्यै नमः। मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥

इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

प्रथम पूजित अष्टदल के बाहर वाले अष्टदल पर, 'अमृतायै नमः' से आरंभ कर, 'शान्त्यै नमः' तक पढ़कर पूर्वादि क्रम से आठों अष्टदल पर अक्षत छोड़ें तथा पुष्पांजलि लेकर, 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि' मंत्र को पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करें।

तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ कान्त्यै नमः। दुर्गायै नमः। सरस्वत्यै नमः। विद्यारूपायै नमः। विशालायै नमः। ईशानायै नमः। वायव्यै नमः। विमलायै नमः। मूलमुच्चरन्, 'अभीष्टसिद्धिम्—' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पूर्व के क्रम से आठों दिशाओं में क्रमशः, 'कान्त्यै नमः' से प्रारंभ कर, 'विमलायै नमः' तक मंत्र पढ़कर, गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए, पूजन करें। तथा, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र को पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करें।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु। संहारिण्यै नमः। सूक्ष्मायै नमः। विश्वयोन्यै नमः। जयावहायै नमः। पद्मालयायै नमः। परायै नमः। शोभायै नमः। रूपायै नमः। मूलेन पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा, 'अभीष्टसिद्धिम्—' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पूर्वादि आठों दिशाओं के क्रम से, 'संहारिण्यै नमः' से प्रारंभ कर, 'रूपायै नमः' तक पढ़कर अक्षत से आवाहन करें। फिर पूजन कर, गायत्री मंत्र का उच्चारण करें और, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र पढ़कर पुष्पांजलि अर्पण करें।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ आं ब्राह्म्यै नमः। ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः। ॐ ऊं कौमार्यै नमः। ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः। ॐ लृं वाराह्यै नमः। ॐ औं चामुण्डायै नमः। ॐ अः चण्डिकायै नमः। मूलमुच्चार्य 'अभीष्टसिद्धिं— ' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पूर्वोक्त पूर्वादि आठ दिशाओं में क्रमशः, 'ॐ आं ब्राह्म्यै नमः' से प्रारंभ कर, 'ॐ अः चण्डिकायै नमः' तक मंत्र पढ़ते हुए, अक्षतादि से आवाहन कर, गायत्री मंत्र का उच्चारण करें। पुनः 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र को पढ़ते हुए पुष्पांजलि समर्पित करें।

तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ सों सोमाय नमः। ॐ बुं बुधाय नमः। ॐ शुं शुक्राय नमः। ॐ भौं भौमाय नमः। ॐ शं शनैश्चराय नमः। ॐ रां राहवे नमः। ॐ कें केतवे नमः। मूलेन 'अभीष्टसिद्धिम्— ' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

उपरोक्त सातवें आवरण के बारह पूर्वादि आठ दिशाओं के क्रम से, 'ॐ सों सोमाय नमः' से प्रारंभ कर, 'ॐ कें केतवे नमः' तक पढ़कर अक्षतादि से आवाहन कर पूजन करें और गायत्री मंत्र का उच्चारण कर, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र से पुष्पांजलि समर्पित करें।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु। ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः। ॐ यं यमाय नमः। ॐ क्षं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः। ॐ सं सोमाय नमः। ॐ ईं ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः। मूलेन 'अभीष्टसिद्धिम्— ' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पूर्वादि आठ दिशाओं तक ऊपर और नीचे इस प्रकार के क्रम से, 'ॐ लं इन्द्राय नमः' से आरंभ कर 'ॐ अनन्ताय नमः' तक पढ़कर अक्षतादि से आवाहन करें। इसके पश्चात् गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र को पढ़कर पुष्पांजलि समर्पित करें।

ॐ वं वज्राय नमः। ॐ शं शक्तयै नमः। ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खड्गाय नमः। ॐ पं पाशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ चं चक्राय नमः। ॐ अं अम्बुजाय नमः। मूलेन 'अभीष्टसिद्धिम्–' इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

'ॐ वं वज्राय नमः' से आरंभ कर, 'ॐ अं अम्बुजाय नमः' तक पढ़कर पूर्वादि आठ दिशाओं में तथा ऊपर और नीचे तत्तद् देवताओं का आवाहन कर, पूजन करें तथा मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए, 'अभीष्टसिद्धिं' मंत्र से पुष्पांजलि समर्पित करें।

यस्य स्मृत्या च नामोक्तया तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इति पूजां समर्प्य, जपफलं देव्याः करे समर्प्य, पुष्पाञ्जलिं दत्वा, क्षमाप्य, स्वहृदि उद्वास्य पुनर्ऋष्यादिन्यासं कृत्वा, निर्माल्यं विसृजेत्।

तत्पश्चात् सभी आवरणों की पंचोपचार से पूजा करें। आरती तथा पुष्पांजलि देकर, 'यस्यस्मृत्या नामोक्तया' मंत्र को पढ़कर, पूजा समर्पित करें। जप को भगवती के हाथ में समर्पित करें और पुष्पांजलि प्रदान कर, क्षमा प्रार्थना कर अपने हृदय में भगवती को बैठाकर पुनः पूर्वोक्त क्रम से ऋष्यादिन्यास कर निर्माल्य को भगवती पर से हटा दें। यहां तक गायत्री पुरश्चरण के लिए नित्य पूजन करना चाहिए।

नैमित्तिकमाह

गुरुजन्मदिवसे स्वजन्मदिवसे जन्मनक्षत्रे विद्याप्राप्तिदिवसे पूर्णायां व्यतीपाते वा विशेष पूजयेत्। इति नैमित्तिकम्।

गुरु के जन्मदिन में अथवा अपने जन्मदिन में या अपने नक्षत्र में, विद्याप्राप्ति के दिन, पूर्णिमा तथा व्यतीपात में गायत्री का विशेष रूप-से पूजन करें।

पुरश्चरण विधि

कर्ता स्वशक्तया गुरुं सम्पूज्य, तदनुज्ञया देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणं प्राजापत्यं वा समाचरेत्। पुरश्चरणदिवसे सुगन्धसलिलैः स्नात्वा, पूजाप्रदेशे चतुरस्त्रं चतुर्द्वारं मण्डपं विधाय, हृष्टधीर्वाङ्नियमितो मिताहारो जितेन्द्रियः प्रातरारभ्य मध्याह्नं जपेत्। एवं चतुर्विंशतिलक्षं जपेत्। तदुक्तम्—

उक्तलक्षविधानेन कृत्वा विप्रा जितेन्द्रियाः।
क्षीरौदनं तिलं दूर्वा क्षीरद्रुम समिद् द्रुमान्॥

अष्टद्रव्येण च पृथक् सहस्त्रत्रितयं हुनेत्। मन्त्रफलसिद्धये जपदशांशहोमः। तद्दशांशेन तर्पणम्। तद्दशांशेन मार्जनम्। तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनम्।

पुरश्चरण करने वाला साधक अपनी शक्ति के अनुसार गुरु का पूजन कर और उनकी आज्ञा से शरीर शुद्धि के लिए चान्द्रायण या प्राजापत्य व्रत (उपवास) करे। पुरश्चरण आरंभ करने वाले दिन में सुगन्धित जल से स्नान कर, पूजा-स्नान पर समतल, चौकोर चारद्वार का मण्डप बनाकर, प्रसन्नता से वाणी को नियंत्रित कर, अल्प भोजन कर, अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रखकर, प्रातःकाल से आरंभ कर, मध्याह्न पर्यन्त जप करें। इस प्रकार प्रतिदिन के क्रमानुसार 24 लाख गायत्री का जप पूर्ण करें।

उपर्युक्त क्रम के विधान से जितेन्द्रिय ब्राह्मण दूध, पायस, दूर्वा, दुधार वृक्ष की लकड़ी, अष्टद्रव्य आदि से तीन हजार गायत्री के मंत्र द्वारा हवन करें।

मंत्र फल की सिद्धि के लिए जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

काम्य-पूजन

विद्यार्थी वाग्भवाद्यां, लक्ष्मीकामः श्रीबीजं, वश्यार्थे कामबीजम्, सर्वकामार्थे मायाबीजम्, आयुः कामार्थे मृत्युञ्जयचतुरक्षरीसहितं जपेत्।

विद्यार्थी विद्या के लिए, 'ॐ ह्रीं' लगाएं, लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए, 'ॐ श्रीं' बीज तथा वशीकरण के लिए, 'क्लीं' काम बीज, संपूर्ण मनोरथ सिद्धि के लिए मायाबीज, आयु की कामना के लिए, मृत्युंजय चतुरक्षरी 'ॐ ह्रीं मां जीवय पालय' सहित गायत्री का जप करें।

तत्त्वसङ्ख्यासहस्राणि समन्त्रं जुहुयात् तिलैः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो दीर्घमायुश्च विन्दति॥
आयुष्यं साज्यहविषा केवलेनाथ सर्पिषा।
पर्वाङ्कितैस्तिलैर्मन्त्री जुहुयात् त्रिसहस्रकम्॥
अरुणाक्षैस्त्रिमध्वाज्यैः प्रसूनैर्ब्रह्मवृक्षजैः।
बहुना किमिहोक्तेन यथावत् साधु साधिता॥
द्विजन्मनामियं विद्या सिद्धकामदुहा स्मृता॥

गायत्री मंत्र के द्वारा तिल से 24 हजार हवन करें, तो वह (साधक) सब पापों से मुक्त हो जाता है तथा उसकी आयु बढ़ती है और वो दीर्घायु होता है। आयु की कामना के लिए हवि, घी अथवा केवल घी से या तिल से 3 हजार गायत्री मंत्र के द्वारा हवन करें। अरुणाक्ष (मजीठ), मधु (शहद), घी तथा ब्रह्मवृक्ष (पलाश) के पुष्प से हवन करने का फल बहुत है, अर्थात् साधक को गायत्री की सिद्धि हो जाती है। ब्राह्मणों के लिए कामधेनु के समान यह विद्या संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली होती है।

❑❑

८

गायत्री अष्टोत्तर सहस्त्रनामावली

गायत्री के एक हजार आठ नाम महान् पुण्यदायक, सर्वपापविनाशक और विपुल संपत्ति को देने वाले हैं, गायत्री को संतुष्ट करने वाले हैं अर्थात् इनसे भगवती गायत्री प्रसन्न होती हैं। इनका पाठ विशेष रूप से ब्राह्मणों के साथ अष्टमी तिथि को करना चाहिए।

जपं कृत्वा होम-पूजा ध्यानं कृत्वा विशेषतः।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गायत्र्यास्तु विशेषतः॥
सुभक्ताय सुशिष्याय वक्तव्यं भूसुराय वै।
भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्यश्च बान्धवेभ्यो न दर्शयेत्॥
यद् गृहे लिखितं शास्त्रं भयं तस्य न कस्यचित्त्।
चञ्चलाऽपि स्थिरा भूत्वा कमला तत्र तिष्ठति॥
इदं रहस्यं परमं गुह्याद् गुह्यतरं महत्।
पुण्यप्रदं मनुष्याणां दरिद्राणां निधिप्रदम्।
मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वकामदम्॥
रोगाद् वै मुच्यते रोगी बद्धो मुच्येत बन्धनात्।

जप, होम, पूजन और ध्यान करके भगवती की उपासना करनी चाहिए। इस गायत्री मंत्र का उपदेश सभी लोगों को न देना चाहिए। श्रेष्ठ भक्तों, उत्तम शिष्यों और ब्राह्मणों को ही इसका अधिकारी समझकर उपदेश देना चाहिए। जिसके घर में इस गायत्री-संबंधी शास्त्र का लिखित ग्रंथ होता है, उसके यहां कुछ भी भय की संभावना नहीं रहती और उस घर में चंचला लक्ष्मी का स्थिर निवास होता है। इसका रहस्य गूढ़ से भी गूढ़ है। यह मनुष्यों के लिए पुण्यदायक और निर्धनों के लिए निधि प्रदान करने वाला है। मोक्ष चाहने वालों के लिए मुक्तिदायक और कामाभिलाषियों के लिए सब कामों को देने वाला है। इससे रोगी मनुष्य रोगरहित और बंधन आदि में पड़ा हुआ कैदी बंधनमुक्त हो जाता है।

ब्रह्महत्या सुरापानं सुवर्णस्तेयिनो नरा।
गुरुतल्पगतो वाऽपि पातकाद् मुच्यते सकृत॥

> **असत्प्रतिग्रहाच्चैवाऽभक्ष्य-भक्षाद् विशेषतः।**
> **पाखण्डानृतमुख्येभ्यः पठनादेव मुच्यते॥**
> **इदं रहस्यममलं मयोक्तं पद्मजोद्भव।**
> **ब्रह्मसायुज्यदं नृणां सत्यं सत्यं न संशयः॥**

इसके (गायत्री) द्वारा ब्रह्महत्या, मदिरा-पान, सोने की चोरी और गुरु-पत्नी के साथ गमन करने के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो लोग अग्राह्य भोजन (लहसुन, प्याज या मांसादि) ग्रहण करते, पाखण्ड या ढोंग रचते और सत्यासत्य भाषण करते हैं, वे लोग इस गायत्री-सहस्रनाम पाठ से उपर्युक्त दोषों से रहित हो जाते हैं। इस रहस्य का ब्रह्माजी ने कथन किया है। जो इसका पाठ करते हैं, वे निश्चय ही ब्रह्म-सायुज्य पद को प्राप्त होते हैं। यह बात सत्य है और इसमें कोई संशय नहीं है।

गायत्री सहस्रनामावली निम्नलिखित है—

गायत्री सहस्रनामावली

१. ॐ अजपायै नमः
२. ॐ अजरायै नमः
३. ॐ अजायै नमः
४. ॐ अपरायै नमः
५. ॐ अपराजितायै नमः
६. ॐ अजितायै नमः
७. ॐ अजमायै नमः
८. ॐ अजार्चितायै नमः
९. ॐ अधर्मायै नमः
१०. ॐ अकारादिक्षकारांतायै नमः
११. ॐ अक्षसूत्रधारायै नमः
१२. ॐ अधरायै नमः
१३. ॐ अरिषड्वर्गभेदिन्यै नमः
१४. ॐ अंजनादिप्रतीकाशायै नमः
१५. ॐ अंजनाद्रिनिवासिन्यै नमः
१६. ॐ अदित्यै नमः
१७. ॐ अविद्यायै नमः
१८. ॐ अरविन्दनिभेक्षणायै नमः
१९. ॐ अंतर्बहिः स्थितायै नमः
२०. ॐ अविद्याध्वंसिन्यै नमः
२१. ॐ अंतरात्मिकायै नमः
२२. ॐ अजमुखवासायै नमः
२३. ॐ अरविन्दनिभाननायै नमः
२४. ॐ अर्धमात्रायै नमः
२५. ॐ अर्थदानज्ञायै नमः
२६. ॐ अरिमंडलमर्दिन्यै नमः
२७. ॐ असुरघ्न्यै नमः
२८. ॐ अमावास्यायै नमः
२९. ॐ अलक्ष्मीघ्नत्यै नमः
३०. ॐ अचिन्त्यलक्षणायै नमः
३१. ॐ अव्यक्तायै नमः
३२. ॐ अर्थमातृमहेश्वर्यै नमः
३३. ॐ अमृतार्णवमध्यस्थायै नमः
३४. ॐ अणिमादिगुणाधारायै नमः
३५. ॐ अर्कमंडलसंस्थितायै नमः
३६. ॐ अण्डमध्यस्थितदेव्यै नमः
३७. ॐ आदिमूर्तिनिवासिन्यै नमः
३८. ॐ आग्नेय्यै नमः

३९. ॐ आमर्यै नमः
४०. ॐ आद्यायै नमः
४१. ॐ आराध्यायै नमः
४२. ॐ आसनस्थितायै नमः
४३. ॐ आधारनिलयायै नमः
४४. ॐ आधारायै नमः
४५. ॐ आकाशान्तनिवासिन्यै नमः
४६. ॐ आद्याक्षरसमायुक्तायै नमः
४७. ॐ अंतराकाशरूपिण्यै नमः
४८. ॐ आदित्यमंडलगतायै नमः
४९. ॐ आंतरध्वांतनाशिन्यै नमः
५०. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः
५१. ॐ आदिशक्त्यै नमः
५२. ॐ आकृत्यै नमः
५३. ॐ आयताननायै नमः
५४. ॐ आदित्यपदवीचारायै नमः
५५. ॐ आचार्यायै नमः
५६. ॐ आदित्यपरिसेवितायै नमः
५७. ॐ आवर्तनायै नमः
५८. ॐ आचारायै नमः
५९. ॐ इन्द्रनीलसमाकारायै नमः
६०. ॐ इडापिंगलरूपिण्यै नमः
६१. ॐ इन्द्रायै नमः
६२. ॐ इन्द्रपदायै नमः
६३. ॐ इन्द्रण्यै नमः
६४. ॐ इदुरूपिण्यै नमः
६५. ॐ इक्षुकोदंडसंयुक्तायै नमः
६६. ॐ इषुसंधानकारिण्यै नमः
६७. ॐ इंदिरायै नमः
६८. ॐ इष्टदायै नमः
६९. ॐ इष्टायै नमः
७०. ॐ इन्दीवरनिभेक्षणायै नमः
७१. ॐ इरावत्यै नमः
७२. ॐ ईहात्रयविवर्जितायै नमः
७३. ॐ ईश्वरीदेव्यै नमः
७४. ॐ उडुनिभायै नमः
७५. ॐ उडुप्रभायै नमः
७६. ॐ उडुमत्यै नमः
७७. ॐ उडुपायै नमः
७८. ॐ उडुमध्यगायै नमः
७९. ॐ उर्वारुक्फलाननायै नमः
८०. ॐ उमायै नमः
८१. ॐ ऊषायै नमः
८२. ॐ ऊर्मिमालावाग्ग्रंथदायिन्यै नमः
८३. ॐ ऊर्ध्वाधोगतिमेदिन्यै नमः
८४. ॐ ऊर्ध्वबाहुप्रियायै नमः
८५. ॐ ऊर्ध्वायै नमः
८६. ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः
८७. ॐ ऋषिमण्डलचारिण्यै नमः
८८. ॐ ऋद्धिदायै नमः
८९. ॐ ऋजुमार्गस्थायै नमः
९०. ॐ ऋजुधर्मायै नमः
९१. ॐ ऋतुप्रदायै नमः
९२. ॐ ऋग्वेदनिललायै नमः
९३. ॐ ऋज्व्यै नमः
९४. ॐ ऋतायै नमः
९५. ॐ ऋषये नमः
९६. ॐ ऋतुमत्यै नमः
९७. ॐ ऋषिदेवनमस्कृतायै नमः
९८. ॐ ऋग्वेदायै नमः
९९. ॐ ऋणहंत्र्यै नमः
१००. ॐ लुप्तधर्मप्रवर्तिन्यै नमः
१०१. ॐ लूतारिवरसंभूतायै नमः
१०२. ॐ लूतादिविषहारिण्यै नमः
१०३. ॐ एकायै नमः
१०४. ॐ एकाक्षरायै नमः

१०५. ॐ एकमात्रायै नमः
१०६. ॐ एकैकनिष्ठितायै नमः
१०७. ॐ ऐहिकामुष्मिकप्रदायै नमः
१०८. ॐ ऐन्द्रयै नमः
१०९. ॐ ऐरावतारूढायै नमः
११०. ॐ आःकारमनुरूपिण्यै नमः
१११. ॐ ओतप्रोतनिवासिन्यै नमः
११२. ॐ ओंकारायै नमः
११३. ॐ ओतायै नमः
११४. ॐ ओषध्यै नमः
११५. ॐ औपासनफलप्रदायै नमः
११६. ॐ और्वायै नमः
११७. ॐ औषधसंपन्नायै नमः
११८. ॐ कमलायै नमः
११९. ॐ करिकुंभस्तनभरायै नमः
१२०. ॐ करबीरसुवासिन्यै नमः
१२१. ॐ कल्याण्यै नमः
१२२. ॐ करालास्यायै नमः
१२३. ॐ कमनीयगुणायै नमः
१२४. ॐ कलाधारायै नमः
१२५. ॐ कमलाकारायै नमः
१२६. ॐ करुणापांगयै नमः
१२७. ॐ ककुबंतायै नमः
१२८. ॐ करिप्रियायै नमः
१२९. ॐ कदंबकुसुमप्रियायै नमः
१३०. ॐ कलशोद्भवसंस्तुतायै नमः
१३१. ॐ कमंडलुधरायै नमः
१३२. ॐ कर्मनिर्मूलकारिण्यै नमः
१३३. ॐ कलहंसगत्यै नमः
१३४. ॐ कक्षायै नमः
१३५. ॐ कस्तूरीतिलकायै नमः
१३६. ॐ कम्रायै नमः
१३७. ॐ करीन्द्रगमनायै नमः
१३८. ॐ कर्पूरलेपनायै नमः
१३९. ॐ कपिलायै नमः
१४०. ॐ कम्प्रायै नमः
१४१. ॐ कात्यायन्यै नमः
१४२. ॐ कालरात्र्यै नमः
१४३. ॐ कामाक्ष्यै नमः
१४४. ॐ कामसुंदर्यै नमः
१४५. ॐ कामिन्यै नमः
१४६. ॐ कान्तायै नमः
१४७. ॐ कामदायै नमः
१४८. ॐ कालकंठिन्यै नमः
१४९. ॐ कालजिह्वायै नमः
१५०. ॐ कालिकायै नमः
१५१. ॐ कालरूपिण्यै नमः
१५२. ॐ कान्त्यै नमः
१५३. ॐ कामचारप्रभन्जिन्यै नमः
१५४. ॐ कालिन्द्यै नमः
१५५. ॐ कालिकायै नमः
१५६. ॐ कांचयै नमः
१५७. ॐ काममात्रयै नमः
१५८. ॐ कामरूपायै नमः
१५९. ॐ काल्यै नमः
१६०. ॐ कुक्षिस्थाखिलविष्टपायै नमः
१६१. ॐ कुधरायै नमः
१६२. ॐ कुहराश्रयायै नमः
१६३. ॐ कुह्वयै नमः
१६४. ॐ कुमार्यै नमः
१६५. ॐ कुण्डनिलयायै नमः
१६६. ॐ कुसुमप्रियायै नमः
१६७. ॐ कुण्डलवत्यै नमः
१६८. ॐ कुरुक्षेत्रनिवासिन्यै नमः
१६९. ॐ कुरुवंददलाकारायै नमः
१७०. ॐ कुण्डल्यै नमः

१७१. ॐ कुमुदालयायै नमः
१७२. ॐ कुमुद्वत्ये नमः
१७३. ॐ कूटस्थायै नमः
१७४. ॐ केश्यै नमः
१७५. ॐ केशवनुतायै नमः
१७६. ॐ केतक्यै नमः
१७७. ॐ कौशिक्यै नमः
१७८. ॐ कौमार्यै नमः
१७९. ॐ ॐ क्रतुमत्यै नमः
१८०. ॐ कृपावत्यै नमः
१८१. ॐ किरात्यै नमः
१८२. ॐ कीरवाहनायै नमः
१८३. ॐ कैकेय्यै नमः
१८४. ॐ कोकिलालापायै नमः
१८५. ॐ कृतकौतुकमंगलायै नमः
१८६. ॐ कृष्णायै नमः
१८७. ॐ खगवाहनायै नमः
१८८. ॐ खगराजोपरिस्थितायै नमः
१८९. ॐ खलघ्न्यै नमः
१९०. ॐ खंडितजरायै नमः
१९१. ॐ खंडाख्यानप्रदायिन्यै नमः
१९२. ॐ खंडेन्दुतिलकायै नमः
१९३. ॐ ख्यातायै नमः
१९४. ॐ खट्वांगधारिण्यै नमः
१९५. ॐ खड्गखेटकरायै नमः
१९६. ॐ सर्वायै नमः
१९७. ॐ खेचर्यै नमः
१९८. ॐ गुणत्रयविभावितायै नमः
१९९. ॐ गंधर्व्यै नमः
२००. ॐ गह्वर्यै नमः
२०१. ॐ गोत्रायै नमः
२०२. ॐ गिरीशायै नमः
२०३. ॐ गहनायै नमः
२०४. ॐ गम्यै नमः
२०५. ॐ गुहावासायै नमः
२०६. ॐ गुणवत्यै नमः
२०७. ॐ गुरुपापप्रणाशिन्यै नमः
२०८. ॐ गुर्व्यै नमः
२०९. ॐ गुणवत्यै नमः
२१०. ॐ गुह्यायै नमः
२११. ॐ गोप्तव्यायै नमः
२१२. ॐ गुणदायिन्यै नमः
२१३. ॐ गिरिजायै नमः
२१४. ॐ गुह्यमातंग्यै नमः
२१५. ॐ गरुड़ध्वजवल्लभायै नमः
२१६. ॐ गर्वापहारिण्यै नमः
२१७. ॐ गोदायै नमः
२१८. ॐ गोकुलस्थायै नमः
२१९. ॐ गदाधरायै नमः
२२०. ॐ गोकर्णनिलयासक्तायै नमः
२२१. ॐ गुह्यमंडलवर्तिन्यै नमः
२२२. ॐ खंडेन्दुतिलकायै नमः
२२३. ॐ गंगायै नमः
२२४. ॐ गणेशगुहपूजितायै नमः
२२५. ॐ गायत्र्यै नमः
२२६. ॐ गीतायै नमः
२२७. ॐ गांधार्यै नमः
२२८. ॐ गानलोलुपायै नमः
२२९. ॐ गौतम्यै नमः
२३०. ॐ गामिन्यै नमः
२३१. ॐ गाधार्यै नमः
२३२. ॐ गंधर्वाऽप्सरसेवितायै नमः
२३३. ॐ घंटारवप्रियायै नमः
२३४. ॐ घनसंपातदायिन्यै नमः
२३५. ॐ घोषायै नमः
२३६. ॐ घृणिमंत्रमय्यै नमः

२३७. ॐ घोरदानवमर्दिन्यै नमः
२३८. ॐ घंटायै नमः
२३९. ॐ धनदायै नमः
२४०. ॐ धर्मदायै नमः
२४१. ॐ गुह्यमंडलवर्तिन्यै नमः
२४२. ॐ घ्राणायै नमः
२४३. ॐ घृणिसन्तुष्टिकारिण्यै नमः
२४४. ॐ घनारिमण्डलायै नमः
२४५. ॐ घूणायै नमः
२४६. ॐ घृताच्यै नमः
२४७. ॐ घनवेगिन्यै नमः
२४८. ॐ ज्ञानधातुमय्यै नमः
२४९. ॐ चर्चायै नमः
२५०. ॐ चर्चितायै नमः
२५१. ॐ चारुहासिन्यै नमः
२५२. ॐ चटुलायै नमः
२५३. ॐ चण्डिकायै नमः
२५४. ॐ चित्रायै नमः
२५५. ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै नमः
२५६. ॐ चतुर्भुजायै नमः
२५७. ॐ चारुदन्तायै नमः
२५८. ॐ चातुर्यै नमः
२५९. ॐ चरितप्रदायै नमः
२६०. ॐ चूलिकायै नमः
२६१. ॐ चित्रवस्त्रान्तायै नमः
२६२. ॐ चन्द्रमः कर्णकुण्डलायै नमः
२६३. ॐ चन्द्रहासायै नमः
२६४. ॐ चारुदात्र्यै नमः
२६५. ॐ चक्रार्यै नमः
२६६. ॐ चन्द्रहासिन्यै नमः
२६७. ॐ चन्द्रिकायै नमः
२६८. ॐ चन्द्रधात्र्यै नमः
२६९. ॐ चौर्यै नमः
२७०. ॐ चौरायै नमः
२७१. ॐ चण्डिकायै नमः
२७२. ॐ चञ्चद्वाग्वादिन्यै नमः
२७३. ॐ चन्द्रचूडायै नमः
२७४. ॐ चोरविनाशिन्यै नमः
२७५. ॐ चारुचन्दनलिप्ताङ्ग्यै नमः
२७६. ॐ चञ्चच्चामरवीजितायै नमः
२७७. ॐ चारुमध्यायै नमः
२७८. ॐ चारुगत्यै नमः
२७९. ॐ चन्दिलायै नमः
२८०. ॐ चन्द्ररूपिण्यै नमः
२८१. ॐ चारुहोमप्रियायै नमः
२८२. ॐ चर्वाचरितायै नमः
२८३. ॐ चक्रबाहुकायै नमः
२८४. ॐ चन्द्रमण्डलमध्यस्थायै नमः
२८५. ॐ चन्द्रमण्डलदर्पणायै नमः
२८६. ॐ चक्रवाकस्तन्यै नमः
२८७. ॐ चेष्टायै नमः
२८८. ॐ चित्रायै नमः
२८९. ॐ चारुविलासिन्यै नमः
२९०. ॐ चितस्वरूपायै नमः
२९१. ॐ चंद्रवत्यै नमः
२९२. ॐ चंद्रमस्यै नमः
२९३. ॐ चंदनप्रियायै नमः
२९४. ॐ चोदयित्र्यै नमः
२९५. ॐ चिरप्रज्ञायै नमः
२९६. ॐ चातकायै नमः
२९७. ॐ चारुहेतुक्यै नमः
२९८. ॐ छत्रयातायै नमः
२९९. ॐ छत्रधरायै नमः
३००. ॐ छायायै नमः
३०१. ॐ छंदः परिच्छदायै नमः
३०२. ॐ छायादेव्यै नमः

३०३. ॐ छिद्रनखायै नमः
३०४. ॐ छन्नेन्द्रियविसर्पिण्यै नमः
३०५. ॐ छंदोऽनुष्टुप्प्रतिष्ठान्तायै नमः
३०६. ॐ छिद्रोपद्रवभेदिन्यै नमः
३०७. ॐ छेदायै नमः
३०८. ॐ छत्रेश्वर्यै नमः
३०९. ॐ छिन्नायै नमः
३१०. ॐ छुरिकायै नमः
३११. ॐ छेदनप्रियायै नमः
३१२. ॐ जनन्यै नमः
३१३. ॐ जन्मरहितायै नमः
३१४. ॐ जातवेदायै नमः
३१५. ॐ जगन्मय्यै नमः
३१६. ॐ जाह्नव्यै नमः
३१७. ॐ जटिलायै नमः
३१८. ॐ जैत्र्यै नमः
३१९. ॐ जरामरणवर्जितायै नमः
३२०. ॐ जंबूद्वीपवत्यै नमः
३२१. ॐ ज्वालायै नमः
३२२. ॐ जयन्त्यै नमः
३२३. ॐ जलंशालिन्यै नमः
३२४. ॐ जितेन्द्रियायै नमः
३२५. ॐ जितक्रोधायै नमः
३२६. ॐ जगत्प्रियायै नमः
३२७. ॐ जितामित्रायै नमः
३२८. ॐ जातरूपमय्यै नमः
३२९. ॐ जिह्वायै नमः
३३०. ॐ जानक्यै नमः
३३१. ॐ जगत्यै नमः
३३२. ॐ जरायै नमः
३३३. ॐ जनित्र्यै नमः
३३४. ॐ जह्नुतनयायै नमः
३३५. ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः
३३६. ॐ ज्वालामुख्यै नमः
३३७. ॐ जपवत्यै नमः
३३८. ॐ ज्वरघ्न्यै नमः
३३९. ॐ जितविष्टपायै नमः
३४०. ॐ जिताक्रान्तमय्यै नमः
३४१. ॐ ज्वालायै नमः
३४२. ॐ जाग्रत्यै नमः
३४३. ॐ ज्वरदेवतायै नमः
३४४. ॐ ज्वलन्त्यै नमः
३४५. ॐ जलदायै नमः
३४६. ॐ ज्येष्ठायै नमः
३४७. ॐ ज्याघोषास्फोटदिङ्मुख्यै नमः
३४८. ॐ जम्भिन्यै नमः
३४९. ॐ जृम्भणायै नमः
३५०. ॐ जृम्भायै नमः
३५१. ॐ ज्वलन्माणिक्यकुण्डलायै नमः
३५२. ॐ झिंझिकायै नमः
३५३. ॐ झणनिर्घोषायै नमः
३५४. ॐ झंझामारुतवेगिन्यै नमः
३५५. ॐ झल्लरीवाद्यकुशलायै नमः
३५६. ॐ ञरूपायै नमः
३५७. ॐ ञभुजास्मृतायै नमः
३५८. ॐ टङ्कबाणसमायुक्तायै नमः
३५९. ॐ टंकिन्यै नमः
३६०. ॐ टङ्कभेदिन्यै नमः
३६१. ॐ टंकीगणकृताघोषायै नमः
३६२. ॐ टंकनीयमहोरसायै नमः
३६३. ॐ टंकारकारिणीदेव्यै नमः
३६४. ॐ ठठशब्दनिनादिन्यै नमः
३६५. ॐ डामर्यै नमः
३६६. ॐ डाकिन्यै नमः
३६७. ॐ डिम्भायै नमः
३६८. ॐ डुण्डुमारैकनिर्जितायै नमः

३६९. ॐ डामरीतन्त्रमार्गस्थायै नमः
३७०. ॐ डमड्डमरूनादिन्यै नमः
३७१. ॐ डिण्डीरवसहायै नमः
३७२. ॐ डिम्भलसत्क्रीडापरायणायै नमः
३७३. ॐ ढुण्ढिविघ्नेशजनन्यै नमः
३७४. ॐ ढक्काहस्तायै नमः
३७५. ॐ ढिलिव्रजायै नमः
३७६. ॐ नित्यज्ञानायै नमः
३७७. ॐ निरुपमायै नमः
३७८. ॐ निर्गुणायै नमः
३७९. ॐ नर्मदायै नमः
३८०. ॐ नद्यै नमः
३८१. ॐ त्रिगुणायै नमः
३८२. ॐ त्रिपदायै नमः
३८३. ॐ तन्त्र्यै नमः
३८४. ॐ तुलस्यै नमः
३८५. ॐ तरुणायै नमः
३८६. ॐ तरवे नमः
३८७. ॐ त्रिविक्रमपदक्रांतायै नमः
३८८. ॐ तुरीयपदगामिन्यै नमः
३८९. ॐ तरुणादित्यसंकाशायै नमः
३९०. ॐ तामस्यै नमः
३९१. ॐ तुहिनायै नमः
३९२. ॐ तुरायै नमः
३९३. ॐ त्रिकालज्ञानाम्पन्नायै नमः
३९४. ॐ त्रिवल्यै नमः
३९५. ॐ त्रिलोचनायै नमः
३९६. ॐ त्रिशक्तयै नमः
३९७. ॐ त्रिपुरायै नमः
३९८. ॐ तुंगायै नमः
३९९. ॐ तुरंगवदनायै नमः
४००. ॐ तिमिन्गिलगिलायै नमः
४०१. ॐ तीव्रायै नमः
४०२. ॐ त्रिसुतायै नमः
४०३. ॐ तामसादिन्यै नमः
४०४. ॐ तंत्रमंत्रविशेषायै नमः
४०५. ॐ तनुमध्यायै नमः
४०६. ॐ त्रिविष्टपायै नमः
४०७. ॐ त्रिसंध्यायै नमः
४०८. ॐ त्रिस्तन्यै नमः
४०९. ॐ तोषासंस्थायै नमः
४१०. ॐ तालप्रतापिन्यै नमः
४११. ॐ ताटन्किन्यै नमः
४१२. ॐ तुषाराभायै नमः
४१३. ॐ तुहिनाचलवासिन्यै नमः
४१४. ॐ तंतुजालसमायुक्तायै नमः
४१५. ॐ तारहारावलिप्रियायै नमः
४१६. ॐ तिलहोमप्रियायै नमः
४१७. ॐ तीर्थायै नमः
४१८. ॐ कमालकुसुमाकृत्यै नमः
४१९. ॐ तारकायै नमः
४२०. ॐ त्रियुतायै नमः
४२१. ॐ तंत्र्यै नमः
४२२. ॐ त्रिशंकुपरिवारितायै नमः
४२३. ॐ तलोदर्यै नमः
४२४. ॐ तिलाभूषायै नमः
४२५. ॐ ताटंकप्रियवाहिन्यै नमः
४२६. ॐ त्रिजटायै नमः
४२७. ॐ तित्तिर्यै नमः
४२८. ॐ तृष्णायै नमः
४२९. ॐ त्रिविधायै नमः
४३०. ॐ तरुणाकृत्यै नमः
४३१. ॐ तप्तकांचन संकाशायै नमः
४३२. ॐ तप्तकांचनभूषणायै नमः
४३३. ॐ त्रैयंबकायै नमः
४३४. ॐ त्रिवर्गायै नमः

४३५. ॐ त्रिकालज्ञानदायिन्यै नमः
४३६. ॐ तर्पणायै नमः
४३७. ॐ तृप्तिदायै नमः
४३८. ॐ तृप्त्यै नमः
४३९. ॐ तामस्यै नमः
४४०. ॐ तुम्बुरुस्तुतायै नमः
४४१. ॐ तार्क्ष्यस्थायै नमः
४४२. ॐ त्रिगुणाकारायै नमः
४४३. ॐ त्रिभङ्ग्यै नमः
४४४. ॐ तनुवल्लर्यै नमः
४४५. ॐ थात्कार्यै नमः
४४६. ॐ थारवायै नमः
४४७. ॐ थान्तायै नमः
४४८. ॐ दोहिन्यै नमः
४४९. ॐ दीनवत्सलायै नमः
४५०. ॐ दानवान्तकर्यै नमः
४५१. ॐ दुर्गायै नमः
४५२. ॐ दुर्गासुरनिबर्हिण्यै नमः
४५३. ॐ देवरीत्यै नमः
४५४. ॐ दिवारात्र्यै नमः
४५५. ॐ द्रौपद्यै नमः
४५६. ॐ दुन्दुभिस्वनायै नमः
४५७. ॐ देवयान्यै नमः
४५८. ॐ दुरावासायै नमः
४५९. ॐ दारिद्र्योद्भेदिन्यै नमः
४६०. ॐ दिवायै नमः
४६१. ॐ दामोदरप्रियायै नमः
४६२. ॐ दीप्तायै नमः
४६३. ॐ दिवासायै नमः
४६४. ॐ दिग्विमोहिन्यै नमः
४६५. ॐ दण्डकारण्यनिलायै नमः
४६६. ॐ दण्डिन्यै नमः
४६७. ॐ देवपूजितायै नमः
४६८. ॐ देववन्द्यायै नमः
४६९. ॐ दिविषदायै नमः
४७०. ॐ द्वेषिण्यै नमः
४७१. ॐ दानवाकृतये नमः
४७२. ॐ दीननाथस्तुतायै नमः
४७३. ॐ दीक्षायै नमः
४७४. ॐ दैवतादिस्वरूपिण्यै नमः
४७५. ॐ धात्र्यै नमः
४७६. ॐ धनुर्धरायै नमः
४७७. ॐ धेनवे नमः
४७८. ॐ धारिण्यै नमः
४७९. ॐ धर्मचारिण्यै नमः
४८०. ॐ धरधरायै नमः
४८१. ॐ धराधारायै नमः
४८२. ॐ धनदायै नमः
४८३. ॐ धान्यदोहिन्यै नमः
४८४. ॐ धर्मशीलायै नमः
४८५. ॐ धनाध्यक्षायै नमः
४८६. ॐ धनुर्वेदविशारदायै नमः
४८७. ॐ धृत्यै नमः
४८८. ॐ धन्यायै नमः
४८९. ॐ धृतपदायै नमः
४९०. ॐ धर्मराजप्रियायै नमः
४९१. ॐ ध्रुवायै नमः
४९२. ॐ धूमावत्यै नमः
४९३. ॐ धूमकेश्यै नमः
४९४. ॐ धर्मशास्त्रप्रकाशिन्यै नमः
४९५. ॐ नंदायै नमः
४९६. ॐ नंदप्रियायै नमः
४९७. ॐ निद्रायै नमः
४९८. ॐ नृनुतायै नमः
४९९. ॐ नंदनात्मिकायै नमः
५००. ॐ नर्मदायै नमः

५०१. ॐ नलिन्यै नमः
५०२. ॐ नीलायै नमः
५०३. ॐ नीलकंठसमाश्रयायै नमः
५०४. ॐ नारायणप्रियायै नमः
५०५. ॐ नित्यायै नमः
५०६. ॐ निर्मलायै नमः
५०७. ॐ निर्गुणायै नमः
५०८. ॐ निधये नमः
५०९. ॐ निराधारायै नमः
५१०. ॐ निरुपमायै नमः
५११. ॐ नित्यशुद्धायै नमः
५१२. ॐ निरंजनायै नमः
५१३. ॐ नादबिंदुकलातीतायै नमः
५१४. ॐ नादबिंदुकलात्मिकायै नमः
५१५. ॐ नृसिंहिन्यै नमः
५१६. ॐ नगधरायै नमः
५१७. ॐ नृपनागविभूषितायै नमः
५१८. ॐ नरकक्लेशशमन्यै नमः
५१९. ॐ नारायणपदोद्भवायै नमः
५२०. ॐ निरवाद्यायै नमः
५२१. ॐ निराकारायै नमः
५२२. ॐ नारदप्रियकारिण्यै नमः
५२३. ॐ नानाज्योतिस्स्माख्यातायै नमः
५२४. ॐ निधिदायै नमः
५२५. ॐ निर्मलात्मिकायै नमः
५२६. ॐ नवसत्रधरायै नमः
५२७. ॐ नीतयै नमः
५२८. ॐ नीरुपद्रवकारिण्यै नमः
५२९. ॐ नंदजायै नमः
५३०. ॐ नवरत्नाढ्यायै नमः
५३१. ॐ नैमिषारण्यवासिन्यै नमः
५३२. ॐ नवनीतप्रियायै नमः
५३३. ॐ नार्यै नमः
५३४. ॐ निमेषिण्यै नमः
५३५. ॐ नीलजीमूतनिः स्वनायै नमः
५३६. ॐ नदीरूपायै नमः
५३७. ॐ नीलग्रीवायै नमः
५३८. ॐ निशीश्वर्यै नमः
५३९. ॐ नामावल्यै नमः
५४०. ॐ निशुम्भघ्न्यै नमः
५४१. ॐ नागलोकनिवासिन्यै नमः
५४२. ॐ नवजाम्बूनदप्रख्यायै नमः
५४३. ॐ नागलोकाधिदेवतायै नमः
५४४. ॐ नूपुराक्रान्तचरणायै नमः
५४५. ॐ नरचित्तप्रमोदिन्यै नमः
५४६. ॐ निमग्नारक्तनयनायै नमः
५४७. ॐ निर्घातसमनिः स्वनायै नमः
५४८. ॐ नन्दनोद्याननिलयायै नमः
५४९. ॐ निर्व्यूहोपरिचारिण्यै नमः
५५०. ॐ पार्वत्यै नमः
५५१. ॐ परमोदरायै नमः
५५२. ॐ परब्रह्मात्मिकायै नमः
५५३. ॐ परायै नमः
५५४. ॐ पञ्चकोशविनिर्मुक्तायै नमः
५५५. ॐ पञ्चपातकनाशिन्यै नमः
५५६. ॐ परचित्तविधानज्ञायै नमः
५५७. ॐ पञ्चिकायै नमः
५५८. ॐ पञ्चरूपिण्यै नमः
५५९. ॐ पूर्णिमायै नमः
५६०. ॐ परमायै नमः
५६१. ॐ प्रीत्यै नमः
५६२. ॐ परतेजः प्रकाशिन्यै नमः
५६३. ॐ पुराण्यै नमः
५६४. ॐ पौरुष्यै नमः
५६५. ॐ पुण्यायै नमः
५६६. ॐ पुण्डरीकनिभेक्षणायै नमः

५६७. ॐ पातालतलनिर्मग्नायै नमः
५६८. ॐ प्रीतायै नमः
५६९. ॐ प्रीतिविवर्धिन्यै नमः
५७०. ॐ पावन्यै नमः
५७१. ॐ पादसंहितायै नमः
५७२. ॐ पेशलायै नमः
५७३. ॐ पवनाशिन्यै नमः
५७४. ॐ प्रजापतये नमः
५७५. ॐ परिश्रान्तायै नमः
५७६. ॐ पर्वतस्तनमण्डलायै नमः
५७७. ॐ पद्मप्रियायै नमः
५७८. ॐ पद्मसंस्थायै नमः
५७९. ॐ पद्माक्ष्यै नमः
५८०. ॐ पद्मसम्भवायै नमः
५८१. ॐ पद्मपत्रायै नमः
५८२. ॐ पद्मपदायै नमः
५८३. ॐ पद्मिन्यै नमः
५८४. ॐ प्रियभाषिण्यै नमः
५८५. ॐ पशुपाशविनिर्मुक्तायै नमः
५८६. ॐ पुरन्ध्र्यै नमः
५८७. ॐ पुरवासिन्यै नमः
५८८. ॐ पुष्कलायै नमः
५८९. ॐ पुरुषायै नमः
५९०. ॐ पर्वायै नमः
५९१. ॐ पारिजातकुसुमप्रियायै नमः
५९२. ॐ पतिव्रतायै नमः
५९३. ॐ पवित्रांग्यै नमः
५९४. ॐ पुष्पहासपरायणायै नमः
५९५. ॐ प्रज्ञावतीसुतायै नमः
५९६. ॐ पौत्र्यै नमः
५९७. ॐ पुत्रपुज्यायै नमः
५९८. ॐ पयस्विन्यै नमः
५९९. ॐ पट्टिपाशधरायै नमः
६००. ॐ पंक्तयै नमः
६०१. ॐ पितृलोकप्रदायिन्यै नमः
६०२. ॐ पुराण्यै नमः
६०३. ॐ पुण्यशीलायै नमः
६०४. ॐ प्रणतार्तिविनाशिन्यै नमः
६०५. ॐ प्रद्युम्नजनन्यै नमः
६०६. ॐ पुष्टायै नमः
६०७. ॐ पितामहपरिग्रहायै नमः
६०८. ॐ पुण्डरीकसमाननायै नमः
६०९. ॐ पुण्डरीकपुरावासायै नमः
६१०. ॐ पृथुभुजायै नमः
६११. ॐ पृथुजंघायै नमः
६१२. ॐ पृथुपादायै नमः
६१३. ॐ पृथुदर्यै नमः
६१४. ॐ प्रवालशोभायै नमः
६१५. ॐ पिंगाक्षयै नमः
६१६. ॐ पीतवासायै नमः
६१७. ॐ प्रचापलायै नमः
६१८. ॐ प्रसवायै नमः
६१९. ॐ पुष्टिदायै नमः
६२०. ॐ पुण्यायै नमः
६२१. ॐ प्रतिष्ठायै नमः
६२२. ॐ प्रणवागत्यै नमः
६२३. ॐ पंचवर्णायै नमः
६२४. ॐ पंचवाण्यै नमः
६२५. ॐ पंचिकायै नमः
६२६. ॐ पंजरस्थितायै नमः
६२७. ॐ परमायायै नगः
६२८. ॐ परज्योतिष्यै नमः
६२९. ॐ परप्रीतयै नमः
६३०. ॐ परागतयै नमः
६३१. ॐ पराकाष्ठायै नमः
६३२. ॐ परेशान्यै नमः

६३३. ॐ पावन्यै नमः
६३४. ॐ पावकद्युतये नमः
६३५. ॐ पुण्यभद्रायै नमः
६३६. ॐ परिच्छेद्यायै नमः
६३७. ॐ पुष्पहासायै नमः
६३८. ॐ पृथुम्नदर्यै नमः
६३९. ॐ पीताङ्ग्यै नमः
६४०. ॐ पीतवसनायै नमः
६४१. ॐ पीतशय्यायै नमः
६४२. ॐ पिशाचिन्यै नमः
६४३. ॐ पीतक्रियायै नमः
६४४. ॐ पिशाचघ्न्यै नमः
६४५. ॐ पाटलाक्ष्यै नमः
६४६. ॐ पटुक्रियायै नमः
६४७. ॐ पञ्चभक्षप्रियाचारायै नमः
६४८. ॐ पूतनाप्राणघातिन्यै नमः
६४९. ॐ पुन्नागवनमध्यस्थायै नमः
६५०. ॐ पुण्यतीर्थनिषेवितायै नमः
६५१. ॐ पंचाग्न्यै नमः
६५२. ॐ पराशक्त्यै नमः
६५३. ॐ परमाह्लादकारिण्यै नमः
६५४. ॐ पुष्पकाण्डस्थितायै नमः
६५५. ॐ पूषायै नमः
६५६. ॐ पोषिताखिलविष्टपायै नमः
६५७. ॐ पानप्रियायै नमः
६५८. ॐ पञ्चशिखायै नमः
६५९. ॐ पन्नगोपरिशायिन्यै नमः
६६०. ॐ पञ्चमात्रात्मिकायै नमः
६६१. ॐ पृथ्व्यै नमः
६६२. ॐ पथिकायै नमः
६६३. ॐ पृथुदोहिन्यै नमः
६६४. ॐ पुराणन्यायमीमांसायै नमः
६६५. ॐ पाटल्यै नमः
६६६. ॐ पुष्पगन्धिन्यै नमः
६६७. ॐ पुण्यप्रजायै नमः
६६८. ॐ पारदात्र्यै नमः
६६९. ॐ परमार्गैकगोचरायै नमः
६७०. ॐ प्रवालशोभायै नमः
६७१. ॐ पूर्णाशायै नमः
६७२. ॐ प्रणवायै नमः
६७३. ॐ पल्लवोदर्यै नमः
६७४. ॐ फलिन्यै नमः
६७५. ॐ फलदायै नमः
६७६. ॐ फल्गवे नमः
६७७. ॐ फूत्कार्यै नमः
६७८. ॐ फलकाकृत्यै नमः
६७९. ॐ फणीन्द्रभोगशयनायै नमः
६८०. ॐ फणिमण्डलमण्डितायै नमः
६८१. ॐ बालबालायै नमः
६८२. ॐ बहुमतायै नमः
६८३. ॐ बालातपनिभांशुकायै नमः
६८४. ॐ बलभद्रप्रियायै नमः
६८५. ॐ वन्द्यायै नमः
६८६. ॐ वडवायै नमः
६८७. ॐ बुद्धिसंस्तुतायै नमः
६८८. ॐ वन्दीदेव्यै नमः
६८९. ॐ बिलवत्यै नमः
६९०. ॐ बडिशघ्न्यै नमः
६९१. ॐ बलिप्रियायै नमः
६९२. ॐ बांधव्यै नमः
६९३. ॐ बोधितायै नमः
६९४. ॐ बुध्यै नमः
६९५. ॐ बंधूककुसुमप्रियायै नमः
६९६. ॐ बालाभानुप्रभाकरारायै नमः
६९७. ॐ ब्राह्मयै नमः
६९८. ॐ ब्राह्मणदेवतायै नमः

६९९. ॐ बृहस्पतिस्तुतायै नम:
७००. ॐ वृन्दायै नम:
७०१. ॐ वृन्दावनविहारिण्यै नम:
७०२. ॐ बालाकिन्यै नम:
७०३. ॐ बिलाहारायै नम:
७०४. ॐ बिलवासायै नम:
७०५. ॐ बहूदकायै नम:
७०६. ॐ बहुनेत्रायै नम:
७०७. ॐ बहुपदायै नम:
७०८. ॐ बहुकर्णावतंसिकायै नम:
७०९. ॐ बहुबाहुयुतायै नम:
७१०. ॐ बीजरूपिण्यै नम:
७११. ॐ बहुरूपिण्यै नम:
७१२. ॐ बिंदुनादकलातीतायै नम:
७१३. ॐ बिंदुनादस्वरूपिण्यै नम:
७१४. ॐ बद्धगोधांगुलित्राणायै नम:
७१५. ॐ बदर्याश्रमवासिन्यै नम:
७१६. ॐ वृंदारकायै नम:
७१७. ॐ बृहत्स्कन्धायै नम:
७१८. ॐ बृहतीबाणपातिन्यै नम:
७१९. ॐ वृंदाध्यक्षायै नम:
७२०. ॐ बहुनुतायै नम:
७२१. ॐ वनितायै नम:
७२२. ॐ बहुविक्रमायै नम:
७२३. ॐ बद्धपद्मासनासीनायै नम:
७२४. ॐ बिल्वपत्रतलस्थितायै नम:
७२५. ॐ बोधिद्रुमनिजावासायै नम:
७२६. ॐ बडिस्थायै नम:
७२७. ॐ बिदुदर्पणायै नम:
७२८. ॐ बालायै नम:
७२९. ॐ बाणासनवत्यै नम:
७३०. ॐ बडवानलवेगिन्यै नम:
७३१. ॐ ब्रह्माण्डबहिरन्त: स्थायै नम:
७३२. ॐ ब्रह्मकंकणसूत्रिण्यै नम:
७३३. ॐ भवान्यै नम:
७३४. ॐ भीषणवत्यै नम:
७३५. ॐ भाविन्यै नम:
७३६. ॐ भयहारिण्यै नम:
७३७. ॐ भद्रकाल्यै नम:
७३८. ॐ भुजंगाक्ष्यै नम:
७३९. ॐ भारत्यै नम:
७४०. ॐ भारताश्यायै नम:
७४१. ॐ भैरव्यै नम:
७४२. ॐ भीषणकारायै नम:
७४३. ॐ भूतिदायै नम:
७४४. ॐ भूतिमालिन्यै नम:
७४५. ॐ भामिन्यै नम:
७४६. ॐ भोगनिरतायै नम:
७४७. ॐ भद्रदायै नम:
७४८. ॐ भूरिविक्रमायै नम:
७४९. ॐ भूतवासायै नम:
७५०. ॐ भृगुलतायै नम:
७५१. ॐ भार्गव्यै नम:
७५२. ॐ भूसुरार्चितायै नम:
७५३. ॐ भागीरथ्यै नम:
७५४. ॐ भोगवत्यै नम:
७५५. ॐ भवनस्थायै नम:
७५६. ॐ भिषग्वरायै नम:
७५७. ॐ भामिन्यै नम:
७५८. ॐ भोगिन्यै नम:
७५९. ॐ भाषायै नम:
७६०. ॐ भवान्यै नम:
७६१. ॐ भूरिदक्षिणायै नम:
७६२. ॐ भर्गात्मिकायै नम:
७६३. ॐ भीमवत्यै नम:
७६४. ॐ भवबन्धविमोचिन्यै नम:

७६५. ॐ भजनीयायै नम:
७६६. ॐ भूतधात्रीरञ्जितायै नम:
७६७. ॐ भुवनेश्वर्यै नम:
७६८. ॐ भुजङ्गवलयायै नम:
७६९. ॐ भीमायै नम:
७७०. ॐ भेरुण्डायै नम:
७७१. ॐ भागधेयिन्यै नम:
७७२. ॐ मात्रयै नम:
७७३. ॐ मायायै नम:
७७४. ॐ मधुमत्यै नम:
७७५. ॐ मधुजिह्वायै नम:
७७६. ॐ मधुप्रियायै नम:
७७७. ॐ महादेव्यै नम:
७७८. ॐ महाभागायै नम:
७७९. ॐ मालिन्यै नम:
७८०. ॐ मीनलोचनायै नम:
७८१. ॐ मायातीतायै नम:
७८२. ॐ मधुमत्यै नम:
७८३. ॐ मधुमांसायै नम:
७८४. ॐ मधुद्रवायै नम:
७८५. ॐ मानव्यै नम:
७८६. ॐ मधुसम्भूतायै नम:
७८७. ॐ मिथिलापुरवासिन्यै नम:
७८८. ॐ मधुकैटभसंहन्त्र्यै नम:
७८९. ॐ मेदिन्यै नम:
७९०. ॐ मेघमालिन्यै नम:
७९१. ॐ मन्दोदर्यै नम:
७९२. ॐ महामायायै नम:
७९३. ॐ मैथील्यै नम:
७९४. ॐ मसृणप्रियायै नम:
७९५. ॐ महालक्ष्म्यै नम:
७९६. ॐ महाकन्यायै नम:
७९७. ॐ महेश्वर्यै नम:
७९८. ॐ माहेन्द्र्यै नम:
७९९. ॐ महाकाल्यै नम:
८००. ॐ मेरुतनयायै नम:
८०१. ॐ मंदारकुसुमार्चितायै नम:
८०२. ॐ मंजुमंजीरचरणायै नम:
८०३. ॐ मोक्षदायै नम:
८०४. ॐ मंजुभाषिण्यै नम:
८०५. ॐ मधुरद्राविण्यै नम:
८०६. ॐ मुद्रायै नम:
८०७. ॐ मलयायै नम:
८०८. ॐ मलयान्वितायै नम:
८०९. ॐ मेधायै नम:
८१०. ॐ मरकतश्यामायै नम:
८११. ॐ मागध्ये नम:
८१२. ॐ मेनकात्मजायै नम:
८१३. ॐ महामार्यै नम:
८१४. ॐ महावीरायै नम:
८१५. ॐ महाश्यामायै नम:
८१६. ॐ मनुस्तुतायै नम:
८१७. ॐ मातृकायै नम:
८१८. ॐ मिहिराभासायै नम:
८१९. ॐ मुकुंदपदविक्रमायै नम:
८२०. ॐ मूलाधारस्थितायै नम:
८२१. ॐ मुग्धायै नम:
८२२. ॐ मणिपूरकवासिन्यै नम:
८२३. ॐ मृगाक्ष्यै नम:
८२४. ॐ महिषारूढायै नम:
८२५. ॐ योगासनायै नम:
८२६. ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नम:
८२७. ॐ योगगम्यायै नम:
८२८. ॐ योगायै नम:
८२९. ॐ यौवनकाश्रयायै नम:
८३०. ॐ यौवन्यै नम:

८३१. ॐ युद्धमध्यस्थायै नमः
८३२. ॐ यमुनायै नमः
८३३. ॐ युगधारिण्यै नमः
८३४. ॐ यक्षिण्यै नमः
८३५. ॐ योगयुक्तायै नमः
८३६. ॐ यक्षराजप्रसूतिन्यै नमः
८३७. ॐ यात्रायै नमः
८३८. ॐ यानविधानज्ञायै नमः
८३९. ॐ यदुवंशसमुद्भवायै नमः
८४०. ॐ यकारादिहकारान्तायै नमः
८४१. ॐ याजुष्यै नमः
८४२. ॐ यज्ञरूपिण्यै नमः
८४३. ॐ यामिन्यै नमः
८४४. ॐ योगनिरतायै नमः
८४५. ॐ यातुधानभयंकर्य्यै नमः
८४६. ॐ रुक्मिण्यै नमः
८४७. ॐ रमण्यै नमः
८४८. ॐ रामायै नमः
८४९. ॐ रेवत्यै नमः
८५०. ॐ रेणुकायै नमः
८५१. ॐ रत्यै नमः
८५२. ॐ रौद्र्यै नमः
८५३. ॐ रौद्रप्रियाकारायै नमः
८५४. ॐ राममात्रे नमः
८५५. ॐ रतिप्रियायै नमः
८५६. ॐ रोहिण्यै नमः
८५७. ॐ राज्यदायै नमः
८५८. ॐ रेवायै नमः
८५९. ॐ रमायै नमः
८६०. ॐ राजीवलोचनायै नमः
८६१. ॐ राकेश्यै नमः
८६२. ॐ रूपसम्पन्नायै नमः
८६३. ॐ रत्नसिंहासनस्थितायै नमः
८६४. ॐ रक्तमाल्याम्बरधरायै नमः
८६५. ॐ रक्तगन्धानुलेपनायै नमः
८६६. ॐ राजहंससमारूढायै नमः
८६७. ॐ रम्भायै नमः
८६८. ॐ रक्तबलिप्रियायै नमः
८६९. ॐ रमणीययुगाधारायै नमः
८७०. ॐ राजिताखिलभूतलायै नमः
८७१. ॐ रुरुचर्मपरीधानायै नमः
८७२. ॐ रथिन्यै नमः
८७३. ॐ रत्नमालिकायै नमः
८७४. ॐ रोगेश्यै नमः
८७५. ॐ रोगशमन्यै नमः
८७६. ॐ राविण्यै नमः
८७७. ॐ रोमहर्षिण्यै नमः
८७८. ॐ रामचन्द्रपदाक्रान्तायै नमः
८७९. ॐ रावणच्छेदकारिण्यै नमः
८८०. ॐ रत्नवस्त्रपरिच्छिन्नायै नमः
८८१. ॐ रथस्थायै नमः
८८२. ॐ रुक्मभूषणायै नमः
८८३. ॐ लज्जाधिदेवतायै नमः
८८४. ॐ लोलायै नमः
८८५. ॐ ललितायै नमः
८८६. ॐ लिङ्गधारिण्यै नमः
८८७. ॐ लक्ष्म्यै नमः
८८८. ॐ लोलायै नमः
८८९. ॐ लुप्तविषायै नमः
८९०. ॐ लोकिन्यै नमः
८९१. ॐ लोकविश्रुतायै नमः
८९२. ॐ लज्जायै नमः
८९३. ॐ लंबोदरीदेव्यै नमः
८९४. ॐ ललनायै नमः
८९५. ॐ शिरःसंधानकारिण्यै नमः
८९६. ॐ शरावत्यै नमः

८९७. ॐ शरानंदायै नमः
८९८. ॐ शरज्ज्योत्स्नायै नमः
८९९. ॐ शुभाननायै नमः
९००. ॐ शरभायै नमः
९०१. ॐ शूलिन्यै नमः
९०२. ॐ शुद्धायै नमः
९०३. ॐ शबर्यै नमः
९०४. ॐ शुकवाहनायै नमः
९०५. ॐ श्रीमत्यै नमः
९०६. ॐ धरानंदायै नमः
९०७. ॐ श्रवणानंददायिन्यै नमः
९०८. ॐ शर्वाण्यै नमः
९०९. ॐ शर्वरीवंद्यायै नमः
९१०. ॐ षड्भाषायै नमः
९११. ॐ षड्ऋतुप्रियायै नमः
९१२. ॐ षडाधारस्थितादेव्यै नमः
९१३. ॐ षण्मुखप्रियकारिण्यै नमः
९१४. ॐ षडारूपसुमतिसुरा-
ऽसुरनमस्कृतायै नमः
९१५. ॐ सरस्वत्यै नमः
९१६. ॐ सदाधारायै नमः
९१७. ॐ सर्वमंगलकारिण्यै नमः
९१८. ॐ सामगानप्रियायै नमः
९१९. ॐ सूक्ष्मायै नमः
९२०. ॐ क्षौमवस्त्रपरीतांग्यै नमः
९२१. ॐ क्षीराब्धितनयायै नमः
९२२. ॐ क्षमायै नमः
९२३. ॐ गायत्र्यै नमः
९२४. ॐ सावित्र्यै नमः
९२५. ॐ पार्वत्यै नमः
९२६. ॐ सरस्वत्यै नमः
९२७. ॐ वेदगर्भायै नमः
९२८. ॐ वरारोहायै नमः
९२९. ॐ श्रीगायत्र्यै नमः
९३०. ॐ पराम्बिकायै नमः
९३१. ॐ सावित्र्यै नमः
९३२. ॐ सामसंभवायै नमः
९३३. ॐ सर्वावासायै नमः
९३४. ॐ सदानंदायै नमः
९३५. ॐ सुस्तन्यै नमः
९३६. ॐ सागराम्बरायै नमः
९३७. ॐ सर्वैश्वर्यप्रियायै नमः
९३८. ॐ सिद्ध्यै नमः
९३९. ॐ साधुबंधुपराक्रमायै नमः
९४०. ॐ सप्तर्षिमण्डलगतायै नमः
९४१. ॐ सोममण्डलवासिन्यै नमः
९४२. ॐ सर्वज्ञायै नमः
९४३. ॐ सांद्रकरुणायै नमः
९४४. ॐ समानाधिकवर्जितायै नमः
९४५. ॐ सर्वोत्तुंगायै नमः
९४६. ॐ संगहीनायै नमः
९४७. ॐ सद्गुणायै नमः
९४८. ॐ सकलेष्टदायै नमः
९४९. ॐ सरघायै नमः
९५०. ॐ सूर्यतनयायै नमः
९५१. ॐ सूकेश्यै नमः
९५२. ॐ सोमसंहत्यै नमः
९५३. ॐ हिरण्यवर्णायै नमः
९५४. ॐ हरिण्यै नमः
९५५. ॐ ह्रींकार्यै नमः
९५६. ॐ हंसवाहिन्यै नमः
९५७. ॐ लोकधारिण्यै नमः
९५८. ॐ वरदायै नमः
९५९. ॐ वन्दितायै नमः
९६०. ॐ विद्यायै नमः
९६१. ॐ वैष्णव्यै नमः

९६२. ॐ विमलाकृत्यै नमः
९६३. ॐ वाराह्यै नमः
९६४. ॐ विरजायै नमः
९६५. ॐ वर्षायै नमः
९६६. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
९६७. ॐ विलासिन्यै नमः
९६८. ॐ विनतायै नमः
९६९. ॐ व्योममध्यस्थायै नमः
९७०. ॐ वारिजासनसंस्थितायै नमः
९७१. ॐ वारुण्यै नमः
९७२. ॐ वेणुसंभूतायै नमः
९७३. ॐ वीतिहोत्रायै नमः
९७४. ॐ विरूपिण्यै नमः
९७५. ॐ वायुमण्डलमध्यस्थायै नमः
९७६. ॐ विष्णुरूपायै नमः
९७७. ॐ विधिप्रियायै नमः
९७८. ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
९७९. ॐ विष्णुमत्यै नमः
९८०. ॐ विशालाक्ष्यै नमः
९८१. ॐ वसुन्धरायै नमः
९८२. ॐ वामदेवप्रियायै नमः
९८३. ॐ बेलायै नमः
९८४. ॐ वज्रिण्यै नमः
९८५. ॐ वसुदोहिन्यै नमः
९८६. ॐ वेदाक्षरपरीताङ्ग्यै नमः
९८७. ॐ वाजपेयफलदायै नमः
९८८. ॐ वासव्यै नमः
९८९. ॐ वामजनन्यै नमः
९९०. ॐ वैकुण्ठनिलयायै नमः
९९१. ॐ वरायै नमः
९९२. ॐ व्यासप्रियायै नमः
९९३. ॐ वर्मधरायै नमः
९९४. ॐ वाल्मीकिपरिसेवितायै नमः
९९५. ॐ शाकम्भर्यै नमः
९९६. ॐ शिवायै नमः
९९७. ॐ शान्तायै नमः
९९८. ॐ शारदायै नमः
९९९. ॐ शरणागतये नमः
१०००. ॐ शांतोदर्यै नमः
१००१. ॐ शुभाचारायै नमः
१००२. ॐ शुम्भासुरविमर्दिन्यै नमः
१००३. ॐ शोभावत्यै नमः
१००४. ॐ शिवाकारायै नमः
१००५. ॐ शङ्करार्धशरीरिण्यै नमः
१००६. ॐ शोणायै नमः
१००७. ॐ शुभाशयायै नमः
१००८. ॐ शुभ्रायै नमः

नारदजी ने श्रीनारायण से कहा, 'हे भगवन्! आप सभी धर्मों और समस्त शास्त्रों के ज्ञाता हैं। आपके श्रीमुख से मैंने श्रुति-स्मृति और पुराणों के तत्त्व को सुना है। हे भगवन्! जिससे सब पापों की विद्या प्रकट होती है, वह कौन-सी है? ब्रह्मज्ञान और मोक्ष-मार्ग का साधन क्या है? हे कमलनयन भगवन्! ब्राह्मणों की उत्तम गति कैसे होती है और मृत्यु का नाश किस प्रकार होता है? इहलोक और परलोक का फल किससे मिलता है? आप इस संबंध में कुछ कहने के योग्य हैं। अतः आद्योपांत आप इस तत्त्व को कहिए?'

नारदजी की बात सुनकर श्री भगवान् नारायण ने कहा, 'हे नारदजी! आपने

मुझसे बहुत ही उत्तम प्रश्न किया है। इसके लिए शुभदायक, दिव्यकारक और सर्वपापनाशक गायत्री के एक हजार आठ नामों का वर्णन पीछे किया जा चुका है, आप उनका ध्यानपूर्वक श्रवण करें।'

सृष्ट्यादौ यद्भगवता पूर्वं प्रोक्तं ब्रवीमि ते।
अष्टोत्तरसहस्रस्य ऋषिर्ब्रह्मा प्रकीर्तितः॥

सृष्टि के आरंभ में जैसा कि पहले भगवान् से कहा गया है कि अष्टोत्तरसहस्त्र अर्थात् एक हजार आठ नाम वाले स्तोत्र के ऋषि ब्रह्मा हैं।

छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवी गायत्री देवता स्मृता।
हलो बीजानि तस्यैव स्वराः शक्तय ईरिताः॥

गायत्री मंत्र का छंद अनुष्टुप है, गायत्री ही देवता हैं, इसका बीज मंत्र ही हलंत्-अक्षर है और इसमें सात स्वर शक्ति-स्वरूप हैं।

अङ्गन्यास करन्यासावुच्येते मातृकाक्षरैः।
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानां हिताय वै॥

इसमें मातृका मंत्र के छह अक्षर ही अंगन्यास और करन्यास के रूप में हैं। अब साधकों के हितार्थ मैं भगवती का ध्यान करता हूं।

ध्यान :

रक्त श्वेत हिरण्य नील धवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां।
रक्तां रक्त नवस्त्रजां मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम्।
गायत्रीं कमलासनां करतल व्यानद्ध कुण्डाम्बुजा
पद्माक्षीं च वरस्त्रजं च दधतीं हंसाधिरूढां भजे॥

जो लाल, श्वेत, स्वर्ण के समान पीत, नील एवं उज्ज्वल वर्णों-श्रीमुखों से युक्त हैं, त्रिनेत्रों से देदीप्यमान हैं, रक्ता-रक्तमणियों से युक्त, नवीन-माला-धारिणी, कुमारी, पद्मासन की मुद्रा में विराजमान, जिनकी हथेलियों में कमलपुष्प और कमंडलु है, कमल की श्रेष्ठ माला से विभूषित और हंस के वाहन पर आरूढ़, ऐसी गायत्री देवी को मैं भजता हूं।

❑❑

९

गायत्री सहस्त्रनाम स्तोत्रम्

'कैलासे सुखमासीनं' से आरंभ कर 'मातंगानिव केसरी' तक गायत्री सहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ नित्य करना चाहिए। इससे साधक के सभी कार्यों की सिद्धि होती है।

कैलासे सुखमासीनं तुषारकर शेखरम्।
बद्धाञ्जलिर्नमस्कृत्याऽभ्यर्च्य पृच्छति पार्वती॥ 1॥

पार्वत्युवाच

किं विन्यस्तं त्वया देव स्वशरीरे निरन्तरम्।
कथमेतादृशी कान्तिः कथं तेऽष्टौ समृद्धयः॥ 2॥
सर्वतत्त्व प्रभुत्वं च कथं कथमथाश्रयेत्।
कृपया ब्रूहि देवेश प्रसन्नोऽसि यदि प्रभो॥ 3॥
भगवन् विविधा विद्याः श्रोतुमिच्छामि ते प्रभो।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि गायत्र्याश्च महोत्सवम्॥ 4
नाम्नां सहस्त्रं देवेश कृपया वक्तुमर्हसि।
यद्यहं प्रेयसी भार्या यद्यहं प्राणवल्लभा॥ 5॥
इति श्रुत्वा वचो देव्याः प्रसन्नः प्रभुरीश्वरः।
श्रूयतामिति चाभाष्य जगाद जगदम्बिका॥ 6॥
शृणु देवि रहस्यं मे कस्याप्यग्रे न चोदितम्।
गोपितं सर्वतन्त्रेषु सिद्धानां स्तोत्रमुत्तमम्॥ 7॥
सर्वसौभाग्यजनकं सर्व सम्पत्ति दायकम्।
सर्ववश्यकरं लोके सर्वप्रत्यूह नाशनम्॥ 8॥
सर्ववादि मुखस्तम्भि निग्रहाऽनुग्रहक्षमम्।
त्वत्प्रीत्या कथयिष्यामि सुगोप्यमपि दुर्लभम्॥ 9॥
सर्वपापक्षयकरं सर्वज्ञानमयं शिवम्।
परायणानां परमा परब्रह्मस्वरूपिणी॥ 10॥
परा च परमेशानी परब्रह्मात्मिका मता।
सा देवी च वरारोहा चेतसा चिन्तयाम्यहम्॥ 11॥

ऐश्वर्यं च दशप्राप्तिर्वरदादित्वमेव च।
गायत्र्या दिव्यसाहस्त्रं स्वप्ने चाप्तं मयाऽपि यत्॥ 12॥
ऋषिरस्य समाख्यातो महादेवो महेश्वरः।
देवता देवजननी छन्दः सामादि कीर्तितम्॥ 13॥
धर्माऽर्थकाममोक्षार्थे विनियोग उदाहृतः।
सर्वभूतान्तरीं ध्यात्वा पद्मासनगतां शुचिः॥ 14॥
ततः सहस्त्रनामेदं पठितव्यं मुमुक्षुभिः।
सर्वकार्यकरं पुण्यं महापातकनाशकम्॥ 15॥
ॐ तत्काररूपा तद्रूपा तत्पदार्थस्वरूपिणी।
तपः स्वाध्याय निरता तपस्वी वाग्विदांवरा॥ 1॥
तत्कीर्तिगुणसम्पन्ना तथ्यवादी तपोनिधिः।
तत्पदेशानुसम्बन्धा तपोलोकनिवासिनी॥ 2॥
तरुणादित्यसङ्काशा तप्तकाञ्चनभूषणा।
तमोपहारिणी तन्त्री तन्निपातनिवारिणी॥ 3॥
तलादि भुवनान्तः स्था तारिणीताररूपिणी।
तर्करूपित कोषादि तर्कशास्त्र विदारिणी॥ 4॥
तर्कवादिमुखास्तम्भा राज्ञां च परिपालिनी।
तन्त्रसारा तन्त्रमाता तन्त्रमार्ग प्रदर्शिनी॥ 5॥
तन्त्री तन्त्रविधानज्ञा तन्त्रस्था तन्त्रसाक्षिणी।
तदेकध्यान निरता तत्त्वज्ञान प्रबोधिनी॥ 6॥
तन्नाममन्त्रसुप्रीता तपस्विजनसेविता।
ओंकाररूपा सावित्री सर्वरूपा सनातनी॥ 7॥
संसारदुःख शमनी सर्वयागफलप्रदा॥ 8॥
सफला सत्यसङ्कल्पा सत्या सत्यप्रदायिनी।
सन्तोषजननी सारा सत्यलोकनिवासिनी॥ 9॥
समुद्रतनयाऽऽराध्या सामगानप्रिया सती।
समाना सामिधेनी च समस्त सुरसेविता॥ 10॥
सर्वसम्पत्तिजननी सम्पदा सिन्धुसेविता।
सर्वोत्तुङ्गा तुङ्गहीना सद्गुणा सकलेष्टदा॥ 11॥
सनकादिमुनिध्येया समानाधिकवर्जिता।
साध्या सिद्धा सुधा वासा सिद्धिः साध्यप्रदायिनी॥ 12॥
सम्यगाराध्यनिलया समुत्तीर्णा सदाशिवा।
सर्ववेदान्तनिलया सर्वशास्त्रार्थ वादिनी॥ 13॥

सहस्त्रदलपद्मस्था सर्वज्ञा सर्वतोमुखी।
समया समयाचारा सत्या षड्ग्रन्थिभेदिनी॥ 14॥
सप्तकोटि महामन्त्र माता सर्वप्रदायिनी।
सगुणा सम्भ्रमा साक्षी सर्वचैतन्यरूपिणी॥ 15॥
सत्कीर्तिः सात्त्विकी साध्वी सच्चिदानन्दरूपिणी।
सङ्कल्परूपिणी सन्ध्या शालग्रामनिवासिनी॥ 16॥
सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सत्यज्ञान प्रबोधिनी।
विकाररूपा विप्रश्रीर्विप्राराधन तत्परा॥ 17॥
विप्रिणी विप्रकल्याणी विप्रवाक्यस्वरूपिणी।
विप्रमन्दिरमध्यस्था विप्री विप्रप्रसादिनी॥ 18॥
विप्रमन्दिरमध्यस्था विप्रवादविनोदिनी।
विप्रोपाधिविनिर्मुक्ता विप्रहत्याविमोचनी॥ 19॥
विप्रत्राता विप्रगोत्रा विप्रगोत्रविवर्धिनी।
विप्रभोजनसन्तुष्टा विष्णुरूपा विनोदिनी॥ 20॥
विष्णुमाया विष्णुवन्द्या विष्णुगर्भा विचित्रिणी।
वैष्णवी विष्णुभगिनी विष्णुमाया विलासिनी॥ 21॥
विकाररहिता वन्द्या विज्ञानघनरूपिणी।
विश्वसाक्षी विश्वयोनिर्विश्वामित्र प्रसादिनी॥ 22॥
विबुधा विष्णुसङ्कल्पा विकल्पा विश्वसाक्षिणी।
विष्णुचैतन्य निलया विष्णुस्था विश्ववादिनी॥ 23॥
विवेकी विविधानन्दी विजया विश्वमोहिनी।
विद्याधरी विधानज्ञा विबुधार्य स्वरूपिणी॥ 24॥
विरूपाक्षी विराड्रूपा विक्रमा विश्वमङ्गला।
विश्वम्भरा समाराध्या विश्वभ्रमणकारिणी॥ 25॥
विनायकी विनोदस्था वीरगोष्ठीविवर्द्धिनी।
विवाहरहिता वन्द्या विन्ध्याचलनिवासिनी॥ 26॥
विद्या विद्याकरी वेद्या वैद्यविद्याप्रबोधिनी।
विमला विभवा विद्या किङ्कस्था किङ्कसाक्षिणी॥ 27॥
वीरमध्या वरारोहा वितन्त्रा विश्वनायिका।
वीरहत्याप्रशमनी विनम्रजनपावनी॥ 28॥
वीरधा विविधाकारा विरोधजनवादिनी।
तुकारूपा तुतुर्यश्रीस्तुलसी वन वासिनी॥ 29॥

तुलस्या मातुला तुल्या तुल्यगोत्रा तुलेश्वरी।
तुरङ्गी तुरगारूढा तुरङ्गरथमोदिनी ॥ 30 ॥
तुरङ्गरदना मोहा तुलादानफलप्रदा।
तुलामाघस्नानतुष्टा तुष्टि पुष्टि प्रदायिनी ॥ 31 ॥
तुरङ्गम प्रसन्तुष्टा तुलिता तुल्यमध्यगा।
तुङ्गात्तुङ्गा तुङ्गकुचा तुहिनाचलसंस्थिता ॥ 32 ॥
तुम्बरादि स्तुतिप्रीता तुषारवपुषेश्वरी।
तुष्टा च तुष्टजननी तुष्टलोकनिवासिनी ॥ 33 ॥
तुलाधारा तुलामध्या तुलस्था तुलरूपिणी।
तुरीयगुणगम्भीरा तुर्यनामस्वरूपिणी ॥ 34 ॥
तुर्यविद्वल्लास्यसंस्था तुर्यशास्त्रार्थवादिनी।
तुर्यशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा तुर्यवादविनोदिनी ॥ 35 ॥
तुर्यनादान्तनिलया तुर्यानन्दस्वरूपिणी।
तुरीयभक्तिजननी तुर्यमार्गप्रदर्शिनी ॥ 36 ॥
वकाररूपा वागीशा वरेण्या वरसंस्थिता।
वरा वरिष्ठा वैदेही वेदशास्त्रप्रदर्शिनी ॥ 37 ॥
वैकल्पश्रमणी वाणी वाञ्छितार्थफलप्रदा।
वयस्था वयमध्यस्था वयोऽवस्थाविवर्जिता ॥ 38 ॥
वन्दिनी वादिनी वार्या वाङ्मयी वीरवन्दिनी।
वानप्रस्थाश्रमस्थायी वनदुर्गा वनालया ॥ 39 ॥
वनजाक्षी वनचरी वनिता वनमोदिनी।
वसिष्ठा वामदेवादि वन्द्या वन्द्यस्वरूपिणी ॥ 40 ॥
वाल्मीकी वाक्करी वाचा वारुणे वारुणप्रिया।
वैद्या वैद्यचिकित्सा च वषट्कारी वसुन्धरा ॥ 41 ॥
वसुमाता वसुत्राता वसुजन्मविमोचनी।
वसुप्रदा वासुदेवी वासुदेवमनोहरी ॥ 42 ॥
वासवार्चित पादश्रीर्वासवारि विनाशिनी।
वागीश वाङ्मनःस्थायी वनवासवशा वशी ॥ 43 ॥
वामदेवी वरारोहा वाद्यघोषणतत्परा।
वाचस्पति समाराध्या वागीशी वाचकीरवाक् ॥ 44 ॥
रेकाररूपा रेवा च रेवातीर निवासिनी।
रेकिणी रेवती रक्षा रुद्रजन्मा रजस्वला ॥ 45 ॥

रेणुका रमणी रम्या रतिवृद्धा रतारती।
रावणादित्यदानन्दा राजश्री राजशेखरा ॥ 46 ॥
रणमध्या रथारूढा रविकोटिसमप्रभा।
रविमण्डलमध्यस्था रजनी रविलोचना ॥ 47 ॥
रथाङ्गपाणी रक्षोघ्नी रागिणी रावणार्चिता।
रम्भादि कन्यकाऽऽराध्या राज्यदा राज्यवर्द्धिनी ॥ 48 ॥
रजताद्रीश्वरोरुस्था रम्या राजीवलोचना।
रमा वाणी रमाराध्या राज्यदात्री रथोत्सवा ॥ 49 ॥
रेतोवती रथोत्साहा राजहृद्रोगहारिणी।
रङ्गप्रवृद्धमधुरा रङ्गमण्डपमध्यगा ॥ 50 ॥
रञ्जिता राजजननी रमा रेवा रती रणा।
राविणी रागिणी राज्या राजराजेश्वरार्चिता ॥ 51 ॥
राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी।
राघवार्चितपादा श्रीराघवाराधनप्रिया ॥ 52 ॥
रत्नसागरमध्यस्था रत्नद्वीपनिवासिनी।
रत्नप्राकारमध्यस्था रत्नमण्डपमध्यगा ॥ 53 ॥
रत्नाभिषेक सन्तुष्टा रत्नाङ्गी रत्नदायिनी।
निकाररूपिणी नित्या नित्यतृप्ता निरञ्जना ॥ 54 ॥
निद्रात्ययविशेषज्ञा नीलजीमूतसन्निभा।
नीवारसूकवत्तन्वी नित्यकल्याणरूपिणी ॥ 55 ॥
नित्योत्सवा नित्यनित्या नित्यानन्दस्वरूपिणी।
निर्विकल्पा निर्गुणस्था निश्चिन्ता निरुपद्रवा ॥ 56 ॥
निरःसंशया संशयघ्नी निर्लोभा लोभनाशिनी।
निर्भवा भवपाशघ्नी नीतिशास्त्रविचारिणी ॥ 57 ॥
निखिलागम मध्यस्था निखिलागम संस्थिता।
नित्योपाधिविनिर्मुक्ता नित्यकर्मफलप्रदा ॥ 58 ॥
नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनवरप्रदा।
नवनीतप्रिया नारी नरकार्णवतारिणी ॥ 59 ॥
नारायणी निराहारा निर्मला निर्गुणप्रिया।
निर्मला निर्गमाचारा निखिलागमवेदिनी ॥ 60 ॥
निमिषा निमिषोत्पन्ना निमेषाण्डविधायिनी।
निवात दीपमध्यस्था निश्चिन्ता चिन्तनाशिनी ॥ 61 ॥

नीलवेणी नीलखण्डा निर्विषा विषनाशिनी।
नीलांशुक परीधाना निन्दिता निर्विरीश्वरी ॥ 62 ॥
निश्वासाश्वास मध्यस्था मिथो याननिवासिनी।
यङ्कारररूपा यन्त्रेशी यन्त्रयन्त्रा यशस्विनी ॥ 63 ॥
यन्त्राराधन सन्तुष्टा यजमानस्वरूपिणी।
यशस्विनी यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी ॥ 64 ॥
यमघ्नी यमकल्पा च यशः कामा यतीश्वरी।
यमादिर्योगनिरता यतिनिद्रापहारिणी ॥ 65 ॥
याता यज्ञा यज्ञिया च यज्ञेश्वरपतिव्रता।
यज्ञयज्ञा यजुर्यय्वा यज्ञीनिकरकारिणी ॥ 66 ॥
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञकर्मफलप्रदा।
यवाङ्कुर प्रिया यामा यवनी यवनाधिपा ॥ 67 ॥
यज्ञकर्त्री यज्ञभोक्त्री यज्ञाङ्गी यज्ञवाहिनी।
यज्ञसाक्षी यज्ञमुखी यजुषी यज्ञरक्षकी ॥ 68 ॥
भकाररूपा भद्रेशी भद्रकल्याणदायिनी।
भक्तप्रिया भक्तसखी भक्ताऽभीष्टस्वरूपिणी ॥ 69 ॥
भक्तिनी भक्तिसुलभा भक्तिदा भक्तवत्सला।
भक्तचैतन्यनिलया भक्तबन्ध विमोचनी ॥ 70 ॥
भक्तस्वरूपिणी भर्ग्या भाग्यारोग्यप्रदायिनी।
भक्तमाता भक्तगम्या भक्ताभीष्टप्रदायिनी ॥ 71 ॥
भास्वरी भैरवी भोगी भवानी भयनाशिनी।
भद्रात्मिका भद्रदायी भद्रकाली भयङ्करी ॥ 72 ॥
भगनिष्यन्दिनी भाग्या भवबन्धविमोचनी।
भीमा भीमनमा भङ्गी भङ्गुरा भीमदर्शिनी ॥ 73 ॥
भल्ली भल्लीधरा भेरुर्भेरुण्डा भीमपापहा।
भावज्ञा भोग्यदात्री च भवघ्नी भूतभूषणा ॥ 74 ॥
भूतिदा भूतिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी।
भ्रामरी भ्रमरी भारी भवसंसारतारिणी ॥ 75 ॥
भण्डासुरवधोत्साहा भाण्डवा भाविनोदिनी।
गोकाररूपा गोमाता गुरुपत्नी गुरुर्गिरा ॥ 76 ॥
गोरोचनप्रिया गौरी गोविन्दगुणवर्द्धिनी।
गोपालचेष्टा सन्तुष्टा गोवर्द्धनविवर्द्धिनी ॥ 77 ॥

गोविन्दरूपिणी गोप्ता गोप्तागोत्रविवर्द्धिनी।
गीता गीतप्रिया गेया गोका गोकुलवर्द्धिनी॥ 78॥
गोपी गोहत्यशमनी गुणा च गुणविग्रहा।
गोविन्दजननी गोष्ठा गोपदा गोकुलोत्सवा॥ 79॥
गोचरी गौतमी गोप्त्री गोमुखी गुरुवासिनी।
गोपाली गोमयी गुण्ठा गोष्ठी गोपुरवासिनी॥ 80॥
गरुडी गरुडश्रेष्ठा गारुडी गरुडध्वजा।
गम्भीरा गण्डकी गङ्गा गरुडध्वजवल्लभा॥ 81॥
गगनस्था गयावासा गुणवृत्तिर्गुडोद्भवा।
देकाररूपा देवेशी दृशिनी देवतार्चिता॥ 82॥
देवराजेश्वरार्द्धाङ्गी दीन दैन्य विमोचनी।
देश काल परिज्ञाना देशोपद्रवनाशिनी॥ 83॥
देवमाता देहमोहा देव दानव मोहिनी।
देवेन्द्रार्चित पादश्रीर्देवदेव प्रसादिनी॥ 84॥
देशान्तरी देवरूपा देवालय-निवासिनी।
देशभ्रमणकृद्देवी देशस्वास्थ्यप्रदायिनी॥ 85॥
देवयाना देवता च देवसैन्यप्रपालिनी।
वकाररूपा वाग्देवी वाचा मानसगोचरी॥ 86॥
वैकुण्ठदेशिनी वेद्या वायुरूपा वरप्रदा।
वक्रतुण्डार्चितपदा वक्रतुण्डप्रदायिनी॥ 87॥
वैचित्री च वसुमतिर्वसुस्थाना वसुप्रिया।
वषट्कारा च चामुण्डा वरारोहा वरावरी॥ 88॥
वैदेही जननी वैद्या वैदेही शोकनाशिनी।
वेदमाता वेदकन्या वेदरूपा विनोदिनी॥ 89॥
वेदान्तवादिनी वेदा वेदान्तनिलयामरा।
वेदश्रवा वेदघोषा वेदगानी विनोदिनी॥ 90॥
वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा वेदमार्गप्रदर्शिनी।
वैदिककर्मफलदा वेदसागर तारिणी॥ 91॥
वेदवादी वेदगृह्या वेदाश्वरथवाहिनी।
वेदचक्रा वेदवन्द्या वेदाङ्गी वेदवित्कविः॥ 92॥
श्यकाररूपा श्यामाङ्गी श्यामा श्यामासरोरुहा।
श्यामाका श्यालवृक्षा च शतपत्रनिकेतना॥ 93॥

सर्वदृक् सन्निविष्टा च सर्वसम्प्रेयणी सदा।
सव्याऽपसव्यदा सव्या दध्रीची च सहायिनी ॥ 94 ॥
भूकला सागरा सारा सार्वभौमस्वभाविनी।
सन्तोषजननी सेव्या सर्वेशी सर्वरञ्जनी ॥ 95 ॥
सरस्वती समाराध्या समदा सिन्धुसेविनी।
सम्मोहिनी सदामोहा सर्वमाङ्गल्यदायिनी ॥ 96 ॥
समस्तभुवनेशानी सर्वकामफलप्रदा।
सर्वसिद्धिप्रदा साध्वी सर्वज्ञान प्रदायिनी ॥ 97 ॥
सर्वदारिद्र्यशमनी सर्वदुःखविमोचनी।
सर्वरोगप्रशमनी सर्वपापविमोचनी ॥ 98 ॥
समदृष्टिः समगुणा सर्वसाक्षी सहायिनी।
सामर्थ्यवाहिनी सङ्ख्या सान्द्रानन्दपयोधरी ॥ 99 ॥
सङ्कीर्णमन्दिरस्थायी साकेतकुलपालिनी।
संहारी शङ्करी गौरी साकेतपुरवासिनी ॥ 100 ॥
सम्बोधनी समुत्तिष्ठा सम्यग्ज्ञानस्वरूपिणी ॥ 101 ॥
सम्पत्करी समानाङ्गी सर्वभावसुसंस्थिता।
सम्बोधनी समानन्दा सन्मार्गकुलपालिनी ॥ 102 ॥
सञ्जीवनी सर्वमेधा सभ्या सम्पत्प्रदायिनी।
समिद्धा समिधासीना सामान्या सामवेदिनी ॥ 103 ॥
समुत्तीर्णा सदाचारा संहारा सर्वपावनी।
सर्पिणी सर्पमाता च सर्पदंष्टविमोचनी ॥ 104 ॥
सर्पयागप्रशमनी सर्वज्ञत्वफलप्रदा।
सङ्क्रमाऽसङ्क्रमा सिन्धुः सर्गा सङ्ग्रामपूजिता ॥ 105 ॥
सङ्कटा सङ्कटाहारी सकुङ्कुमविलेपना।
सुमुखा सुमुखस्थायी साङ्गोपाङ्गार्चनप्रिया ॥ 106 ॥
संस्तुता संस्तुतिः प्रीतिः सत्यवादी सदासुखी।
धीकाररूपा धीमाता धीरा धीरप्रसादिनी ॥ 107 ॥
धीरोत्तमा धीरधीरा धीरस्था धीरशेखरा।
स्थितिधैर्या स्थविष्ठा च स्थपतिः स्थलविग्रहा ॥ 108 ॥
धीरा धारा धीरवन्द्या धीपतिर्धीरमानसा।
धीपदा धीपदस्थायी धीशना धीप्रदा सुखी ॥ 109 ॥
मकारूपी मैत्रेयी महामङ्गलदेवता।
मनोवैकल्यशमनी मलयाचलवासिनी ॥ 110 ॥
मलयध्वजराजश्रीमानाक्षी मधुरालया।
महादेवी महारूपा महाभैरवपूजिता ॥ 111 ॥

मनुविद्या मन्त्रमाता मन्त्रवश्या महेश्वरी।
मत्तमातङ्गगमना मधुरा मेरुमण्डपा॥ 112॥
महागुप्ता महाभूता महाभयविनाशिनी।
महागौरी महामन्त्री महावैरिविनाशनी॥ 113॥
महालक्ष्मीर्महागौरी महिषासुरमर्दिनी।
महेशमण्डलस्था च मधुरागमवर्जिता॥ 114॥
मेधा मेधाकरी मेध्या माधवी मधुमर्दिनी।
मन्त्रा मन्त्रमयी मान्या माया महिममन्त्रिणी॥ 115॥
मायारूपी मायधारी मायस्था मायवादिनी।
मायासङ्कल्पजननी माया मायविनोदिनी॥ 116॥
मायाप्रपञ्चजननी मायासंहाररूपिणी।
मायामन्त्रप्रसादा च मायाजनविमोहिनी॥ 117॥
महापरा महारूपा महाविघ्नविनाशिनी।
महानुभावा मन्त्रेशी महामङ्गलदेवता॥ 118॥
हिकारस्था हृषीकेशी हितकायप्रवर्द्धिनी।
हीनोपाधि विनिर्मुक्ता हीनलोकविमोचनी॥ 119॥
ह्रीङ्कारा ह्रीमती ह्रीं ह्रीं ह्रींदेवी ह्रींस्वभाविनी।
ह्रीमती ह्रींवती ह्रस्वा ह्रींशिवा ह्रींकुलोद्भवा॥ 120॥
हितवादी हितप्रीता हितकारुण्यवर्द्धिनी।
हिताशनी हितक्रोधा हितकर्मफलप्रदा॥ 121॥
हिमा हिमसुता हेमा हेमाचलनिवासिनी।
हेती हिमप्रदा हारा होत्रा होतृहुतप्रदा॥ 122॥
हिमस्था हिमजा हेमा हितकर्मस्वभाविनी॥ 123॥
धीकाररूपा धिषणा धर्मरूपा धनेश्वरी।
धनुर्धरा धराधारा धर्म कर्म फलप्रदा॥ 124॥
धर्माचारा धर्मसारा धर्ममध्यनिवासिनी।
धनुर्वेदी धनुर्वादी धन्या धूर्तविनाशिनी॥ 125॥
धनधान्या धेनुरूपा धनाढ्या धनदायिनी।
धनेशी धर्मनिरता धर्मराजप्रसादिनी॥126॥
धर्मस्वरूपा धर्मेशी धर्माऽधर्मविचारिणी।
धर्मसूक्ष्मा धर्मसाक्षी धर्मिष्ठा धर्मगोचरा॥ 127॥
योकाररूपा योगेशी योगस्था योगरूपिणी।
योगा योगोपमाराध्या योगमार्गनिवासिनी॥ 128॥

योगासनस्था योगेशी योगमाया विलासिनी।
योगाऽयोगोपमाराध्या योगाङ्गी योगविग्रहा ॥ 129 ॥
योगवासी योगभोगी योगमार्गप्रदर्शिनी ॥ 130 ॥
योधा योधवती योग्याऽयोग्या योधनतत्परा।
योधिनी योधिनीसेव्या योधज्ञानप्रबोधिनी ॥ 131 ॥
योगेश्वर प्राणनाथा योगेश्वरहृदिस्थिता।
योगाऽयोगक्षेमकर्त्री योगक्षेमविहारिणी ॥ 132 ॥
योगराजेश्वराराध्या योगानन्दस्वरूपिणी ॥ 133 ॥
नवसिद्धिसमाराध्या नारायणमनोहरी।
नारायणी नवाधारा नवब्रह्मार्चिता सदा ॥ 134 ॥
नगेन्द्रतनयाराध्या नामरूपविवर्जिता।
नारसिंहार्चितपदा नवबन्धविमोचनी ॥ 135 ॥
नवग्रहार्चितपदा नवबन्धविमोचनी।
नैमित्तिकार्थनपदा नन्दितारि विनाशनी ॥ 136 ॥
नवसूत्रविधानज्ञा नैमिषारण्यवासिनी।
नवपीठस्थिता देवी नवर्षिगणसेविता ॥ 137 ॥
नवचन्दनदिग्धाङ्गी नवकुङ्कुमधारिणी।
नववस्त्रपरीधाना नवरत्नविभूषणा ॥ 138 ॥
नवभस्म विदिग्धाङ्गी नवचन्द्रकलाधरा।
प्रकाशरूपा प्राणाशी प्राणसंरक्षणी सदा ॥ 139 ॥
प्राणसञ्जीवनी प्राणा प्राणाऽप्राणप्रबोधिनी।
प्रज्ञा प्रज्ञाप्रभा प्राच्या प्रतीची प्रबुधाप्रिया ॥ 140 ॥
प्राचीरा प्रणयान्तस्था प्रभातज्ञानरूपिणी।
प्रभातकर्मसन्तुष्टा प्राणायामपरायणा ॥ 141 ॥
प्रायज्ञा प्रणवा प्राप्ताप्रवृत्तिः प्रकृतिः परा ॥ 142 ॥
प्रबन्धा प्रबुधा साक्षी प्राज्ञा प्रारब्धनाशिनी।
प्रबोधनिरता प्रक्षा प्रबन्धप्राणसाक्षिणी ॥ 143 ॥
प्रयागतीर्थनिलया प्रत्यक्षा परमेश्वरी।
प्रणवाद्यन्त निलया प्रणवादि प्रचोदयात् ॥ 144 ॥
चोकाररूपा चोरघ्नी चोरबाधाविनाशिनी।
चेतनाऽचेतनाशीता चौराऽचौर्याचमत्कृतिः ॥ 145 ॥
चक्रवर्तित्वधारी च चक्रिणी चक्रधारिणी।
चिरञ्जीवी चिदानन्दा चिद्रूपा चिद्विलासिनी ॥ 146 ॥

चिन्ता चित्तप्रशमनी चिन्तितार्थफलप्रदा।
चाम्पेयी चम्पकप्रीता चण्डी चण्डाट्टहासिनी ॥ 147 ॥
चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्ड मुण्ड विनाशिनी।
चकोराक्षी चिरप्रीता चिकुरा चिकुरप्रिया ॥ 148 ॥
चैतन्यरूपिणी चैत्री चेतना चित्तसाक्षिणी।
चित्रा चित्र विचित्राङ्गी चित्रगुप्तप्रसादिनी ॥ 149 ॥
चलना चलसंस्थायी चापिनी चलचित्रिणी।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था कोटिचन्द्रसुशीतला ॥ 150 ॥
चन्द्रानुज समाराध्या चन्द्रचन्द्र महोदरी।
चर्चितारिश्चन्द्रमाता चन्द्रकान्ता चलेश्वरी ॥ 151 ॥
चराऽचरनिवासा च चक्रपाणिसहोदरी।
दकाररूपा दत्तश्री दारिद्र्यच्छेदकारिणी ॥ 152 ॥
दन्तिनी दण्डिनी दीना दरिद्रा दीनवत्सला।
दक्षाराध्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ 153 ॥
दक्षा दाक्षायणी दाक्षा दीक्षादक्षवरप्रदा।
दक्षिणा दक्षिणाराध्या दक्षिणामूर्तिरूपिणी ॥ 154 ॥
दयावती दमवती दनुजादिर्दयानिधिः।
दन्तशोभानिभा दैवदमना दाड़िमस्तनी ॥ 155 ॥
दण्डा दमयता दण्डी दण्डाऽदण्डप्रसादिना।
दण्डकारण्यनिलया दण्डकारिविनाशिनी ॥ 156 ॥
दंष्ट्राकरालप्रवृषी दण्डशोभादलादली।
दरिद्रारिष्टशमनी दमादमनपूजिता ॥ 157 ॥
दानवार्चित पादश्रीर्द्रविणा द्रविणोदया।
दामोदरी दानवारिर्दामोदरसहोदरी ॥ 158 ॥
दाता दानप्रिया दार्वी दानश्रीर्दीनदण्डपा।
दम्पतीदम्पती दूर्वा दधिदुग्धा दया दमा ॥ 159 ॥
दाडिमीबीजसन्दोह दन्तपंक्ति विराजिता।
दर्पणा दर्पणस्वच्छा द्रुममण्डलवासिनी ॥ 160 ॥
दशावतारजननी दशदिग्दीपपूजिता।
दया दशदिशादश्या दशदासी दयानिधिः ॥ 161 ॥
देशकालपरिज्ञाना देशकालविशोधिनी।
दशम्यादिकलाराध्या दशग्रीवप्रदर्पहा ॥ 162 ॥
दशापराधशमनी दशवृत्तिफलप्रदा।
यात्काररूपिणी याज्ञी यादवी यादवार्चिता ॥ 163 ॥

ययातिपूजनप्रीता याज्ञिकी याजकप्रिया।
यादवीयातनायाता यामपूजाफलप्रदा ॥ 164 ॥
यशस्विनी यमाराध्या यमकन्या यतीश्वरी।
यमादियोगसन्तुष्टा योगीन्द्रहृदिसङ्गमा ॥ 165 ॥
यमोपाधिविनिर्मुक्ता यशस्यविधिरच्युता।
यातनाऽयातनादेहा यात्रापापादिवर्जिता ॥ 166 ॥
इत्येतत् कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम्।
सर्वपापप्रशमनं सर्वतीर्थफलप्रदम् ॥ 167 ॥
सर्वरोगहरं पुण्यं सर्वज्ञानमयं शिवम्।
सर्वसिद्धिप्रदं देवि सर्वसौभाग्यवर्द्धनम् ॥ 168 ॥
आयुष्यं वर्द्धते नित्यं लिखितं यत्र तिष्ठति।
न चौराऽग्निभयं यस्य न च भूतभयं क्वचित् ॥ 169 ॥
किं पुनर्वरुणोक्तेन तथाऽपि च वदाम्यहम्।
सकृच्छ्रवणमात्रेण कोटिजन्माऽघनाशनम् ॥ 170 ॥
महापातककोटीनां भञ्जनं स्मृतिमात्रतः।
अपवादक दौर्भाग्य शमनं भुक्ति मुक्तिदम् ॥ 171 ॥
विषरोगादि दारिद्र्य मृत्यु संहारकारणम्।
सप्तकोटि महामन्त्र पारायण फलप्रदम् ॥ 172 ॥
शतरुद्रीयकोटीनां जपं यज्ञफलप्रदम्।
चतुः समुद्रपर्यन्त भूदानं तत्फलं शिवे ॥ 173 ॥
सहस्त्रकोटि गोदान फलदं स्मृतिमात्रतः।
कोट्यश्वमेधफलदं जरा मृत्यु निवारणम् ॥ 174 ॥
कन्याकोटिप्रदानेन यत्फलं लभते नरः।
तत्फलं लभते सम्यङ् नाम्नां दशशती जपात् ॥ 175 ॥
यः शृणोति महाविद्यां श्रावयेद् वा समाहितः।
सोऽपि मुक्तिमवाप्नोति यत्र गत्वा न शोचति ॥ 176 ॥
ब्रह्महत्यादि पापानां नाशः स्याच्छ्रवणेन च।
किं पुनः पठनादस्य मुक्तिः स्यादनपायिनी ॥ 177 ॥
इदं रहस्यं परमं पुण्यं स्वस्त्ययनं महत्।
यः सकृद् वा पठेत् स्तोत्रं शृणुयाद् वा समाहितः ॥ 178 ॥
लभते च ततः कामानन्ते ब्रह्मपदं व्रजेत्।
स च शत्रून् जयेत् सद्यो मातङ्गानिव केसरी ॥ 179 ॥

नोट—पाठोपयोगी अंश होने के कारण ही श्लोकों का हिन्दी अर्थ नहीं दिया गया। इसकी यहां आवश्यकता ही नहीं रह गई थी।

□□

१०

गायत्रीपंजर स्तोत्रम्

इस सृष्टि के विधाता 'ब्रह्मा' हैं, जगत् की सृष्टि करने वाले हैं तथा कमल से जिनकी उत्पत्ति है और जो प्रजाओं के पति हैं। जिनके शरीर का वर्ण शुद्ध स्फटिक के समान स्वच्छ है, जो महेन्द्र शिखर के समान शोभा पा रहे हैं, जिन्होंने अपना पीला जटाजूट बांध रखा है, जिनका कनक-कुण्डल विद्युत के समान चमक रहा है। जिनका मुखमण्डल शरत्कालीन चंद्रमा के समान प्रसन्न है तथा जिनके नेत्र कमल के समान सुशोभित हैं। जो हिरण्यगर्भ हैं, जिनके शरीर पर यज्ञोपवीत तथा अजिन शोभा पा रहा है। मोतियों के जप-माला का वलय (कंकण) जिनके हाथ में सुशोभित है। जो तंत्री (वीणा) लय से संयुक्त हैं। जिनका शरीर कपूर से उपलिप्त है तथा जिनके दर्शन से नेत्रों को आनंद प्राप्त होता है, ऐसे ब्रह्माजी के पास देवर्षि नारद ने जाकर विनयपूर्वक प्रणाम किया और उनसे पूछा—

नारद उवाच:

भगवन् देवदेवेश सर्वज्ञ करुणानिधे।
श्रोतुमिच्छामि प्रश्नेन भोग मोक्षैक साधनम्॥

हे भगवन्! हे देवदेवेश! हे सर्वज्ञ! हे करुणानिधे! हम आपसे पूछना चाहते हैं कि भोग तथा मोक्ष की प्राप्ति का साधन क्या है?

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य फलदं द्वन्द्ववर्जितम्।
ब्रह्महत्यादि पापघ्नं पापाद्यरिभयापहम्॥

मनुष्य समग्र ऐश्वर्य से संपन्न किस प्रकार हो सकता है? ब्रह्महत्या आदि पापों से छुटकारा उसे किस प्रकार मिल सकता है तथा पापरूपी शत्रुओं का नाश करने वाला उपाय क्या है?

यदेकं निष्कलं सूक्ष्मं निरञ्जनमनामयम्।
यत्ते प्रियतमं लोके तन्मे ब्रूहि पितर्मम॥

इस जगत् में निराकार, मायारहित तथा निर्दोष क्या है? तथा आपका सबसे प्रियतम क्या है? हे महाराज! आप उसे मुझे कृपा कर बताइए?

ब्रह्मोवाच:

श्रृणु नारद! वक्ष्यामि ब्रह्ममूलं सनातनम्।
सृष्ट्यादौ मन्मुखे क्षिप्तं देवदेवेन विष्णुना॥

हे नारद! जो सृष्टि का मूल परब्रह्म है, जो सनातन है तथा सृष्टि के आदि में देवाधिदेव श्री विष्णु ने जिसे मेरे मुख में प्रक्षिप्त किया था।

प्रपञ्चबीजमित्याहुरुत्पत्ति स्थिति हेतुकम्।
पुरा मया तु कथितं कश्यपाय सुधीमते॥

जो समस्त प्रपंचभूत इस जगत् का बीज तथा उसकी स्थिति का कारण है और जिसे मैंने पूर्वकाल में कश्यप को उपदेश किया था।

सावित्रीपञ्जरं नाम रहस्यं निगमत्रये।
ऋष्यादिकं च दिग्वर्णं साङ्गावरणकं क्रमात्॥
वाहनाऽऽयुध मन्त्रास्त्रं मूर्ति ध्यान समन्वितम्।
स्तोत्रं श्रृणु प्रवक्ष्यामि तव स्नेहाच्च नारद॥

जो वेदों में सावित्री-पंजर नाम से विख्यात है, जो ऋषि, दिग्वर्ण, सांगावरण, वाहन, आयुध, मंत्र, अस्त्र, मूर्ति तथा ध्यान से युक्त है, उस स्तोत्र को सुनो, क्योंकि तुम मेरे पुत्र हो, इसलिए तुम्हारे ऊपर स्नेह कर मैं कह रहा हूं।

ब्रह्मनिष्ठाय देयं स्याददेयं यस्य कस्यचित्।
आचम्य नियतः पश्चादादत्म ध्यान पुरःसरम्।

यह स्तोत्र ब्रह्मनिष्ठ को ही बताना चाहिए, जिस किसी को नहीं। स्तोत्र-पाठ के पूर्व मनुष्य को स्नान आदि क्रिया के अनन्तर विधिपूर्वक आचमन करना चाहिए, फिर ब्रह्मस्वरूपा गायत्री का ध्यान करना चाहिए।

ओमित्यादौ विचिन्त्याथ व्योम हेमाब्ज संस्थितम्।
धर्मकन्द गतज्ञानमैश्वर्याष्ट दलान्वितम्॥

गायत्री ध्यान का स्वरूप—जो गायत्री प्रणव-स्वरूपा हैं, जो गगन सदृश सुवर्णमय कमल पर विराजमान हैं, जिस कमल का धर्मरूप कन्द है, जिससे ज्ञान की उत्पत्ति है तथा जो गायत्री ऐश्वर्य आदि आठ कलाओं से युक्त हैं।

वैराग्य कर्णिकासीनां प्रणव ग्रहमध्यगाम्।
ब्रह्मवेदिसमायुक्तां चैतन्यपुरमध्यगाम्॥

जो वैराग्यरूपी कमलकर्णिका पर बैठी हुई हैं तथा प्रणव ही जिनका गृह है, जो ब्रह्मरूपी वेदी से संयुक्त हैं तथा चैतन्यरूपी पुर में निवास करने वाली हैं।

तत्त्व हंस समाकीर्णा शब्दपीठे सुसंस्थिताम्।
नाद विन्दु कलातीतां गोपुरैरुपशोभिताम्॥

विद्याऽविद्यामृतत्त्वादि प्रकारैरभिसंवृताम्।
निगमार्गलसञ्छन्नां निर्गुणद्वारवाटिकाम्॥

जो तत्त्वरूपी हंस से घिरी हुई हैं तथा शब्द-पीठ पर विराजमान हैं, नाद, बिंदु तथा कला से परे हैं, जो शब्द ही चैतन्यपुर का गोपुर (प्रधान द्वार) है एवं विद्या, अविद्या, अमृतत्त्वादि रूप प्राकार (चारदीवारी) से जो चैतन्यरूप पुर परिवेष्ठित है, जो वेदरूपी अर्गला से संछन्न हैं तथा जो निर्गुण द्वार वाली वाटिका (बगीचा) रूप हैं।

चतुर्वर्गफलोपेतां महाकल्पवनैर्वृताम्।
सान्द्रानन्द सुधासिन्धु निगमद्वार वाटिकाम्॥
ध्यान धारण योगादि तृण गुल्म लतावृताम्।
सदसच्चित्स्वरूपाख्य मृग पक्षि समाकुलाम्॥

जो धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षरूप चतुर्वर्ग से संयुक्त हैं तथा जो मनुष्य से वांछासिद्धि के लिए महाकल्प वृक्ष रूप वन से आवृत हैं। जो घने आनंद की सुधा-सिंधु हैं, निर्गुण ब्रह्म ही जिसका द्वार है, वैसी वाटिका है, जो ध्यान-धारण योगरूप तृण गुल्मता से आवृत है तथा जिस वाटिका में सत्-असत्-चित् स्वरूप मृग एवं पक्षी विचरण कर रहे हैं।

विद्याऽविद्या विचारत्वाल्लोकाऽलोकाचलावृताम्।
अविकार समाश्लिष्ट निजध्यान गुणावृताम्।
पञ्चीकरण पञ्चोत्थ भूत तत्त्व निवेदिताम्॥

विकार-रहित एवं ध्यानरूपी गुणों से आवृत हैं तथा पंचीकरण (वेदान्त विषय), पंचोत्थ (पंच ज्ञानेन्द्रियों से भासित होने वाला चित्) तथा भूत तत्त्वों से जिसका ज्ञान होता है।

वेदोपनिषदर्थाख्य देवर्षिगण सेविताम्।
इतिहास ग्रह गणैः सदारैरभिवन्दिताम्॥

वेद और उपनिषद्रूपी महर्षिगण जिस निर्गुण वाटिकारूपी सावित्री में निवास करते हैं, इतिहासरूपी ग्रह स्त्री समेत जिसकी वंदना करते हैं।

गाथाप्सरोभिर्यक्षैश्च गण किन्नर सेविताम्।
नाग सिंह पुराणाख्यैः पुरुषैः कल्पचारणैः॥
कृतगान विनोदादि कथालापन तत्पराम्।
तदित्यवाङ्मनोगम्य तेजोरूपधरां पराम्॥

अनेक प्रकार की गाथारूपी अप्सरा, यज्ञ, गण, किन्नर जिसमें निवास करते हैं। पुराणरूपी नृसिंह जिस वाटिका में गरज रहा है, कल्परूपी चारण पुरुष जिसकी स्तुति करते हैं तथा चारणरूपी कल्प पुरुष अनेक प्रकार के विनोद और गाथाओं से

जिसका गान कर रहे हैं, जो परब्रह्मस्वरूपा हैं, वाणी और मन से सर्वथा परे हैं, दिव्य तोजोमय स्वरूप ही जिनका विग्रह है।

जगतः प्रसवित्रीं तां सवितुः सृष्टिकारिणीम्।
वरेण्य मित्यन्नमयीं पुरुषार्थफलप्रदाम्॥
अविद्यावर्णवर्ज्यां च तेजोबद्गर्भसंज्ञिकाम्।
देवस्य सच्चिदानन्द-परब्रह्मरसात्मिकाम्॥
धीमह्य हंस वै तद्वद् ब्रह्माद्वैत-स्वरूपिणीम्।
धियो यो नस्तु सविता प्रचोदयादुपासिताम्॥

इस चराचर जगत् को जन्म देने वाली तथा सविता की भी सृष्टि करने वाली, जगत् के भरण-पोषण के लिए अन्नस्वरूप धारण करने वाली, धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षरूपी चारों पदार्थों के फल को जो देने वाली हैं। जिनमें अविद्या का लेश भी नहीं है, जिनका कोई रूप नहीं है, जो सर्वदा तेजोरूपेण विराजमान हैं, सच्चिदानंद रूप देवता की जो परब्रह्मरूप रसस्वरूप हैं। ब्रह्म के उस अद्वैतस्वरूपिणी भगवती सावित्री का मैं ध्यान करता हूं। वह सविता देवता मेरे द्वारा उपासित होकर हमारी बुद्धि को अच्छे कार्य में प्रेरित करें।

परोऽसौ सविता साक्षादनो निर्हरणाय च।
परो रजस इत्यादि परं ब्रह्मसनातनम्॥

पाप को दूर करने के लिए जो साक्षात् सविता-स्वरूपा हैं तथा रजोगुण से परे जो सनातन परब्रह्मस्वरूप हैं।

आपो ज्योतिरिति द्वाभ्यां पाञ्चभौतिकसंज्ञकम्।
रसोऽमृतं ब्रह्मपदैस्तां नित्यां तपिनीं पराम्॥

'आपो', 'ज्योति' इन दो रूपों से इस जगत् के मूल पांच भौतिक शरीर से विराजमान हैं तथा अमृतरसरूपी अपनी किरणों से नित्य सूर्यरूपा हैं।

भूर्भुवः सुवरित्येतैर्निगमत्व प्रकाशिकाम्।
महर्जनस्तपः सत्य लोकोपरि सुसंस्थिताम्॥

जो 'भूर्भुवः स्वः' इन तीनों पदों से समस्त पदार्थ को प्रकाशित करने वाली हैं तथा मह, जन, तप तथा सत्यलोक से ऊपर विराजमान हैं।

तादृगस्या विराड्रूप किरीट वरराजिताम्।
व्योमकेशालकाकाश रहस्यं प्रवदाम्यहम्॥

सुंदर किरीट से सुशोभित होकर जो इस जगत् में विराट्रूप से विराज रही हैं। आकाशरूपी केशों वाली उस व्योमकेशा भगवती का मैं रहस्य कह रहा हूं।

मेघ भृकुटिकाक्रान्त विधि विष्णु शिवार्चिताम्।
गुरु भार्गव कर्णान्तां सोम सूर्याऽग्नि लोचनाम्॥

मेघ ही जिनकी सुंदरी भृकुटि हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव जिनकी सदैव अर्चना करते हैं। गुरु (बृहस्पति) तथा शुक्र जिस विराट्-स्वरूपा भगवती के कान हैं। चंद्रमा तथा सूर्य जिनके दो नेत्र हैं।

इला पिङ्गल सूक्ष्माभ्यां वायु नासापुटान्विताम्।
सन्ध्या द्विरोष्ठ पुटितां लसद् वाग् भूप जिह्विकाम्॥
सन्ध्यांसौ द्युमणे कण्ठ लसद् बाहु समन्विताम्।
पर्जन्य हृदयासक्त वसु सुस्तन मण्डलाम्॥
आकाशोदर चित्रस्त नाभ्यवान्तर देशकाम्।
प्राजापत्याख्य जघनां कटीन्द्राणीति संज्ञिकाम्॥
ऊरू मलय मेरुभ्यां शोभमानाऽसुरद्विषम्।
जानुनी जह्नुकुशिक वैश्वदेव सदाभुजाम्॥

वायुग्रहण के लिए सूक्ष्म इडा तथा पिंगला ही जिनके ये दो नासिका के छिद्र हैं, दोनों संध्याएं ही जिस विराट् भगवती के दो होंठ हैं, शोभना वाणी ही जिनकी जिह्वा है। दो संध्या ही जिनके स्कंधदेश हैं, द्युमणि-सूर्य जिनके कंठ हैं, पर्जन्य ही जिनका हृदय है, वसु ही जिनके मनोहर स्तन हैं। आकाश ही जिनका नाभि से अवान्तर देश तक व्याप्त उदर है, जिनके प्रजापति ही जघन हैं तथा समस्त इंद्रियां ही जिनके कटिप्रदेश हैं। मलय तथा मेरु ही उरु हैं, असुर ही जिनके शत्रु हैं, जह्नु तथा कुशिक जिनके जानु हैं, वैश्वदेव ही जिनकी भुजाएं हैं।

अयनद्वय जङ्घाय खुराद्य पितृ संज्ञिकाम्।
पदाङ्घ्रि नख रोमाद्य भूतलद्रुम लाञ्छिताम्॥

दोनों अयन ही जिनके जंघे हैं तथा देवता और पितर ही जिनके दो चरण हैं, पृथ्वी के समस्त वृक्ष ही जिनके नख तथा रोम हैं।

ग्रह राश्यृक्ष देवर्षि मूर्तिं च परसंज्ञिकाम्।
तिथि मासर्तु वर्षाख्य सुकेतु निमिषात्मिकाम्॥
अहोरात्रार्द्ध मासाख्यां सूर्याचन्द्रमसात्मिकाम्।
माया कल्पित वैचित्र्यसन्ध्याच्छादन संवृताम्॥
ज्वलत् कालानल प्रख्यां तडित्कोटि समप्रभाम्।
कोटिसूर्य प्रतीकाशां चन्द्रकोटि सुशीतलाम्।
सुधामण्डल मध्यस्थां सान्द्रानन्दाऽमृतात्मिकाम्।
प्रागतीतां मनोरम्यां वरदां वेदमातरम्।
चराऽचरमयीं नित्यां ब्रह्माक्षर समन्विताम्।
ध्यात्वा स्वात्मनि भेदेन ब्रह्मपञ्जरमारभेत्॥

कालरूपा भगवती का वर्णन—जिस परब्रह्मस्वरूपिणी भगवती की ग्रह,

राशि, नक्षत्र तथा देवर्षि मूर्तियां हैं; तिथि, मास, ऋतु और वर्ष तथा निमिष ही जिनके ध्वज हैं। दिन, रात तथा पक्ष ही जिनका नाम है। सूर्य तथा चंद्रमा ही जिनकी आत्मा है। माया-कल्पित विचित्रता से युक्त संध्या ही जिनका आच्छादन (वस्त्र) है। जो जलते हुए कालाग्नि के समान भयंकर हैं तथा करोड़ों विद्युत के समान देदीप्यमान जिनके शरीर की कांति है। करोड़ों सूर्य के समान जो तेजस्वी हैं तथा करोड़ों चंद्रमा के समान जो सुशीतल हैं। जो सुधा-मण्डल के मध्य में निवास करने वाली हैं तथा घने आनंद से समुद्र के समान हैं। सृष्टि के प्राक्काल से ही जो विद्यमान हैं, जो मन को आनंद देने वाली हैं; मनुष्यों को वर देने वाली तथा साक्षात् वेदों की माता हैं। चर-अचर जगत् ही जिनका स्वरूप है, जो नित्य तथा अक्षर हैं। इस प्रकार भगवती के विराट् तथा कलात्मकरूप का ध्यान कर, तत्पश्चात् ब्रह्मपंजर स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

पञ्जरस्य ऋषिश्चाऽहं छन्दो विकृतिरुच्यते।
देवता च परो हंसः परब्रह्माऽधिदेवता॥

फिर ब्रह्मा ने कहा—हे नारद! सुनो, विष्णुपंजर स्तोत्र का ऋषि मैं हूं, विकृति ही इसका छंद है, परब्रह्म ही इसका अधिदेवता तथा हंस ही इसका देवता है।

प्रणवो बीजशक्तिः स्यादों कीलकमुदाहृतम्।
तत्तत्त्वं धीमहि क्षेत्रं धियोऽस्त्रं यः परं पदम्॥
मन्त्रमापो ज्योतिरिति योनिर्हंसः सबन्धकम्।
विनियोगस्तु सिद्ध्यर्थं पुरुषार्थचतुष्टये॥

प्रणव बीज शक्ति है तथा, 'ॐ' इसका कीलक है। 'तत्' तत्त्व है, 'धीमहि' क्षेत्र है, 'धियः' अस्त्र है, 'यः' पद है, 'आपो ज्योति' मंत्र है, 'हंसः' योनि है, पुरुषार्थ-चतुष्टय की सिद्धि ही गायत्रीपंजर पाठ का विनियोग है।

ततस्तैरङ्गषट्कं स्यात्तैरेव व्यापकत्रयम्।
पूर्वोक्तदेवतां ध्यायेत् साकारगुणसंयुताम्॥

तदनन्तर अंगन्यास तथा करन्यास करें। इसके पश्चात् व्यापकादि तीन मुद्रा प्रदर्शित कर, आकार और गुण का स्मरण करते हुए भगवती गायत्री का ध्यान करें।

पञ्चवक्त्रां दशभुजां त्रिपञ्च नयनैर्युताम्।
मुक्ता विद्रुम सौवर्णां सित शुभ्र समाननाम्॥

गायत्री-ध्यान—जिस भगवती गायत्री के पांच मुख तथा दस भुजा हैं, पन्द्रह नेत्र हैं। जिनके पांचों मुख क्रमशः मोती, मूंगा, सुवर्ण, स्वच्छ तथा शुभ्र हैं।

वाणी परां रमां मायां चामरैर्दर्पणैर्युताम्।
षडङ्गदेवतामन्त्रै रूपाद्यवयवात्मिकाम्॥

सरस्वती, रमा, माया तथा चामर और दर्पण से संयुक्त हैं। षडंग, देवता तथा मंत्रों से जिनके रूप आदि अवयव ज्ञात होते हैं।

मृगेन्द्र वृषपक्षीन्द्र मृगहंसासने स्थिताम्।
अर्द्धेन्दुबद्ध मुकुट किरीट मणि कुण्डलाम्॥
रत्नताटङ्क माङ्गल्य परग्रैवेय नूपुराम्।
अङ्गुलीयक केयूर कङ्कणाद्यैरलङ्कृताम्॥

जो दुर्गा रूप-से सिंह पर, माहेश्वरी रूप-से बैल पर, वैष्णवी रूप-से गरुड़ पर तथा ब्रह्माणी रूप-से हंस-आसन पर विराज रही हैं। अर्द्ध चंद्र से संयुक्त जिनका मुकुट एवं किरीट है तथा जिनका कुण्डल मणि से संयुक्त है। जो रत्नजटित ताटंक (कान का बाला) तथा सौभाग्ययुक्त ग्रैवेयक (हार, कंठा), नूपुर (पैर का आभूषण,) अंगूठी, केयूर (बाजूबंद, बिजायठ) तथा कंकणादि अलंकारों से अलंकृत हैं।

दिव्यस्त्रग् वस्त्र सञ्छन्न रविमण्डल-मध्यगाम्।
वराऽभयाऽब्ज युगलां शङ्ख चक्र गदाऽङ्कुशान्॥
शुभ्रं कपालं दधतीं वहन्तीमक्षमालिकाम्।
गायत्रीं वरदां देवीं वेत्रीं वेदमातरम्॥

अनेक सुंदर माला तथा वस्त्र से विभूषित होकर आदित्य-मण्डल में निवास करने वाली हैं। वर, अभय, कमल का जोड़ा, शंख, चक्र, गदा, अंकुश, शुभ्र, कपाल तथा जपमाला जिनके हाथों में सुशोभित हो रहे हैं। ऐसी वर देने वाली तथा बुद्धि को प्रदान करने वाली भगवती वेदमाता गायत्री का स्मरण करना चाहिए।

आदित्यपथगामिन्यां स्मरेद् ब्रह्मस्वरूपिणीम्।
विचित्र मन्त्रजननीं स्मरेद् विद्यां सरर्स्वतीम्॥

आदित्यपथ से चलने वाली, विचित्र मंत्रों को जन्म देने वाली परब्रह्मस्वरूपा भगवती सरस्वती का ध्यान करना चाहिए।

त्रिपदा ऋङ्मयी पूर्वामुखी ब्रह्मास्त्रसंज्ञिका।
चतुर्विंशतितत्त्वाख्या पातु प्राचीं दिशं मम॥
चतुष्पाद यजुर्ब्रह्मदण्डाख्या पातु दक्षिणाम्।
षट्त्रिंशत्तत्त्वयुक्ता सा पातु मे दक्षिणां दिशम्॥

पूर्वाभिमुखी त्रिपाद ऋचा से संयुक्त, ऋग्वेद-स्वरूपा, चौबीस तत्त्वों से भरी हुई ब्रह्मास्त्रसंज्ञिका भगवती पूर्व दिशा में हमारी रक्षा करे। चार पाद वाली, दक्षिणाभिमुखी, यजुर्वेदस्वरूपा, छत्तीस तत्त्वों से युक्त, ब्रह्मदण्डसंज्ञिका भगवती दक्षिण दिशा में हमारी रक्षा करें।

प्रत्यङ्मुखी पञ्चपदी पञ्चाशत्तत्वरूपिणी।
पातु प्रतीचीमनिशं सामब्रह्मशिरोऽङ्किता॥

सौम्या ब्रह्मस्वरूपाख्या साथर्वाङ्गिरसात्मिकाम्।
उदीचीं षट्पदा पातु चतुष्वष्टि कलात्मिका॥

पांच पाद वाली, पश्चिमाभिमुख, पचास तत्त्वात्मिका, सामस्वरूपा, ब्रह्मशिरसंज्ञिका भगवती पश्चिम दिशा में हमारी रक्षा करें। छह पाद वाली, अत्यंत सुंदर, चौंसठ कला से संयुक्त, अथर्वागिरस्वरूपा, उत्तराभिमुखी, ब्रह्मस्वरूप-संज्ञिका, भगवती उत्तर दिशा में हमारी रक्षा करें।

पञ्चाशत्तत्त्वरचिता भवपादा शताक्षरी।
व्योमाख्या पातु मे चोर्ध्वां दिशं वेदाङ्गसंस्थिता॥

ग्यारह पैर वाली, पचास तत्त्वों वाली, शताक्षरी, जिनका निवास वेदांगों में है, वह कामाख्या भगवती ऊपर हमारी रक्षा करे।

विद्युन्निभा ब्रह्मसंज्ञा मृगारूढा चतुर्भुजा।
चापेषु चर्माऽसिधरा पातु मे पावकीं दिशम्॥

मृग के ऊपर सवार होने वाली, चतुर्भुजा, विद्युत के समान देदीप्यमान, धनुष, बाण, ढाल तथा तलवार को धारण करने वाली, ब्रह्मसंज्ञिका भगवती आग्नेयकोण में हमारी रक्षा करे।

ब्राह्मी कुमारी गायत्री रक्ताङ्गी हंसवाहिनी।
बिभ्रत्कमण्डल्वक्ष स्त्रक्स्त्रुवान् मे पातु नैर्ऋतीम्॥

हंस के ऊपर सवारी करने वाली, रक्तवर्ण वाली, कमण्डलु, अक्षमाला, स्त्रक तथा स्त्रुवा को धारण करने वाली, कुमारावस्था से संयुक्त, ब्रह्मशक्तिस्वरूपा भगवती गायत्री नैर्ऋत्य दिशा में हमारी रक्षा करें।

चतुर्भुजा वेदमाता शुक्लाङ्गी वृषवाहिनी।
वराभय कपालाक्ष स्त्रग्विणी पातु वारुणीम्॥
श्यामा सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडासना।
शङ्खाराब्जाभयकरा पातु शैवीं दिशं मम॥

शुक्लवर्ण वाली, बैल के ऊपर सवार रहने वाली, वर, अभय, कपाल, अक्षमाला को धारण करने वाली, चतुर्भुजा, भगवती वेदमाता पश्चिम दिशा में हमारी रक्षा करें। श्यामा, सरस्वती, शक्तियों में श्रेष्ठ, गरुड़ासन पर विराजमान, शंख, असि, अब्ज तथा अभय को धारण करने वाली, वैष्णवी शक्ति ईशान कोण में हमारी रक्षा करे।

चतुर्भुजा वेदमाता गौराङ्गी सिंहवाहना।
वराऽभयाब्ज युगलैर्भुजैः पात्वधरां दिशम्॥

गौरवर्ण वाली, सिंहवाहनी, चार भुजाओं से संयुक्त वेदमाता, जिनके हाथों में वर, अभय तथा कमल के जोड़े हैं, वे भगवती नीचे हमारी रक्षा करें।

तत्तत्पार्श्वस्थिताः स्व-स्ववाहनायुध भूषणाः।
स्व-स्वदिक्षु स्थिताः पान्तु ग्रहशक्त्तयङ्गदेवताः॥

अपने-अपने दिशाओं में स्वामिनी रूप से विराजमान, ग्रहों की शक्तियां, अपने प्रत्यधिदेवता सहित, अपने-अपने वाहन, आयुध तथा भूषणों से सुसज्जित होकर उन-उन दिशाओं में हमारी रक्षा करें।

मन्त्राधिदेवतारूपा मुद्राधिष्ठानदेवताः।
व्यापकत्वेन पात्वस्मानापहृत्तलमस्तकम्॥

मंत्रों के प्रत्यधिदेवतारूप तथा मुद्रा के अधिष्ठान देवता, अपने व्यापक रूप-से पैर के तलवे से लेकर मस्तक पर्यन्त हमारी रक्षा करें।

तत्पदं मे शिरः पातु भालं मे सवितुः पदम्।
वरेण्यं मे दृशौ पातु श्रुती भर्गः सदा मम॥

'तत्' पद हमारे शिर की रक्षा करे, 'सवितुः' पद भाल (मस्तक) की, 'वरेण्यम्' मेरे नेत्रों की तथा 'भर्गः' पद हमारे कानों की रक्षा करे।

घ्राणं देवस्य मे पातु-पातु धीमहि मे मुखम्।
जिह्वां मम धियः पान्तु कण्ठं मे पातु यः पदम्॥

'देवस्य' मेरी नासिका की, 'धीमहि' मेरे मुख की, 'धियः' पद मेरी जीभ की तथा, 'यः' पद हमारे कंठ की रक्षा करे।

नः पदं पातु मे स्कन्धौ भुजौ पातु प्रचोदयात्।
करौ मे च परः पातु पादौ मे रजसेऽवतु॥

'नः' पद कंधों की तथा 'प्रचोदयात्' पद हमारी भुजाओं की रक्षा करे, 'परः' पद हमारे हाथों की तथा 'रजसे' हमारे पैरों की रक्षा करे।

असौ मे हृदयं पातु मम मध्यमादाऽवतु।

असौ मे हृदयं पातु मम मध्यमदाऽवतु।
ओं मे नाभिं सदा पातु कटिं मे पातु मे सदा।
ओमापः सक्थिनी पातु गुह्यं ज्योतिः सदा मम॥

'असौ' हमारे हृदय की तथा 'अदा' हमारे हृदय-मध्य और, 'ॐ' हमारे नाभि की तथा 'मे' पद हमारी कटि (कमर) की रक्षा करे। 'ॐ आपः' पद सक्थिनी (घुटनों) की तथा 'ज्योतिः' हमारे गुप्त-स्थानों की रक्षा करे।

ऊरू मम रसः पातु जानुनी अमृतं मम।
जङ्घे ब्रह्मपदं पातु गुल्फौ भूः पातु मे सदा॥

'रसः' हमारे उरु की तथा 'अमृतं' जानु की, 'ब्रह्मपद' जंघों की तथा, 'भू' पद हमारे गुल्फ-प्रदेश की रक्षा करे।

पादौ मम भुवः पातु सुवः पात्वखिलं वपुः।
रोमाणि मे महः पातु रोमकं पातु मे जनः॥

'भुवः' पैरों की तथा, 'स्वः' संपूर्ण शरीर की रक्षा करे, 'महः' हमारे रोम की तथा, 'जनः' हमारे अन्य केशों की रक्षा करे।

प्राणांश्च धातुतत्त्वानि तदीशः पातु मे तपः।
सत्यं पातु मयायूंषि [1]हंसौ बुद्धिं च पातु मे॥

'तपः' प्राण, मुख, धातु तथा जीव की रक्षा करे, 'सत्यं' हमारे आयु की तथा, 'हंसः' हमारी बुद्धि की रक्षा करे।

शुचिषत् पातु मे शक्रं वसुः पातु श्रियं मम।
मतिं पात्वन्तरिक्षसद्धोता दानं च पातु मे॥

'शुचिषत्' हमारे शुक्र की, 'वसु' हमारी श्री की, 'अंतरिक्ष' हमारी मति की तथा 'होता' हमारे दांत की रक्षा करे।

वेदिषत् पातु मे विद्यामतिथिः पातु मे गृहम्।
धर्मं दुरोणसत्पातु नृषत्पातु सुतान् मम॥

'वेदिषत्' हमारी विद्या की तथा 'अतिथि' हमारे घर की, 'दुरोणसत्' धर्म की तथा 'नृषत्' हमारे पुत्रों की रक्षा करे।

वरसत्पातु मे भार्यामृतसत्पातु मे सुतान्।
व्योमसत् पातु मे बन्धून् भ्रातृनब्जाश्च पातु मे॥

'वरसत्' हमारी भार्या की तथा 'ऋतसत्' बालकों की, 'व्योमसत्' बंधुओं की तथा 'अब्जा' हमारे समस्त भाई-बहनों की रक्षा करे।

पशून् मे पातु गोजाश्च ऋतजाः पातु मे भवम्।
सर्वं मे अद्रिजाः पातु यानं मे पात्वृतं सदा॥

'गोजा' हमारे पशुओं की, 'ऋतजा' हमारे जन्म की, 'अद्रिजा' हमारे सब कुछ की तथा, 'ऋतु' हमारे यान (सवारी) की रक्षा करे।

अनुक्तमथ यत् स्थानं शरीरेऽन्तर्बहिश्च यत्।
तत्सर्वं पातु मे नित्यं हंसः सोऽहमहर्निशम्॥

इस शरीर की रक्षा के लिए जिन स्थानों के बारे में नहीं कहा गया है तथा जो स्थान शरीर के भीतर और बाहर हैं, जिन्हें इस कवच (स्तोत्र) में नहीं कहा है, उन सभी स्थानों की, 'हंस', 'सोऽहम्' यह दोनों पद रक्षा करें।

इदं कथितं सम्यङ् तु मया ते ब्रह्मपञ्जरम्।
सन्ध्ययोः प्रत्यहं भक्त्या जपकाले विशेषतः॥

---

1. *ॐ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।*
नृषद्वरसहतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा आर्द्रजा ऋतंवहत॥

धारयेद् द्विजवर्यो यः श्रावयेद् वा समाहितः।
स विष्णुः स शिवः सोऽहं सोऽक्षरः स विराट् स्वराट॥

ब्रह्माजी ने नारद से कहा—यह 'ब्रह्मपंजर' नामक स्तोत्र मैंने तुमसे कहा। जो ब्राह्मण भक्तिपूर्वक दोनों संध्या के जपकाल में इसका सावधानी से पाठ करते हैं अथवा किसी को सुनाते हैं, वे विष्णु, शिव, साक्षात् परब्रह्म, अक्षर तथा स्वयं विराट् रूप बन जाते हैं।

शताक्षरात्मकं देव्या नामाऽष्टाविंशतिः शतम्।
शृणु वक्ष्यामि तत्सर्वमतिगुह्यं सनातनम्॥

ब्रह्माजी के सौ नाम तथा देवी के अट्ठाईस नाम कुल एक सौ अट्ठाईस नाम हैं, जो अत्यंत गुह्य तथा सनातन हैं। हे नारद! मैं तुमसे कहता हूं, तुम उसे सुनो।

भूतिदा भुवना वाणी वसुधा सुमना मही।
हरिणी जननी नन्दा सविसर्गा तपस्विनी॥
पयस्विनी सती त्यागा चैन्दवी सत्यवी रसा।
विश्वा तुर्या परा रेच्या निर्घृणी यमिनी भवा॥
गोवेद्या च जरिष्ठा च स्कन्दिनी धीर्मतिर्हिमा।
भीषणा योगिनी पक्षी नदी प्रज्ञा च चोदिनी॥
धनिनी यामिनी पद्मा रोहिणी रमणी ऋषिः।
सेनामुखी सामयी च बकुला दोषवर्जिता॥
सर्वकामदुधा सोमोद्भवाऽहङ्कार वर्जिता।
द्विपदा च चतुष्पादा त्रिपदा चैव षट्पदा॥

भगवती के नाम इस प्रकार हैं—भूतिदा, भुवना, वाणी, वसुधा, सुमना, मही, हरिणी, जननी, नन्दा, सविसर्गा, तपस्विनी, पयस्विनी, सती, त्यागा, ऐन्दवी, सत्यवी, रसा, विश्वा, तुर्या, परा, रेच्या, निर्घनी, यामिनी, भवा, गो, वेद्या, जरिष्ठा, स्कंदिनी, धी, मति, हिमा, भीषणा, योगिनी, पक्षी, नदी, प्रज्ञा, चोदिनी, धनिनी, पद्मा, रोहिणी, रमणी, ऋषि, सेनामुखी, सामयी, बकुला, दोषवर्जिता, सर्वकामदुधा, सोमोद्भवा, अहंकारवर्जिता, द्विपदा, चतुष्पदा, त्रिपदा, षट्पदा।

अष्टापदी नवपदी सा सहस्त्राक्षरात्मिका।
इदं यः परम् गुह्यं सावित्रीमन्त्रपञ्जरम्॥
नामाष्टविंशतिशतं शृणुयाच्छ्रावयेत् पठेत्।
मर्त्यानाममृतत्त्वाय भीतानामभयाय च॥

अष्टापदी, नवपदी, सहस्राक्षरात्मिका। इस एक सौ अट्ठाईस नामों से युक्त सावित्री मंत्र पंजर को मरने वालों को अमर बनाने के लिए, डरे हुए को भयरहित करने के लिए सुनना-सुनाना तथा पढ़ना चाहिए।

मोक्षाय च मुमुक्षूणां श्रीकामानां श्रिये सदा।
विजयाय युयुत्सूनां व्याधितानामरोगकृत्॥

मुमुक्षुओं के मोक्ष के लिए, लक्ष्मी चाहने वालों को लक्ष्मी प्राप्ति के लिए, युद्ध में वीरों के विजय के लिए, व्याधिग्रस्तों को व्याधि से छुटकारा पाने के लिए, इस मंत्र को सुनना-सुनाना तथा पढ़ना चाहिए।

वश्याय वश्यकामानां विद्यायै वेदकामिनाम्।
द्रविणाय दरिद्राणां पापिनां पापशान्तये॥
वादिनां वादिविजये कवीनां कविताप्रदम्।
अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गाय नाकमिच्छताम्॥

वश में करने के लिए, विद्या चाहने वालों को विद्या-प्राप्ति के लिए, दरिद्रों को द्रव्य-प्राप्ति के लिए, पापियों को पापशांति के लिए सुनना-सुनाना तथा पढ़ना चाहिए। शास्त्रार्थी को शास्त्रार्थ में विजय के लिए, कवियों को कविता-प्राप्ति के लिए, भूखों को भोजन पाने के लिए, स्वर्गार्थी को स्वर्ग-प्राप्ति के लिए सुनना-सुनाना तथा पढ़ना चाहिए।

पशुभ्यः पशुकामानां पुत्रेभ्यः पुत्रकांक्षिणाम्।
क्लेशिनां शोकशान्त्यर्थं नृणां शत्रुभयाय च॥

पशु चाहने वालों को पशु-प्राप्ति के लिए, पुत्र चाहने वालों को पुत्र-प्राप्ति के लिए, दुःखियों को अपने दुःख को दूर करने के लिए तथा शत्रुओं को भय उत्पन्न करने के लिए पढ़ना, सुनना-सुनाना चाहिए।

राजवश्याय द्रष्टव्यं पञ्जरं नृपसेविनाम्।
भक्तयर्थं विष्णुभक्तानां विष्णौ सर्वान्तरात्मनि॥

राजसेवकों को राजा को वश में करने के लिए, विष्णु-भक्तों को सर्वान्तर्यामी विष्णु में भक्ति की प्राप्ति के लिए इस सावित्री-पंजर का पाठ, श्रवण तथा श्रावण कराना चाहिए।

नायकं विधिसृष्टानां शान्तये भवति ध्रुवम्।
निःस्पृहाणां नृणां मुक्तिः शाश्वती भवति ध्रुवम्॥
जप्यं त्रिवर्गसंयुक्तं गृहस्थेन विशेषतः।
मुनीनां ज्ञानसिद्ध्यर्थं यतीनां मोक्षसिद्धये॥

गृहस्थजनों के लिए यह स्तोत्र शांतिकारक तथा काम-क्रोधादि से निःस्पृह मुनियों को निश्चय ही मुक्ति देने वाला है। विशेषकर गृहस्थों को त्रिवर्ग-प्राप्ति के लिए इसका जप करना चाहिए। इस स्तोत्र का पाठ करने से यतियों-संन्यासियों को मोक्ष तथा मुनियों को ज्ञान की प्राप्ति होती है।

उद्यन्तं चन्द्रकिरणमुपस्थाय कृताञ्जलिः।
कानने वा स्वभवने तिष्ठञ्छुद्धो जपेदिदम्॥
सर्वान् कामानवाप्नोति तथैव शिवसन्निधौ।
मम प्रीतिकरं दिव्यं विष्णुभक्ति विवर्द्धनम्॥

चंद्रमा की किरण का उदय होने पर भगवती सावित्री का उपस्थान कर हाथों को जोड़कर अपने घर अथवा जंगल या शिवमंदिर में शुद्ध होकर इस 'सावित्री-पंजर' का पाठ करना चाहिए। इससे मनुष्य के संपूर्ण मनोकामनाओं की सिद्धि होती है। इस स्तोत्र में मैं (ब्रह्मा) तथा विष्णु दोनों ही प्रसन्न होते हैं।

ज्वरार्तानां कुशाग्रेण मार्जयेत् कुष्ठरोगिणाम्।
अङ्गमङ्गं यथालिङ्गं कवचेन तु साधकः॥
मण्डलेन विशुध्येत सर्वरोगैर्न संशयः।
मृतप्रजा च या नारी जन्मबन्ध्या तथैव च॥

साधक इस कवच से कोढ़ी तथा ज्वरार्त के अंग-प्रत्यंग पर कुशा द्वारा यदि मार्जन करे, तो निश्चय ही रोगी को रोग से छुटकारा मिल जाता है, इसमें संशय नहीं है। जिस स्त्री का लड़का होकर मर जाता है अथवा जो जन्म से ही बंध्या (बांझ) है।

कन्यादि बन्ध्या या नारी तासामङ्गं प्रमार्जयेत्।
पुत्रा न रोगिणस्तास्तु लभन्ते दीर्घजीविनः॥

केवल कन्या को ही जन्म देने वाली जो स्त्रियां हैं, उन स्त्रियों को, जिनके पुत्र दीर्घजीवी नहीं हैं, उन्हें इस मंत्र से मार्जन करने पर दीर्घजीवी पुत्र होते हैं।

तास्ताः संवत्सरादर्वाग् गर्भं तु दधिरे पुनः।
पति विद्वेषिणी या स्त्री अङ्गं तस्याः प्रमार्जयेत्॥
तमेव भजते सा स्त्री पतिं कामवशं भवेत्।
अश्वत्थे राजवश्यार्थं बिल्वमूले स्वरूपभाक्॥

काकबंध्यादि सभी प्रकार की स्त्रियां इस कवच से मार्जन करने पर एक वर्ष के भीतर ही गर्भ धारण कर, दीर्घजीवी पुत्र को जन्म देती हैं। जिस स्त्री का पति अपनी स्त्री से द्वेष (प्रेमालाप नहीं) करता है, उस स्त्री को इस मंत्र से अंग-प्रत्यंग के मार्जन करने से पति कामवश हो जाता है तथा कामातुर होकर अपनी स्त्री से प्रेम करने लग जाता है। राजा को वश में करने के लिए पीपल के वृक्ष के नीचे तथा रूप-प्राप्ति के लिए बिल्व-वृक्ष के नीचे।

पालाशमूले विद्यार्थी तेजसाभिमुखो रवौ।
कन्यार्थी चण्डिकागेहे जपेच्छत्रुभयाय च॥

विद्या-प्राप्ति के लिए पलाश के नीचे तथा तेज की प्राप्ति के लिए सूर्य के सम्मुख, कन्या की प्राप्ति तथा शत्रु को भय उत्पन्न करने के लिए काली के मंदिर में इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

श्रीकामो विष्णुगेहे च उद्याने श्रीर्वशी भवेत्।
आरोग्यार्थे स्वगेहे च मोक्षार्थी शैलमस्तके॥

लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए विष्णु-मंदिर में, शोभा-प्राप्ति के लिए उद्यान में, आरोग्य के लिए अपने घर में तथा मोक्ष-प्राप्ति के लिए पर्वत के ऊपर उस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

सर्वकामो विष्णुगेहे मोक्षार्थी यत्र कुत्रचित्।
जपारम्भे तु हृदयं जपान्ते कवचं पठेत्॥

संपूर्ण कामनाओं की प्राप्ति के लिए विष्णु-मंदिर में, मोक्षार्थी जहां कहीं भी इस स्तोत्र का पाठ कर सकता है। साधक जप के आरंभ में गायत्री-हृदय तथा जप के अंत में गायत्री-कवच का पाठ करे।

किमत्र बहुनोक्तेन शृणु नारद तत्त्वतः।
यं यं चिन्तयते नित्यं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥

हे नारद! बहुत कहने का क्या? सत्य पूछो तो, मनुष्य जिन-जिन कामनाओं को करता है, वह सब इस 'गायत्री-पंजर स्तोत्र' के पाठ से प्राप्त करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

❑❑

११

श्रीगायत्री कवचम्

आदि महर्षियों को इस परिस्थिति का स्पष्ट आभास था कि आगे चलकर मानव की प्रकृति मलिन, अस्थिर और संशयशील हो जाएगी, सामाजिक नियमों के प्रति आस्था डिग जाएगी और भौतिक-जीवन की जटिलता उसे साधना पथ पर अग्रसर नहीं होने देगी। इसलिए उन्होंने अनेक समस्याओं के समाधान हेतु कवच आदि को साधना का सहजसाध्य और सर्वकालिक सिद्धिप्रद उपाय घोषित कर दिया था। यही कारण है कि गायत्री की साधना/ उपासना तब भी महत्त्वपूर्ण थी और आज भी उसका महत्त्व-प्रभाव अक्षुण्ण है। गायत्री का कवच गायत्री साधना का महत्त्वपूर्ण अंग है।

याज्ञवल्क्य उवाच :

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ संशयोऽस्ति महान् मम।
चतुष्षष्टि कलानां च पातकानां च तद्वद्॥
मुच्यते केन पुण्येन ब्रह्मरूपं कथं भवेत्।
देहश्च देवतारूपं मन्त्ररूपं विशेषतः॥
क्रमतः श्रोतुमिच्छामि कवचं विधिपूर्वकम्॥

याज्ञवल्क्य ने कहा—हे ब्रह्मन! हे संपूर्ण चराचर विश्व के स्वामी महाब्रह्मन! मुझे एक बहुत बड़ा संशय है कि चौंसठ कलाओं की प्राप्ति तथा संपूर्ण पापों से मुक्ति किस पुण्य के प्रभाव से प्राप्त होती है तथा किस पुण्य के प्रभाव से मनुष्य को ब्रह्मस्वरूप की प्राप्ति होती है और वह कौन-सा कवच है, जिसका विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्य देह, देवता तथा मंत्र स्वरूप हो जाता है? उस कवच को मैं सुनना चाहता हूं।

ब्रह्मा उवाच :

गायत्र्याः कवचस्याऽस्य ब्रह्मा विष्णुः शिवो ऋषिः॥
ऋक्यजुः सामाऽथर्वाणि छन्दांसि परिकीर्त्तिताः।
परब्रह्मस्वरूपा सा गायत्री देवता स्मृता॥

ब्रह्मा ने कहा—इस गायत्री कवच के ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ऋषि हैं। ऋग्, यजुः, साम तथा अथर्व छंद हैं, परब्रह्मस्वरूपा गायत्री ही देवता हैं।

रक्षाहीनं तु यत् स्थानं कवचेन विना कृतम्।
सर्वं सर्वत्र संरक्षेत् सर्वाङ्गं भुवनेश्वरी॥

कवच में जो स्थान रक्षा के लिए नहीं कहे गए हैं, उन सभी स्थानों की रक्षा भुवनेश्वरी देवी करें, क्योंकि वे भुवनेश्वरी हैं और कोई भी स्थान भुवन से बाहर नहीं है।

बीजं भर्गश्च शक्तिश्च धियः कीलकमेव च।
पुरुषार्थ विनियोगो यो नश्च परिकीर्तितः॥

इस गायत्री कवच का 'भर्गः' बीज है, 'धियः' शक्ति है तथा 'यो नः प्रचोदयात्' यह कीलक है। चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति के लिए इसे पढ़ना चाहिए, यही विनियोग है।

ऋषिं मूर्ध्नि न्यसेत् पूर्वं मुखे छन्द उदीरितम्।
देवता हृदि विन्यस्य गुह्ये बीजं नियोजयेत्॥
शक्तिं पदोऽस्तु विन्यस्य नाभौ तु कीलकं न्यसेत्।
द्वात्रिंशत्तु महाविद्याः साङ्ख्यायनस गोत्रजाः॥
द्वादशलक्ष संयुक्ता विनियोगः पृथक्-पृथक्।

'ऋषिभ्यो नमः' यह कहकर सिर का, 'छेदोभ्यो नमः' कहकर मुख का, 'देवताभ्यो नमः' से हृदय का, 'बीजाय नमः' से गुह्यस्थान का, 'शक्तये नमः' से पैर का, 'कीलकाय नमः' से नाभि का स्पर्श करें। 'द्वात्रिंशन्महाविद्याभ्यो नमः' से संपूर्ण शरीर का स्पर्श करें। इस प्रकार पृथक-पृथक अंगन्यास तथा करन्यास कर, द्वादशलक्षात्मक गायत्री का जप करें।

एवं न्यास विधिं कृत्वा कराङ्गं विधिपूर्वकम्॥
व्याहृतित्रयमुच्चार्य अनुलोम विलोमतः।
चतुरक्षर संयुक्तं कराङ्गन्यासमाचरेत्॥

इस प्रकार अंगन्यास कर फिर उपर्युक्त विधि से करन्यास भी करना चाहिए, 'ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः' इस महाव्याहृति का अनुलोम तथा 'ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः' इस प्रकार प्रतिलोम रूप-से महाव्याहृति का उच्चारण करे। 'तत्सवितुर्वरेण्यं', 'भर्गो देवस्य', 'धीमहि धियो', 'यो नः प्रचोदयात्।' इन चार मंत्रों से करांगन्यास करें।

आवाहनादिभेदं च दश मुद्राः प्रदर्शयेत्।
सा पातु वरदा देवी अङ्ग प्रत्यङ्ग सङ्गमे॥

ध्यानं मुद्रा नमस्कारं गुरुमन्त्रं तथैव च।
संयोगमात्म सिद्धिं च षड्विधं किं विचारयेत्॥

गायत्री का आवाहनादि दशमुद्रा प्रदर्शित करें तथा वह वरदा देवी अंग-प्रत्यंग की संधियों में रक्षा करें। इस प्रकार ध्यान, मुद्रा, नमस्कार, गुरुमंत्र, संयोग तथा आत्मसिद्धि इन छह प्रकारों से गायत्री की सिद्धि करें।

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीगायत्री—कवचस्य ब्रह्मा विष्णु रुद्रा ऋषयः, ऋग् यजुः सामाऽथर्वाणि छन्दांसि, परब्रह्म स्वरूपिणी गायत्रीदेवता, भूः बीजम्, भुवः शक्तिः, स्वाहा कीलकम्, श्रीगायत्रीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

अपने दाहिने हाथ में जल लेकर, 'ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य' से आरंभ कर, 'जपे विनियोगः' तक मंत्र पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दें (मंत्रार्थ इस प्रकार है—इस गायत्री कवच के ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ऋषि हैं; ऋग्, यजुः, साम तथा अथर्व छंद हैं, परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता हैं; भूः बीज है, भुवः शक्ति है, स्वाहा कीलक् है, गायत्री की प्रीति के लिए इसका पाठ करना चाहिए)।

ध्यान :

वर्णास्त्रां कुण्डिकाहस्तां शुद्ध निर्मल ज्योतिषीम्।
सर्वतत्त्वमयीं वन्दे गायत्रीं वेदमातरम्॥
मुक्ता विद्रुम हेम नील धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै।
र्युक्तामिन्दु निबद्ध रत्नमुकुटां तत्वार्थ वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाऽभयाऽङ्कुश कशां शूलं कपालं गुणं।
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

संपूर्ण वर्णों के स्वरूप वाली, कुण्डिका को धारण करने वाली, शुद्ध, निर्मल ज्योति स्वरूप वाली, संपूर्ण तत्त्वों से विराजमान, वेदमाता गायत्री की मैं वंदना करता हूं। मोती, मूंगा, स्वर्ण, नील तथा स्वच्छ छाया वाले मुख से जो सुशोभित हैं तथा स्त्रियोचित संपूर्ण मंगलों से जो युक्त हैं और रत्नजटित चंद्रकला से जो सुशोभित हैं, जो वर्णस्वरूप हैं तथा ब्रह्मस्वरूपिणी हैं। जिनके हाथों में वर, अभय, अंकुश, कशा, शूल, कपाल, धनुष, शंख, चक्र तथा कमल का जोड़ा सुशोभित हो रहा है, ऐसी गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

कवच :

ॐ गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे।
ब्रह्मविद्या च मे पश्चादुत्तरे मां सरस्वती॥

गायत्री पूर्व दिशा में, सावित्री दक्षिण दिशा में, महाविद्या पश्चिम दिशा में तथा सरस्वती उत्तर दिशा में हमारी रक्षा करें।

पावकीं मे दिशं रक्षेत् पावकोज्ज्वलशालिनी।
यातुधानीं दिशं रक्षेद्यातुधान गणार्दिनी॥

अग्नि के समान देदीप्यमान देवी अग्निकोण में, यातुधानों का नाश करने वाली नैर्ऋत्यकोण में हमारी रक्षा करें।

पावमानीं दिशं रक्षेत् पवमान विलासिनी।
दिशं रौद्रीमवतु मे रुद्राणी रुद्ररूपिणी॥

वायु के समान विलास करने वाली देवी वायव्यकोण में, रुद्ररूपिणी भगवती रुद्राणी ईशानकोण में हमारी रक्षा करें।

ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा।
एवं दश दिशो रक्षेत् सर्वतो भुवनेश्वरी॥

ब्रह्माणी ऊपर तथा वैष्णवी नीचे की ओर हमारी रक्षा करें। भुवनेश्वरी सभी स्थानों में हमारी रक्षा करें। इस प्रकार उपर्युक्त सभी देवियां दस दिशाओं में रक्षा करें।

ब्रह्मास्त्र स्मरणादेव वाचां सिद्धिः प्रजायते।
ब्रह्मदण्डश्च मे पातु सर्वशस्त्राऽस्त्र भक्षकः॥
ब्रह्मशीर्षस्तथा पातु शत्रूणां वधकारकः।
सप्तव्याहृतयः पान्तु सर्वदा बिन्दुसंयुताः॥

संपूर्ण शास्त्रों का विनाश करने वाले ब्रह्मदण्ड से हमारी रक्षा करे। शत्रुओं का वध करने वाला ब्रह्मशीर्ष हमारी रक्षा करे। विसर्ग के सहित सप्रणव व्याहृतियां सर्वदा हमारी रक्षा करें।

वेदमाता च मां पातु सरहस्या सदेवता।
देवीसूक्तां सदा पातु सहस्त्राक्षरदेवता॥
चतुष्षष्टिकलाविद्या दिव्याद्या पातु देवता।
बीजशक्तिश्च मे पातु पातु विक्रमदेवता॥

स-रहस्या एवं स-दैवता तथा वेदमाता हमारी रक्षा करें, जिसके सहस्राक्षर देवता हैं, वह देवीसूक्त हमारी रक्षा करे। चतुःषष्टि कलासमेत दिव्य विद्या हमारी रक्षा करे। बीज-शक्ति हमारी रक्षा करे। विक्रमदेवता हमारी रक्षा करे।

तत्पदं पातु मे पादौ जङ्घे मे सवितुः पदम्।
वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च॥

'तत्' पद पैर की रक्षा करे, 'सवितुः' पद जंघे की, 'वरेण्यं' कटि देश की तथा 'भर्ग' पद नाभिस्थान की रक्षा करे।

देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा।
धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने॥

'देवस्य' हृदय की, 'धीमहि' गले की, 'धियः' जिह्वा की, 'यः' पद नेत्र की रक्षा करे।

ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात्।
तद्वर्णः पातु मूर्द्धानं सकारः पातु भालकम्॥

'नः' ललाट की, 'प्रचोदयात्' शिर की रक्षा करे। 'ततः' वर्ण मूर्धा की तथा 'स' वर्ण भाल की रक्षा करे।

चक्षुषी मे विकारस्तु श्रोत्रं रक्षेत्तु कारकः।
नासापुटे वकारो मे रेकारस्तु कपोलयोः॥

'वि' वर्ण दोनों चक्षुओं की, 'तु' वर्ण दोनों कान की, 'व' नासापुटों की, 'रे' वर्ण कपोलों की रक्षा करे।

णिकारस्त्वधरोष्ठे च यकारस्तूर्ध्व ओष्ठके।
आस्यामध्ये भकारस्तु र्गोकारस्तु कपोलयोः॥

'ण्' वर्ण अधरोष्ठ की, 'य' ऊपर के होंठ की, 'भ' वर्ण मुख के मध्य में, 'र्गो' दोनों कपोलों की रक्षा करें।

देकारः कण्ठदेशे च वकारः स्कन्धदेशयोः।
स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तकम्।
मकारो हृदयं रक्षेद् हिकारो जठरं तथा।
धिकारो नाभिदेशं तु योकारस्तु कटिद्वयम्॥

'दे' कण्ठदेश की, 'व' स्कंधदेश की, 'स्य' दाहिने हाथ की, 'धी' बाएं हाथ की रक्षा करे। 'मं' हृदय की, 'हि' जठर की, 'धि' नाभिस्थान की, 'यो' दोनों कटि भाग की रक्षा करे।

गुह्यं रक्षतु योकार ऊरू मे नः पदाक्षरम्।
प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारो जङ्घदेशयोः॥
दकारो गुल्फदेशं तु यात्कारः पादयुग्मकम्।
जातवेदेति गायत्री त्र्यम्बकेति दशाक्षरा॥

'यो' गुह्यांग की, 'नः' पद एवं अक्षर दोनों उरु, 'प्र' दोनों घुटनों की, 'चो' दोनों जंघा की रक्षा करे। 'द' गुल्फ की, 'यात्' दोनों पैरों का रक्षा करे। 'ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि॥' इसमें 43 अक्षर, 'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥'

इसमें 33 अक्षर तथा 24 अक्षर की गायत्री सब मिलाकर शताक्षरा गायत्री

कही गई है तथा 'ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतम् ॐ ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्' यह षोडशाक्षर गायत्री सर्वदा सभी जगह हमारी रक्षा करे।

सर्वतः सर्वदा पातु आपो ज्योतीति षोडशी।
इदं तु कवचं दिव्यं बाधा शत विनाशकम्॥
चतुष्षष्टिकलाविद्या सकलैश्वर्य सिद्धिदम्।
जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत्॥

यह गायत्री का कवच सैकड़ों बाधाओं को नष्ट करने वाला है, चौंसठ कलाओं तथा समस्त ऐश्वर्य को देने वाला है। गायत्री-जप के आरंभ में गायत्री-हृदय तथा जप के अंत में गायत्री-कवच का पाठ करना चाहिए।

स्त्री गो ब्राह्मण मित्रादि द्रोहाद्यखिल पातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधि गच्छति॥

स्त्रीवध, गोवध, ब्राह्मणवध तथा मित्रद्रोह आदि पापों को नष्ट करने वाला है। गायत्री-कवच का पाठ करने वाला पुरुष परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

पुष्पाञ्जलिं च गायत्र्या मूलेनैव पठेत् सकृत्।
शतसाहस्त्र वर्षाणां पूजायाः फलमाप्नुयात्॥

इस गायत्री के कवच का सदैव पाठ कर मूल मंत्र से गायत्री को एक बार भी पुष्पांजलि देने से सैकड़ों तथा हजारों वर्ष के पूजा का फल प्राप्त होता है।

भूर्जपत्रे लिखित्वैतत् स्वकण्ठे धारयेद् यदि।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद् बुधः॥
त्रैलोक्यं क्षोभयेत् सर्वं त्रैलोक्यं दहति क्षणात्।
पुत्रवान् धनवाञ्छ्रीमान् नानाविद्यानिधिर्भवेत्॥

जो बुद्धिमान पुरुष इस गायत्री-कवच को भोजपत्र पर लिखकर, कण्ठ, शिखा तथा दाहिने हाथ में अथवा मणिबंध में धारण करते हैं, वे क्षण भर में त्रैलोक्य को क्षुब्ध कर सकते हैं अथवा तीनों लोकों का नाश कर सकते हैं। वे पुत्रवान्, धनवान्, श्रीमान् तथा अनेक विद्याओं के निधि विशेषज्ञ बन जाते हैं।

ब्रह्मास्त्रादीनि सर्वाणि तदङ्गस्पर्शनात्ततः।
भवन्ति तस्य तुच्छानि किमन्यत् कथयामि ते॥

इस गायत्री-कवच के पात के फल को बहुत कहने से क्या? ब्रह्मास्त्रादि भी उसके अंग के स्पर्श से तुच्छ हो जाते हैं।

अभिमन्त्रित गायत्री कवचं मानसं पठेत्।
तज्जलं पिबतो नित्यं पुरश्चर्य्याफलं भवेत्॥
लघुसामान्यकं मन्त्रं महामन्त्रं तथैव च।
यो वेत्ति धारणां युञ्जन् जीवन्मुक्तः स उच्यते॥

सप्तव्याहृति विप्रेन्द्र सप्तावस्थाः प्रकीर्तिताः।
सप्तजीवसता नित्यं व्याहृती अग्निरूपिणी॥

जो लोग गायत्री-कवच से जल को अभिमंत्रित कर उसे सदैव पीते हैं, वे पुरश्चरण के फल को प्राप्त करते हैं। गायत्री का लघुमंत्र, सामान्य मंत्र तथा महामंत्र को जो व्यक्ति जानता है और उसका जप करता है, वह 'जीवनमुक्त' हो जाता है। हे विप्रेन्द्र! यह सात महाव्याहृतियां जीव की सात अवस्थाएं हैं तथा अग्निरूपिणी हैं।

प्रणवे नित्ययुक्तस्य व्याहृतीषु च सप्तसु।
सर्वेषामेव पापानां सङ्करे समुपस्थिते॥
शतं सहस्त्रमभ्यर्च्य गायत्रीपावनं महत्।
दशशतमष्टोत्तरशत गायत्री पावनं महत्॥

प्रणवपूर्वक सप्तव्याहृति का जप करने वाले पुरुष को सभी पापों के सांकर्य उपस्थित हो जाने पर सौ अथवा हजार गायत्री के जप से उसकी शुद्धि हो जाती है, क्योंकि एक हजार अथवा एक सौ आठ भी गायत्री का जप अत्यंत पावन पवित्रकारक है।

भक्तिभाजो भवेद् विप्रः सन्ध्याकर्म समाचरेत्।
काले काले प्रकर्त्तव्यं सिद्धिर्भवति नाऽन्यथा॥

गायत्री में निष्ठा (भक्ति) रखने वाला पुरुष सर्वप्रथम संध्योपासना करे, फिर समय से गायत्री का जप करे तभी उसे सिद्धि होती है, अन्यथा नहीं।

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च।
तूर्यं सहैव गायत्रीजप एवमुदाहृतम्॥

साधक को सर्वप्रथम प्रणव का उच्चारण करना चाहिए। तत्पश्चात् 'भूर्भुवः स्वः' का, फिर गायत्री के चारों पाद का ('तत्' से प्रचोदयात् पर्यन्त)। इस प्रकार गायत्री के जप की विधि कही गई है। 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्' यही जप का प्रकार है।

तुरीयपादमुत्सृज्य गायत्रीं च जपेद् द्विजः।
स मूढो नरकं याति कालसूत्रमधोगतिः॥

जो ब्राह्मण गायत्री के चौथे पाद (धियो प्रचोदयात्) को छोड़कर सप्रणव, सव्याहृति गायत्री का जप करता है, वह मूर्ख कालसूत्र नामक नरक में जाकर अधोगति को प्राप्त करता है।

मन्त्रादौ जननं प्रोक्तं मन्त्रान्ते मृतसूत्रकम्।
उभयोर्दोषनिर्मुक्तं गायत्री सफला भवेत्॥

मंत्र का आदि जनन है तथा मंत्र के अंत में मृतसूत है। इसलिए दोनों दोषरहित संपूर्ण गायत्री का जप करना चाहिए।

मन्त्रादौ पाशबीजं च मन्त्रान्ते कुशबीजकम्।
मन्त्रमध्ये तु या माया गायत्री सफला भवेत्॥

मंत्र के आदि में पाशबीज है तथा मंत्र के अंत में कुश-बीजक है, मंत्र के मध्य में पाया है जो ऐसा जानता है, उसका गायत्री का जप सफल है।

वाचिकस्त्वहमेव स्यादुपांशु शतमुच्यते।
सहस्त्रं मानसं प्रोक्तं त्रिविधं जपलक्षणम्॥

जप तीन प्रकार का होता है—

- वाचिक
- उपांशु
- मानस

वाचिक जप का सामान्य फल होता है। उसकी अपेक्षा उपांशु का सौ गुना फल होता है तथा वाचिक से मानस का फल सहस्त्र गुना होता है। यह तीनों प्रकार के जपों का फल है।

अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत्।
जपं चाक्षस्वरूपेणाऽनामिका मध्यपर्वणि॥
अनामा मध्यमा हीना कनिष्ठादिक्रमेण तु।
तर्जनी मूलपर्यन्तं गायत्रीजपलक्षणम्॥
पर्वभिस्तु जपेदेवमन्यत्र नियमः स्मृतः।
गायत्रीवेदमूलत्वाद् वेदः पर्वसु गीयते॥

जपमाला, मुद्रा, गुरु को भी नहीं दिखानी चाहिए, अनामिका के मध्य-पर्व से लेकर कनिष्ठिका के पर्व से तर्जनी के मूल पर्यन्त जप करना गायत्री जप का लक्षण है। इस प्रक्रिया में मध्यमा का मध्य पर्व सुमेरु होता है, उसका उल्लंघन नहीं करना चाहिए। गायत्री वेद का मूल है और वेद का मूल पर्व में है।

दशभिर्जन्मजनितं शतेनैव पुरा कृतम्।
त्रियुगं तु सहस्त्राणि गायत्री हन्ति किल्बिषम्॥
प्रातःकालेषु कर्तव्यं सिद्धिं विप्रो य इच्छति।
नादालये समाधिश्च सन्ध्यायां समुपासते॥

गायत्री का जप दस जन्म, सौ जन्म तथा सहस्त्र जन्म के पापों को दूर करता है। जो ब्राह्मण सिद्धि की इच्छा रखता है, उसे प्रातःकाल में गायत्री का जप करना चाहिए और जो संध्या में गायत्री की उपासना करता है, उसे अनहद नाद में समाधि होती है।

अङ्गुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घने।
असङ्ख्यया च यज्जप्तं तज्जप्तं निष्फलं भवेत्॥

जो जप उंगली के अग्रभाग से किया जाता है तथा जो सुमेरु का लंघन कर जप किया जाता है अथवा बिना संख्या के जो जप किया जाता है, उस जप का कोई फल नहीं होता, वह जप निष्फल ही है।

विना वस्त्रं प्रकुर्वीत गायत्री निष्फला भवेत्।
वस्त्रतुच्छं न जानाति वृथा तस्य परिश्रमः॥

जो जप वस्त्र के भीतर (गोमुखी आदि में) नहीं किया जाता अथवा जो जप वस्त्र के पिछले भाग में किया जाता है, वह जप निष्फल होता है।

गायत्रीं तु परित्यज्य अन्यमन्त्रमुपासते।
सिद्धान्नं च परित्यज्य भिक्षामटति दुर्मतिः॥
ऋषिश्छन्दो देवताख्या बीजं शक्तिश्च कीलकम्।
नियोगं न च जानाति गायत्री निष्फला भवेत्॥
वर्ण मुद्रा ध्यानपदमावाहन विसर्जनम्।
दीपं चक्रं न जानाति गायत्री निष्फला भवेत्॥

जो गायत्री को छोड़कर अन्य मंत्र की उपासना करता है, वह मूर्ख अपने घर सिद्ध अन्न का परित्याग कर भिक्षा मांगता फिरता है। जो गायत्री के ऋषि, छंद, देवता, बीज, शक्ति, कीलकं तथा विनियोग को नहीं जानता, उसके गायत्री जप का फल निष्फल होता है। जो गायत्री का वर्ण (ध्यान, मुद्रा) ध्यान, पद, आवाहन, विसर्जन तथा दीपचक्र को नहीं जानते उनके गायत्री का जप निष्फल होता है।

शक्तिं न्यासस्तथा स्थानं मन्त्र सम्बोधनं परम्।
त्रिविधं यो न जानाति गायत्री निष्फला भवेत्॥

जो शक्ति न्यास, स्थान, मंत्र, संबोधन तथा तीन प्रकार के जप को नहीं जानते, उनको गायत्री के जप का फल नहीं होता।

पंचोपचारकांश्चैव होमद्रव्यं तथैव च।
पञ्चाङ्गं च विना नित्यं गायत्री निष्फला भवेत्॥

जो गायत्री के पंचोपचार पूजन, होम, द्रव्य तथा पंचांग को नहीं जानते, उनको गायत्री के जप का फल नहीं होता है।

मन्त्रसिद्धिर्भवेज्जातु विश्वामित्रेण भाषितम्।
व्यासो वाचस्पतिर्जीवस्तुता देवो तपःस्मृतौ॥

जो लोग उपर्युक्त सभी प्रकार की विधियों को जानते हैं, उन्हें निश्चय ही सिद्धि मिलती है, ऐसा विश्वामित्र का मत है। व्यास, वाचस्पति, बृहस्पति तो स्तुति, तपस्या तथा स्मृति (ध्यान) से ही सिद्धि मानते हैं।

सहस्त्रजप्ता सा देवी ह्युपपातकनाशिनी।
लक्षजाप्ये तथा तच्च महापातकनाशिनी॥
कोटि जाप्येन राजेन्द्र यदिच्छति तदाप्नुयात्॥

गायत्री के सहस्त्र संख्या जप से उपपातक का नाश हो जाता है। लक्ष जप से महापातक का नाश होता है तथा करोड़ जप से मनुष्य जो चाहता है, प्राप्त कर लेता है।

न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात्॥

गायत्री-कवच तथा जप आदि की उपर्युक्त विधि दूसरे शिष्य को नहीं देनी चाहिए तथा जो भक्त न हो, उसे भी नहीं देनी चाहिए। अपने शिष्य तथा भक्त को ही यह सब कहना चाहिए अन्यथा वो मृत्यु को प्राप्त कर लेता है।

विशेष—ब्रह्माजी ने विश्वामित्र से कहा, 'हे महाबुद्धिमान् विश्वामित्र! गायत्री-कवच के केवल पाठ मात्र से ही साधक तीनों लोकों को अपने वश में कर लेता है। गायत्री-कवच पुण्य, पवित्र, पापों का नाश करने वाला तथा रोगों को दूर करने वाला है। जो विद्वान् तीनों काल इस गायत्री-कवच का पाठ करते हैं, उनका संपूर्ण मनोरथ सिद्ध हो जाता है। गायत्री-कवच के नित्य पाठ से मनुष्य संपूर्ण शास्त्रों के तत्त्व का ज्ञाता एवं वेदज्ञ हो जाता है और उसे संपूर्ण यज्ञों के फलों की प्राप्ति होती है तथा अंत में वो ब्रह्मपद को प्राप्त करता है तथा उसे चारों पुरुषार्थ अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति अनायास ही हो जाती है।'

❑❑

१२

गायत्री तत्त्व एवं उपनिषद्

तत्त्व शब्द का अर्थ होता है, 'जो जैसा है उसे उसी रूप में देखना।' गायत्री शक्ति के सोपाधिक भेद हैं। इन्हीं भेदों के कारण वह एक शक्ति अलग-अलग नाम-रूपों द्वारा व्याख्यायित है। 'तत्त्व' को जानने का अर्थ उपाधियों और उपाधि से परे को अर्थात् शक्ति के समग्र रूप को जानना है। उपनिषदों में इन्हीं का व्याख्यान है। तत्त्व को जानकर जहां देवता के वास्तविक रूप को जाना जाता है, उपनिषदों का पाठ व ज्ञान वहीं अलौकिक फल देने वाला है।

तत्त्व :

ॐ श्रीगायत्रीतत्त्वमालामन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, परमात्मा देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकम्, मम समस्तपापक्षयार्थे गायत्रीतत्त्व पाठे विनियोगः।

चतुर्विंशतितत्त्वानां यदेकं तत्त्वमुत्तमम्।
अनुपाधि परं ब्रह्म तत्परं ज्योतिरोमिति॥
यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिलीनस्य तत्परं ज्योतिरोमिति॥
तत्सदादिपदैर्वाच्यं परमं पदमव्ययम्।
अभेदत्वं परार्थस्य तत्परं ज्योतिरोमिति॥
यस्य मायांशभागेन जगदुत्पद्यतेऽखिलम्।
तस्य सर्वोत्तमं रूपमरूपस्याभिधीमहि॥
यं न पश्यन्ति परमं पश्यन्तोऽपि दिवौकसः।
तं भूतानिलदेवं तु सुवर्णमुपधावताम्॥
यदंशः प्रेरितो जन्तुः कर्मपाशनियन्त्रितः।
आजन्मकृत पापानामपहन्तुं दिवौकसः॥
इदं महामुनिप्रोक्तं गायत्री तत्त्वमुत्तमम्।
यः पठेत् परया भक्तया स याति परमां गतिम्॥
सर्ववेदपुराणेषु साङ्गोपाङ्गेषु यत्फलम्।
सकृदस्य जपादेव तत्फलं प्राप्नुयान्नरः॥

अभक्ष्य भक्षणात् पूतो भवति। अगम्यगमनात् पूतो भवति। सर्वपापेभ्यः पूतो भवति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशति। मध्यन्दिनमुपयुञ्जानोऽसत्प्रतिग्रहादिना मुक्तो भवति। अनुप्लवं पुरुषा पुरुषमभिवन्दन्ति। यं यं काममभिध्यायति तं तमेवाप्नोति पुत्रपौत्रान् कीर्तिसौभाग्यांश्चोपलभते। सर्वभूतात्ममित्रो देहान्ते तद्विशिष्टो गायत्रीपरमं पदमवाप्नोति॥

उपनिषद् :

नमस्कृत्य भगवान् याज्ञवल्क्यः स्वयं परिपृच्छति त्वं ब्रूहि भगवन्! गायत्र्या उत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामि?।

ब्रह्मोवाच—प्रणवेन व्याहृतयः प्रवर्तन्ते, तमसस्तु परं ज्योतिष्कः पुरुषः स्वयम्। भूर्विष्णुरिति ह ताः स्वाङ्गुल्या मथेत्। मध्यमात् फेनो भवति, फेनाद् बुद्‌बुदो भवति, बुद्‌बुदादण्डं भवति, अण्डवानात्मा भवति, आत्मन आकाशो भवति, आकाशाद् वायुर्भवति, वायोरग्निर्भवति, अग्नेरोङ्कारो भवति, ॐ काराद् व्याहृतिर्भवति, व्याहृत्या गायत्री भवति, गायत्र्या सावित्री भवति, सावित्र्याः सरस्वती भवति, सरस्वत्या वेदा भवन्ति, वेदेभ्यो ब्रह्मा भवति, ब्रह्मणो लोका भवन्ति, तस्माल्लोकाः प्रवर्तन्ते, चत्वारो वेदाः साङ्गाः सोपनिषदः सेतिहासास्ते सर्वे गायत्र्याः प्रवर्तन्ते।

यथा—अग्निर्देवानां ब्राह्मणो मनुष्याणां मेरुः शिखरिणां गङ्गा नदीनां ऋतूनां ब्रह्मा प्रजापतीनामेवाऽसौ मुख्यः गायत्र्या गायत्रीच्छन्दो भवति।

किं भूः किं भुवः किं स्वः किं महः किं जनः किं तपः किं सत्यं किं तत् किं सवितुः वरेण्यं किं भर्गः किं देवस्य किं धीमहि किं धियः किं यः किं नः किं प्रचोदयात्?

भूरिति भूर्लोकः, भुव इत्यन्तरिक्षलोकः, स्वरिति स्वर्लोकः, मह इति महर्लोकः, जन इति जनो लोकः, तप इति तपो लोकः, सत्यमिति सत्यलोकः। भूर्भुवः स्वरोमिति त्रैलोक्यम्। तदसौ तेजो यत्तेजसोऽग्निर्देवता सवितुरित्यादित्यस्य वरेण्यमित्यन्नम्। अन्नमेव प्रजापतिः। भर्ग इत्यापः। आपो वै भर्गः। एतावत् सर्वा देवताः। देवस्येन्द्रो वै देवयीद्देवं तदिन्द्रस्तस्मात् सर्वकृत् पुरुषो नाम विष्णुः। धीमहि किमध्यात्मं तत्परमं पदमित्यध्यात्मं यो नः प्रचोदयात् काम इमांल्लोकान् प्रच्यावयन् यो नृशंस्योऽस्तोष्यस्ततपरमो धर्मः। इत्येषा गायत्री किं गोत्रा, कत्यक्षरा, कति पदा, कति कुक्षिः, कति शीर्षाणि?

सांख्यायनसगोत्रा गायत्री, चतुर्विंशत्यक्षरा त्रिपदा षट् कुक्षिः सावित्री केशास्त्रयः पादा भवन्ति। काऽस्याः कुक्षिः कानि पञ्च शीर्षाणि ऋग्वेदोऽस्याः

प्रथमः पादो भवति, यजुर्वेदो द्वितीयः, सामवेदस्तृतीयः, पूर्वादिक्प्रथमा कुक्षिर्भवति, दक्षिणा द्वितीया, पश्चिमा तृतीया, उदीची चतुर्थी, ऊर्ध्वा पञ्चमी, अधरा षष्ठी कुक्षिः। व्याकरणमस्याः प्रथमं शीर्षं भवति, शिक्षा द्वितीयं कल्पस्तृतीयं निरुक्तं चतुर्थं ज्योतिषामयनं पञ्चमम्। किं लक्षणं किमु चेष्टितं किमुदाहृतं किमक्षरं दैवत्यम्। लक्षणं मीमांसा अथर्ववेदो विचेष्टितम्, छन्दो विधिरित्युदाहृतम्। को वर्णः ? कः स्वरः ? श्वेतो वर्ण षट् स्वराणि। इमान्यक्षराणि दैवतानि भवन्ति। पूर्वा भवति गायत्री मध्यमा, सावित्री पश्चिमा, सन्ध्या सरस्वती।

प्रातःसन्ध्या रक्ता रक्तपद्मासनस्था रक्ताम्बरधरा रक्तवर्णा रक्तगन्धानुलेपना चतुर्मुखा अष्टभुजा द्विनेत्रा दण्डाऽक्षमालाकमण्डलु-स्रुक्स्रुवधारिणी सर्वाभरणभूषिता गायत्री कौमारी ब्राह्मी हंसवाहिनी ऋग्वेदसंहिता ब्रह्मदैवत्या त्रिपदा गायत्री षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षा अग्निमुखा रुद्र-शिव विष्णुहृदया ब्रह्मकवचा सांख्यायनसगोत्रा भूर्लोकव्यापिनी अग्निस्तत्त्वम्, उदात्ताऽनुदात्त स्वरितस्वर मकारः, आत्मज्ञाने विनियोगः। इत्येषा गायत्री।

मध्याह्नसन्ध्या श्वेता श्वेतपद्मासनस्था श्वेताम्बरधरा श्वेत गन्धानुलेपना पञ्चमुखी दशभुजा त्रिनेत्रा शूलाऽक्षमाला कमण्डलु कपालधारिणी सर्वाभरणभूषिता सावित्री युवती माहेश्वरी वृषभवाहिनी यजुर्वेदसंहिता रुद्रदैवत्या त्रिपदा सावित्री षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षा अग्निमुखा रुद्रशिखा ब्रह्मकवचा भारद्वाजसगोत्रा भुवर्लोकव्यापिनी वायुस्तत्त्वम्, उदात्ताऽनुदात्त-स्वरितस्वरमकारः श्वेतवर्ण आत्मज्ञाने विनियोगः। इत्येषा सावित्री।

सायंसन्ध्या कृष्णा कृष्णपद्मासनस्था कृष्णाम्बरधरा कृष्णवर्णा कृष्णगन्धानुलेपना कृष्णमाल्याम्बरधरा एकमुखी चतुर्भुजा द्विनेत्रा शङ्ख चक्र गदा पद्मधारिणी सर्वाभरणभूषिता सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडवाहिनी सामवेदसंहिता विष्णु दैवत्या त्रिपदा षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षा अग्निमुखा विष्णुहृदया ब्रह्म रुद्रशिखा ब्रह्मकवचा काश्यपसगोत्रा स्वर्लोकव्यापिनी सूर्यस्तत्त्वम् उदात्ताऽनुदात्तस्वरितमकारः कृष्णवर्णोमोक्षज्ञाने विनियोगः। इत्येषा सरस्वती।

रक्ता गायत्री श्वेता सावित्री कृष्णवर्णा सरस्वती।
प्रणवो नित्ययुक्तश्च व्याहृतीषु च सप्तसु॥
सर्वेषामेव पापानां सङ्करे समुपस्थिते।
दशशतं समभ्यर्च्य गायत्री पावनी महत्॥।
प्रह्लादोऽत्रिर्वसिष्ठश्च शक्रः कण्वः पराशरः।
विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः, शौनको महान्॥
याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः।
गौतमो मुद्गलः श्रेष्ठो वेदव्यासश्च लोमशः॥

अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो माण्डुकस्तथा।
दुर्वासास्तपसा श्रेष्ठ नारदः कश्यपस्तथा॥
उक्तान्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठानासु पूर्विका।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पंक्तिरेव च॥
त्रिष्टुप् च जगती चैव तथाऽतिजगती मता।
शक्वरी सातिपूर्वा स्यादष्ट्यत्यष्टी तथैव च॥
धृतिश्चाऽतिधृतिश्चैव प्रकृतिः कृतिराकृतिः।
विकृतिः संकृतिश्चैव तथातिकृतिरुत्कृतिः॥
इत्येताश्छन्दसां संज्ञाः क्रमशो वच्मि साम्प्रतम्।

भूरिति छन्दो भुव इति छन्दः स्वरिति छन्दो भूर्भुवः स्वरोमिति देवी गायत्री इत्येतानि छन्दांसि प्रथममाग्नेयं द्वितीयं प्राजापत्यं तृतीयं सौम्यं चतुर्थमैशानं पञ्चममादित्यं षष्ठं बार्हस्पत्यं सप्तमं पितृदेवत्यमष्टमं भगवदेत्यं नवममार्यमं दशमं सावित्रमेकादशं त्वाष्ट्रं द्वादशं पौष्णं त्रयोदशमैन्द्राग्न्यं चतुर्दशं वायव्यं पञ्चदशं वामदैवत्यं षोडशं मैत्रावरुणं सप्तदशमाङ्गिरसमष्टादशं वैश्वदेव्यमेकोनविंशं वैष्णवं विंशं वासवमेकविंशं रौद्रं द्वाविंशमाश्विनं त्रयोविंशं ब्राह्मं चतुर्विंशं सावित्रम्।

दीर्घान् स्वरेण संयुक्तान् बिन्दु नाद समन्वितान्।
व्यापकान् विन्यसेत् पश्चाद् दशपंक्त्याक्षराणि च॥
द्रवुपुंस इति प्रत्यक्षबीजानि।
प्रह्लादिनी प्रभा सत्या विश्वा भद्रा विलासिनी।
प्रभावती जया कान्ता शान्ता पद्मा सरस्वती॥
विद्रुमस्फटिकाकारं पद्मरागसमप्रभम्।
इन्द्रनीलमणिप्रख्यं मौक्तिकं कुङ्कुमप्रभम्॥
अञ्जनाभं च गाङ्गेयं वैडूर्यं चन्द्रसन्निभम्।
हारिद्रं कृष्णदुग्धाभं रविकान्तिसमं भवम्॥
शुकपिच्छसमाकारं क्रमेण परिकल्पयेत्।
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एव च॥
गन्धो रसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शस्तथैव च।
घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक् श्रोत्रं च तथापरम्॥
उपस्थपायुपादादि पाणिर्वागपि च क्रमात्।
मनो बुद्धिरहङ्कारमव्यक्तं च यथाक्रमम्।
सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
एकमुखं च द्विमुखं त्रिमुखं च चतुर्मुखम्॥

पञ्चमुखं षण्मुखं चाऽधोमुखं चैव व्यापकम्।
अञ्जलीकं ततः प्रोक्तं मुद्रितं तु त्रयोदशम्॥
शकटं यमपाशं च ग्रथितं सम्मुखोन्मुखम्।
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्॥
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्‌गरं पल्लवं तथा।
एतामुद्राश्चतुर्विंशद् गायत्र्याः सुप्रतिष्ठिताः॥

ॐ मूर्ध्नि संघाते ब्रह्मा विष्णुर्ललाटे रुद्रो भ्रूमध्ये चक्षुश्चन्द्रादित्यौ कर्णयोः शुक्र बृहस्पती नासिके वायुर्दैवत्यं प्रभातं दोषा उभे सन्ध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्वती ग्रीवा स्वाध्यायाः स्तनयोर्वसवो बाह्वोर्मरुतः हृदयं पर्जन्यमाकाशमपरं नाभिरन्तरिक्षं कटिरिन्द्रियाणि जघनं प्राजापत्यं कैलासमलयो ऊरू विश्वेदेवा जानुभ्यां जान्वोः कुशिकौ जङ्घयोरयनद्वयं सुराः पितरः पादौ पृथिवी वनस्पतिर्गुल्फौ रोमाणि मुहूर्तास्ते विग्रहाः केतुमासा ऋतवः सन्ध्याकालत्रयमाच्छादनं संवत्सरो निमिषः अहोरात्रावादित्यचन्द्रमसौ सहस्त्रपरमां देवीं शतमध्यां दशापराम्। सहस्त्रनेत्रीं देवीं गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये। तत्सवितुर्वरदाय नमः, तत्प्रातरादित्याय नमः।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सत्सायंप्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत्। चत्वारो वेदा अधीता भवन्ति। सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति। सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। सर्वप्रत्यूहात् पूतो भवति। अपेयपानात् पूतो भवति। अभक्ष्यभक्षणात् पूतो भवति। अलेह्यलेहनात् पूतो भवति। अचोष्यचोषणात् पूतो भवति। सुरापानात् पूतो भवति। सुवर्णस्तेयात् पूतो भवति। पंक्तिभेदनात् पूतो भवति। पतितसम्भाषणात् पूतो भवति। अनृतवचनात् पूतो भवति।

गुरुतल्पगमनात् पूतो भवति। अगम्यगमनात् पूतो भवति।
वृषलीगमनात् पूतो भवति। ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति।
भ्रूणहत्यायाः पूतो भवति। वीरहत्यायाः पूतो भवति।

अब्रह्मचारी सुब्रह्मचारी भवति। हृदयेनाऽधीतेन अनेन क्रतुशतेनेष्टं भवति। षष्टिसहस्त्रं गायत्रीजप्यानि भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयेदर्थसिद्धिर्भवति।

य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत्।
स सर्वपापैः प्रमुच्यते ब्रह्मलोके महीयते॥

नोट—पाठोपयोगी अंश होने के कारण ही श्लोकादि का हिन्दी अर्थ नहीं दिया गया। पाठक इसे कंठस्थ कर लें।

❑❑

१३

विश्वामित्ररचित गायत्रीस्तवराज

महर्षि वसिष्ट के तेज के समक्ष महाराज विश्वामित्र जब परास्त हो गए, तो उन्होंने ब्रह्मबल प्राप्त करने के लिए मां गायत्री को प्रसन्न करने का संकल्प किया। वे समझ गए थे कि ब्रह्म तेज ही सर्वश्रेष्ठ है और अपराजेय है और वह मां गायत्री की कृपा से ही संभव है। इस गायत्री स्तुति की रचना राजर्षि विश्वामित्र ने की है। प्रात: स्नानादि से निवृत्त हो, सूर्याभिमुख होकर जो इस स्तवराज का पाठ करता है, उसे सुख, समृद्धि, आरोग्य और आयुष्य की प्राप्ति होती है।

विनियोग:— *ॐ अस्य श्रीगायत्रीस्तवराजस्तोत्रमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषि:, सकलजननी चतुष्पदा गायत्री, परमात्मा देवता, सर्वोत्कृष्टं परं धाम प्रथमपादो बीजम्, द्वितीय: शक्ति:, तृतीय: कीलकम्, दशप्रणवसंयुक्ता सव्याहृतिका तूर्यपादसहिता व्यापकम्, मम धर्माऽर्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोग:।*

न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

ध्यानम्

गायत्रीं वेदधात्रीं शतमखफलदां वेदशास्त्रैकवेद्यां।
चिच्छक्तिं ब्रह्मविद्यां परमशिवपदां श्रीपदं वै करोति।
सर्वोत्कृष्टं पदं तत्सवितुरनुपदान्ते वरेण्यं शरण्यं।
भर्गो देवस्य धीमह्यभिदधति धियो यो न: प्रचोदयादित्यौर्वतेज:॥ 1॥
साम्राज्यबीजं प्रणवत्रिपादं सव्याऽपसव्यं प्रजपेत् सहस्त्रकम्।
सम्पूर्णकामं प्रणवं विभूतिं तथा भवेद् वाक्यविचित्रवाणी॥ 2॥
शुभं शिवं शोभनमस्तु मह्यं सौभाग्यभोगोत्सवमस्तु नित्यम्।
प्रकाशविद्यात्रयशास्त्रसर्वं भजेन्महामन्त्रफलं प्रिये वै॥ 3॥
ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदण्डं शिरसि शिखिमहद् ब्रह्मशीर्षं नमोऽन्तं
सूक्तं पारायणोक्तं प्रणवमथ महावाक्यसिद्धान्तमूलम्।
तूर्यं त्रीणि द्वितीयं प्रथममनुमहावेदवेदान्तसूक्तं
नित्यं स्मृत्यानुसारं नियमितचरितं मूलमन्त्रं नमोऽन्तम्॥ 4॥

अस्त्रं शस्त्रहतं त्वघोरसहितं दण्डेन वाजीहतम्
आदित्यादिहतं शिरोऽन्तसहितं पापक्षयार्थं परम्।
तुर्यान्त्यादि विलोम मन्त्रपठनं बीजं शिखान्तोर्ध्वकं
नित्यं कालनियम्य विप्रविदुषां किं दुष्कृतं भूसुरात्॥ 5॥
नित्यं मुक्तिप्रदं नियम्य पवनं निर्घोषशक्तित्रयं
सम्यग्ज्ञान गुरुपदेशविधिवद् देवीं शिखान्तामपि।
षष्ट्यैकोत्तरसंख्यया ऽनुमत सौषुम्णादिमार्गत्रयीं ध्यायेन्नित्य समस्त-
वेदजननीं देवीं त्रिसन्ध्यामयीम्॥ 6॥
गायत्रीं सकलागमार्थविदुषां सौरस्य बीजेश्वरीं।
सर्वाम्नाय समस्तमन्त्र जननीं सर्वज्ञधामेश्वरी।
ब्रह्मादित्रयसम्पुटार्थकरणीं संसारपारायणीं
सन्ध्यां सर्वसमानतन्त्रपरया ब्रह्मानुसन्धायिनीम्॥ 7॥
एक द्वि त्रि चतुः समानगणना वर्णाष्टकं पादयोः
पापादौ प्रणवादिमन्त्रपठने मन्त्रत्रयीसम्पुटाम्।
सन्ध्यायां द्विपदं पठेत् परतरं सायं तुरीयं युतं
नित्याऽनित्यमनन्तकोटिफलदं प्राप्तं नमुस्कुर्महे॥ 8॥
ओजोऽसीति सोऽस्यहो बलमसि भ्राजोऽसि तेजस्विनी
वर्चस्वी सविताग्निसोमममृतं रूपं परं धीमहि।
देवानां द्विजवर्यतां मुनिगणे मुक्तयर्थिनां शान्तिना-
मोमित्येकमृचं पठन्ति यमिनो यं यं स्मरेत् प्राप्नुयात्॥ 9॥
ओमित्येकमजस्वरूपममलं तत्सप्तधा भाजितं
तारं तन्त्रसमन्वितं परतरे पादत्रयं गर्भितम्।
आपोज्योतिरसोऽमृतं जनमहः सत्यं तपः स्वर्भुव-
र्भूयोभूय नमामि भूर्भुवः स्वरोमेतैर्महामन्त्रकम्॥ 10॥
आदौ बिन्दुमनुस्मरन् परतले बाला त्रिवर्णोच्चरन्
व्याहृत्यादि सविन्दुयुक्त त्रिपदातारत्रयं तुर्यकम्।
आरोहादवरोहतः क्रमगता श्रीकुण्डलीत्थं स्थिता
देवी मानसपङ्कजे त्रिनयना पञ्चानना पातु माम्॥ 11॥
सर्वे सर्ववशे समस्तसमये सत्यात्मिके सात्त्विके
सावित्री सवितात्मके! शशियुते साङ्ख्यायनीगोत्रजे
सन्ध्यात्रीण्युपकल्प्य सङ्ग्रहविधिः सन्ध्याभिधानात्मके
गायत्रीप्रणवादिमन्त्रगुरुणा सम्प्राप्य तस्मै नमः॥ 12॥

क्षेमं दिव्यमनोरथः परतरे चेतः समाधीयतां
ज्ञानं नित्यवरेण्यमेतदमलं देवस्य भर्गो धियम्।
मोक्ष श्रीर्विजयार्थिनोऽथ सवितुः श्रेष्ठं विधिस्तत्पदं
प्रज्ञा मेधप्रचोदयात् प्रतिदिनं यो नः पदं पातु माम्॥ 13॥
सत्यं तत्सवितुर्वरेण्यविरलं विश्वादिमायात्मकं
सर्वाद्यं प्रतिपादपादरमया तारं तथा मन्मथम्।
तुर्यान्यत् त्रितयं द्वितीयमपरं संयोग सव्याहृतिं
सर्वाम्नायमनोमयीं मनसिजां ध्यायामि देवीं पराम्॥ 14॥
आदौ गायत्रिमन्त्रं गुरुकृत नियमं धर्मकर्मानुकूलं
सर्वाद्यं सारभूतं सकलमनुमयं देवतानामगम्यम्।
देवानां पूर्वदेवं द्विजकुलमुनिभिः सिद्धविद्याधराद्यैः
को वा वक्तुं समर्थस्तवमनुमहिमा बीजराजादिमूलम्॥ 15॥
गायत्रीं त्रिपदां त्रिबीजसहितां दिव्याहृतिं त्रैपदां
त्रिब्रह्मात्रिगुणां त्रिकालनियमां वेदत्रयीं तां पराम्।
साङ्ख्यादित्रयरूपिणीं त्रिनयनां मातृत्रयीं तत्परां
त्रैलोक्य त्रिदश त्रिकोटिसहितां सन्ध्यां त्रयीं तां नुमः॥ 16॥
ओमित्येतत् त्रिमात्रा त्रिभुवनकरणं त्रिस्वरं बह्विरूपं
त्रीणित्रीणि त्रिपादं त्रिगुणगुणमयं त्रैपुरान्त्रं त्रिसूक्तम्।
तत्त्वानां पूर्वशक्तिं द्वितयगुरुपदं पीठयन्त्रात्मकं तं
तस्मादेतत् त्रिपादं त्रिपदमनुसरं त्राहि मां भो नमस्ते॥ 17॥
स्वस्ति श्रद्धातिमेधा मधुमतिमधुरः संशयः प्रज्ञकान्ति-
र्विद्या बुद्धिबलं श्रीरतनुधनपतिः सौम्यवाक्यानुवृत्तिः।
मेधा प्रज्ञा प्रतिष्ठा मृदुमतिमधुरा पूर्णविद्याप्रपूर्णं
प्राप्तं प्रत्यूषचिन्त्यं प्रणवपरवशात् प्राणिनां नित्यकर्म॥ 18॥
पञ्चाशद्वर्णमध्ये प्रणवपरयुतं मन्त्रमाद्यं नमोऽन्तं
सर्वं सव्याऽपसव्यं शतगुणमभितो वर्णमष्टोत्तरं ते।
एवं नित्यं प्रज्ञप्तं त्रिभुवनसहितं तूर्यमन्तं त्रिपादं
ज्ञानं विज्ञानगम्यं गगनसुसदृशं ध्यायते यः स मुक्तः॥ 19॥
आ दिक्षान्त सविन्दुयुक्त सहितं मेरुः क्षकारात्मकं
व्यस्ताऽव्यस्त समस्त वर्गसहितं पर्णं शताष्टोत्तरम्।
गायत्रीं जपतां त्रिकालसहितां नित्यं स नैमित्तिकं
चैवं जाप्यफलं शिवेन कथितं सद्भोग्यमोक्षप्रदम्॥ 20॥

सप्तव्याहृति सप्ततार विकृतिः सत्यं वरेण्यं धृतिः
सर्वं तत्सवितुश्च धीमहि महाभर्गस्य देवं भजे।
धाम्नो धाम धमाधिधारणमहान् धीमत्पदं ध्यायते
ॐ तत्सर्वमनुप्रपूर्णदशकं पादत्रयं केवलम्॥ 21॥
विज्ञाने विलसद्विवेकवचसः प्रज्ञानुसन्धारिणाम्
श्रद्धा मेध्य यशः शिरः सुमनसः स्वस्ति श्रियं त्वां सदा।
आयुष्यं धन धान्य लक्ष्मिमतुलां देवीं कटाक्षं परं
तत्काले सकलार्थसाधनमहान् मुक्तिर्महत्त्वं पदम्॥ 22॥
पृथ्वीगन्धोऽर्चनायां नभसि कुसुमता वायु धूपप्रकर्षो
वह्निर्दीपप्रकाशो जलममृतमयं नित्यसङ्कल्पपूजा।
एतत्सर्वं निवेद्यं सुखवति हृदये सर्वदा दम्पतीनां
त्वं सर्वज्ञ शिवं कुरुष्व ममता नाऽहं त्वया ज्ञेयसि॥ 23॥
सौम्यं सौभाग्यहेतुं सकलसुखकरं सर्वसौख्यं समस्तं
सत्यं सद्भोगनित्यं सुखजनसुहृदं सुन्दरं श्रीसमस्तम्।
सौमङ्गल्यं समग्र सकलशुभकरं स्वस्तिवाचं समस्तं
सर्वाद्यं सद्विवेकं त्रिपदपदयुगं प्राप्तुमध्यासमस्तम्॥ 24॥
गायत्रीपद पञ्च-पञ्चप्रणव द्वन्द्वं द्विधा सम्पुटं
सृष्ट्यादिक्रम मन्त्रजाप्यदशकं देवीपदं क्षुत्त्रयम्।
मन्त्रादिस्थितिकेषु सम्पुटमिदं श्रीमातृकावेष्टितं
वर्णान्त्यादि विलोम मन्त्रजपनं संहार सम्मोहनम्॥ 25॥
भूराद्यं भूर्भुवस्वस्त्रिपद पदयुतं त्र्यक्षमाद्यन्तयोज्यं
सृष्टि स्थित्यन्तकार्यं क्रमशिखिसकलं सर्वमन्त्रं प्रशस्तम्।
सर्वाङ्ग मातृकाणां मनुमयवपुषं मन्त्रयोगं प्रयुक्तं
संहारं क्षादिवर्णं वसुशतगणनं मन्त्रराजं नमामि॥ 26॥
विश्वामित्रमुदाहृतं हितकरं सर्वार्थसिद्धिप्रदं
स्तोत्राणां परमं प्रभातसमये पारायणं नित्यशः।
वेदानां विधिवादमन्त्रसफलं सिद्धिप्रदं सम्पदा
स स प्राप्नोत्यपरत्र सर्वसुखदमायुष्यमारोग्यताम्॥ 27॥

❑❑

१४

गायत्री-हृदयम्

हृदय शरीर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहां हृदय का अर्थ भावना व निष्ठा को लेना चाहिए। हृदय में गायत्री को स्थित करके स्थूल-सूक्ष्म दोनों शरीरों की रक्षा होती है। तब सफलता के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता, वह सहज रूप में समक्ष उपस्थित होती रहती है।

विनियोग—*ॐ अस्य श्रीगायत्रीहृदयस्य नारायण ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परमेश्वरी गायत्री देवता, गायत्रीहृदयजपे विनियोगः।*

द्यौर्मूर्ध्नि दैवतम्। दन्तपङ्क्तावश्विनौ। उभे सन्ध्ये चोष्ठौ मुखमग्निः। जिह्वा सरस्वती। ग्रीवायां तु बृहस्पतिः। स्तनयोर्वसवोऽष्टौ। बाह्वोर्मरुतः। हृदये पर्जन्यः। आकाशमुदरम्।

नाभावन्तरिक्षम्। कट्योरिन्द्राग्नी। जघने विज्ञानधनः प्रजापतिः। कैलाशमलये उरः। विश्वेदेवा जान्वोः। जङ्घायां कौशिकः। गुह्यमयने। ऊरू पितरः। पादौ पृथ्वी। वनस्पतयोऽङ्गुलिषु। ऋषयो रोमाणि। नखानि मुहूर्त्तानि। अस्थिषु ग्रहाः। असृङ्मांसम् ऋतवः। संवत्सरा वै निमिषम्। अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमाः। प्रवरां दिव्यां गायत्रीं सहस्त्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः। ॐ तत्पूर्वा जयाय नमः। तत्प्रातरादित्याय नमः। तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायै नमः।

प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातरधीयानोऽपापो भवति। सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति। सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। अवाच्यवचनात् पूतो भवति। अभक्ष्य भक्षणात् पूतो भवति। अभोज्य भोजनात् पूतो भवति। अचोष्य चोषणात् पूतो भवति। असाध्य साधनात् पूतो भवति। दुष्प्रतिग्रह शतसहस्त्रात् पूतो भवति। सर्वप्रतिग्रहात् पूतो भवति। पंक्तिदूषणात् पूतो भवति। अनृतवचनात् पूतो भवति। अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति। अनेन हृदयेनाऽधीतेन ऋतुसहस्त्रेणेष्टं भवति। पुष्टि शत सहस्त्रगायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयेत्। तस्य सिद्धिर्भवति।

य इदं नित्यमधीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यते, इति। ब्रह्मलोके महीयते। इत्याह भगवान् श्रीनारायणः।

❑❑

१५

गायत्री मंत्र रहस्य

गायत्री का प्रत्येक मंत्र उससे संबंधित देवता की सामूहिक शक्ति का पुंजीभूत रूप है। भगवान् के अवतारों की शक्ति भी इनमें सन्निहित है। मंत्रवेत्ता महर्षियों ने सामान्य पाठक (साधक) की सुविधा के लिए प्रत्येक देवता की तुष्टि हेतु मंत्र को पृथक-पृथक रूपों में व्यक्त करके यह सुविधा प्रदान कर दी है। मंत्र-जप के द्वारा देवता को प्रसन्न कर साधक अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति कर सकता है। किसी भी मंत्र को प्रतिदिन जपकर लाभ उठाया जा सकता है।

❑ *ब्रह्मगायत्रीमन्त्र:*

ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।

❑ *विष्णुगायत्रीमन्त्र:*

ॐ श्रीविष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

ॐ त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे आत्मारामाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

❑ *शिवगायत्रीमन्त्र:*

ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि। तन्नः शिवः प्रचोदयात्।

ॐ सं सं सं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ शिवाय नमः।

❑ *नारायणगायत्रीमन्त्र:*

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमन्नारायणाय नमः।

❑ *रामगायत्रीमन्त्र:*

ॐ दाशरथये विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्।

ॐ ह्रीं ह्रीं रां रामाय नमः।

ॐ जानकीकान्त तारक रां रामाय नमः इति रामतारकमन्त्रः।

❑ *जानकीगायत्रीमन्त्र:*

ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि। तन्नः सीता प्रचोदयात्।

ॐ सीं सीतायै नमः ।

❑ *लक्ष्मणगायत्रीमन्त्रः*

ॐ दाशरथये विद्महे अलबेलाय धीमहि। तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्।

ॐ ह्रां ह्रीं रां रां लं लक्ष्मणाय नमः ।

❑ *हनुमद्गायत्रीमन्त्रः*

ॐ अञ्जनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः।

❑ *बगलामुखीगायत्रीमन्त्रः*

ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *मातङ्गीगायत्रीमन्त्रः*

ॐ मातङ्ग्यै च विद्महे उच्छिष्टचाण्डाल्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *महिषमर्दिनीगायत्री मन्त्रः*

ॐ महिषमर्दिन्यै विद्महे दुर्गायै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *त्वरितागायत्रीमन्त्रः*

ॐ त्वरितादेव्यै विद्महे महानित्यायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *गङ्गागायत्रीमन्त्रः*

ॐ भगीरथ्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो गङ्गा प्रचोदयात्।

❑ *वेदाधिकाररहितानां गायत्रीमन्त्रः*

ह्रीं यो देवः सविताऽस्माकं मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः ।
प्रचोदयति तत् भर्गो वरेण्यं समुपास्महे ॥

❑ *लक्ष्मीगायत्रीमन्त्रः*

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

ॐ क्लीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीदेव्यै नमः ।

❑ *सरस्वतीगायत्रीमन्त्रः*

ॐ ऐं वाग्देव्यै च विद्महे कामराजाय धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *हंसगायत्रीमन्त्रः*

ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्त्वाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

ॐ सोऽहं सोऽहं परोरजसे सावदोम्।

❑ *राधिकागायत्रीमन्त्रः*

ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि। तन्नो राधिका प्रचोदयात्।

ॐ रां राधिकायै नमः ।

❑ *परशुरामगायत्रीमन्त्र:*

ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि। तन्नः परशुरामः प्रचोदयात्।

ॐ रां रां ॐ रां रां ॐ परशुहस्ताय नमः।

❑ *रुद्रगायत्रीमन्त्र:*

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

❑ *दक्षिणामूर्तिगायत्रीमन्त्र:*

ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि। तन्नो धीशः प्रचोदयात्।

❑ *गौरीगायत्री मन्त्र:*

ॐ सुभगायै च विद्महे काममालायै धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्।

ॐ क्लीं ॐ गौं गौरीभ्यो नमः।

❑ *गणेशगायत्रीमन्त्र:*

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

❑ *नृसिंहगायत्रीमन्त्र:*

उग्रनृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि। तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्।

वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात्।

ॐ नृं नृं नृं नृसिंहाय नमः।

❑ *हयग्रीवगायत्रीमन्त्र:*

ॐ वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

❑ *कालीगायत्रीमन्त्र:*

ॐ कालिकायै च विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि। तन्नोऽघोरा प्रचोदयात्।

❑ *तारागायत्रीमन्त्र:*

ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी) गायत्रीमन्त्र:*

ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि।

सौस्तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

❑ *बालागायत्रीमन्त्र:*

ॐ ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि

सौस्तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

❑ *चन्द्रगायत्रीमन्त्र:*

ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्त्वाय धीमहि। तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात्।

ॐ चन्द्र त्वां चन्द्रेण क्रीणामि शुक्रेण मृतममृतेन गोरस्मोरते चन्द्राणि।

❑ *भौमगायत्रीमन्त्र:*

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि। तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

ॐ अङ्गारकाय नमः।

❑ *आकाशगायत्रीमन्त्रः*

ॐ आकाशाय च विद्महे नमो देवाय धीमहि। तन्नो गगनं प्रचोदयात्।

ॐ गं गं ॐ नं नं ॐ आं आं ॐ गगनाय नमः।

❑ *वायुगायत्रीमन्त्रः*

ॐ पवनपुरुषाय विद्महे सहस्त्रमूर्तये च धीमहि। तन्नो वायुः प्रचोदयात्।

ॐ पं पं ॐ वां वां ॐ युं युं ॐ पवनपुरुषाय नमः।

❑ *इन्द्रगायत्रीमन्त्रः*

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि। तन्न इन्द्रः प्रचोदयात्।

❑ *भुवनेश्वरीगायत्रीमन्त्रः*

ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *भैरवीगायत्रीमन्त्रः*

ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *छिन्नमस्तागायत्रीमन्त्रः*

ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

❑ *धूमावतीगायत्रीमन्त्रः*

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि। तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

❑ *गुरुगायत्रीमन्त्रः*

ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहि। तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

अथवा

ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

ॐ हुं सं क्रां सौः गुरुदेवपरमात्मने नमः।

❑ *शुक्रगायत्रीमन्त्रः*

ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

❑ *शनिगायत्रीमन्त्रः*

ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि। तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

❑ *राहुगायत्रीमन्त्रः*

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि। तन्नः राहुः प्रचोदयात्।

❑ *केतुगायत्रीमन्त्रः*

ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

❑ *शक्तिगायत्रीमन्त्रः*

ॐ सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि। तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

❑ *दुर्गागायत्रीमन्त्र:*

ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

❑ *जयदुर्गागायत्रीमन्त्र:*

ॐ नारायण्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्।

❑ *अन्नपूर्णागायत्रीमन्त्र:*

ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि। तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात्।

❑ *यन्त्रगायत्रीमन्त्र:*

यन्त्रराजाय विद्महे वरप्रदाय धीमहि। तन्नो यन्त्र: प्रचोदयात्।

❑ *पृथ्वीगायत्रीमन्त्र:*

ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे सहस्त्रमूर्त्यै च धीमहि। तन्नो मही प्रचोदयात्।

ॐ भूरसि भूतादिरसि विश्वस्य धाया भुवनस्य माहिठं। सीर्नमः।

❑ *अग्निगायत्रीमन्त्र:*

ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमध्याय धीमहि। तन्नोऽग्नि: प्रचोदयात्।

ॐ अं अं अग्नये नमः।

❑ *जलगायत्रीमन्त्र:*

ॐ जलबिम्बाय विद्‌महे नीलपुरुषाय धीमहि। तन्नस्त्वम्बु प्रचोदयात्।

ॐ जं जं ॐ वं वं ॐ लं लं जलबिम्बाय नमः।

❑ *बुधगायत्रीमन्त्र:*

ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

❑ *गोपालगायत्रीमन्त्र:*

ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि। तन्नो गोपाल: प्रचोदयात्।

ॐ गोपालाय गोचराय वंशशब्दाय नमो नमः।

❑ *तुलसीगायत्री मन्त्र:*

ॐ श्रीत्रिपुराय विद्महे तुलसीपत्राय धीमहि। तन्नस्तुलसी प्रचोदयात्।

❑ *देवीगायत्री मन्त्र:*

ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्तयै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

ॐ ह्रां श्रीं क्लीं नमः।

❑ *षण्मुखगायत्रीमन्त्र:*

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्।

❑ *नन्दीगायत्रीमन्त्र:*

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दि: प्रचोदयात्।

❑ *सूर्यगायत्रीमन्त्रः*

ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ विष्णुतेजसे ज्वालामणिकुण्डलाय स्वाहा।

❑ *कामगायत्रीमन्त्रः*

ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि। तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्।

❑ *गरुडगायत्रीमन्त्रः*

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुपर्णपर्णाय धीमहि। तन्नो गरुडः प्रचोदयात्।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रैं ग्रौं ग्रः।

❑ *कृष्णगायत्रीमन्त्रः*

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्।

ॐ क्लीं कृष्णाय नमः।

❑❑

१६

गायत्री पूजन विधि

गायत्री पूजन के लिए सर्वप्रथम साधक को कुशासन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठना चाहिए, स्वच्छ लोटे में जल भरकर पास रखना चाहिए तथा—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरो शुचिः॥

इस मन्त्र से अपने शरीर पर जल छिड़क कर भगवती श्रीगायत्री की मूर्ति के सामने हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लेकर संकल्प करें।

ॐ तत्सदद्य मासानां मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं समस्ताऽरिष्ट-निरसनपूर्वकमाधि दैविका-ऽऽधिभौतिकाऽऽध्यात्मिक त्रिविध पाप तापोपशमनार्थं सकल कामनासिद्ध्यर्थं च श्रीसवितादेवताप्रीतये गायत्रीपूजनं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दें।

पश्चात् रक्तपुष्पं गृहीत्वा, गायत्रीदेव्या ध्यानं कुर्यात्—

ध्यानम्

मुक्ता विद्रुम हेम नील धवलच्छायैर्मुखैस्तीक्षणै-
र्युक्तामिन्दु निबद्ध रत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाऽभ्याङ्कुश कशां शूलं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथार बिन्दु युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, ध्यानं समर्पयामि।

तत्पश्चात् दाहिने हाथ में लाल फूल लेकर 'मुक्ताविद्रुम.' श्लोक पढ़कर भगवती गायत्री देवी का ध्यान करें।

आवाहनम्

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिꣳ, सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥
आयाहि वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रि छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥

जगन्मयत्वं च तथा ह्यजत्वं लोके प्रसिद्धं तव देवि जाने।
तथापि मूर्तौ हृदयारविन्दावावाहनं ते जननि प्रकुर्वे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि।

'ॐ सहस्रशीर्षा.' अथवा 'आयाहि वरदे देवि.' श्लोक पढ़कर भगवती गायत्री देवी का आवाहन करें।

आसनम्

ॐ पुरुष ॐएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
अस्मिन् वरे स्वासनपीठयुक्ते सौवर्णवर्णे कुशकम्बलाढ्ये।
त्वं तिष्ठ चाऽस्मत्सुमुखी दयार्द्रे यावत् समर्चां तव देवि कुर्वे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए आसन या अभाव में अक्षत चढ़ाएं।

पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्याऽमृतं दिवि॥
श्यामाक दूर्वाऽब्ज पदार्थमिश्रं पाद्यं मया ते पदयोः प्रयुक्तम्।
मातस्तथैवाशु ममाऽपि नित्यं ते पादयोरस्त्वनिशं निवासः॥
यद्भक्ति लेश सम्पर्कात् परमानन्दसम्भवे।
भवत्यानन्द सम्प्राप्तिस्तस्यै पाद्यं प्रकल्पये॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

इस मन्त्र से भगवती गायत्री देवी के लिए जल चढ़ाएं।

अर्घ्यम्

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥
दर्भाग्र दूर्वा तिल सर्षपाणि प्रक्षिप्य मातः कृतमर्घपात्रम्।
तस्माच्च ते मूर्ध्नि मया कराभ्यां संदीयते चाऽर्घजलं गृहाण॥
तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
तापत्रययुते शीर्ष्णि तवाऽर्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

इससे भगवती गायत्री देवी के लिए अर्घ्य अर्पण करें।

आचमनम्

ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥
श्रीसंज्ञकं काल लवङ्गमिश्रं सुस्वादु तत्तद् द्रवयुक्तशुद्धम्।
सम्मन्त्रितं वैदिकमन्त्रकैस्तद् गायत्रि देव्याचमनं गृहाण॥
वेदानामपि वेद्यायै देवानां देवतात्मने।
मया ह्याचमनं दत्तं गृहाण जगदीश्वरि॥

ॐभूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

इससे आचमन के लिए जल दें।

मधुपर्कः

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमठ. रूपमन्नाद्यम्।
तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण
रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि॥
कनक घटित पात्रे वेदमन्त्रैस्त्वदर्थं
दधि मधु घृतमाषान् देवि कृत्वा सुमिश्रान्।
अमृतमयमिदं त्वद् दृष्टिपातेन कृत्वा
भगवति मधुपर्कं दीयमानं गृहाण॥
सर्वकालुष्यहीनायै परिपूर्णसुखात्मने।
मधुपर्कमिदं तुभ्यं देवि दत्तं प्रसीद च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

इस मन्त्र से गायत्री देवी के लिए मधुपर्क चढ़ाएं।

मधुपर्कान्ते आचमनीयं समर्पयामि भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः।

मधुपर्क के बाद आचमन कराएं।

पञ्चामृतस्नानम्

पयः स्नानम्

पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
येन क्रियन्ते सकलाः क्रिया वै यज्ञस्य होमादिविधौ प्रयुक्ताः।
तृप्तानि भूतानि तथा भवन्ति स्नानाय तद्दुग्धमहं ददामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए दुग्ध-स्नान कराएं।

दधि स्नानम्

ॐ दधि क्राब्णोऽकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥

स्वच्छं च शुद्धं शशिना समप्रभं
ह्याम्लं च किञ्चिन्मधुरं मनोहरम्।
स्नानाय तुभ्यं दधि देवि दत्तं
ह्यङ्गी कुरु त्वं परिवारयुक्ता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानम्, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को दही से स्नान कराएं।

घृतस्नानम्

ॐ घृतेनाञ्जन्सम्पृथोदेवयानान् प्रजानन्त्वाज्यप्येतृ देवान्।
अनुत्वासप्तेप्रदिशः सचन्ताठं. स्वधामस्मै यजमानाय धेहि॥

हव्यानि यस्मात् प्रभवन्ति लोके
निवर्त्यतेऽग्नौ हवनं च येन।
तृप्ताश्च येन द्विजदेवतात्मा
दास्यै घृतं तत्स्नपनाय देवि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, घृतस्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदकस्नानं, पश्चात् आचमनीयं च समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को घृतस्नान कराएं।

मधुस्नानम्

ॐ स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्वदिवः सठं. स्पृशस्पाहि।
मधु मधु मधु॥

पुष्पेभ्य आदाय रसान् समग्रान्
एकीकृतं यन्मधुमक्षिकाभिः।
तत्स्वादु तुभ्यं मधुरं वरेण्यं
स्नानाय दास्ये मधु देवि मातः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं तदन्ते आचमनीयं च समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को मधु से स्नान कराएं।

शर्करास्नानम्

ॐ अपाᳬं रसमद्वयसᳬं सूर्ये सन्तः समाहितम्। अपाᳬं रसस्य यो रसस्तम्वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

अन्नानि मिष्टानि यया भवन्ति
तृप्तिं तथा भूतगणा लभन्ते।
तां शर्करां देवि शशिप्रभाभां
स्नानाय दत्तां मधुरां गृहाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदकस्नानम् आचमनीयं च समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को शक्कर से स्नान कराएं। पश्चात् शुद्धोदक स्नान तथा आचमन कराएं।

गन्धोदकस्नानम्

ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।

सौगन्ध्ययुक्तं द्रवद्रव्यजातं घृष्टं च काश्मीरक कस्तुरीभिः।
गन्धोदकं तुभ्यमिदं प्रदत्तं स्नानार्थमङ्गीकुरु देवि मातः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदकस्नानम् आचमनीयं च समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए गन्धोदक से स्नान कराएं।

उद्वर्तन (उबटन) स्नानम्

ॐ ᳬं शुना ते ᳬं शुः पृच्यतां परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः॥
तैलं समाकृष्य कृतं तिलेभ्यः
पुष्पाणि निक्षिप्य सुवासितानि।
स्नेहं गृहाण स्नपनाय देवि
स्नेहेन चास्मानवलोकयाशु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, तैलोद्वर्तनस्नानं समर्पयामि। उद्वर्तनस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। तदन्ते शुद्धोदकस्नानम् आचमनीयं च समर्पयामि।

रजनी सहदेवी च शिरीषो लक्ष्मणाऽपि च।
सदा भद्रा कुशाग्राणि उद्वर्तनमिहोच्यते॥

इस मन्त्र से गायत्री देवी को उद्वर्तन स्नान कराएं।

पादुकार्पणम्

उपास्य यस्याश्चरणौ सुरेशः स्वर्गस्य लक्ष्मी बुभुजे सुखेन।
भक्तयैव जन्तुः प्रभवेद्वराढ्यस्ते पादुके त्वं पदयोर्गृहाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, चरणयोः पादुके समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए पादुका अर्पण करें।

वस्त्रोपवस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्मवरूथमासदत्स्वः।
वासोऽग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व विभावसो॥
विचित्रवर्णं ह्युपवस्त्रयुक्तं कौशेयकं चारुनवं मनोहरम्।
गायत्रि संवीक्ष्य मदीय शक्तिं वस्त्रं गृहाणाशु मयाऽर्पितं ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, उपवस्त्रसहितं वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए साड़ी तथा ओढ़नी चढ़ाएं।

अलङ्कारान्

कङ्कणम्

माणिक्य मुक्ता मणिखण्डयुक्ते सुवर्णकारेण च संस्कृते ये।
ते किङ्किणीभिः स्वरिते सुवर्णे मयाऽर्पिते देवि गृहाण कङ्कणे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, हस्तयोः कङ्कणे समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को कंकण (कंगन या कड़ा) अर्पण करें।

कर्णभूषणम्

ययोः शुभान्याखचितानि मातर्माणिक्यखण्डानि सुशोभनानि।
ताटङ्कयुग्मे कनकस्य कृत्वा मयाऽर्पिते देवि गृहाण चैते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, कर्णयोः कुण्डले समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए कान का बाला चढ़ाएं।

हार :

मातस्त्वदर्थं मणिमौक्तिकाभिः कृतं मनोज्ञं कलकण्ठभूषणम्।
मयैव कण्ठे तव देवि चाऽर्पितं ग्रैवेयकं नाम गृहाण भूषणम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, कण्ठे ग्रैवेयकं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए गले का हार चढ़ाएं।

अंगुदम्

हेम्ना कृतं ह्यङ्गदयुग्मकं च मनोहरं सुन्दरचित्रयुक्तम्।
बाह्वोर्गृहाणाशु मयाऽर्पितं ते मनोज्ञमाभूषण भूषणोत्तमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, बाह्वोः अङ्गदे समर्पयामि।

इससे बांह का आभूषण (बाजूबन्द) अर्पण करें।

अंगुलीयम्

प्रबाल गोमेदमयैश्च रत्नैः कृतां तथा हेममयां मनोहराम्।
तस्यां कुरु त्वं मुखवीक्षणं च गृहाण देव्याङ्गुलिमुद्रिकां च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, करयोरङ्गुलिमुद्रिकां समर्पयामि।

इस श्लोक को पढ़कर गायत्री देवी के लिए अंगूठी चढ़ाएं।

कटिभूषणम्

काञ्चीं शुभां हाटकनिर्मितां मया त्रैलोक्यमातः कटिभूषणाय।
दत्तां यथेमां त्वमजे च धत्से ह्युद्धर्तुमस्मान् वह मातृगर्भात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, कटिदेशे काञ्चीं समर्पयामि।

नूपुरम्

सुसुन्दरे हारकनिर्मिते द्वे पादाङ्गदे नूपुरनामधेये।
गृहाण मातः पदयोः प्रदत्ते सुकिङ्किणीभिश्च विराजिते ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, पादयोः नूपुरे समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए पैर का छागल अर्पण करें।

मुकुटम्

मातस्तवेमं मुकुटं हरिन्मणि प्रवाल मुक्तामणिभि र्विराजितम्।
गारुत्मतैश्चापि मनोहरं कृतं गृहाण मातः शिरसो विभूषणम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, शिरसि मुकुटं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए शिर का मुकुट चढ़ाएं।

गन्धम्

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥
गन्धं सुगन्धं मृगनाभिवासितं तथैव काश्मीरक चूर्णमिश्रितान्।
भाले त्वदीये जगदम्ब चाऽर्पितं तथा त्वमङ्गी कुरु वेदगर्भे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, भाले गन्धं समर्पयामि।

इस मन्त्र को पढ़कर गायत्री देवी के लिए चन्दन चढ़ाएं।

कुंकुमम्

जातीपुष्पसमं रक्तं मुखकान्तिविवर्धकम्।
कुङ्कुमं रक्तवर्णं ते देवि भाले ददाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, भाले कुङ्कुमं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को कुंकुम (रोरी) चढ़ाएं।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी॥
क्षतैर्विहीनान् सितवर्णयुक्तान् तथा सुहव्ये प्रथितान् श्रुतौ च।
त्वमक्षतान् तानुररीकुरुष्व भाले त्वदीये शुभदेऽर्पयामि॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को अक्षत चढ़ाएं।

पुष्पम्

ॐ ओषधीः प्रतिमोददध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥
पुष्पाणि रक्तानि सिताब्ज जाती जपा करीर प्रभृतीनि देवि।
गृहाण मातः कुरु सार्द्रदृष्टिं यथा मयाऽऽप्तानि तथाऽर्पितानि॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को पुष्प चढ़ाएं।

पुष्पमालाम्

शुभ्रैश्च पीतैः कुसुमैरनेकैः रक्तैस्तथाऽनेक-सुवर्णयुक्तैः।
कृतां त्वदर्थं च मया युगाभ्यां गृहाण कण्ठे विनिवेदितां तव॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को फूल की माला चढ़ाएं।

सिन्दूरम्

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्यायाहेतिं परिबाधमानाः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान् पुमाꣳस सम्परिपातु विश्वतः॥
श्वेतं तथा रक्तमहं गुलालं सौभाग्यलाभाय तथा हरिद्राम्।
भाले तवाऽम्ब स्वकरेण देवि सिन्दूरबिन्दुं ह्यपि वै ददामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, सौभाग्यपरिमल-द्रव्याणि समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए सौभाग्य द्रव्य तथा सिन्दूर चढ़ाएं।

कज्जलम्

चाम्पेय कर्पूरक चन्दनादिकै र्नानाविधैर्गन्धचयैः सुवासितम्।
नेत्राञ्जनार्थाय हरिन्मणिप्रभं गायत्रि हे स्वीकुरु कज्जलं शुभम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, अक्षिभ्यां कज्जलं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए काजल अर्पण करें।

अत्तरम्

मातस्त्वदर्थं तु सुवासितेभ्यः पुष्पेभ्य आकृष्य कृतं मनोहरम्।
तैलं तवाङ्गेषु विलेपनार्थं लोके ददाम्यत्तरनामधेयम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, अङ्गेषु विलेपनार्थम् अत्तरं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी को अत्तर चढ़ाएं।

धूपम्

दशाङ्गधूपं तव रञ्जनार्थं नाशाय मे विघ्नविधायकानाम्।
दत्तं मया सौरभचूर्णयुक्तं गृहाण मातस्तव सन्निधौ च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, धूपं निवेदयामि।

इससे धूप दिखाएं।

दीपम्

सुप्रकाशो महातेजाः सर्वत्र तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, दीपं दर्शयामि।

इससे गायत्री देवी को दीप दिखाएं।

नैवेद्य फलं च

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥
सत्पात्रस्थं सुनैवेद्यं विविधानेकभक्षणम्।
निवेदयामि देवेशि सानुगायै गृहाण तत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, नैवेद्यं फलं च निवेदयामि। तदन्ते आचमनीयं च समर्पयामि।

इससे नैवेद्य तथा फल निवेदन करे। पश्चात् आचमन कराएं।

ताम्बूलम्

कर्पूर जातीफल जायकेन ह्येला लवङ्गेन समन्वितेन।
मया प्रदत्तं मुखवासनार्थं ताम्बूलमङ्गी कुरु मातरेतत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, मुखवासार्थम् एलालवङ्गादिभिर्युतं ताम्बूलं समर्पयामि।

इससे भगवती गायत्री देवी के लिए पान का बीड़ा अर्पण करें।

पूगीफलम्

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मञ्चन्त्व ँ हसः॥
भगवति तव भक्तिर्जायतां मानसे मे
जगति तव कृपाया भाजनं स्यां सदाऽहम्।
इति मम खलु मातः केवला ह्यन्तिमेच्छा
त्रमुकमिदमपि त्वां ह्यर्पये तत्फलाय॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, पूगीफलं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए पूगीफल (सोपाड़ी) चढ़ाएं।

दक्षिणाम्

तव जननि जगत्यां विद्यते कार्यजातं
तव चरणकृपातः प्राप्यते सर्वमेतत्।
भगवति किमकुर्यां नास्ति किञ्चिन्मदीयं
कथय जगति का ते दक्षिणामर्पयामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

इससे दक्षिणा चढ़ाएं।

राजोपचारान्

छत्रम्

कनकमयमिदं ते देवि रम्यं सुछत्रं
खचितमपि सुवर्णैः सर्वतो रत्नखण्डैः।
जयतु जयतु रावैः शब्दितं किङ्किणीनां
शिरसि जननि दत्तं दण्डयुक्तं गृहाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, छत्रं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए छत्र देवें।

चामरे

श्वेतैः शिरोजैश्चमरीमृगाणां बालैः सुसूक्ष्मैर्मृदुभिः कृते ये।
ताभ्यां सुवर्णाकृति दण्डयुग्भ्यां त्वां चामराभ्यां परिवीजयामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, चामरे समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए चंवर देवें।

आदर्शम्

देव्यर्पितस्ते मुकुरः सुचारुः
श्वेतस्तथा हाटकदण्डयुक्तः।
पूर्णेन्दुवत् पूर्णकला समेत-
स्तस्मिन् समालोकय मातरास्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, आदर्शं समर्पयामि॥

इससे गायत्री देवी को दर्पण (शीशा) दिखाएं।

तालवृन्तम्

रौप्येण दण्डेन युतने शब्दैर्युक्तेन वै रौप्यसुकिङ्किणीनाम्।
सुतालवृत्तेन तवाङ्गकानि मातः सुमन्दं परिवीजयामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, तालवृन्तं समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी के लिए ताड़ का पंखा अर्पण करें।

आरार्तिक्यम्

इद ँ हविः प्रजननं मेऽअस्तु दशवीरः सर्वगण ँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि॥
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतोऽअस्मासु धत्त।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

इससे भगवती श्री गायत्री देवी के लिए आरती दिखाएं।

मन्त्र-पुष्पाञ्जलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वेश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुषां तदा परार्धात् समुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत् त्रैर्द्यावा भूमिं जनयन् देव एकः।

मुक्ता विद्रुम हेम नील धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्ध रत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाऽभयाङ्कुश कशां शूलं कपालं गुणं।
शंङ्ख चक्रमथारविन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥
जानामि पूजनमहं न हि शास्त्रमिद्धं
शक्तिस्तु ते परिचिता मम सर्वतश्च।
पुष्पाञ्ललिर्जननि यश्चरणाब्जयोस्ते
संदीयते परिगृहाण विसृज्य दोषान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

उपर्युक्त मन्त्र से गायत्री देवी के लिए मन्त्र-पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।

प्रदक्षिणाम्

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्॥
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि फलं ददाति।
तां सर्वपापक्षय हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

इससे गायत्री देवी की प्रदक्षिणा करें।

गायत्री-मन्त्रजप:

ततो यथाशक्ति गायत्रीमन्त्रम् अष्टोत्तरशतम् अष्टाविंशतिवारं दशवारं वा जपेत्।

इसके बाद यथाशक्ति—एक सौ आठ, अट्ठाईस तथा दश बार गायत्री का जप करें।

तत्पश्चात् सामान्यार्घोदकं गृहीत्वा,
गुह्याऽतिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

अनेन यथाशक्ति भगवत्याः श्रीगायत्रीदेव्याः प्रीतये गायत्रीमूल मन्त्रस्य कृतेन जपकर्मणा भगवती श्रीगायत्रीदेवी प्रीयतां न मम। इति जलं भगवत्याः श्री गायत्रीदेव्या वामकरे समर्प्य, स्तोत्र-पाठादिकं कुर्यात्।

इसके बाद अर्घ्य-जल लेकर, 'गुह्यातिगुह्य' से लेकर 'प्रीयतां न मम' तक पढ़कर भगवती श्रीगायत्री देवी को अर्घ्य समर्पण कर, स्तोत्र और कवच आदि का पाठ करें।

❑❑

१७

गायत्री पुरश्चरण पद्धति

प्रत्येक मंत्र की सिद्धि पाने के लिए किया गया अनुष्ठान ही 'पुरश्चरण' कहलाता है। गायत्री मंत्र का फल पाने के लिए भी पुरश्चरण अनिवार्य है। नित्य त्रिकाल देवपूजन, जप, तर्पण, होम तथा ब्राह्मण भोजन—इन पांच क्रियाओं को पुरश्चरण कहते हैं। जितनी संख्या में मंत्र का जप किया जाए, उसका दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन—इसको पुरश्चरण कहते हैं।

पर्वत पर, नदी-तट, बेल की छाया, तालाब, गोशाला, देवालय, पीपल-वृक्ष, उद्यान, तुलसीवन, पुण्यक्षेत्र, गुरु के सन्निकट तथा जहां मन को एकाग्र रखा जा सके—ऐसे स्थलों में मंत्रफल की सिद्धि के लिए किया गया अनुष्ठान निश्चय ही फलप्रद होता है। किन्तु अनुष्ठान से पूर्व साधक की शरीर-शुद्धि परम आवश्यक है।

विद्वान व्यक्ति को अपने शरीर की शुद्धि के लिए वेदोक्त गायत्री मंत्र का कम-से-कम तीन लाख या आठ लाख या चौबीस लाख जप करे। शरीर-शुद्धि के साथ-साथ अन्न-शुद्धि का भी ध्यान रखना चाहिए। शुद्ध अन्न निम्न चार प्रकार का होता है—

- ❑ अयाचित (बिना मांगा हुआ)
- ❑ उंछ (खेत में गिरे हुए दाने का कण-कण रूप-से संग्रह)
- ❑ शुक्ल (अपने परिश्रम की गाढ़ी कमाई से प्राप्त)
- ❑ भिक्षा (भीख मांगकर प्राप्त किया)

इस प्रकार प्राप्त हुए अन्न की शुद्धि तांत्रिक तथा वैदिक विधियों के अनुसार करनी चाहिए, क्योंकि अन्न के अनुसार ही मनुष्य कर्म करता है और उस कर्म के अनुसार ही बुद्धि का निर्माण होता है।

तपस्वी ब्राह्मण को चाहिए कि वो ब्राह्मण के अतिरिक्त, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों का अन्न भिक्षा में ग्रहण न करे। पुरश्चरण में तो मांसादि के स्पर्श मात्र से ही तपस्या नष्ट हो जाती है।

भिक्षा में प्राप्त हुए अन्न के चार भाग करने चाहिए। पहला भाग ब्राह्मण का, दूसरा भाग गाय का, तीसरा भाग अतिथि का तथा चौथे भाग का भोजन साधक स्वयं उदरस्थ करे।

आहार-नियम:

अशक्तो वाऽपि शक्तो वा आहारे नियते कृते।
षणमासे तस्य सिद्धिः स्याद् गुरुभक्तिरतः सदा॥
एकाहं पञ्चगव्याशी ह्येकाहं मारुताशनः।
एकाहं ब्राह्मणान्नाशी गायत्रीजपकर्मणि॥

गायत्री-पुरश्चरण कर्म में नियुक्त तपस्वी चाहे समर्थ हो अथवा असमर्थ, यदि वह आहार का नियम-पालन कर गुरु भक्ति में लगा हो तो छह महीने में ही उसको सिद्धि प्राप्त हो सकती है, किन्तु गायत्री जप रूप कर्म में एक पंचगव्य पीकर, दूसरे दिन केवल वायु के आहार पर और तीसरे दिन ब्राह्मण का अन्न खाकर उसे गायत्री-पुरश्चरण करना चाहिए।

जप का फल:

स्नात्वा तु शतगायत्र्या शतमन्तर्जले जपेत्।
शतेनापस्ततः पीत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
चान्द्रायणादि कृच्छ्रस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम्॥

स्नान करते समय एक सौ गायत्री का जप करें। इस प्रकार जल के भीतर आचमन करते हुए एक सौ गायत्री का जप करें। इस प्रकार के जप से चांद्रायण तथा कृच्छ्र सांतपन का फल निश्चित होता है।

यदा लोकैषणा त्यक्तुं न शक्यते तदर्थोऽयं विधिरुच्यते।
क्षीराहारी फलाशी वा शाकाशी हविष्यभुक्॥
भिक्षाशी वा जपेद्यत्तत् कृच्छ्रचान्द्रसमं भवेत्॥

जब लौकिक वस्तुओं का त्याग संभव न हो तो ऐसा करने से अवश्य ही लोकैषणा छूट जाती है। मनुष्य दूध पीकर फल, शाक, हविष्यान्न (यवादि) तथा मिष्ठान्न का भोजन कर यदि गायत्री का जप करे, तो वह निश्चय ही कृच्छ्रचांद्रायणादि व्रत के समान फल प्राप्त करता है।

लवणं क्षारमाम्लं च गृञ्जनादि निषेधितम्।
ताम्बूलं च द्विभुक्तिं च दुष्टवासं प्रमत्तताम्॥
श्रुति स्मृति विरोधं च जपं रात्रो विवर्जयेत्।
श्राद्धादेरनुरोधेन जपं यदि त्यजेन्नरः॥
स भवेद् देवताद्रोही पितृन् सप्त नयेदधः॥

नमक, खारा, खट्टा और गाजर आदि (उदरस्थ करना) निषिद्ध हैं। ताम्बूल, दो बार भोजन, दुष्ट मनुष्य का सहवास, पागलपन, श्रुति तथा स्मृतियों का विरोध और रात्रि में जप का निषेध है। यदि श्राद्धादि के कारण पुरश्चरणकर्ता जप का

परित्याग करता है तो वह देवद्रोही होता है और अपनी सात पीढ़ी को नरक में ले जाता है।

धर्मानुष्ठान:

भूशय्या ब्रह्मचारित्वं मौनचर्यास्तथैव च।
नित्यं त्रिषवणं स्नानं क्षुद्रकर्म विवर्जनम्॥
नित्यपूजा नित्यदानमानन्द स्तुति कीर्तनम्।
नैमित्तिकार्चनं चैव विश्वासो गुरु देवयोः॥
जपनिष्ठा द्वादशैते धर्माः स्युर्मन्त्रसिद्धिदाः।
नित्यं सूर्यमुपस्थाय तस्य चाऽभिमुखो जपेत्॥
देवताप्रतिमादौ वा वह्नौ वाऽभ्यर्च्य तन्मुखः।
स्नान पूजा जप ध्यान होम तर्पण तत्परः।
निष्कामो देवतायां च सर्व कर्म निवेदकः॥
एवमादींश्च नियमान् पुरश्चरणकृच्चरेत्॥

भूमि पर सोना, ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करना, मौनव्रत और त्रिकाल स्नान, क्षुद्र कर्मों का त्याग, नित्य पूजा, नित्य दान, आनंदपूर्वक भगवान् की स्तुति-कीर्तन, नैमित्तिक अर्चन, गुरु तथा देवता में विश्वास और जप में श्रद्धा—ये बारह नियम मंत्र तथा धर्म की सिद्धि में सहायक होते हैं। पुरश्चरणकर्ता नित्य सूर्य की प्रदक्षिणा कर, सूर्याभिमुख हो देवता की प्रतिमा अथवा अग्नि में सूर्य का पूजन करे। स्नान, पूजा, जप, ध्यान, होम तथा तर्पणादि कृत्यों में निरंतर लगा रहे और कामना-विरत हो देवता में अपने सभी कर्म का निवेदन करे, यह नित्य के नियम हैं।

वर्ज्यमासादिस्तत्रैव:

ज्येष्ठाऽऽषाढौ भाद्रपदं पौषं तु मलमासकम्।
अङ्गारशनिवारौ तु व्यतिपातं च वैधृतिम्॥
अष्टमीं नवमीं षष्ठीं चतुर्थीं च त्रयोदशीम्।
चतुर्दशीममावास्यां प्रदोषं च तथा निशि॥
यमाऽग्नि रुद्र सार्पेन्द्र वसु श्रवण जन्मभम्।
मेष कर्क तुला कुम्भ मकराऽलिक लग्नकम्।
सर्वाण्येतानि वर्ज्याणि पुरश्चरणकर्मणि।
सन्ध्या गर्जित निर्घोष भूकम्पोल्का निपातने॥
एतानन्यांश्च दिवसान् स्मृत्युक्तांश्च परित्यजेत्॥

ज्येष्ठ, आषाढ़, भादों, पौष और मलमास (पुरश्चरण आरंभ करने के लिए)

ये महीने वर्ज्य हैं। मंगल तथा शनिवार का दिन, व्यतिपात और वैधृति योग, अष्टमी, नवमी, षष्ठी, चतुर्थी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या, प्रदोष, रात्रिकाल, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, श्रवण तथा जन्मनक्षत्र, मेष, कर्क, तुला, कुंभ, मकर तथा वृश्चिक लग्न—ये सब पुरश्चरण कर्म में वर्जित हैं। सायंकाल, असमय में बादल की गर्जना, भूकंप, उल्कापात तथा स्मृतियों में निषिद्ध मास, तिथि, योग, नक्षत्रादि पुरश्चरण कर्म के आरंभ में वर्जित हैं।

शुभम्, लाभम्, फलम्:

वैशाखे श्रावणे वाऽपि आश्विने कार्तिके तथा।
फाल्गुने मार्गशीर्षे वा मन्त्री कुर्यात् पुरस्क्रियाम्॥
पूर्णिमा पञ्चमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा।
त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ता सर्वकर्मसु॥
गुरु शुक्रोदये शुद्धे लग्ने सद्वार शोधिते।
चन्द्र तारानुकूल्ये च शुक्लपक्षे विशेषतः॥
पुरश्चरणकं कुर्यान्मन्त्रसिद्धिः प्रजायते॥
शिवस्य सन्निधाने च सूर्याग्न्योर्वा गुरोरपि।
दीपश्च ज्वलितस्याऽपि जपकर्म प्रशस्यते॥
गृहे जपं समं विद्याद् गोष्ठे शतगुणं भवेत्।
नद्यां शतसहस्त्रं स्यादनन्तं शिवसन्निधौ॥
समुद्रतीरे च ह्रदे गिरौ देवालयेषु च।
पुण्याश्रमेषु सर्वेषु जपः कोटिगुर्णो भवेत्॥

वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, फाल्गुन तथा अगहन के महीने पुरश्चरणकर्ता के लिए शुभ (अच्छे) हैं। पूर्णिमा, पंचमी, द्वितीया, सप्तमी, त्रयोदशी तथा दशमी तिथियां पुरश्चरण-कार्य के लिए शुभ हैं। गुरु और शुक्र दोनों का उदय हो, शुद्ध लग्न हो एवं उत्तर वार तथा चंद्रमा और नक्षत्र अनुकूल हों तथा शुक्ल पक्ष हो तो ऐसे समय में पुरश्चरण आरंभ करने से मंत्र की सिद्धि अवश्य होती है। शिवजी के समीप, सूर्य, अग्नि तथा गुरु के समीप अथवा जलते हुए दीपक के पास जप करने से फल की सिद्धि होती है। घर में जप करने से समान फल, गोशाला में जप करने से उसका सौ गुना, नदी के तट पर लाख गुना तथा शिव के समक्ष (किसी शिवमंदिर में) जप करने से अनंत गुना फल होता है। समुद्र का तट, ता़लाब, पर्वत, देवालय तथा सभी पुण्याश्रमों में जप करने से करोड़ गुना फल होता है।

कूर्मचक्रम् :

कूर्मस्यैव मुखं विद्धि दीपस्थानं सुसिद्धिदम्।
चतुरस्त्रं भुवं भित्त्वा काष्ठानां नवकं लिखेत्॥
पूर्वकोष्ठादि विलिखेत् सप्तवर्गान्यनुक्रमात्।
लक्षावीशे मध्यकोष्ठे स्वरान् युग्मक्रमाल्लिखेत्॥
दिक्षु पूर्वादितो यत्र नामस्याद्यक्षरं भवेत्।
मुखं तदाऽस्य जानीयाद्धस्तावुभयतः स्थितौ॥
पृष्ठं कुक्षी उभे पादौ द्वौ शीर्ष्णं पुच्छमीरितम्।
कूर्मं चक्रमिदं प्रोक्तं मन्त्राणां सिद्धिसाधनम्॥

उपरोक्त में किसी एक स्थान पर जपकर्ता समाहित हो, तो उसे सबसे पहले दीप-स्थान का निर्माण करना चाहिए। वह निम्न है—

दीप का स्थान कूर्म (कछुआ) का मुख है, जिससे मंत्र की सिद्धि होती है। समतल भूमि बनाकर, उसमें नवकोण बनाएं। पूर्व कोष्ठ से आरंभ कर क्रमशः क-वर्ग, च-वर्ग, ट-वर्ग, त-वर्ग, प-वर्ग और य-वर्ग आदि लिखें। बीच के मध्य कोष्ठ में दो-दो स्वर (अ-आ एक कोष्ठ) के क्रम से लिखें, फिर पूर्व के क्रम से जहां नाम का आदि अक्षर आता हो, वो ही कूर्म का मुख समझना चाहिए और उसके दोनों बगल में कूर्म का हाथ समझना चाहिए। इसी प्रकार पीठ, कुक्षि, दो पैर, सिर तथा पुच्छ की कल्पना करनी चाहिए। इसे ही 'कूर्मचक्र' कहते हैं, जो संपूर्ण मंत्रों की सिद्धि का साधन है।

कुरुक्षेत्रे प्रयागे च गङ्गा सागर सङ्गमे।
महाकाले च काश्यां च कूर्मस्थानं न चिन्तयेत्॥

कुरुक्षेत्र, प्रयाग, गंगासागर, उज्जैन तथा काशी में कूर्म-स्थान के बिना भी कार्य किया जा सकता है।

आसन :

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि र्मोक्षश्री व्याघ्रचर्मणि।
स्यात् पौष्टिकं च कौशेयं शान्तिकं वेत्रविष्टरम्॥
वंशासने व्याधिनाशः कम्बले दुःखमोचनम्।
सर्वाभावे त्वासनार्थं कुशविष्टरमिष्यते॥

कृष्ण मृगचर्म पर जप करने से ज्ञान, व्याघ्रचर्म पर मोक्ष, कुशासन पर पुष्टि, वेत्रासन पर शान्ति, वंगासन पर व्याधिनाश तथा कम्बल पर बैठकर जप करने से दुःख का विनाश होता है। किन्तु उपर्युक्त सभी प्रकार के आसनों के अभाव में कुशासन ही श्रेयस्कर एवं कल्याणकारक है।

रुद्राक्षः श्वेतपद्माक्षमाले तु अखिले जपेत्।
अतिस्थूलोऽतिसूक्ष्मश्च स्फुटितोभं गुरुर्लघुः॥
भिन्नः पुरा धृतो जीर्णो रुद्राक्षो वरदः स्मृतः।
अष्टोत्तरशतैर्माला प्रशस्ता सर्वकर्मसु॥
गुरुं प्रकाशयेद् धीमान् मन्त्रं नैव प्रकाशयेत्।
अथ मालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत्॥

रुद्राक्ष तथा श्वेत कमल की माला से सभी प्रकार का जप किया जा सकता है, चाहे वो अतिस्थूल, अतिसूक्ष्म, फटा हुआ या छोटा-बड़ा जैसा भी हो। रुद्राक्ष जीर्ण, फूटा हुआ भी हो तो जप-कर्म में प्रशस्त है। इस प्रकार की माला 108 दाने से युक्त होनी चाहिए। गुरु को माला संख्या दिखाई जा सकती है, किन्तु मंत्र का प्रकाश नहीं करना चाहिए, क्योंकि माला तथा जप की मुद्रा गुप्त रखनी चाहिए, यहां तक कि गुरु को भी नहीं दिखानी चाहिए।

माला संस्कारः

क्षालयेत् पञ्चगव्येन सद्योजातेन तज्जलैः।
चन्दनाऽगुरु-गन्धाद्यैर्वामदेवेन[1] घर्षयेत्॥
धूपयेत्ताम्रघोरेण[2] लेपयेत् पुरुषेण[3] तु।
मन्त्रयेत् पञ्चमेनैव[4] प्रत्येकं तु शतं शतम्॥
मेरुं च पञ्चमेनैव तथा मन्त्रेण मन्त्रयेत्।
येन प्रतिष्ठिता माला तमेव तु मनुं जपेत्॥

पहले माला को पंचगव्य से, फिर जल से, 'ॐ सद्योजातं प्रापद्यामि' इस मंत्र से प्रक्षालन करना चाहिए। फिर चंदन, अगरु तथा गंध का, 'ॐ वामदेवाय' इस मंत्र से घर्षण करना चाहिए। 'ॐ अघोरेभ्योऽथ' इस मंत्र से धूप देनी चाहिए। तत्पश्चात्, 'ॐ तत्पुरुषाय' इससे अनुलेपन तथा 'ॐ ईशानः सर्व' इस मंत्र से सौ-सौ बार अभिमंत्रित करना चाहिए। इसी प्रकार, 'ॐ ईशान' से मेरु को भी अभिमंत्रित करें। तदनन्तर जिस मंत्र का जप करना हो, उस मंत्र से माला को प्रतिष्ठित करना चाहिए। तत्पश्चात् उस मंत्र का जप करना चाहिए।

---

1. *ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः। कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥*
2. *ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्रेभ्यः॥*
3. *ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥*
4. *ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम॥*

ओंकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च।
गायत्रीं प्रणवान्तां च मध्ये त्रिप्रणवां तथा॥
एवं नित्यं जपं कुर्याद् ब्राह्मणो विप्रपुङ्गवः।
भिन्नपादा तु गायत्री ब्रह्महत्याप्रणाशिनी॥
अभिन्नपादा गायत्री ब्रह्महत्यां प्रयच्छति।
अच्छिन्नपादगायत्रीजपं कुर्वन्ति ये द्विजाः॥
अधोमुखाश्च तिष्ठन्ति कल्पकोटिशतानि च।
धर्मशास्त्र पुराणेषु इतिहासेषु सुव्रत॥
पञ्चप्रणवसंयुक्तां जपेदित्यनुशासनम्।
जपसङ्ख्याष्टभागान्ते पादो जाप्यस्तुरीयकः॥
स द्विजः परमो ज्ञेयः परं सायुज्यमाप्नुयात्।
अन्यथा प्रजपेद्यस्तु स जपो विफलो भवेत्॥
प्रारम्भदिनमारभ्य समाप्ति दिवसावधि।
न न्यूनं नातिरिक्तं च जपं कुर्याद् दिने दिने॥
नैरन्तर्येण कुर्वीत स्व स्ववृत्तिं न लिम्पयेत्॥
प्रातरारभ्य विधिवज्जपेन्मध्यन्दिनावधि॥
मनःसंहरणं शौचं यानं मन्त्रार्थचिन्तनम्॥

सर्वप्रथम 'ओंकार' का उच्चारण करें, तत्पश्चात्, 'भूर्भुवः स्वः' का उच्चारण करें, फिर ओंकार का उच्चारण कर गायत्री पढ़ें (ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ)। इस प्रकार गायत्री के अंत में प्रणव तथा गायत्री के मध्य में तीन प्रणव का उच्चारण करते हुए जप करें। इस विधि अनुसार श्रेष्ठ ब्राह्मण नित्य गायत्री का जप करे। यदि गायत्री का पाद (तीन पादः पहला वरेण्यान्त, दूसरा धीमहि, तीसरा प्रचोदयात्) भिन्न कर जप करना चाहिए। यह ब्रह्महत्या का विनाश करने वाला है। किन्तु गायत्री को पादशः अलग न कर जप करने से ब्रह्महत्या का पाप लगता है।

जो ब्राह्मण गायत्री के पाद को अलग न कर, एक पाद में ही पढ़ते हैं, वो करोड़ों वर्षों तक अधोमुख (नरक) में निवास करते हैं। धर्मशास्त्र, पुराण तथा इतिहास में कहा गया है कि गायत्री को उपर्युक्त पंच-प्रणव से युक्त हो जप करना चाहिए। जब जप पूरा हो जाए, तो चौथा पाद, 'धियो यो नः प्रचोदयात्' इसका यथाशक्ति जप करना चाहिए। इस प्रकार जप करने वाला ब्राह्मण श्रेष्ठ सायुज्यमुक्ति के फल को प्राप्त करता है। इससे भिन्न जो लोग जप करते हैं, उनका जप निष्फल हो जाता है।

पुरश्चरण के दिन से आरंभ कर अंतिम दिन तक जप की संख्या घटनी-बढ़नी नहीं चाहिए अर्थात् पहले दिन जप की जितनी संख्या हो, उतनी ही संख्या जप के अंतिम दिन तक होनी चाहिए और अपनी नित्य विधि का लोप भी न करना चाहिए। प्रातःकाल से आरंभ कर मध्याह्नपर्यन्त गायत्री-जप करने की विधि है। मन को अपने वश में रखना चाहिए। पवित्रतापूर्वक मंत्र के अर्थ का चिंतन करना चाहिए।

जपसंख्याः

गायत्रीछन्दोमन्त्रस्य यथासङ्ख्याक्षराणि च।
तावल्लक्षाणि कर्त्तव्यं पुरश्चरणकं तथा॥

गायत्री छंद-रूप मंत्र के अक्षरों की जितनी संख्या है, अर्थात् 24 अक्षर—उतने ही लाख अर्थात् 24 लाख गायत्री जप का पुरश्चरण होता है।

एवं कृत्वा तु सिद्ध्यर्थं गायत्रीं दीक्षितो जपेत्।
तत्त्वलक्षं विधानेन भिक्षाशी विजितेन्द्रियः॥

दीक्षित होकर 24 लाख गायत्री का जप विधिपूर्वक करें। नित्य जितेन्द्रिय, अर्थात् कामवासना आदि से रहित रहें तथा भिक्षा का अन्न-भोजन करें।

होम-प्रक्रिया

क्षीरोदनं तिला दूर्वाः क्षीरद्रुम समिद्वरान्।
पृथक् सहस्त्रत्रितयं जुहुयान्मन्त्रसिद्धये॥
तिलैः पत्रैः प्रसूनैश्च यवैश्च मधुनाऽऽप्लुतैः।
कुर्याद् दशांशतो होमस्ततः सिद्धो भवेन्मनुः॥

गाय का दूध, पायस, तिल, दूर्वा, दुधार-वृक्षों (पीपल, गूलर, पाकड़ और बड़) की समिधा (लकड़ी) से प्रत्येक के तीन-तीन हजार अर्थात् आठों को मिलाकर 24 हजार होम (अभिषेक) मंत्र-सिद्धि के लिए करना चाहिए। तिल, पत्र, पुष्प, यव एवं मधु से युक्त कर जप का दशांश होम करें। इस कृत्य से मंत्रसिद्धि हो जाती है।

❑❑

१८

रुद्रयामल तंत्र में गायत्री-साधना विधि

उपासना-मार्ग के मंगल-प्रस्थान में प्रथम सोपान गायत्री-मंत्र ही माना जाता है। द्विज—ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य कुल में उत्पन्न एवं यज्ञोपवीत संस्कार से संस्कृत वर्ग आदिकाल से गायत्री माता की उपासना से आत्मबल, मनोबल और लौकिक-संपदाओं के बल को प्राप्त करके इस लोक में सुखी रहते हुए पारलौकिक प्रेयस् की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम होता रहा है। प्राचीन ऋषि-मुनियों की दीर्घकालीन साधना एवं अपूर्व सिद्धि का मूल गायत्री उपासना ही था। यही कारण है कि रुद्रयामल में भी इसके संबंध में अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रकट किए गए हैं।

प्रत्येक साधना से पहले गायत्री मंत्र की आराधना अवश्य करनी चाहिए। जैसे भवन निर्माण से पहले सुदृढ़ नींव-आधार भूमि की व्यवस्था की जाती है, उसी प्रकार साधनापक्ष में सिद्धिभवन की नींव गायत्री-साधना से ही सुदृढ़ होती है और शास्त्रों में तो यहां तक कहा गया है—

गायत्री मात्र निष्णातः सर्वाः सिद्धीरवाप्नुयात्।

अर्थात्, केवल गायत्री की ही उपासना करने वाला सभी सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है। उपासना में सबसे पहले त्रिकाल संध्या-विधान का महत्त्व है। संध्या के महत्त्व को आचार्यों ने निम्न पद्य में व्यक्त किया है—

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं च संध्या,
वेदा:शाखा धर्म कर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयम्,
छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्॥

विप्र वृक्ष है और उसका मूल संध्या है। वेद शाखा हैं तथा धर्म-कर्म पत्र हैं। इसलिए बड़ी सावधानी से मूल की रक्षा करनी चाहिए। मूल के नष्ट हो जाने पर न शाखाएं रहती हैं और न पत्र। इनमें यहां मुख्यतः कवच, स्तवराज तथा पटल—ये तीन विशेष रूप से दर्शनीय हैं, जिनका विवरण निम्न है—

मुक्तिचिंतामणि गायत्री कवच

श्रीदेव्युवाच—

भगवन् सर्वलोकेश, वेदतत्त्वाधिसागर।
सर्वज्ञ भैरवेशान, जगन्नाथ कृपानिधे॥ 1॥
कवचं देव गायत्र्याः, सर्वतत्त्वमयं परम्।
मुक्तिचिंन्तामणिं नाम, त्वया मे प्राङ् निवेदितम्॥ 2॥
मन्त्रगर्भं सुरैः पूज्यं, सर्वापत्तारणं विभो।
ब्रह्मवेधमयं ब्रूहि, यद्यहं तव वल्लभा॥ 3॥

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि, तव स्नेहाद् रहस्यकम्।
कवचं तत्त्वभूतं ते, सर्वमन्त्रैक विग्रहम्॥ 4॥
मुक्तिचिन्तामणिं नाम, गायत्रीमन्त्र विग्रहम्।
मातृकाबीजनिलयं, व्याहृतिब्रह्मसम्मितम्॥ 5॥
सर्वशक्तिमयं देवि, सर्वारिष्टविमर्दनम्।
महापातकविघ्नौघ ब्रह्महत्यादिनाशनम्॥ 6॥

विनियोग

ॐ अस्य श्रीकवचस्यापि, ऋषिः प्रोक्तः सदाशिवः।
गायत्रीदेवता देवि, बीजं प्रणव ईरितः॥ 7॥
लक्ष्मीशक्तिः शिवा भीमा कीलकं समुदाहृतम्।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे, विनियोगस्तु धारणे॥ 8॥

एवं विनियुज्य

ॐ अं शिरो मेऽवताद्देवी, गायत्री परमार्थदा।
ॐ आं सौः मेऽवताद्देवी, भालं वेदार्थसुन्दरी॥ 1॥
ॐ इं हसौः भ्रुवौ पातु, गम तन्त्रार्थसुन्दरी।
ॐ ई सौः नयने पातु, मम व्याहृतिसुन्दरी॥ 2॥
ॐ उं ऐं मेऽवतात् कर्णौ, सदा भूर्लोकसुन्दरी।
ॐ ऊं क्लीं मेऽवताद् गण्डौ, श्रीभुवोलोकसुन्दरी॥ 3॥
ॐ ऋं श्रीं मेऽवताद् नासां सा स्वर्लोकैकसुन्दरी।
ॐ ॠं ह्रीं मेऽवतादोष्ठौ महर्लोकैकसुन्दरी॥ 4॥
ॐ लृं क्लीं मेऽवताद्दन्ताञ्जनलोकैकसुन्दरी।
ॐ लॄं ग्लौं मेऽवताज्जिह्वां, तपोलोकैकसुन्दरी॥ 5॥
ॐ एं गां पातु मे वक्त्रं सत्यलोकैकसुन्दरी।
ॐ ऐं यं पातु मे कण्ठं, सदाभुवनसुन्दरी॥ 6॥

ॐ ओं त्रीं पातु मे स्कन्धौ, सदा ब्रह्माण्डसुन्दरी।
ॐ औं श्रीं पातु मे बाहू, सदा सर्वांगसुन्दरी॥ 7॥
ॐ अं श्रीं पातु मे हस्तौ, सदा सर्वार्थसुन्दरी।
ॐ अः ह्रीं पातु मे वक्षः, सदा देवेन्द्रसुन्दरी॥ 8॥
ॐ कं श्रीं पातु मे पृष्ठं, सदा दानवसुन्दरी।
ॐ खं श्रीं पातु मे पार्श्वौः श्रीविद्याधरसुन्दरी॥ 9॥
ॐ गं ह्रीं पातु मे कुक्षी, अप्सरोलोकसुन्दरी।
ॐ घं ऐं पातु मे नाभिं, यक्षलोकैकसुन्दरी॥ 10॥
ॐ ङं प्रिं मेऽवतान्मेढं, रक्षोलोकैकसुन्दरी।
ॐ च स्त्रीं मेऽवताच्छिश्नं, सदा गन्धर्वसुन्दरी॥ 11॥
ॐ छं हां पातु मे ऊरू, सदा गुह्यकसुन्दरी।
ॐ जं स्वा पातु मे जानू, सिद्धलोकैकसुन्दरी॥ 12॥
ॐ झं ह्रीं पातु मे तत्र पृथुलं मांस सञ्चयम्।
ॐ ञं ऐं पातु मे तत्र, दृढमस्थिचयं सदा॥ 13॥
ॐ टं स्त्रीं पातु मे जङ्घे, भूतलोकैकसुन्दरी।
ॐ ठं प्रिं पातु मे गुल्फौ, नागलोकैकसुन्दरी॥ 14॥
ॐ डं ऐं पातु मे पादौ, मर्त्यलोकैकसुन्दरी।
विस्मारितं च तत्स्थानं, यत्स्थानं नामवर्जितम्॥ 15॥
ॐ ढं ह्रीं पातु तत्सर्वं वपुस्त्रिपुरसुन्दरी।
ॐ णं ह्रीं इन्द्रोऽव्यात्, ॐ तुं श्रीं अग्निरग्रतः॥ 16॥
ॐ थं ह्रीं दक्षिणे धर्मो, ॐ दं श्रीं नैर्ऋत्यां स्वतः।
ॐ धं श्रीं श्री वरुणः पातु पश्चिमे मां जलेश्वरः॥ 17॥
ॐ नं श्रीं वायुतो वायुर्वायव्वे मां सदाऽवतु।
ॐ पं श्रीं मामुदरे पातु कुबेरोयक्षराट् सदा॥ 18॥
ॐ फं यं मामीश्वरः पातु स्वयमीशाननायकः।
ॐ बं गां ऊर्ध्वमात्मभूर्भगवान् सर्वदाऽवतु॥ 19॥
ॐ भं ग्लौं पातु मां विष्णुरधस्तात् सर्वदा हरिः।
ॐ मं भै मे गुरुः प्रातः, ॐ यं श्रीं मां मध्यवासरे॥ 20॥
ॐ रं ह्रीं मेऽवतात् सायं परात्पर गुरुस्तथा।
ॐ लं क्लीं मां निशीथेऽव्यात् परमेष्ठि गुरुः सदा॥ 21॥
ॐ वं ऐं मां निशीथान्ते पात् साधक नायकी।
ॐ शं श्रीं मां भगवती ब्रह्मरूपा दिनेऽवतु॥ 22॥

ॐ षं ह्रीं मां जगन्माता विष्णुरूपा सदाऽवतु।
ॐ सं ऐं मां वेदमाता शिवरूपा सदाऽवतु॥ 23॥
ॐ हं श्रीं मां चक्रतः पातु गायत्री चक्रनायकी।
ॐ (मेलं) लं क्ष रूपं मां पायात् सदा सद्ब्रह्मनायकी॥ 24॥
लक्ष्मीर्लक्ष्मीं सदा पातु, कीर्ति कीर्तिः सदाऽवतु।
धृतिं-धैर्यं सदा पातु, धन्या भाग्यं ममाऽवतु॥ 25॥
स्थितं स्थिता सदा पातु, शान्तिः शान्तिं प्रयच्छतु।
विभा दीप्तिं सदा पातु, मतिर्बुद्धिं ममाऽवतु॥ 26॥
गतिर्गतिं च मे पातु, भ्रान्तिर्भ्रान्तिं सदाऽवतु।
नतिर्नतिं च मे पातु, वाणी वाणीं प्रयच्छतु॥ 27॥
सेना सेनाधिपत्यं मे, शोभा शोभां प्रयच्छतु।
क्रियादेवी क्रियासिद्धिं, नुतिर्नुतिं प्रयच्छतु॥ 28॥
एताः षोडशपत्रस्थां, पान्तु मां सर्वतोभयात्।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु, वह्नौ नारायणी तथा॥ 29॥
दक्षिणे पातु मां चण्डी, नैऋते शाम्भवी तथा।
पश्चिमेऽपराजिताऽव्यात्कौमारी वायुकोणतः॥ 30॥
वाराही चोत्तरे पातु, ईशाने नारसिंहिका।
रुरुः सङ्ग्रामतः पातु, चण्डो भूपभयात् सदा॥ 31॥
करालोऽव्यात् श्मशाने मां संहारोऽव्यात् समुद्रतः।
भीषणः पातु दुर्भिक्षात्, कालाग्निः कालपाशतः॥ 32॥
उन्मत्तः पातु मां चौरात् क्रोधोऽव्यान्मां विपत्तितः।
एते सशक्तिकाः पान्तु, वसुपत्रंषु भैरवाः॥ 33॥
सरस्वती गिरं पातु, सती सत्यं सदाऽवतु।
दुर्गा दुर्गतितो रक्षेत्, सावित्री वसु रक्षतु॥ 34॥
श्रीब्रह्मवादिनी ज्ञानं, श्रीमती श्रियमुत्तमाम्।
कुब्जिका च कुलं क्षिप्रं, पाशं संसारबन्धनात्॥ 35॥
तारिणी चारितो रक्षेद् ध्रुवं मां विश्वमंगला।
बहिर्दशार चक्रस्था, पातु मां सर्वतः सदा॥ 36॥
त्रिपुरा पातु मां नित्यं, कालिकाऽवतु मां सदा।
तारा मां पातु सततं, सखी च सर्वदाऽवतु॥ 37॥
बगला पातु मां नित्यं, बाला मां पातु सर्वतः।
बैखरी पातु मां नित्यं, देवी तुर्या सदाऽवतु॥ 38॥

छिन्नशीर्षावतान्नित्यं, पातु मां भुवनेश्वरी।
अन्तर्दशारचक्रस्था, देवता पातु मां सदा॥ 39॥
गंगा मां पावनं पातु, यमुना पातु सर्वदा।
सरस्वती च मां पातु, त्रिकोणस्थाश्च देवताः॥ 40॥
मूलविद्या च मां पातु, गायत्री त्रिपदास्तवा।
चतुर्मुखः शिवः पातु, पातु पद्मासनः प्रभुः॥ 41॥
अक्षसूत्रं च मां पातु, पद्मं पातु शिवप्रियः।
त्रिशूलं सर्वदा पातु, लगुडं पातु सर्वदा॥ 42॥
मूलं च सर्वदा पातु, चतुर्विंशाक्षरात्मकम्।
सर्वत्र सर्वदा पातु, परमार्थाधिदेवता॥ 43॥
इति मन्त्रमयं दिव्यं, कवचं देव दुर्लभम्।
गायत्र्यास्त्रिपदा देव्या, लयांगनिलयं परम्॥ 44॥
मूलविद्यामयं ब्रह्म, विद्यानिधिमयं परम्।
सर्वदेवप्रियं मुक्तेः, साधनं भुक्ति वर्धनम्॥ 45॥
मुक्ति चिन्तामणिर्नाम, गायत्री तत्त्वकारिणी।
मारणं सर्व शत्रूणां, वारणं सकलापदाम्॥ 46॥
तारणं च भवोभ्भोधेः, सर्वैश्वर्यैककारणम्।
र वौ यो ह्यष्टगन्धेन, लिखेद् भूर्जे महेश्वरि॥ 47॥
श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य, सौवर्णेनाथ वेष्टयेत्।
पञ्चगव्येन संशोध्य, गायत्रीरूपेण स्मरेत्॥ 48॥
तामर्चयेन्महादेवि विद्यया यन्त्रराजवत्।
मकारैः पंचभिर्गोप्यैर्महार्चनक्रमेश्वरः॥ 49॥
यथार्थतस्तत् सम्पूज्य, गुटिं भोगापवर्गदाम्।
बध्नीयात् कण्ठदेशे तु, सर्वसिद्धिः प्रजायते॥ 50॥
शिरःस्था गुटिका देवि, राजलोक वशंकरी।
भूतस्था गुटिका देवि रणे विजयदायिनी॥ 51॥
कुक्षिस्था रोगशमनी, वक्षःस्था पुत्र पौत्रदा।
कण्ठस्थैश्वर्यदा लोके, सर्व सारस्वत प्रदा॥ 52॥
इत्येवं कवचं देवि गायत्रीतत्त्वमुत्तमम्।
गुह्यं गोप्यतमं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत्॥ 53॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे गायत्रीकवचं समाप्तम्॥

यह कवच अनेक महत्त्वपूर्ण तत्त्वों से परिपूर्ण है। इसमें समस्त शरीरावयवों की रक्षा के लिए गायत्री-स्वरूप में ही व्याप्त महादेवियों और प्रमुख देवों के

स्मरण के साथ-साथ बहुत-से बीज-मन्त्रों का योग करके रक्षा की प्रार्थना की गई है। वस्तुतः साधना में आने वाले बाह्य-विघ्नों और आन्तरिक आपदाओं से बचने के लिए यह अभेद्य मणिमय कवच है।

इसका पुरश्चरण अथवा प्रमुख पर्व, ग्रहणादि के समय पाठ करके इसे अष्टगन्ध से भूर्जपत्र पर लिखें और श्वेत कच्चे सूत से उसे लपेट कर सोने के ताबीज में रखें। तदनन्तर पंचगव्य से स्नान कराए और साक्षात् गायत्री माता का स्वरूप मानकर उसकी यन्त्रार्चना के समान ही अर्चना करे। तदनन्तर शरीर के अवयव—कण्ठ, भुजा, कटि आदि में धारण करे तो उसे ऐश्वर्य, सारस्वत ज्ञान, पुत्र-पौत्र और दीर्घायु प्राप्त होते हैं।

त्रिपदागायत्री-स्तवराज

गायत्री के अन्यान्य स्तवराजों की अपेक्षा यह स्तवराज अपनी एक विशिष्टता के कारण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और वह है—'गायत्री-मन्त्र के साथ भिन्न-भिन्न बीजमन्त्रों की योजना करके उनका जप करने का विधान और उनके जप से प्राप्त होने वाले अभीष्ट फलों का निर्देश।' प्रत्येक कार्य के लिए किस प्रकार स्वतन्त्र मन्त्र-योजना करनी चाहिए ? यह जानने के लिए इसका परिज्ञान अपेक्षित है, अतः मूल-पाठ प्रस्तुत है—

विनियोग—अस्य श्रीत्रिपदागायत्री स्तवराजस्य शिव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द—स्त्रिपदा-गायत्रीदेवता ॐ बीजं शिवः शक्तिः खं गं कीलकं मम धर्मार्थ काममोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—शिवऋषये नमः (शिरसि), **त्रिष्टुप्छन्दसे नमः** (मुखे), **त्रिपदागायत्रीदेवतायै नमः** (हृदये), **ॐ बीजाय नमः** (गुह्ये), **शिवःशक्तये नमः** (पादयोः), **खं गं कीलकाय नमः** (नाभौ), **विनियोगाय नमः** (सर्वाङ्गे)।

कर-हृदयादिन्यास—क्रमशः—ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रैं, ह्रौं, ह्रः (इत्यादिभिः)।

ध्यानम्

चतुर्भुजां सूर्यसहस्त्रकोटिभां, त्रिलोचनां हार किरीट शोभिताम्।
चतुर्मुखाङ्कोपगतां महोज्ज्वलां, वेदेश्वरीं पञ्चमुखीं भजाम्यहम्॥ 1॥

विविध मणि मयूख स्फीत केयूर हार—
प्रवर कनककाञ्ची किङ्किणी कङ्कणाद्याम्।
सकल भुवन रक्षा सृष्टि संहारकर्त्रीं,
निगम परम विद्यामाश्रये वेद धात्रीम्॥ 2॥

इस प्रकार ध्यान करके, मानसोपचार से पूजन कर, स्तवराज का पाठ करें।

प्रणवं मनुराजमौलिरत्नं, यदि वेदेश्वरि वेदसारभूतम्।
प्रजपेद् हृदये दयासमुद्रं, स भवेद् ब्रह्मविदीश्वरो रविर्वा॥ 1॥
शंकां जपेद् योऽत्र विहाय शंकां, कंकालमालाभरणां निशीथे।
कृशानु भानु प्रभवा समानो, विमानचारी स भवेत् स-मानः॥ 2॥
कं बीजमंत्रं शिव शक्तिरूपं, त्रिभिर्जपेद् यस्त्रिपदा स्वरूपम्।
स कामुकः कामकलाविदग्धो, भवेत् तु रम्भारतिभोगभागी॥ 3॥
तार्तीयबीजं तव मन्त्रमध्ये, जपेद् भवानि स्मरतत्त्वचेताः।
समेतकामान् समवाप्य भूमौ, भवेत् स भूपालवधू जनेन्द्रः॥ 4॥
वाणीं च वानीरतले जपेद्यो, दशायुतं दुर्दशयाऽभिभूतः।
स वैरिगर्वं समरे निहत्य, भवेद् भवानी तनयो दिवीन्द्रः॥ 5॥
स्वरं जपेद् यस्तव मन्त्रबीजं, त्रिलोचने लोचनभोगकामी।
सुलोचना लोचन वीक्षणोरु प्रभाव पोयूष रसाकुलात्मा॥ 6॥
परां जपेद् यः परमार्थतथ्यां, निर्वाणरथ्यां तव पंचवक्त्रे।
समस्तलोकाधिपतिः पुरेशो, भवेत् परानुग्रह भाजनं सः॥ 7॥
लक्ष्मीं जपेद् यः परवर्गभीतः, श्मशानभूमौ विशरूपधारी।
तस्यात्र वश्या कमलाकरस्था, या विष्णुपत्नी कमलाकरस्था॥ 8॥
भीमां जपेद् यो वरतान्तकाले, नितान्तमम्भोजदलं करस्थाम्।
स भीमरूपोऽरिकुलं निहत्य, प्रान्ते लभेत् कान्तपदं त्रिपाद्याः॥ 9॥
मठं जपेद् यः शुचिरर्चनीयां, चतुर्भुजां हव्यभुजः समक्षम्।
स गाणपत्यं प्रणिपत्य लब्ध्वा, लक्ष्मीं भवेदीश्वर सिद्धिनाथः॥ 10॥
गायत्री त्रिविधाक्षरत्रयमिदं वेदार्थतत्त्वं परं,
यो ध्यायेद् हृदयारविन्दकुहरे प्रातर्निशीथे तथा।
चैनाचार विचारमार्ग निपुणो वेदान्तसारद्वयं,
प्रोद्भूतागमतत्त्ववित् स त्रिपदोधाम स्वयं यास्यति॥ 11॥
रामायुगं यो गिरियोनिगर्भान्तरे जपेच्चिद्गिरिशां सरम्भया।
स योगिगम्यो गुरुगर्वहारी, गिराभवेदिन्द्र समर्चिताङ्घ्रिः॥ 12॥
मायां जपेद् यः स्मरसक्तचेता, जटाकिरीटेन्दु कलत्रवान यः।
स वैष्णवेन्द्रो ललनाऽथ योनिस्फुरन्मणिः स्यान्नितरां नताङ्घ्रिः॥ 13॥
माबीजमिन्दुस्फुरितोर्ध्वबीजं, जपेन्निशीथे मणिपीठ संस्थः।
यो धीरमातैकपरः स सद्यो, भवेद् धरायां नृपसार्वभौमः॥ 14॥
मायापुटां योऽत्र जपेद् रतादौ, तन्वीसुखासक्तमुखो निशान्ते।
स लोकपालार्चित पादपद्मो भवेद् भवान्ते भुवनाधिनाथः॥ 15॥

वाणीं जपेद् यो जडभावयुक्तो, वेदान्त तत्त्वैकरसो भवानि।
तस्यास्यपद्मे वसतिं विधाय, बिभर्ति वाणी विदुषां सभायाम्॥ 16॥
यो वायुपूजां सुरभावतेजा, जपेन्निशीधे शशिखण्डचूडः।
स वायुपूज्यो बलवान् प्रयाति, तद्धाम सत्यं त्रिदिवेन्द्रतुल्यः॥ 17॥
मन्त्रं मनोऽन्तर्जपति स्मरार्तो, यो वेदमातुर्दिदसावसाने।
वश्योर्वशी तस्य पदारविन्दं, शुश्रूषमाणा भविता भवानि॥ 18॥
मन्त्रान्तस्थां ठद्वयीं वे जपेद् यस्तेजोरूपं साधकः साधकेशि।
तस्यास्ये स्याद् भारती तस्य हस्ते लक्ष्मीः कुर्याद् वासमाकल्प कलाम्॥ 19॥
भूगेह वृत्तत्रय षोडशार दिक्कोणयुकताग्निविराजमानाम्।
निषेदुषीं शीधु रसाकुलाक्षीं, त्र्यक्षीं त्रिमूर्तिं त्रिपदीं भजामि॥ 20॥

देवि त्रैलोक्यमातर्विविधकुसुमसत्पद्ममालायुधाङ्के,
नानारत्नप्रभाढ्ये त्रिनयनविलसत्सूर्यचन्द्राग्निबिम्बे।
पीठस्थे पंचवक्त्रे धवलमणिनिभे भासुरे नूपुराढये
श्रीमन्नीलोत्पलाभे त्रिपदि वरकरे देवि मातः प्रसीद॥ 21॥
इति स्तोत्रं पुण्यं पर मनुमयं तत्त्व-सहितं,
पठेद् यो गायत्र्या निशि कुजदिने वाऽपि सततम्।
स वेदान्तस्यार्यागम पुर पुराणार्थ निपुणो,
लभेल्लक्ष्मीं प्रान्ते परमपदवीं मान्त्रिकपतिः॥ 22॥

इसके पश्चात् पांच श्लोकों में इस स्तोत्र का महत्त्व वर्णित है जिनमें इसकी रहस्यमयता, पंचांग-सार तथा चारों वेदों का रहस्य बतलाया है। वस्तुतः यह स्तवराज स्तुति की अपेक्षा गायत्री मन्त्र के साथ भिन्न-भिन्न बीजमन्त्रों के साथ जप करने की प्रक्रिया और उसके द्वारा प्राप्य फलों का ही विशेष रूप से निर्देश करता है। यद्यपि इसमें यह बात स्पष्ट रूप से नहीं बतलाई गई है कि गायत्री-मन्त्र में ही इन बीजों को सम्पुटित अथवा सन्दर्भित किया जाए अथवा इनका स्वतन्त्र रूप से ही जप किया जाए ? किन्तु ऐसे अन्यत्र संकेत प्राप्त होते हैं तथा गायत्री मन्त्र के जो विभिन्न रूप पूर्व महर्षियों द्वारा दृष्ट हैं उनमें ऐसी व्यवस्था दी है। साथ ही इस स्तोत्र में 'प्रणव, क्लीं, ऐं, ह्रीं, हसौः, श्रीं, स्त्रीं, हं, ठः ठः' आदि बीजों के प्रयोग ही अधिक वर्णित हैं, जिनसे तन्त्र-साधक परिचित हैं।

एक पद्य (20 वां) गायत्री-यन्त्र का सूचक है, जिसमें—

- भूपुर,
- वृत्तत्रय,
- षोडशार,

- दशकोण तथा
- त्रिकोण का विधान है।

इस स्तोत्र का पाठ रात्रि में तथा मंगलवार के दिन करने का विशेष निर्देश है। तदनुसार पाठ करके भी लाभान्वित होना चाहिए।

गायत्री-पटल

रुद्रयामल से संगृहीत '**गायत्री-षडङ्ग**' नामक ग्रन्थ में छठे अंग के रूप में '**गायत्री-पटल**' कहा गया है। इसमें सर्वप्रथम उपक्रम करते हुए कहा गया है कि—

श्रीशैलशिखरासीनं, देवताभिर्नमस्कृतम्।
त्रिशूल खट्वाङ्गधरं, वराभयकरं विभुम्॥ 1॥
वृषध्वजं महद्वक्त्रं, प्रसन्नं परमेश्वरम्।
जयन्तं मनसा किञ्चिद्, व्यानोन्मीलितलोचनम्॥ 2॥
भैरवं भैरवीयुक्तं, ब्रह्मोपेन्द्रादि सेवितम्।
सुरासुरयुतं नित्यं, तथा मातृगणार्चितम्॥ 3॥

इस प्रकार शिवरूप भैरव के समक्ष भगवती पार्वतीस्वरूपा भैरवी ने पूछा कि भगवन्! आप निरन्तर किसका जप करते रहते हैं? इस रहस्य को कहिए। तब भगवान् भैरव ने वेदमाता गायत्री को अपनी इष्टदेवी बतलाते हुए उसके मूलमन्त्र के जप और उसके यन्त्रराज की पूजा, सहस्रनाम एवं स्तवराज के पाठ का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए उनके विधि-विधान को स्पष्ट किया। गायत्री-मन्त्र को मोक्ष-प्राप्ति का एकमात्र साधन, सर्वसिद्धियों का कारण तथा सकल आपत्तियों का वारण बतलाते हुए मन्त्रोद्धार इस रूप में बतलाया—

तारं शक्तियुतार्त्तिवाक्स्वरपरा लक्ष्मीं सुभीमामधां,
गायत्रीति रमा युगं च सकलां लक्ष्मी परा युग्मकम्।
वाणी वा सुसमर्चिता च बलना मन्त्राञ्चले धद्वयं,
गायत्र्या मनुरेष देवि विदितो मन्त्रैक चिन्तामणि॥

इसके पश्चात् इस पद्य के अनुसार बनने वाले गायत्री-मन्त्र की महत्ता व्यक्त की है, जिसमें मन्त्र सम्बधी भिन्न-भिन्न दोष एवं पूर्वापर क्रियागत विचारों के भय से मुक्त रहते हुए भी इसका यदि जप किया जाता है, तो भी यह सर्वसिद्धि देता है, ऐसा कहा है। साथ ही इसके उत्कीलन के लिए आदि और अन्त में तीन बीज लगाकर जपने का निर्देश दिया है। इसी के साथ 'संजीवन' तथा 'सम्पुट' की विधि भी कथित है।

उपर्युक्त मन्त्र के ऋषि ब्रह्मा हैं, त्रिष्टुप् छन्द है, गायत्री देवता है, तार—ॐ

बीज, श्रीं शक्ति तथा भद्रिका कीलक है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लिए विनियोग कहा गया है। तार आदि सभी बीजों को ब्रह्मा, विष्णु और शिवाश्रित करके षडंगन्यास तथा उपर्युक्त तीनों बीजों के षड्दीर्घरूप से देहन्यास करना चाहिए। इस प्रकार किए गए न्यासों से साधक देवीमय होकर सर्वविध सिद्धि को प्राप्त होता है। यहां गायत्री का ध्यान इस प्रकार वर्णित है—

पञ्चवक्त्रां चतुर्हस्तां प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनाम्।
जटा किरीट षट्कुचिं, त्रिपदीं च स्फुरत् प्रभाम्॥
अक्षसूत्राम्बुजे दिव्ये दधतीं दक्षहस्तके।
वामे कमण्डलुं चैव वरमुद्राविभूषिताम्॥
रत्न कुण्डल केयूर हार कङ्कण नूपुरैः।
शोभितां रत्नपीठस्थां गायत्रीं मोक्षदायिनीम्॥

वहीं गायत्री देवी की गायत्री भी इस प्रकार दिखलाई है—

ॐ ऐं श्रीं गायत्रीदेव्यै विद्महे चतुर्विंशाक्षर्यै च धीमहि,
तन्नस्त्रिपदी प्रचोदयात्॥ ॐ श्रीं ऐं॥

पूजा के पश्चात् सुमुख-सम्पुट आदि चौबीस मुद्राओं का प्रदर्शन आवश्यक बतलाया है।

गायत्री-साधना से सम्बद्ध इसी पटल में दस प्रयोग भी वर्णित हैं जिनके करने से सर्व प्रकार से सिद्धि प्राप्त होती है। यथा—

- स्तम्भन,
- मोहन
- मारण
- आकर्षण
- वशीकरण
- विद्वेषण,
- शान्तिक
- पौष्टिक आदि।

इनके लिए एकान्त में रात्रि में पूजन तथा 10,000 मन्त्र जप, दशांश हवन—जिसमें घृत, पायस और चन्दन का प्रयोग किया जाए। ऐसे प्रयोगों में विभिन्न अन्य वस्तुएं, स्थान, काल, मालाएं आदि भी स्वतन्त्र विधान है जिसे अन्य ग्रन्थों तथा गुरुजनों से जानना चाहिए। वैसे प्रयोग की दृष्टि से कार्यारम्भ के दिन विशेष नक्षत्रों का होना अधिक उपयोगी बतलाया है। जैसे शुक्रवार को पुष्य नक्षत्र के दिन प्रयोग करने से वशीकरण-आकर्षण होता है। साधक के जन्मनक्षत्र और जन्मदिन पर भी

दस हजार गायत्री जप करना आवश्यक बताया है। इससे नीरोगिता और आयुष्य-वृद्धि होती है।

मन्त्रोद्धार की विधि बतलाते हुए कहा गया है कि—

**बिन्दु त्रिकोण दशकोण दशार वृत्त नागास्त्र षोडशदलाख्य-शरच्चरित्रम्।
भू मन्दिरत्रयमिदं परमार्थ यन्त्रं, सर्वार्थ साधनकरं परमार्थ देव्याः॥**

अर्थात्—गायत्री यन्त्रराज की रचना में

- ❑ बिन्दु
- ❑ त्रिकोण
- ❑ दशकोण
- ❑ दशारवृत्त
- ❑ अष्टदल
- ❑ षोडशदल तथा
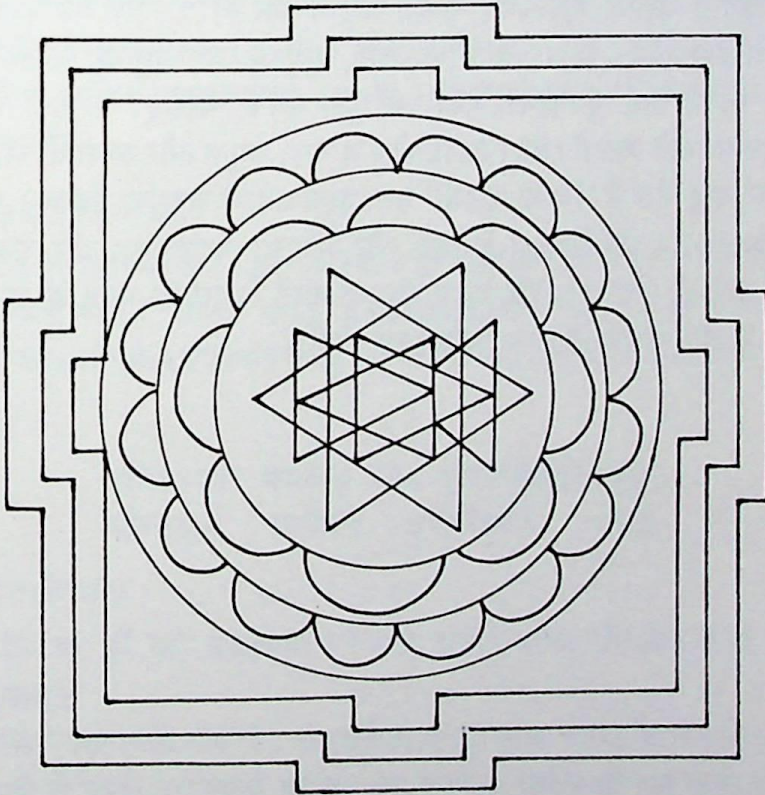
❑ भूपुर त्रय की योजना करनी चाहिए। ऐसा यन्त्र सर्वार्थ-साधन करने वाला कहा गया है।

इस यन्त्र की आवरण-पूजा में जो 'लयांगपूजा' का विधान है उसमें सर्वप्रथम—

❑ भूपुर की पूजा होती है जिसमें दस दिक्पाल क्रमशः इन्द्र, अग्नि, यम, निऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान आठों दिशाओं में तथा ऊर्ध्व में ब्रह्मा और अधोभाग में विष्णु की पूजा की जाती है। तदनन्तर—

❑ भूपुर की तीन रेखाओं में दिव्यौध, सिद्धौध तथा मानवौध (गुरु परम्परा) की पूजा करके—

❑ षोडश दल में लक्ष्मी, कीर्ति, धृति, धन्या, स्थिति, शान्ति, विभा, मति, गति, भ्रान्ति, नति, वाणी, प्रभा, शोभा, क्रिया और नीति देवियों की पूजा होती है।

❑ अष्टदल में ब्राह्मी, नारायणी, चण्डी, शाम्भवी, अपराजिता, कौमारी, वाराही तथा नारसिंहिका-भैरवी देवियों की रुरु, चण्ड, कराल, संहार, भीषण, कालाग्नि, उन्मत्त एवं विकराल भैरवों के साथ पूजा करने का विधान है। यन्त्र के यहां तक के भाग को 'शिवधाम' कहा गया है।

इसके पश्चात् बाह्य दशकोण में—सरस्वती, शाश्वती, दुर्गा, सावित्री, ब्रह्मवादिनी, श्रीमती, कुब्जिका, चम्पा, तारिणी और विश्वमंगला की पूजा विहित है। अन्तर्दशार में—त्रिपुरा, कालिका, तारा, सुमुखी, बगलामुखी, बाला, बैखरी, तुर्या, छिन्ना तथा भुवनेश्वरी देवी की पूजा करनी चाहिए। ये दोनों चक्रभाग 'सौरधाम' माने जाते हैं। तदनन्तर त्रिकोण में गंगा, यमुना और सरस्वती की अर्चना करके बिन्दु पीठ में 'त्रिपदा गायत्री' तथा पद्मासनस्थ चतुर्मुख (ब्रह्मा) की पूजा का विधान है। यहीं त्रिकोण के चारों ओर अक्षसूत्र, पद्मलगुड और कुसुम तथा चारों वेदों की पूजा करें। इस प्रकार यंत्रपूजा करने से गायत्री-माता की कृपा प्राप्त होती है और जपादि में शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

❑❑

१९

श्रीदत्तगायत्री मंत्र

विनियोग:

ॐ अस्य श्रीदत्तात्रेयमंत्रस्यशबरऋषि: गायत्रीच्छन्द: श्रीदत्तात्रेयोदेवता द्रां बीजं ह्रीं शक्ति: क्रौं कीलकं श्रीदत्तात्रेय प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

ऋष्यादिन्यास:

शबरऋषये नमः (शिरसि)। **गायत्रीछन्दसे नमः** (मुखे)। **श्रीदत्तात्रेयदेवतायै नमः** (हृदये)। **द्रां बीजाय नमः** (गुह्ये)। **ह्रीं शक्तये नमः** (पादयो:)। **क्रौं कीलकाय नमः** (नाभौ)। **श्रीदत्तात्रेयप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः** (सर्वांगे)।

कर-हृदयादिन्यासा:

द्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। *हृदयाय नम:।* **द्रीं तर्जनीभ्यां नमः**। *शिरसे स्वाहा।* **द्रूं मध्यमाभ्यां नमः**। *शिखायै वषट्।* **द्रैं अनामिकाभ्यां नमः**। *कवचाय हुम्।* **द्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः**। *नेत्रत्रयाय वौषट्।* **द्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**। *अस्त्राय फट्।*

ध्यानम् :

रविमण्डल मध्यस्थं रक्तं रक्ताब्जसंस्थितम्।
योगारूढं ज्ञानधनं दत्तात्रेयमहं भजे॥

दत्तगायत्री मंत्र :

ॐ द्रां ह्रीं क्रों दत्तात्रेयाय विद्महे योगीश्वराय धीमहि। तन्नो दत्त: प्रचोदयात्।

यह 'दत्तगायत्री मंत्र' है। श्रीदत्तभगवान् की कृपा-प्राप्ति के लिए है। अन्य साधनाओं से पहले दत्तगायत्री मंत्र का जप करने से इष्टदेव की पूर्ण कृपा होती है तथा अन्य जपादि में होने वाले दोष इसके प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं। मन स्थिर और एकाग्र होता है।

❑❑

२०

श्रीगायत्री चालीसा

दोहा:

ह्रीं श्रीं क्लीं मेधा प्रभा, जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शांति क्रांति जाग्रति प्रगति, रचनाशक्ति अखण्ड॥
जगत् जननी मंगल करनी, गायत्री सुख धाम्।
प्रणवो सावित्री स्वधा, स्वाहा पूरन काम॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत् जननी। गायत्री नित कलिमल दहनी॥
अक्षर चौबिस परम पुनीता। इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता॥
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा। सत्य सनातन सुधा अनूपा॥
हंसारूढ़ सितम्बर धारी। स्वर्ण कांति शुचि गगन बिहारी॥
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला। शुभ्रवर्ण तनु नयन विशाला॥
ध्यान धरत पुलकित हिय होई। सुख उपजत दुःख दुरमति खोई॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया। निराकार की अद्भुत माया॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई। तरै सकल संकट सों सोई॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली। दिपै तुम्हारी ज्योति निराली॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं। जो शारद शतमुख गुण गावैं॥
चार वेद की मातु पुनीता। तुम ब्रह्माणी गौरी सीता॥
महामंत्र जितने जग माहीं। कोऊ गायत्री सम नाहीं॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै। आलस पाप अविद्या नासै॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी। कालरात्रि वरदा कल्याणी॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते। तुम सों पावें सुरता तेते॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे। जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी। जय जय जय त्रिपदा भयहारी॥
पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना। तुम सम अधिक न जग में आना॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा। तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा॥
जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं। माता तुम सब ठौर समाईं॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे। सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता। पालक, पोषक नाशक त्राता॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी। तुम सन तरे पातकी भारी॥
जापर कृपा तुम्हारी होई। तापर कृपा करें सब कोई॥
मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें। रोगी रोगरहित ह्वै जावें॥
दारिद मिटै कटै सब पीरा। नाशै दुक्ख हरै भव भीरा॥
गृह कलेश चित चिन्ता भारी। नासै गायत्री भय हारी॥
सन्ततिहीन सुसन्तति पावें। सुख सम्पति युत मोद मनावें॥
भूत पिशाच सबै भय खावें। यम के दूत निकट नहिं आवें॥
जो सधवा सुमिरें चित लाई। अक्षत सुहाग सदा सुखदाई॥
घर वर सुखप्रद लहै कुमारी। विधवा रहें सत्यव्रत धारी॥
जयति जयति जगदम्ब भवानी। तुम सम और दयालु न दानी॥
जो सद्‌गुरु सों दीक्षा पावें। सो साधन को सफल बनावें॥
सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी। लहें मनोरथ गृही विरागी॥
अष्टसिद्धि नवनिधि की दाता। सब समर्थ गायत्री माता॥
ऋषि मुनि यती तपस्वी योगी। आरत अर्थी चिंतित भोगी॥
जो जो शरण तुम्हारी आवें। सो सो मनवांछित फल पावें॥
बल बुद्धि विद्या शील सुभाऊ। धन वैभव यश तेज उछाऊ॥
सकल बढ़ें उपजें सुख नाना। जो यह पाठ करैं धरि ध्याना॥

□□

२१

गायत्री महामंत्र और रोगोपचार

वेदों में गायत्री मंत्र को महामंत्र कहा गया है। यह अत्यधिक प्रभावशाली व चमत्कारिक मंत्र है। इसके द्वारा विविध रोगों का उपचार भी किया जा सकता है। मंत्रों का तन-मन पर प्रभाव पड़ता है, इसकी पुष्टि अब वैज्ञानिक शोधों द्वारा हो चुकी है। प्रणव मंत्र द्वारा विभिन्न रोगों के उपचार के शोध आजकल हो रहे हैं और उनमें सफलता भी मिली है। यह बात सही है कि मनो-शारीरिक रोगों पर इसके प्रभाव जल्द दिखाई देते हैं, लेकिन मंत्रों द्वारा झाड़-फूंक के व्यवहार के प्रयोगों से यह भी पुष्ट होता है कि इनका प्रभाव शारीरिक रोगों पर ही प्रभावी रूप से होता है।

गायत्री महामंत्र का अनुष्ठान एक ऐसा रामबाण है जो मनुष्य के अंदर दिव्य शक्तियां पैदा करके उसके रोगों का नाश कर देता है। लेकिन इस महामंत्र का अनुष्ठान केवल श्रद्धालु, आस्तिक, चरित्रवान एवं मंत्र शक्ति के प्रति आस्था रखने वाले व्यक्तियों को ही करना चाहिए। जो स्वयं अनुष्ठान करने में सक्षम न हों, वे किसी विद्वान पुरोहित से यह कार्य करवा सकते हैं। गायत्री महामंत्र इस प्रकार है—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात।

इस मंत्र का प्रत्येक रोगोपचार में एक निश्चित संख्या में जप किया जाता है। आप भी मां गायत्री पर श्रद्धा रखकर रोगों से मुक्त हो सकते हैं।

बाल रोग

बच्चे बड़े नाजुक एवं कोमल होते हैं। उनमें प्रतिरोधक क्षमता कम होती है। इसीलिए वे कई प्रकार के रोगों से प्रायः ग्रस्त हो जाते हैं। इन रोगों में हरे-पीले दस्त, दूध पीते ही उल्टी कर देना, दूध न पीना, पीलिया हो जाना, ज्वर होना, निरन्तर सूखते जाना, निमोनिया, खांसी, बुखार होना तथा रक्त युक्त मलत्याग

करना आदि शामिल हैं। गायत्री अनुष्ठान द्वारा बाल रोगों का निवारण निम्न प्रकार से किया जाता है।

बच्चे को तीनों संध्याओं में गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित जल एक-एक चम्मच पीने को दें। इससे बच्चा दस्त एवं उल्टी से मुक्त हो जाएगा। यदि बच्चा दूध न पीता हो तो कवच का पाठ करते हुए जल अभिमंत्रित करें फिर वह जल बच्चे को निरन्तर तीन दिनों तक पिलाएं।

यदि बच्चा निमोनिया से ग्रस्त हो तो उसे गोद में लेकर मां गायत्री के चित्र के सम्मुख बैठें फिर बच्चे पर फूंक मारते हुए 108 मंत्रों का जाप करें। इसके अतिरिक्त 108 मंत्रों के जाप से गंगा जल अभिमंत्रित करें। इस जल से रोगी बच्चे की कमर तथा वक्ष मलें। साथ ही तीनों संध्याओं में अभिमंत्रित जल बच्चे को पिलाते रहें।

पीलिया से ग्रस्त बच्चे के रोग निवारण हेतु गायत्री कवच से जल अभिमंत्रित करें और उससे बच्चे की आंखें धोएं। ऐसा पांच, सात अथवा ग्यारह दिन तक करें। साथ ही अभिमंत्रित जल रोगी बच्चे को पिलाते रहे। मां गायत्री के आशीर्वाद से बच्चा अवश्य ठीक हो जाएगा।

अनुष्ठान—सूखा रोग से पीड़ित बच्चे के स्वास्थ्य लाभ हेतु मां गायत्री का अनुष्ठान किया जाता है। गायत्री का एक पुरश्चरण चौबीस लाख का एवं अनुष्ठान सवा लाख का माना जाता है। आंशिक अनुष्ठान में मंत्रों की संख्या ग्यारह, इक्कीस, चौबीस एवं इकतालीस हजार हो सकती है।

अनुष्ठान के लिए घर के किसी साफ-स्वच्छ कमरे में गायत्री की प्रतिमा स्थापित करके धूप-दीप जलाएं। फिर प्रतिमा के सामने वेदी की स्थापना करें। पूजन सामग्री वेदी के दाईं ओर रखें। माता-पिता रोगी बच्चे के साथ वेदी के समक्ष बैठें और विद्वान पुरोहित द्वारा अनुष्ठान कराएं।

पहली संध्या में निश्चित संख्या में मंत्रों का जाप पूरा होने पर हवन करें और ब्राह्मणों को भोजन कराएं। पुरोहित बच्चे को अपनी गोद में लेकर मंत्र जप करते हुए उसके शरीर पर हाथ फेरें। बीच-बीच में बच्चे पर फूंक मारते रहें। दूसरी संध्या में जल को अभिमंत्रित करें। उस जल से बच्चे के पूरे शरीर की मालिश करें। तीसरी संध्या में बच्चे को अभिमंत्रित जल पिलाएं। निरन्तर ग्यारह दिनों तक यही प्रयोग दोहराते रहें। निश्चित ही बच्चा स्वस्थ हो जाएगा।

अनुष्ठान काल में बच्चे के माता-पिता पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें और भूमि पर शयन करें। अनुष्ठान के समय वे भी गायत्री मंत्र का मानसिक जाप करते रहें।

चेचक

चेचक प्रायः बालकों को होती है। लेकिन कभी-कभी बड़े व्यक्ति भी इसके

शिकार हो जाते हैं। इसमें चेहरे, बदन आदि पर दाने निकल आते हैं तथा ज्वर चढ़ जाता है। गायत्री मंत्र का अनुष्ठान करने से चेचक से मुक्ति मिल सकती है। स्वयं अनुष्ठान न कर पाने की स्थिति में किसी भी विद्वान तथा गायत्री के ज्ञाता ब्राह्मण से यह अनुष्ठान कराया जा सकता है।

अनुष्ठान—अनुष्ठान के लिए स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर मां गायत्री की प्रतिमा स्थापित करके हवन के लिए वेदी बनाएं। फिर उसमें अग्नि प्रज्वलित करें। हवन के लिए समिधा में तिल मिलाकर एक लाख बार आहुति दें। वेदी के पास घृत का एक पात्र रखें। प्रत्येक आहुति पर 'स्वाहा' कहते हुए घी का पात्र अभिमंत्रित करें। यह अनुष्ठान संध्या के समय करना चाहिए।

हवन के बाद कुछ भस्म अभिमंत्रित घृत में मिलाएं। शेष भस्म को लाल वस्त्र में बांधकर रोगी के बिस्तर के सिरहाने रख दें। घी और भस्म का लेप चेचक से पीड़ित व्यक्ति के प्रभावित अंगों पर दिन में चार बार करें। इस प्रकार अनुष्ठान करने से रोगी को अवश्य ही लाभ होता है।

विद्वान पुरोहित को चाहिए कि वह रोगी को अपने पास बैठाकर उससे गायत्री महामंत्र का मानसिक जप करने को कहें। ऐसी स्थिति में रोगी का मुंह गायत्री प्रतिमा की ओर होना चाहिए। साथ ही मंत्र शक्ति पर दृढ़ आस्था रखनी चाहिए।

ज्वर

ज्वर अर्थात् बुखार एक सामान्य रोग है। यह किसी भी व्यक्ति को हो सकता है। किसी भी प्रकार का ज्वर हो और उसका चाहे कोई भी नाम हो, पूर्ण रूप से गायत्री महामंत्र से एक या तीन संध्याओं में इसका निदान किया जा सकता है।

अनुष्ठान—ज्वर रोग के निवारण के लिए यदि रोगी स्वयं अनुष्ठान न कर पाए तो यह कार्य किसी विद्वान पंडित द्वारा भी कराया जा सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम किसी चौकी पर गायत्री देवी की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए तथा उसके सम्मुख धूप-दीप आदि प्रज्वलित करना चाहिए। इसके बाद वेदी बनाएं और समिधा में जौ के दाने मिलाकर इसके बाद 2400 मंत्रों की आहुति दें। वेदी के समक्ष जल से भरा एक पात्र रखें। प्रत्येक आहुति पर उसी मंत्र से जल को अभिमंत्रित करना चाहिए।

विद्वान पंडित को चाहिए कि वह रोगी व्यक्ति को अपने निकट बैठाए और उससे मूल मंत्र का मानसिक जप करने को कहें। साथ ही रोगी को स्वयं भी स्वाहा बोल आहुतियां देनी चाहिए। अनुष्ठान के पश्चात् विद्वान पंडित रोगी पर अभिमंत्रित जल छिड़कें। यह अनुष्ठान तीनों संध्याओं में करें तथा रोगी को अभिमंत्रित जल

पिलाएं। उसी जल से रोगी का मुंह भी धोएं। ऐसा करने से अवश्य ही ज्वर का निवारण होकर रोगी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है।

यदि ज्वर तेज हो और रोगी पर बार-बार बेहोशी छा रही हो तो उसके मस्तक पर अभिमंत्रित जल की पट्टी रखें। एक-एक घंटे पश्चात् रोगी को अभिमंत्रित जल पिलाते रहना चाहिए। ज्वर के साथ अगर वमन भी हो तो रोगी को उपरोक्त ढंग से अभिमंत्रित जल पिलाएं।

इस अनुष्ठान का प्रयोग उसी मनुष्य को करना चाहिए जो गायत्री महामंत्र में श्रद्धा रखता हो और जो स्वयं भी प्रात:-सायं गायत्री की उपासना करें। शंकालु, अविश्वासी एवं मंत्र शक्ति को अंधविश्वास मानने वाले व्यक्ति भूलकर भी ये अनुष्ठान न कराएं। क्योंकि श्रद्धा-भक्ति के अभाव में इससे उन्हें कोई लाभ नहीं होगा।

सिर दर्द

सिर दर्द कोई रोग न होकर किसी रोग का लक्षण मात्र होता है। यह अनेक कारणों से हो सकता है। इसका निवारण गायत्री महामंत्र द्वारा एक या तीन संध्याओं में किया जा सकता है।

अनुष्ठान—सर्वप्रथम एक चौकी पर गायत्री मां की प्रतिमा स्थापित करके धूप-दीप जलाएं। फिर वेदी बनाएं और समिधा में राई के फूल मिलाकर दो हजार मन्त्रों की आहुति दें। वेदी के पास जल से भरा एक पात्र रखें। प्रत्येक आहुति के साथ उस जल को अभिमंत्रित करते रहें।

यदि सम्भव हो तो अपने सम्मुख पीड़ित व्यक्ति को बैठाएं और उससे मूल मंत्र का मानसिक जाप करने तथा 'स्वाहा' बोलते हुए आहुति देने को कहें। पूर्ण अनुष्ठान के पश्चात् मां गायत्री को श्रद्धा से शीश झुकाएं तथा रोगी पर अभिमंत्रित जल छिड़कें।

रोगी को तीनों संध्याओं में अभिमंत्रित जल पिलाएं। उसी अभिमंत्रित जल से रोगी का मुंह भी धोएं। इस प्रकार उपचार करने से सभी प्रकार का सिर दर्द शांत हो जाता है तथा रोगी को आराम मिलता है।

यदि तेज सिर दर्द हो तथा आंखें न खुल रही हों तो रोगी के सिर पर अभिमंत्रित जल को आधे-आधे घंटे बाद छिड़कते रहें। किसी स्वच्छ कपड़े को अभिमंत्रित जल से भिगोकर उसकी तह बनाकर रोगी के सिर पर भी रखा जा सकता है। प्रत्येक एक घण्टे के अन्तराल पर अभिमंत्रित जल को रोगी को पिलाएं।

आधासीसी का दर्द

आधासीसी का दर्द एक कष्टदायी रोग है। यह प्राय: स्त्री-पुरुषों को हो जाता

है। इस रोग में सिर के आधे हिस्से में दर्द होने लगता है। यह दर्द किसी भी दवा से ठीक नहीं होता जिससे रोगी परेशान हो जाता है। इस दर्द का निवारण अनुष्ठान द्वारा करना चाहिए।

अनुष्ठान—सर्वप्रथम चौकी पर किसी स्वच्छ वस्त्र को बिछाएं। फिर उस पर गायत्री की प्रतिमा स्थापित करें। प्रतिमा के सम्मुख धूप-दीप प्रज्वलित करें। अब स्वच्छ बालू से वेदी बनाकर तत्पश्चात् अलसी के फूलों को समिधा में मिलाएं। गायत्री महामंत्र बोलते हुए 1500 आहुतियां दें।

रोगी को अपने सम्मुख बैठाकर कुशा द्वारा उसके मस्तक पर गंगा जल के छींटे दें। गायत्री जप अनुष्ठान पूर्ण होने तक अपने पास जल से भरा एक पात्र रखें तथा कुशाओं द्वारा उसे अभिमंत्रित करते रहें।

रोगी के सिर में अधिक दर्द होने पर अभिमंत्रित जल आधे-आधे घंटे के बाद उसके सिर पर छिड़कें। श्रद्धापूर्वक यह अनुष्ठान करने से आधासीसी का दर्द नष्ट हो जाता है।

इस अनुष्ठान को करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति प्रात: एवं सायं गायत्री का पूजन करता हो तथा मंत्र शक्ति के प्रति आस्थावान, चरित्रवान, आस्तिक हो।

उदर शूल

उदर शूल एक कष्टप्रद रोग है। यह पेट की खराबी आदि अनेक कारणों से होता है। इसमें मनुष्य को काफी बेचैनी अनुभव होती है। निम्नलिखित अनुष्ठान कराने से इस रोग से छुटकारा मिल जाता है।

अनुष्ठान—साधारण उदर शूल के लिए 2400 मंत्रों का जप करना चाहिए। जप के बाद 24 मंत्रों की आहुति करें। इसके लिए एक चौकी पर गायत्री देवी का चित्र स्थापित करें। चित्र के निकट धूप-दीप आदि प्रज्वलित करना चाहिए। वहीं पर जल का एक पात्र भी रखें। पात्र में कुशा डाल दें। यदि रोगी बैठने की स्थिति में हो तो उसे अपने दाईं ओर भूमि पर बैठा लें। रोगी का मुख प्रतिमा की ओर रहना चाहिए। अब विद्वान पंडित को मूल मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

मंत्र जप के समय प्रत्येक मंत्र के पूर्ण होने पर रोगी पर कुशा से जल छिड़कते रहें। जप के बाद समिधा में जौ मिलाकर हवन करें फिर 108 मंत्रों से जल को अभिमंत्रित करें। यह अभिमंत्रित जल रोगी को पिलाएं। साथ ही मंत्र जप करते हुए रोगी के पेट पर धीरे-धीरे हाथ फेरें। इससे उदर शूल का निवारण हो जाएगा।

इस प्रयोग के लिए आवश्यक है कि रोगी आस्तिक हो, वह स्वयं भी गायत्री

की उपासना करता हो और मंत्र शक्ति में पूर्ण आस्था रखता हो। यदि रोगी में उपर्युक्त बात न हो तो उसे यह प्रयोग नहीं करना चाहिए।

नेत्र रोग

नेत्र मनुष्य की प्रमुख इंद्रियों में से एक है। इसके रोगग्रस्त होने पर उसे अपार कष्ट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अतः कोई भी नेत्र रोग होने पर तत्काल उसका उपचार करना चाहिए। 'गायत्री रामायण' का पाठ चार पूर्णमासियों में करके भी नेत्र दोष का निवारण किया जा सकता है।

अनुष्ठान—सर्वप्रथम एक चौकी पर गायत्री देवी की प्रतिमा स्थापित करें तथा उसके सम्मुख धूप-दीप जलाएं। फिर वेदी बनाकर समिधा में चावल की खीलों को मिलाकर गायत्री महामंत्र से दो हजार आहुतियां दें। अब गायत्री रामायण का पाठ करें।

अनुष्ठान के समय घर पर बनाया गया काजल गायत्री प्रतिमा के समक्ष रखें। प्रत्येक बार 'स्वाहा' बोलते हुए काजल को अपनी तर्जनी उंगली से स्पर्श करें।

विद्वान पुरोहित रोगी को अपने पास बैठाएं और उससे मूल मंत्र का मानसिक जाप करने के लिए कहें। रोगी व्यक्ति स्वयं भी 'स्वाहा' बोल आहुतियां दे सकता है। अनुष्ठान पूर्ण होने के अन्तिम दिन काजल में चुटकी भर हवन का भस्म मिला कर उसे रोगी के नेत्रों में प्रतिदिन लगाएं।

यह काजल तब तक लगाते रहें जब तक नेत्र दोष दूर न हो। इस प्रकार अनुष्ठान करने से नेत्र दोष में लाभ मिलता है। पूर्ण अनुष्ठान होने तक गायत्री रामायण का पाठ जारी रखना चाहिए। इस दौरान किसी भी प्रकार की अन्य औषधि का प्रयोग न करें।

अधरंग

अधरंग एक भयानक एवं कष्टदायी रोग है। इसमें रोगी के आधे शरीर पर लकवा हो जाता है। शरीर के जितने भाग पर पक्षाघात होता है, उतना भाग कार्य नहीं कर पाता। इसलिए इस रोग का उपचार शीघ्र करना चाहिए। इस रोग से मुक्ति पाने के लिए भक्तिपूर्वक किए गए गायत्री अनुष्ठान से मां गायत्री प्रसन्न होंगी। आप अवश्य ही इस भयावह रोग से मुक्त हो जाएंगे।

अनुष्ठान—इस अनुष्ठान में मां गायत्री का पुरश्चरण सवा लाख मंत्रों द्वारा किया जाता है। रोगी स्वयं नहीं कर सकता। इसके लिए किसी योग्य पंडित का होना आवश्यक है। जिस पंडित से अनुष्ठान कराएं, वह गायत्री पूजन का सम्पूर्ण ज्ञाता, गायत्री में पूर्ण विश्वास रखने वाला, शाकाहारी, योग्य, धर्मनिष्ठ तथा ईमानदार हो।

इसके लिए निम्नलिखित सामग्री एकत्र करें, तांबे के पात्र में तिल का तेल, गंगा जल, पांच प्रकार के सूखे मेवे, सात हाथ लंबा लाल वस्त्र, आहुति के लिए लौंग तथा भोग के लिए बताशे। यह सभी सामग्री अपने निकट रख लें। अनुष्ठान स्थल पूर्णत: स्वच्छ, पवित्र एवं भीड़ रहित होना चाहिए।

सर्वप्रथम अनुष्ठान स्थल को गाय के गोबर से लीपें। इसके बाद लकड़ी की चौकी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर गायत्री की प्रतिमा स्थापित करें। प्रतिमा के सम्मुख धूप-दीप प्रज्वलित करें। तत्पश्चात् स्नान से निवृत्त रोगी को श्वेत वस्त्र पहनाकर, गायत्री की प्रतिमा के समक्ष बैठा दें। यदि रोगी बैठने की स्थिति में न हो तो उसे वहीं लिटा दें।

अब पुरोहित देवी के सम्मुख आसन पर बैठें तथा देवी की स्तुति कर अनुष्ठान प्रारम्भ करें। अनुष्ठान में आम की सूखी लकड़ियों का हवन करें। मां गायत्री का मूल मंत्र बोलते हुए वेदी में अग्नि जलाएं।

रोगी को चाहिए कि वह अपना मन मां गायत्री के चरणों में लगाकर गायत्री मंत्र का मानसिक जप करता रहे। प्रत्येक मंत्र की समाप्ति पर एक लौंग की आहुति दें तथा अपनी तर्जनी अंगुली से तेल को स्पर्श करें। इस प्रकार तेल अभिमंत्रित हो जाएगा।

अनुष्ठान समाप्त होने पर अपने दाएं हाथ से मां गायत्री को सूखे मेवे समर्पित करें। बताशे का भोग लगाएं तथा शेष बताशे स्वयं खाएं। अनुष्ठान की सामग्री को लाल वस्त्र में लपेटकर अपने घर में रखें। अभिमंत्रित तेल से लकवाग्रस्त अंग पर गायत्री का मूल मंत्र बोलते हुए मालिश करें। मां गायत्री की कृपा से अवश्य ही रोग मुक्ति होगी। रोग मुक्त होने के बाद पांच कन्याओं या एक ब्राह्मण को भोजन कराना आवश्यक है।

इस अनुष्ठान के समय मंत्रों का स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण करें तथा अनुष्ठान काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें। भूमि पर शयन करें। मांस-मदिरा आदि तामसी पदार्थों का सेवन कदापि न करें। नित्य गौ की सेवा करें।

क्षय रोग

क्षय रोग में रोगी के फेफड़े रोगग्रस्त हो जाते हैं। यह एक संक्रामक रोग है, अत: इससे शीघ्र मुक्ति पाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि पूर्ण विधि द्वारा गायत्री अनुष्ठान किया जाए तो भी क्षय रोग से छुटकारा पाया जा सकता है।

अनुष्ठान—सबसे पहले सोमलता की जड़ को हवन समिधा में मिलाकर रख लें। फिर दूसरी अमावस्या को संध्या के समय चौकी पर गायत्री की प्रतिमा स्थापित करके पीली मिट्टी से वेदी बनाएं। अब विद्वान पुरोहित को अपने समक्ष

बैठाएं और सोमलता की जड़ के साथ मिलाई गई हवन समिधा से एक लाख बार गायत्री चालीसा का पाठ करें।

यह अनुष्ठान दो संध्याओं में करने से पूर्ण होता है। जब अनुष्ठान पूर्ण हो जाए तो हवन की भस्म एकत्र करके रख लें। इसे स्नान के बाद प्रतिदिन मस्तक पर लगाएं साथ ही चुटकी भर भस्म गाय के दूध के साथ स्वास्थ्य लाभ होने तक लेते रहें। प्रतिदिन ऐसा करने से रोगी एक माह में पूर्ण रूप से अवश्य स्वस्थ हो जाता है। रोगी को नित्य ही 'गायत्री चालीसा' का पाठ करना तथा गायत्री का उपासक होना आवश्यक है। मां गायत्री में विश्वास रखने वाले मनुष्यों को ही इस अनुष्ठान में सफलता प्राप्त होती है।

चरित्रहीन, शंकालु, आचरणहीन तथा दुष्ट प्रवृत्ति के मनुष्य इस अनुष्ठान को भूलकर भी न करें। गायत्री उन्हीं पर प्रसन्न होती हैं, जो सत्यप्रिय, आस्तिक, चरित्रवान एवं श्रद्धावान होते हैं।

हिस्टीरिया

हिस्टीरिया एक अति भयंकर रोग है। यह प्राय: महिलाओं को ही अधिक होता है। इसमें रोगी की दशा विक्षिप्त हो जाती है। उसका दिमाग से नियंत्रण लगभग समाप्त हो जाता है। हिस्टीरिया अधिकांशत: उन लोगों को होता है, जो बचपन से हीनभावना के शिकार होते हैं। इसका एक कारण अत्यधिक मानसिक तनाव भी है।

ज्यादा गरम वस्तुओं का सेवन करने वाले व्यक्तियों को भी हिस्टीरिया रोग हो जाता है। इसके अतिरिक्त अत्यधिक धूम्रपान तथा शराब का सेवन भी इस रोग के प्रमुख कारण हैं। इस रोग का दौरा कुछ देर के लिए पड़ता है किन्तु इस दौरान रोगी व्यक्ति कुछ भी कर सकता है। इसका उपचार शीघ्र कराना आवश्यक है। इस रोग का निवारण गायत्री मंत्र के अनुष्ठान द्वारा भी किया जा सकता है।

अनुष्ठान—इस अनुष्ठान के लिए सात हाथ लम्बा मलमल का लाल वस्त्र, पीली सरसों, गुड़हल के सात फूल, सात सुपारी, सात जायफल, पांच प्रकार के सूखे मेवे एवं थोड़ा मिष्ठान खरीद लाएं।

सर्वप्रथम स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर वेदी बनाकर उसे काली गाय के गोबर से लीप दें। तत्पश्चात् लकड़ी की चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर गायत्री की प्रतिमा स्थापित करें एवं धूप-दीप जलाएं। प्रतिमा के सम्मुख आसन बिछाकर बैठ जाएं एवं देवी की स्तुति के साथ जप प्रारम्भ करें। प्रत्येक मंत्र की समाप्ति पर सरसों की आहुति दें। अनुष्ठान की समाप्ति पर सातों गुड़हल के पुष्प देवी के चरणों में अर्पित करें। सातों सुपारियां एवं जायफल अग्नि को समर्पित करें। अनुष्ठान की

सफलता के लिए प्रार्थना करने के बाद पांचों प्रकार के मेवे देवी को दाएं हाथ से अर्पित करें।

मिष्ठान का भोग लगाने के बाद उसे बच्चों में बांट दें तथा लाल वस्त्र किसी ब्राह्मण को दान कर दें। अनुष्ठान की सम्पूर्ण सामग्री लाल वस्त्र में बांधकर अपने पास रखें। इन सभी कार्यों से गायत्री माता प्रसन्न होकर आपको स्वास्थ्य प्रदान करेंगी। रोगमुक्त होने पर लाल वस्त्र में बांधकर रखी गई वस्तुएं नदी में प्रवाहित कर दें। यह अनुष्ठान भी रोगी स्वयं कर सकता है अथवा किसी पुरोहित से करा सकता है। यदि पुरोहित द्वारा अनुष्ठान किया जा रहा हो तो रोगी को वहीं पास में बैठकर गायत्री मूल मंत्र का मानसिक जप करना चाहिए तथा देवी के प्रति श्रद्धा एवं आस्था रखना चाहिए।

संतानहीनता

प्रत्येक विवाहित व्यक्ति को संतान की इच्छा होती है। किन्तु इस संसार में कुछ ऐसे भाग्यहीन भी होते हैं जो जीवन भर संतान का मुख देखने के लिए तरस जाते हैं।

संतानहीनता के कई कारण हो सकते हैं, जिनका उपचार विविध चिकित्सा प्रणाली द्वारा किया जाता है। ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास रखने वाले और कर्म के सिद्धांत को मानने वाले लोग सन्तानहीनता को पूर्व जन्म के किसी कर्म का भोग मानते हैं। गायत्री मंत्र के अनुष्ठान से संतान प्राप्ति भी संभव है, लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आप मां गायत्री में पूर्ण आस्था रखते हों।

संतान प्राप्ति के इच्छुक व्यक्तियों को यह अनुष्ठान स्वयं करना चाहिए। यदि ऐसा करना संभव न हो तो अनुष्ठान किसी पुरोहित द्वारा भी कराया जा सकता है। अनुष्ठान के समय पति-पत्नी की उपस्थिति अनिवार्य है। अच्छा हो कि यदि पति-पत्नी स्वयं भी आहुति दें।

यह अनुष्ठान किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की दशमी को आरम्भ करके सुविधानुसार ग्यारह या इक्कीस दिनों में पूरा करना चाहिए। अनुष्ठान काल में पति-पत्नी पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहें। इस समय हल्का भोजन करें और तामसी पदार्थों के सेवन से बचें।

अहिंसा का पूर्ण रूप से पालन करें। घर में पलने वाले कुत्ता, बिल्ली एवं चूहे आदि को शारीरिक कष्ट न पहुंचाएं। नित्य गौ तथा ब्राह्मण की सेवा करें।

अनुष्ठान—सर्वप्रथम अनुष्ठान स्थल को गाय के गोबर से लीप दें। फिर पवित्र एवं स्वच्छ चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर गायत्री देवी की प्रतिमा स्थापित करें और धूप-दीप जलाएं। तत्पश्चात् प्रतिमा के सामने मिट्टी की वेदी बनाएं। उसके निकट जल का पात्र, जौ एवं जौ मिश्रित समिधा तथा खीर से भरा पात्र रखें।

अब गायत्री देवी की स्तुति करें निश्चित संख्या में मंत्र जाप आरम्भ करें। जप के बाद 108 मंत्रों से अग्नि में आहुति दें। ऐसे में पति-पत्नी स्वयं भी आहुति दें तो उत्तम है।

इसके बाद देवी को खीर का भोग लगाएं। फिर पात्र की वह खीर एवं जल पति-पत्नी में बराबर बांट दें।

रात्रि में पति-पत्नी वेदी के निकट भूमि पर शयन करें और नींद आने तक मानसिक जाप करते रहें। इस प्रकार अन्य दिनों भी जप एवं हवन करें। जप पूरा होने पर जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्राह्मणों को भोजन कराएं। यह कार्य उसी दिन करना चाहिए।

विद्वान पुरोहित को चाहिए कि वह अनुष्ठान पूरा होने पर खीर को 108 मंत्रों से अभिमंत्रित करके पति-पत्नी को खाने को दें। इस प्रकार जल भी अभिमंत्रित करें। कुशा से पति-पत्नी पर अभिमंत्रित जल के छींटे दें और वही जल उनसे चौबीस दिनों तक पीने को कहें। जल अभिमंत्रित करने के लिए गंगा जल का प्रयोग करें।

पति-पत्नी दोनों संध्याओं में चौबीस दिनों तक अभिमंत्रित जल पिएं और रात्रि में भूमि पर शयन करें। इस दौरान उन्हें 108 बार गायत्री महामंत्र का जप अवश्य करना चाहिए। कामना पूर्ण होने तक शुक्ल पक्ष की दशमी को उपवास अवश्य रखें। गायत्री देवी की कृपा से संतान की कामना अवश्य पूरी होगी।

मानसिक तनाव

वर्तमान युग में मानसिक तनाव एक सामान्य रोग है। अधिक से अधिक पैसा कमाने, सुख और सुविधाएं प्राप्त करने की अभिलाषा ने मनुष्य को इस रोग से पीड़ित कर दिया है। इसके अलावा सामाजिक मान-प्रतिष्ठा, व्यवसाय में कड़ी प्रतिस्पर्धा, दाम्पत्य जीवन की समस्याएं आदि के कारण भी मानसिक तनाव एक मुख्य समस्या बन गया है। आज लगभग हर व्यक्ति इस रोग से पीड़ित है। इस रोग का उपचार अत्यंत आवश्यक है अन्यथा इसका परिणाम भयानक होता है। गायत्री महामंत्र द्वारा भी इस रोग का उपचार संभव है।

अनुष्ठान—अनुष्ठान करने के लिए प्रातःकाल शीघ्र उठकर ठंडे जल से स्नान करें तथा गायत्री प्रतिमा के सम्मुख धूप-दीप जलाएं। फिर दोनों संध्याओं में गायत्री के मूल मंत्र का 108 बार जप करें। इससे निश्चय ही आप तनाव मुक्त होकर मानसिक शांति का अनुभव करेंगे। इस अनुष्ठान के दौरान यह आवश्यक है कि रोगी मन में गायत्री माता का ध्यान, गायत्री मंत्र का मानसिक जप तथा सदैव प्रसन्न रहने का प्रयत्न करें।

टोना-टोटका

आज के इस वैज्ञानिक युग में तंत्र-मंत्र एवं टोना-टोटका, अंधविश्वास को बढ़ावा देते हैं, किन्तु कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो मंत्र शक्ति में पूर्ण आस्था रखते हैं, टोने-टोटके को सत्य मानते हैं। ये टोने-टोटके छोटे बच्चों पर अधिक होते देखे गए हैं। कभी-कभी तो बड़े भी इसके प्रभाव से नहीं बच पाते। टोने-टोटके में बच्चों को दस्त, सूखा रोग, पीलिया, अकारण रोना, चौंकना, कांपना, दूध न पीना अथवा पीते ही उल्टी कर देना आदि लक्षण दिखाई देते हैं। ऐसे बच्चे हमेशा रोगी बने रहते हैं और कभी-कभी मृत्यु के शिकार हो जाते हैं।

उपरोक्त लक्षण किसी रोग के भी हो सकते हैं। किन्तु यदि आप टोने-टोटके पर विश्वास करते हैं, तो गायत्री महामंत्र द्वारा टोने-टोटके का निवारण करें, गायत्री उपासक तथा गायत्री कवच सिद्ध व्यक्ति द्वारा अभिमंत्रित जल लेकर बच्चे को निरन्तर चौबीस दिनों तक पिलाएं। कवच से अभिमंत्रित जल रोगी बालक पर तीनों संध्याओं में छिड़कें और उसी जल से उसे स्नान कराएं। कवच से कोई लाभ न होने पर गायत्री महामंत्र का अनुष्ठान करें।

अनुष्ठान—किसी साफ हवादार कमरे में एक चौकी पर मां गायत्री की प्रतिमा स्थापित करके उसके सम्मुख धूप-दीप जलाएं। तत्पश्चात् वहीं एक वेदी बनाएं और जल का एक पात्र रखें। इसके बाद विद्वान ब्राह्मण अथवा साधक विभिन्न स्तोत्रों द्वारा या गायत्री की स्तुति करें। तत्पश्चात् एक ही संध्या में 1100 मंत्रों को आहुतियां दें। यदि अनुष्ठान के समय माता-पिता रोगी बच्चे को लेकर वेदी के निकट बैठें तो उत्तम है।

अनुष्ठान के पश्चात् 101 मंत्रों से जल को अभिमंत्रित करें और मंत्र जप करते हुए रोगी बच्चे पर जल छिड़कें। बच्चे को निरन्तर ग्यारह दिन तक अभिमंत्रित जल पिलाएं। यदि संभव हो तो बच्चे को उसी जल से स्नान कराएं। शीघ्र लाभ के लिए बच्चे को हवन के सम्मुख बैठाना अत्यंत आवश्यक है।

बच्चे के स्वस्थ होने पर श्वेत रंग की गाय को जौ के आटे की रोटी खिलाएं तथा एक ब्राह्मण को भोजन कराएं। साथ ही लौंग एवं कपूर को 101 मंत्रों से अभिमंत्रित करके चांदी की ताबीज में भरकर बच्चे को पहना दें। जीवन भर टोने-टोटकों से बच्चे की रक्षा होगी।

बच्चों को टोने-टोटके से बचाने के लिए बच्चे के केश न कटाएं। किसी के दिए हुए वस्त्र न पहनाएं तथा बच्चे को काजल अभिमंत्रित टीका लगाएं।

भूत व्याधि

भूत-प्रेतों का अस्तित्व होता है या नहीं यह अलग बात है। कुछ लोग भूत-

प्रेतों का अस्तित्व मानते हैं और कुछ केवल अंधविश्वास कहकर टालते हैं। फिर भी यह सत्य है कि जो व्यक्ति भूत व्याधि से पीड़ित होता है, उसकी गतिविधियां एवं उसमें पाए जाने वाले लक्षण सामान्य मनुष्यों से भिन्न होते हैं। तांत्रिक, ओझा आदि इन व्याधियों को दूर करने का प्रयत्न करते हैं। गायत्री मंत्र द्वारा भी भूत व्याधि से छुटकारा पाया जा सकता है।

पहला उपाय यह है कि भूत-व्याधि से पीड़ित प्रातःकाल स्नान करके प्रतिदिन ग्यारह सौ बार गायत्री मंत्र का जप विधिवत् करे। जप के बाद 101 मंत्रों से हवन करें। प्रतिदिन ऐसा करने से दुष्ट आत्माएं उस व्यक्ति को कभी तंग नहीं करेंगी।

दूसरा उपाय यह है कि रोगी स्वयं प्रातः एवं सायं गायत्री कवच का पाठ करें। ऐसा निरन्तर चालीस दिनों तक करने से प्रेत बाधा समाप्त हो जाती है। यदि रोगी स्वयं गायत्री कवच का पाठ न कर सके तो गायत्री कवच सिद्ध विद्वान पुरोहित से कवच का पाठ कराएं। वह विद्वान व्यक्ति गायत्री कवच से अभिमंत्रित जल को रोगी पर छिड़के और निरन्तर तीन दिनों तक अभिमंत्रित जल पिलाएं।

अनुष्ठान—यदि रोगी की हालत गंभीर हो, बड़बड़ाता अथवा झूमता हो तो इसके लिए गायत्री का अनुष्ठान करें। सर्वप्रथम स्वच्छ एवं पवित्र गायत्री देवी की प्रतिमा स्थापित करें। फिर प्रतिमा के सम्मुख धूप-दीप जलाकर वेदी तैयार करें। रोगी को अपने सम्मुख बैठाएं।

पहले गायत्री मां की स्तुति करें। तत्पश्चात् जौ मिश्रित समिधा से 1100 आहुतियां दें।

इस बीच यदि रोगी झूमता है अथवा कुछ बोलता है तो उस ओर ध्यान न दें। अनुष्ठान के पश्चात् जल और मुट्ठी भर जौ अभिमंत्रित करें फिर महामंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी पर जौ के अभिमंत्रित दाने फेंकें और जल के छींटे दें। ऐसा करने से रोगी धीरे-धीरे स्वस्थ होता जाएगा और प्रेत बाधा नष्ट होती रहेगी।

पूर्ण रूप से स्वस्थ होने पर भी रोगी को तीन दिन तक अभिमंत्रित जल पिलाते रहें। इसके अतिरिक्त भोजपत्र पर केसर से गायत्री महामंत्र लिखें और उसे श्वेत वस्त्र में लपेटकर रोगी को ताबीज की भांति पहना दें।

यदि इस ताबीज को गायत्री रक्षा कवच से एक बार अभिमंत्रित कर दिया जाए तो यह स्वयं रक्षा कवच बन जाता है। इसे धारण करने वाला मनुष्य सदैव प्रेत बाधा से मुक्त रहता है।

आरती श्री गायत्री जी की

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन, जग पालन कर्त्री॥
दुःख शोक भय क्लेश कलह, दारिद्र दैन्य हरती। जयति।
ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी, जगद्धातृ अम्बे।
भव भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे। जयति।
भय हारिणी, भवतारिणी अज आनंद राशि।
अविकारी, अघहारी, अविचलित, अविनाशी। जयति।
कामधेनु सत् चित् आनंद। जय गंगा-गीता।
सविता की शाश्वती शक्ति, तुम सावित्री-सीता। जयति।
ऋक्, यजु, साम, अथर्व, प्रणयनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्त्रारसुषुम्ना शोभा गुण गरिमे। जयति।
स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी राधा रुद्राणी।
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला कल्याणी। जयति।
जननी हम हैं दीन हीन, दुःख दारिद्र के घेरे।
यदपि कुटिल कपटी कपूत, तब भी बालक तेरे। जयति।
स्नेहमयी, करुणामयी माता, चरण में शरण दीजै।
विलख रहे हम शिशु-सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै। जयति।
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, सगरे कुभाव हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये। जयति।
तुम समर्थ सब भांति तारिणी, तुष्टि-पुष्टि त्राता।
सत्य मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुख दाता। जयति।

❑❑❑
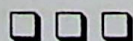
गायत्री मंत्र
साधना व उपासना

गायत्री मंत्र को वेदों में महामंत्र कहा गया है। इस महामंत्र में है—उपासना, स्तुति, ध्यान एवं वंदना का समन्वय। इसका प्रयोग और मनन संसार के समस्त प्राणी कर सकते हैं। यह उस दिव्य शक्ति को संबोधित प्रार्थना है, जिसके बल पर सूर्य प्रकाश देता है और जो तीनों लोकों में समाहित है। मंत्र का ध्येय बुद्धि को निर्मल एवं तेजस्वी बनाना है, जिससे जीवन साधना श्रेष्ठ व सफल बन सके। यदि गायत्री मंत्र का जाप व मनन निरंतर किया जाए तो उससे हमारे भीतर छिपी दिव्य शक्तियां जाग्रत हो जाती हैं। गायत्री मंत्र के जाप, चिंतन और अनुष्ठान से मनुष्य का कल्याण तत्काल संभव हो जाता है।

गायत्री चैव वेदांश्च तुलया समतोलयेत्।
वेदा एकत्र सांगस्तु गायत्री चैकतः स्मृता॥

''यदि गायत्री और अंग-उपांगों सहित वेदों को तराजू पर तौला जाए तो गायत्री की ही श्रेष्ठता सिद्ध होगी।''

Rs.100/-